वार्षिक रिपोर्ट
1984-85



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

दिसंबर 1985
अग्रहायण 1907

PD 1T-RP. BNB.

प्रकाशन विभाग में, सी. रामचंद्रन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा राजबंधु इंडस्ट्रियल कंपनी, सी-61 मायापुरी फेज-II दिल्ली 110064 द्वारा मुद्रित

आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् अपने अध्यक्ष, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार द्वारा मार्गदर्शन दिए जाने के लिए उनकी ऋणी है। परिषद्, अपने शासी निकाय के अन्य विशिष्ट सदस्यों की, परिषद् के मामलों में उनकी गहरी रुचि और सहायता के लिए आभारी है। परिषद् उन विशेषज्ञों को धन्यवाद देती है जिन्होंने इसकी विभिन्न समितियों में काम करने के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया और कई अन्य तरीकों से भी सहायता की। राज्य शिक्षा विभागों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित वे सभी संगठन व संस्थाएं धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ सहयोग किया तथा उनकी गतिविधियां चलाने में पूरी सहायता दी। यूनेस्को, यूनिसेफ. यू.एन.डी. पी. व ब्रिटिश काउंसिल द्वारा दी गई सहायता के लिए, परिषद् उनके प्रति भी आभार प्रदर्शित करती है। परिषद्, अपने स्टाफ के सभी स्तरों के सदस्यों द्वारा किए गए कार्य की भी प्रशंसा करती है, जिनके योगदान व निष्ठा के अभाव में इसके कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित न हो पाते। परिषद्, उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों व जनता के सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त करती है जिन्होंने वर्ष 1984-85 में परिषद् के प्रकाशनों व कार्यक्रमों के बारे में अपनी राय देते हुए, परिषद् के विभिन्न घटकों को पत्र भेजे जो कि और बेहतर प्रर्दशन के लिए एक सतत स्रोत सिद्ध हुए।

विषय-सूची

शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	अब पढ़िए
9	7	प्रकाशन	जन सम्पर्क
31	8	"तीन	"इन
31	8	ओवर थ्री	अपान दीज
31	9	"प्रोफाइल इन	"कंटूर्स ऑफ
57	7	कश्मीर	कश्मीर, पंजाब,
57	10	मणिपुर	मणिपुर, मेघालय,

1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्: भूमिका और संरचना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अनु.प्र.परि.) (एन.सी.ई.आर.टी.), जिसकी स्थापना 1 सितंबर, 1961 को की गई थी, संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के अन्तर्गत एक स्वायत्त संगठन है।

भूमिका और प्रकार्य

एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। स्कूली शिक्षा में अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को प्रतिपादित एवं कार्यान्वित करने के लिये मंत्रालय बहुधा एन.सी.ई.आर.टी. की विशेषज्ञता पर निर्भर रहता है। परिषद् की सारी धन-राशि सरकार ही वहन करती है।

संस्था के ज्ञापन-पत्र में उल्लिखित उद्देश्यों के अनसुार एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय को शिक्षा-क्षेत्र में और खासकर स्कूली शिक्षा संबंधी नीतियों एवं मुख्य कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में सहायता तथा सलाह प्रदान करती है।

कार्यक्रम व क्रियाकलाप

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों व क्रियाकलापों द्वारा करती है:

– स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं में परिषद् अनुसंधान करती है, उसमें सहायता पहुंचाती है, उसे प्रोन्नत करती है और उसे समन्वित करती है;

– मुख्यतः उच्च स्तर पर परिषद् सेवापूर्व और सेवा-दौरान प्रशिक्षण आयोजित करती है;

– शैक्षिक पुनर्निर्माण में रत संस्थाओं, संगठनों व अभिकरणों के लिये परिषद् विस्तार सेवाएं व्यवस्थित करती है;

– परिष्कृत, शैक्षिक तकनीकों, प्रक्रियाओं और नवोत्पादों की सहायता से परिषद् विकास व प्रयोग-कार्य करती है;

– परिषद् शैक्षिक सूचना को एकत्रित, संकलित, संसाधित तथा प्रसारित करती है;

– स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए परिषद् राज्यों, राज्यस्तर की संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों को कार्यक्रम कार्यान्वित एवं विकसित करने के लिए सहायता प्रदान करती है;

– यूनेस्को, यूनीसेफ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् सहयोग स्थापित करती है;

– परिषद् दूसरे देशों के शैक्षिक कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षण व अध्ययन की सुविधाएं प्रदान करती है; और

– परिषद् राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अकादमिक सचिवालय के रूप में काम करती है।

अनुसंधान

स्कूली शिक्षा के अनुसंधान में एक शिखर राष्ट्रीय संस्था होने के नाते एन.सी.ई.आर.टी. के बहुत महत्वपूर्ण प्रकार्य हैं जैसे अनुसंधान को संगठित व बल प्रदान करना तथा शैक्षिक अनुसंधान में कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षित करना।

एन.आई.ई., क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के विभिन्न विभाग कई क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यक्रमों जैसे पाठ्यक्रम, अनुदेशी सामग्रियां, बाल-विकास, शैक्षिक मनोविज्ञान, प्राथमिक शिक्षा का सर्वीकरण, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, अध्यापन सहायक-सामग्री, अध्यापक शिक्षा आदि की जिम्मेवारी लेते हैं। व्यक्तियों और संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करके तथा अन्योन्य क्रिया द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान को बल प्रदान करती है। पी-एच.डी. शोध प्रबंधों को प्रकाशित करने के लिए विद्वानों को सहायता प्रदान की जाती है। परिषद् कनिष्ठ और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता-वृत्तियां भी प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की जांच-पड़ताल की जा सके और योग्य अनुसंधान कार्यकर्ताओं का एक दल सृजित किया जा सके। देश में शिक्षा के अनेक पहलुओं पर आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए यह शैक्षिक सर्वेक्षण भी समय-समय पर संचालित करती है। आंकड़ों को जमा करने, उन्हें पुनः प्राप्त करने तथा उन्हें संसाधित करने के लिए परिषद् के पास एक टर्मिनल कम्प्यूटर है। अन्तरदेशीय अनुसंधान परियोजनाओं में यह अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों से भी सहयोग स्थापित करती है।

विकास

स्कूली शिक्षा में विकास क्रियाकलापों का परिषद् के प्रकार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें उल्लेखनीय

हैं स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा उनसे संबंधित समाज और बच्चों की बदलती तथा बढ़ती हुई आवश्यकताएं। शिक्षा व्यवसायीकरण और औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास, जिनके बारे में अतीत में कोई खास कार्य नहीं हुआ है, अब परिषद् के नवोत्पादी विकासात्मक क्रियाकलापों के रूप में समाविष्ट हैं। दूसरी महत्वपूर्ण गतिविधियां जो इसके अधिकार-क्षेत्र में हैं, वे हैं शैक्षिक प्रौद्योगिकी और जनसंख्या शिक्षा।

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक-पूर्व, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर और ऐसे क्षेत्रों में भी जैसे व्यावसायिक शिक्षा, मार्गदर्शन और विशिष्ट शिक्षा में सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान प्रशिक्षण प्रदान करना परिषद् के क्रियाकलापों में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के नवोत्पादी कार्यक्रमों में कुछ नवोत्पादी विशिष्ट रूप सम्मिलित किये गये हैं, जैसे विषय-वस्तु का एकीकरण और शिक्षण-क्रियाविधि, वास्तविक क्लास-रूम सेटिंग में अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों व संकायों की सहभागिता। राज्यों तथा राज्य स्तर संस्थाओं के प्रधान कर्मचारी वर्ग के प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अकादमिक सचिवालय के रूप में कार्य करते हुए एन.सी.ई.आर.टी. कई क्रियाकलापों में जुटी हुई है, जिनमें विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्य विवरणों व अनुवर्ती शिक्षा का संशोधन शामिल है। अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के संचित कार्य को समाप्त करने के लिए प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के अप्रशिक्षित अध्यापकों को पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

विस्तार

शिक्षा-विस्तार विषयक एन.सी.ई.आर.टी. का स्पष्ट कार्यक्रम है और उस कार्यक्रम में एन.आई.ई., क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालय कई प्रकार से अपने-अपने कार्यों में संलग्न हैं। राज्यों में एन.सी.ई.आर.टी. विभिन्न अभिकरणों एवं संस्थाओं के साथ सीधे कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी-वर्ग, जैसे अध्यापकों, निरीक्षकों और प्रशासकों, प्राश्निकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने हेतु विस्तार सेवा विभागों और स्कूलों व कालेजों के अध्यापन प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ विस्तारपूर्वक कार्य करती है। सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं नियमित रूप से चलने वाले कार्यक्रमों की भांति आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों को ग्रामीण और पिछड़े हुए इलाकों में करने के लिए भी खास ध्यान दिया जाता है ताकि इन कार्यक्रमों से सम्बद्ध कार्यकर्त्ता वहां की विशिष्ट समस्याओं को जान सकें और आवश्यक उपायों का पता लगा सकें। विकलांगों तथा समाज के लाभवंचित वर्गों के बच्चों की शिक्षा के लिए परिषद् के पास विशेष कार्यक्रम हैं। एन.सी.ई.आर.टी. के विस्तार कार्यक्रम देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के लिये हैं।

प्रकाशन तथा प्रसार

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं को समाविष्ट करते हैं। इनमें कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न स्कूली विषयों की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तकें, अध्यापक मार्ग दर्शिकाएं, पूरक पाठमालाएं, अनुसंधान प्रतिवेदन इत्यादि शामिल हैं। अनुसंधान और विकासात्मक कार्य के बाद तैयार अनुदेशी सामग्रियां

राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री का कार्य करती हैं और ये उनसे ग्रहण व रूपांतरण हेतु उपलब्ध की जा सकती हैं।

शैक्षिक सूचना के प्रसार हेतु एन.सी.ई.आर.टी. पांच पत्रिकाएं प्रकाशित करती है: (1) प्राथमिक अध्यापक पत्रिका (अंग्रेजी और हिंदी दोनों में प्रकाशित) का लक्ष्य है क्लास-रूम में सीधे प्रयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री प्रदान करना, (2) स्कूल साइंस पत्रिका विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु एक खुला मंच प्रदान करती है, (3) दि जरनल आफ इंडियन एजुकेशन चर्चा द्वारा वर्तमान शैक्षिक समस्याओं पर मौलिक और समीक्षात्मक सोचविचार के लिए मंच प्रदान करता है, (4) दि इंडियन एजुकेशनल रिव्यू में अनुसंधान लेख होते हैं और अनुसंधान कार्यकर्ताओं के लिए मंच प्रदान करता है और (5) आधुनिक भारतीय शिक्षा पत्रिका (हिन्दी में प्रकाशित) समकालीन समस्याओं पर शिक्षा विषयक समीक्षात्मक सोचविचार को प्रोत्साहन देने के लिए मंच प्रदान करती है तथा शैक्षिक समस्याओं एवं प्रक्रियाओं के लिए विचारों को प्रसारित करती है।

एक कार्यालय पत्रिका, जिसे एन.सी.इ.आर.टी. समाचार-पत्र कहा जाता है, भी हर मास प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपनी-अपनी पत्रिका प्रकाशित करता है।

मूल्यांकन और विनिमय कार्यक्रम

पाठ्यपुस्तकों और दूसरी सामग्रियों का मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन की क्रियाविधियों, उपकरणों व तकनीकों को विकसित किया गया है। गुण की दृष्टि से मूल्यांकन के मार्गदर्शक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को प्रतिपादित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में स्कूलों से फीडबैक सहायक होती है।

प्रतिवर्ष एन.सी.ई.आर.टी. 750 प्रतिभा छात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए (जिनमें 70 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए हैं) भारतीय संविधान के तहत मान्यताप्राप्त सभी भाषाओं में परीक्षण आयोजित करती है। वे विद्यार्थी जो सत्रांत में दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठते हैं, इस छात्रवृत्ति को प्राप्त करने हेतु परीक्षण में भाग लेने के योग्य हैं। पुरस्कृत विद्यार्थी विज्ञान, गणित और समाजविज्ञान में पी-एच.डी. तक अध्ययन कर सकते हैं या फिर इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा में गुणात्मक सुधार के अपने प्रयासों में, एन.सी.ई.आर.टी. अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों जैसे यूनेस्को, यूनीसेफ, यू.एन.डी.पी. और यू.एन.एफ.पी.ए. से सहायता प्राप्त करता है। इन अभिकरणों के अनुरोध पर परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिसंवादों आदि में भाग लेने हेतु अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है। विदेशी राष्ट्रिकों के लिए परिषद् प्रशिक्षण का प्रबंध भी करती है। शैक्षिक नवोत्पाद और विकास संबंधी एशियाई केन्द्र के राष्ट्रीय विकास ग्रुप के लिए परिषद् सचिवालय का कार्य करती है। द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, जोकि भारत सरकार दूसरे देशों के साथ हस्ताक्षरित करती है, के जहां तक स्कूली शिक्षा के प्रावधानों का संबंध है, उन्हें कार्यान्वित करने के लिए परिषद् एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। परिषद् दूसरे देशों के साथ शैक्षिक सामग्रियों का विनिमय करती है।

संरचना और प्रशासन

महापरिषद् एन.सी.ई.आर.टी. की नीति-निर्माण की संस्था है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इसके सदस्यों में सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, विश्वविद्यालयों (प्रत्येक क्षेत्र से एक-एक) के चार कुलपति, कार्यकारी समिति के सभी सदस्य (जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं) और ऐसे व्यक्ति, (बारह से अधिक नहीं) जिन्हें अध्यक्ष समय-समय पर नामित (इनमें कम-से-कम चार स्कूल अध्यापक होने चाहिएं) करे, इसके सदस्य होते हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. की मुख्य शासी समिति है, कार्यकारी समिति, जिसके केन्द्रीय शिक्षा मंत्री अध्यक्ष (पदेन) हैं और जिसमें सम्मिलित हैं शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री (पदेन उपाध्यक्ष के रूप में), शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूली शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे), परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद् के संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्षों के स्तर के होंगे) और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जोकि परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा)।

कार्यकारी समिति को अपने कार्य में सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्थायी समितियां हैं:

(i) कार्यक्रम सलाहकार समिति
(ii) वित्त समिति
(iii) स्थापना समिति
(iv) भवन और निर्माण समिति
(v) शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति
(vi) क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की प्रबंध समितियां।
परिषद् के मुख्यालय में हैं:
(vii) परिषद् का सचिवालय और
(viii) लेखा शाखा।

चार वरिष्ठ पदाधिकारी जो सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, वे हैं निदेशक, संयुक्त निदेशक, जे.डी., सी.आई.ई.टी. और सचिव। संदर्भाधीन वर्ष में निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले:

डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक
डा. टी.एन. धर, संयुक्त निदेशक (28 जून 1984 तक)
डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक (14-8-84 से)
डा. एम.एम. चौधरी, जे.डी., सी.आई.ई.टी. (28-5-84 से)
श्री सी. रामचन्द्रन, आई.ए.एस., सचिव।

अकादमिक कार्यों में निदेशक के सहायतार्थ तीन डीन हैं जिनके नाम, पद और दायित्व नीचे दिये हुए हैं। वर्तमान पदधारी 16 जनवरी, 1984 से दो वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त किये गये थे।

नाम व पद	दायित्व
प्रो. बी.एस. परख डीन (अकादमिक)	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में शैक्षणिक कार्य को समन्वित करने के लिये।

प्रो. आत्मानन्द शर्मा डीन (अनुसंधान)	अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वय करना और शैक्षिक अनुसंधान व नवोत्पाद समिति के कार्य की देखभाल करना।
प्रो. जी.एस. श्रीकांतिया डीन (समन्वय)	सेवा/उत्पादन विभागों, क्षेत्र कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के क्रिया-कलापों का समन्वय करना।

1984-85 में परिषद् चला रही थी:

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शि.सं.)
2. केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (के.शै.प्रो. सं.)
3. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज (4), क्षेत्र एकक (17)।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

मई, 1984 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभाग/एकक पुनर्व्यवस्थित किये गये और 1984-85 के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के निम्नलिखित विभाग/एकक थे और इनका संबंध अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्रसार से था।

1. सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
2. क्षेत्र सेवाएं और समन्वय विभाग
3. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और प्रसार सेवा विभाग
4. स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
5. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग
6. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
7. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
8. शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग
9. नीति अनुसंधान नियोजन और कार्यक्रम विभाग
10. प्रकाशन विभाग
11. कार्यशाला विभाग
12. पुस्तकालय प्रलेखन व सूचना विभाग
13. पत्रिका सेल
14. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) की स्थापना 1984 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्कालीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी केंद्र और शिक्षण साधन विभाग को एक-दूसरे में मिलाकर की गई थी ताकि देश में शिक्षा सुधार व विस्तार के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोन्नत करने में गति लाई जा सके।

सी.आई.ई.टी., संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में अच्छी खासी स्वायत्तता के साथ एन.सी.ई.आर.टी.

के एक अंग के रूप में कार्य करता है। अपने कार्यक्रमों व क्रियाकलापों के बारे में संस्थान के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार परिषद् है।

सी.आई.ई.टी. के निम्न प्रमुख प्रभाग हैं:

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण प्रभाग, टी.वी. प्रभाग और सुदूर शिक्षा प्रभाग (ई.टी.टी.डी.)
2. अनुसंधान, शिक्षा और समन्वय प्रभाग (आर.ई.सी.डी.)
3. तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग (टी.पी.ओ.एम.डी.)
4. लेखाचित्र कला, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग (जी.ई.पी.डी.)
5. पुरालेख, सूचना व प्रलेखन प्रभाग (ए.आई.डी.डी.)
6. फिल्म और फोटो प्रभाग (एफ.पी.डी.)
7. श्रव्य-रेडियो प्रभाग (ए.आर.डी.)।

क्षेत्रीय कालेज और क्षेत्र एकक

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। इन कालेजों में निम्न कोर्स उपलब्ध हैं:

बी.ए. (आनर्स) बी.एड
बी.एस-सी. (आनर्स)/(पास) बी.एड.
बी.एड. आर्ट्स (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
बी.एड. साइंस (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
बी.एड. (कृषि/वाणिज्य/समाजविज्ञान)
बी.एड. (अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू)
बी.एड. (ग्रीष्म स्कूल और पत्राचार पाठ्यक्रम)
एम.एड. (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
एम.एस-सी.एड. (भौतिकी/रसायन/गणित/जीवन विज्ञान)
पी-एच.डी. (शिक्षा)।

जबकि अजमेर का कालेज केवल चार-वर्षीय बी.एस-सी. बी.एड. पाठ्यक्रम प्रदान करता है, भुवनेश्वर और मैसूर के कालेज एम.एस-सी.एड. कार्यक्रम प्रदान करते हैं, प्रथम जीवन विज्ञानों में और दूसरा भौतिक, रसायन और गणित में। चारों कालेजों में पी-एच.डी. कार्यक्रमों तथा साथ ही एक-वर्षीय बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रमों का प्रावधान है।

ये कालेज आवासीय संस्थाएं हैं और उनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और दूसरी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था है। प्रत्येक कालेज के साथ एक निदर्शन बहुद्देश्य स्कूल सम्बद्ध है जहां विकसित क्रियाविधियों को वास्तविक कक्षा स्थितियों में परीक्षित किया जाता है। राज्य शिक्षा प्राधिकारियों तथा राज्य स्तर संस्थाओं, जिन्हें शिक्षा प्रणाली में अकादमिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है, के साथ प्रभावी तालमेल रखने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किये गये हैं:

1. अहमदाबाद
2. इलाहाबाद
3. कलकत्ता
4. गौहाटी
5. चंडीगढ़
6. जयपुर
7. त्रिवेंद्रम
8. पटना
9. पुणे
10. बंगलूर
11. भुवनेश्वर
12. भोपाल
13. मद्रास
14. शिमला
15. शिलङ
16. श्रीनगर
17. हैदराबाद

एन.सी.ई.आर.टी. की संरचना

- सामान्य परिषद्
  - कार्यकारी समिति
    - निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
      - संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
        - सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.
          - प्रशासन
            - उपसचिव-3
              - स्थापना
              - नियुक्ति
              - कैम्पस और कल्याण
              - समिति और संसद
              - पूर्ति और सेवा
              - आर.सी.ईज़ और एफ.एज़.
              - सतर्कता और कानूनी कार्य
          - लेखा और लेखा परीक्षा
            - सी.ए.ओ. और आई.एफ.ए.
          - प्रकाशन
            - पी.आर.ओ.
        - राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
          - अकादमिक समन्वय
            - डी.पी.आर.पी.पी.
              - पी.सी.ई.यू.
              - कार्यक्रम अनुभाग
              - डी.एफ.एस.सी.
                - आर.सी. ईज़-4
                  - अजमेर
                  - भोपाल
                  - भुवनेश्वर
                  - मैसूर
                - एफ. एज़-17
                  - अहमदाबाद
                  - भोपाल
                  - चंडीगढ़
                  - जयपुर
                  - पूना
                  - श्रीनगर
                  - इलाहाबाद
                  - भुवनेश्वर
                  - गौहाटी
                  - मद्रास
                  - शिलांग
                  - त्रिवेंद्रम
                  - बंगलौर
                  - कलकत्ता
                  - हैदराबाद, पटना
                  - शिमला
          - अकादमिक विभाग
            - डी.ई.एस.एस.एच.
            - डी.ई.एस.एम.
            - डी.पी.एस.ई.ई.
            - डी.टी.ई.एस.ई.ई.एम
            - डी.ई.पी.सी.पी.
            - डी.एम.ई.एस.डी.पी.
            - डी.वी.ई.
          - सेवा उत्पादन
            - पी.डी
            - डब्ल्यू.डी.
            - डी.एल.डी.आई.
          - एकक/सेल
            - जे.सी.
            - आई.आर.
            - एस.ई.पी.
            - हिन्दी
            - सेल
        - संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
          - प्रभाग
            - ई.टी.टी.डी.
            - आर.ई.सी.डी.
            - टी.पी.ओ.एम.डी.
            - जी.ई.पी.डी.
            - ए.आई.डी.डी
            - एफ.पी.डी.
            - ए.आर.डी.

2

वर्ष की गतिविधियों पर एक विहंगम दृष्टि

वर्ष 1984-85 की अवधि में परिषद् की प्रमुख गतिविधियों में, स्कूली शिक्षा व अध्यापक शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं पर पाठ्यक्रमों के सूत्रण व क्रियान्वयन से संबंधित अनुसंधान व विकास गतिविधियां; पाठ्यक्रम और पाठ्यसामग्री व अन्य शिक्षण सामग्रियों को तैयार करना/संशोधित करना; शिक्षण सहायताओं, विज्ञान किटों, शैक्षिक फिल्मों, शैक्षिक दूरदर्शन एवं रेडियो कार्यक्रमों का विकास; राज्यों/संघशासित प्रदेशों में अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कार्मिकों का प्रशिक्षण तथा राज्य/संघशासित प्रदेश स्तरीय एजेन्सियों व संस्थाओं के सहयोग से विस्तार एवं प्रसार गतिविधियों का आयोजन शामिल है। ये गतिविधियां देश में शिक्षा विकास के कुछ प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों जैसे कि प्रारंभिक शिक्षा का सार्वीकरण, स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण, शिक्षा में मूल्य विन्यास, परीक्षा सुधार, शैक्षिक माध्यमों का उपयोग और नवाचारी शिक्षा नीतियों का विकास, के इर्द-गिर्द केन्द्रित थी।

परिषद् कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन में भी लगी हुई है और शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों में कार्यान्वित की जा रही यूनिसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना और कम्प्यूटर साक्षरता एवं स्कूल अध्ययन (क्लास) परियोजना के लिए केन्द्रीय तकनीकी व मानीटर करने वाली एजेंसी के रूप में काम करती रही है। परिषद् ने अपने क्षेत्रीय सलाहकारों और क्षेत्रीय

शिक्षा महाविद्यालयों के कार्यालयों के माध्यम से, राज्यों/संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में पूरा सहयोग देकर सभी राज्यों/संघशासित प्रदेशों की सरकारों से नजदीकी सम्पर्क बनाए रखा।

प्रारंभिक शिक्षा

परिषद् ने, शिक्षा के सार्वीकरण के कार्यक्रमों के संदर्भ में कार्यान्वित, यूनिसेफ से सहायता प्राप्त विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत अनेक गतिविधियां शुरू कीं। 'शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.)' परियोजना के अन्तर्गत 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए शैक्षिक व मनोरंजक कम खर्च वाले माध्यमों के विकास से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं। 'शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.)' परियोजना के अन्तर्गत, शैशवकालीन शिक्षा एककों की स्थापना और उन्हें मजबूत बनाने, अध्यापक शिक्षकों व स्कूल-पूर्व अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा शैशवकालीन शिक्षा के लिए सीखने व खेलने की सामग्री के विकास के लिए आठ राज्यों को सहायता दी गई। 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरण (पी.ई.सी.आर.)' परियोजना के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम का पुनर्नवीकरण। शैक्षिक सामग्री का विकास और पुनर्नवीकृत पाठ्यक्रम के कार्यान्वियन में लगे अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों व अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण जारी रखा गया। 'पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा व पर्यावरण स्वच्छता (एन.एच.ई.ई.एस.)' परियोजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूल के बच्चों, अध्यापकों व स्कूलेतर लड़कियों व महिलाओं के लिए शिक्षण सामग्री के वृहत पैकेज विकसित किए गए।

परिषद् की एक प्रमुख गतिविधि, स्कूलेतर बच्चों की शिक्षा के लिए गैर औपचारिक दृष्टिकोणों का विकास था। 'प्राथमिक शिक्षा में व्यापक पैठ (केप)' परियोजना के अन्तर्गत स्कूलेतर बच्चों की शिक्षा के लिए नम्य, समस्या केन्द्रित और कार्य-आधारित पाठ्यक्रम व सीखने की सामग्री के विकास से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गई जबकि 'सामुदायिक शिक्षा और भाग लेने में, विकास गतिविधियां (डी.ए.सी.ई.पी.)' परियोजना के अंतर्गत विभिन्न वर्गों जैसे कि 3 से 6 वर्ष व 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों, 15 से 35 वर्ष के आयु वर्ग की लड़कियों व महिलाओं और युवाओं की आवश्यकताओं के संगत, गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के विभिन्न ढांचे तैयार किए गए।

परिषद् ने, स्कूलेतर बच्चों के लिए केन्द्र द्वारा प्रायोजित गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की सहायता के लिए अनेक कार्य हाथ में लिए। इन गतिविधियों का खास जोर, गैर औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री और पढ़ाने-सीखने की उचित नीतियों के विकास पर रहा है। परिषद् ने, योजना के पुनरावलोकन के लिए तथा प्राप्त अनुभव के आधार पर कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करने के लिए राज्यों में गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभारियों की एक बैठक बुलाई और एन.एफ.ई. कार्यक्रम के कार्यान्वियन में लगे कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कोर्स आयोजित किए।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण से संबंधित मामलों और समस्याओं को पहचानने की दृष्टि से और अनुसंधान क्षेत्रों को पहचानने के लिए, एक 5 दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी की रिपोर्ट ऐसे शोधकर्ताओं में सुसंचारित की गई, जो यू.ई.ई. से संबंधित, आवश्यकता पर आधारित अनुसंधान परियोजनाएं हाथ में ले सकते थे।

पाठ्यक्रम विकास

परिषद् ने, पाठ्यक्रम के विकास व कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनेक अध्ययन हाथ में

लिए। इस वर्ष में पूरे किए गए अध्ययनों में से प्रमुख हैं– राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान (एन.आर.ई.आर.), जापान द्वारा प्रायोजित 'एशियाई व प्रशान्त महासागरीय देशों में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम अध्ययन' के एक भाग के रूप में किया गया 'भारत में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम में मुख्य विकासों का अध्ययन'; 'स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रम भार का अध्ययन' और 'भारत में स्कूल पाठ्यक्रम पर एक स्थिति अध्ययन'।

माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपयोग के लिए पाठ्यपुस्तकों, पूरक पाठ्य सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री का विकास/संशोधन, परिषद् का एक प्रमुख कार्य था। इनमें से कुछ का निर्माण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के नज़दीकी सहयोग से हुआ। 1984-85 में प्रकाशन के लिए तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों/पूरक पाठ्य सामग्री में से प्रमुख हैं – ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए एक इंग्लिश रीडर और एक इंग्लिश स्पलीमेंटरी रीडर, ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए हिन्दी की तीन पाठ्यपुस्तकें, ग्यारहवीं श्रेणी के वैकल्पिक कोर्स के लिए हिन्दी की तीन पाठ्यपुस्तकें, पहली, तीसरी व ग्यारहवीं श्रेणी के लिए उर्दू की पाठ्यपुस्तकें, नवीं व दसवीं श्रेणियों के लिए नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक का संशोधित संस्करण, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, नवीं व दसवीं श्रेणी के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक, ग्यारहवीं, श्रेणी के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तक, नवीं श्रेणी के लिए भौतिकी–भाग-1 पाठ्यपुस्तक, नवीं श्रेणी के लिए रसायन की पाठ्यपुस्तक, नवीं श्रेणी के लिए आधारिक जीवविज्ञान पाठ्यपुस्तक और नवीं श्रेणी के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक।

शिक्षा में मूल्य विन्यास को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम व शिक्षण सामग्री तैयार करना, परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र था। पहली से बारहवीं श्रेणी में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप दिया गया। मूल्य शिक्षा से संबंधित दो पुस्तकों को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया गया।

'सीखने के लिए पढ़ना' परियोजना के अन्तर्गत पठन सामग्री तैयार करने से संबंधित कार्य जारी रखे गए। परियोजना का उद्देश्य, बच्चों के लिए वर्गीकृत पठन सामग्री निकालना है। हिन्दी में लिखी सामग्री की पांडुलिपियों को अन्तिम रूप देने के लिए हिन्दी में लिखने वालों की एक कार्यशाला आयोजित की गई। अंग्रेजी की संचालन समिति की तीसरी बैठक इस वर्ष में हुई और इस बैठक में सात प्रकाशनों की पांडुलिपियों का पुनरावलोकन किया गया। 5-9 वर्ष के आयु वर्ग वालों के लिए चार शीर्षकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया।

'दृश्यों और दस्तावेजों के माध्यम से भारत का स्वतंत्रता संग्राम' परियोजना के अन्तर्गत भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित घटनाओं को दर्शाने वाले दस्तावेजों और संक्षेप में लिखित वर्णन वाले दृश्य पैनलों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया। दृश्य पैनल इस प्रकार से बनाए गए हैं कि वे युवा पीढ़ी में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दें।

भारत की युवा पीढ़ी को, जाने माने विचारकों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों और राष्ट्रीय नेताओं के लेखन से परिचित कराने के लिए परिषद् ने फरवरी 1984 में 'विज्ञान और मनुष्य' शीर्षक के पहले खण्ड के विमोचन के साथ एक चयनिका श्रृंखला शुरु की। इस श्रृंखला के अंतर्गत दूसरा खण्ड, जवाहरलाल नेहरू के मूल लेखनों पर आधारित 'नेहरू: युवा पाठकों के लिए एक चयनिका' शीर्षक था जिसका विमोचन नवंबर 1984 में प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने किया। इस पुस्तक का सम्पादन रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक ने किया।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने, राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से स्कूली पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन से संबंधित अपनी गतिविधियां जारी रखीं। इस परियोजना के अन्तर्गत कार्य के एक भाग के रूप में, भाषा व इतिहास की पुस्तकों

की समीक्षा की गई और नागरिक शास्त्र, भूगोल व समाजविज्ञान की पुस्तकों की समीक्षा से संबंधित काम शुरू कर दिया गया। पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए निर्देश व कसौटियां तैयार की गईं।

शिक्षा-मूल्यांकन

स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में, परीक्षाओं में सुधार लाने के लिए परिषद् ने शिक्षा मूल्यांकन संबंधी विचारात्मक सामग्री तैयार करने और विभिन्न विषय क्षेत्रों में आइटम बैंक व टैस्ट तैयार करने का काम हाथ में लिया। तैयार की गई सामग्री में जैविकी, अर्थशास्त्र व भूगोल में मूल्यांकन की हस्तपुस्तिकाएं, दसवीं श्रेणी में अंग्रेजी-ए कोर्स पर आधारित यूनिट टैस्ट्स, ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी में अंग्रेजी रीडर पर यूनिट टैस्ट और अर्थशास्त्र का प्रश्न बैंक था।

परिषद् ने, विभिन्न माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा ली जा रही परीक्षाओं के प्रश्न पत्र बनाने वालों और विभिन्न विषय क्षेत्रों के आइटम लेखकों के प्रशिक्षण के लिए 11 कोर्स/कार्यशालाएं चलाईं। इनके अतिरिक्त, सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण के लिए आइटम तैयार करने के लिए राज्य स्तरीय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए दो कार्यशालाएं तथा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के आयोजन के संबंध में शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण के लिए आइटम लेखकों को प्रशिक्षित करने के लिए 15 कोर्स चलाए गए। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या बढ़कर 1984-85 में 103161 हो गई–दसवीं श्रेणी के 47450, ग्यारहवीं के 33313 और बारहवीं के 22398। साक्षात्कार के लिए दसवीं श्रेणी के 702, ग्यारहवीं के 282 और बारहवीं के 431, कुल 1415 विद्यार्थियों को बुलाया गया जिनमें से छात्रवृत्ति दिए जाने के लिए, दसवीं श्रेणी के 350, ग्यारहवीं के 150 और बारहवीं के 225, अर्थात् कुल 750 विद्यार्थी चुने गए। इनमें अनुसूचित जाति/जनजाति के 75 विद्यार्थी, दसवीं श्रेणी के 35, ग्यारहवीं के 10 व बारहवीं के 21 शामिल थे।

शैक्षिक सर्वेक्षण

शिक्षा नीति के सूत्रण और कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए डाटा बेस में सुधार लाने के लिए परिषद् सक्रिय रूप से लगी हुई है। वर्ष के दौरान सात राज्यों व तीन संघशासित प्रदेशों के बारे में 'नमूना आधार पर चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण आंकड़ों का द्वितीय विश्लेषण' पूरा किया गया। विश्लेषण से, प्राथमिक, मिडिल, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में, भवन, श्रेणी कक्षों जैसी भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता, पुस्तकालयों, पुस्तक बैंकों, श्यामपट्टों की उपलब्धता, खेलकूद की सुविधाओं आदि के बारे में आंकड़े प्राप्त हुए। इस वर्ष के दौरान लड़कियों की शिक्षा के पिछड़ेपन का अध्ययन भी पूरा किया गया।

व्यावसायीकरण

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण परिषद् द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में से एक है। शिक्षा के व्यावसायीकरण से संबंधित अनेक कार्यक्रमों की योजना/कार्यान्वयन में यह राज्यों को सहायता देती रही। पांच अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और इनके द्वारा 120 अध्यापकों को चुनिंदा व्यापारों एवं व्यवसायों में प्रशिक्षित किया गया। इस वर्ष 18 व्यवसायों से संबंधित सामर्थ्य आधारित पाठ्यक्रम व शिक्षण सामग्री का विकास किया गया। व्यावसायीकरण से संबंधित मसलों व समस्याओं को पहचानने और इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त नीतियों को पहचानने के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक राष्ट्रीय

संगोष्ठी भी आयोजित की गई। व्यावसायिक धारा में बारहवीं श्रेणी की पढ़ाई पूरी करने के बाद विद्यार्थी क्या कर रहे थे, यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया गया।

अध्यापक शिक्षण

प्रारंभिक व माध्यमिक दोनों अवस्थाओं में अध्यापक शिक्षण एक अन्य क्षेत्र था जो लगातार परिषद् का ध्यान आकर्षित करता रहा। वर्ष के दौरान किए गए अनुसंधान अध्ययनों में 'आत्म-धारणा प्रवृति' के संबंध का अध्ययन तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति व गैर अनुसूचित जाति/गैर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी अध्यापकों की उपलब्धि के साथ समायोजन और 'प्रारंभिक स्कूल प्रणाली में ग्रामीण एवं शहरी प्रतिवेश में अध्यापक की छवियों का तुलनात्मक अध्ययन' शामिल है। वर्ष के दौरान प्रारंभिक शिक्षा संस्थाओं के तीसरे राष्ट्रीय सर्वेक्षण और अध्यापक शिक्षण के चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण से संबंधित कार्य जारी रखे गए। अध्यापक शिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् की सिफारिशों के आधार पर उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों ने शिक्षण पाठ्यक्रमों के संशोधन में, परिषद् ने अनेक राज्यों व विश्वविद्यालयों की सहायता की। परिषद् ने प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षुओं व अध्यापक शिक्षकों के उपयोग के लिए 'उभरते हुए भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा' शीर्षक की एक पुस्तक निकाली।

सेवारत अध्यापकों की व्यावसायिक क्षमता सुधारने के लिए, विभिन्न राज्यों व संघशासित प्रदेशों में स्थापित, सतत शिक्षा के 79 केन्द्रों के माध्यम से, शिक्षण की अन्तर्वस्तु तथा क्रियाविधि से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों में विकलांगों की समाकलित शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने से संबंधित कार्य, समाकलित शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए कार्मिकों का प्रशिक्षण, जनजाति शिक्षा व महिला शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए परिषद् ने कई कार्यक्रम हाथ में लिए। इनमें, विज्ञान व गणित तथा सामाजिक विज्ञान व मानविकी पढ़ाने में अपनाए जाने वाले नवाचारी व्यवहारों से, अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को परिचित कराने के लिए बनाए गए कोर्स शामिल हैं। इसके अतिरिक्त परामर्श व मार्गदर्शन, प्रतिभा की खोज व विकास, व्यावहारिक प्रौद्योगिकी तथा अनुसंधान क्रियाविधि से संबंधित प्रशिक्षण कार्य भी किए गए।

परिषद् द्वारा चलाए जा रहे चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चलाते रहे। प्रस्तुत कोर्सों में 1 वर्ष का बी.एड. कोर्स, चार वर्ष का समाकलित अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम और दो वर्ष का एम.एड. कोर्स शामिल हैं। इनके अतिरिक्त दो कालेजों में एम.एस-सी.एड. कोर्स भी चल रहा था। क्षेत्रीय महाविद्यालयों ने, अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले राज्यों/संघ शासित प्रदेशों की मांग पर अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण का काम भी हाथ में लिया।

शिक्षा प्रौद्योगिकी

केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान तथा राज्यों के शिक्षा प्रौद्योगिकी सेलों में, शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने तथा दूरदराज़ के इलाकों में रहने वालों को शिक्षा की पहुंच सुगम कराने के लिए, आकाशवाणी व दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यमों के प्रयोग से शिक्षा प्रौद्योगिकी का समाकलित कार्यक्रम विकसित करने से संबंधित गतिविधियां जारी रखीं। केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) ने टी.वी. पाठ्यक्रम तैयार करने, दूरदर्शन व आकाशवाणी के शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण से संबंधित संचार माध्यम कार्मिकों व

आलेखकारों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यक्रम हाथ में लिए। इनसेट-1 बी के घेरे में आने वाले राज्यों में संचार के लिए दूरदर्शन कार्यक्रमों का निर्माण भी हाथ में लिया गया। विभिन्न वर्गों के कार्मिकों के लिए समाकलित टी.वी. निर्माण कार्य में, पांच सप्ताह के प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन, एक अन्य किया गया प्रमुख कार्य था। यह कार्यक्रम एशिया एण्ड पेसिफिक इंस्टीट्यूट फार ब्राडकास्टिंग डेवेलप्मेंट, कुआलालम्पुर और यूनिसेफ के सहयोग से आयोजित किया गया था। उत्तर प्रदेश में श्रोताओं का प्रोफाइल अध्ययन और ओड़ीसा में ई.टी.वी. कार्यक्रमों का आवश्यकता मूल्यांकन अध्ययन, किए गए अन्य कार्य थे।

जनसंख्या शिक्षा

इस वर्ष के दौरान राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना ने और जोर पकड़ा। परियोजना के अन्तर्गत, विभिन्न राज्यों व संघशासित प्रदेशों के लगभग 8000 मुख्य कार्मिकों व लगभग 2,15,000 अध्यापकों को, परियोजना के कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न पक्षों में प्रशिक्षित किया गया। वर्ष के दौरान किए गए अन्य कार्यों में मूल्यांकन उपायों का विकास और जनसंख्या शिक्षा का प्रभाव आंकने के अध्ययन शामिल हैं। राज्य व राष्ट्रीय, दोनों स्तरों पर तात्कालिक पेंटिंग स्पर्धा का आयोजन, इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना थी। स्पर्धा का विषय था जनसंख्या स्थिति–जैसी मैंने समझी तथा बीस वर्ष बाद। राष्ट्रीय स्तर की स्पर्धा के लिए 3000 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं जिनमें 240 वे भी थीं जिन्हें राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया था। देश भर में से चुनी गई पेंटिंग का एक बहुरंगी एलबम प्रकाशित किया गया। इस एलबम के आधार पर, एक श्रव्य-दृश्य किट, अंग्रेजी व हिन्दी में तैयार किया गया।

कम्प्यूटर साक्षरता

'कम्प्यूटर साक्षरता एवं स्कूलों में अध्ययन (क्लास)' परियोजना के अन्तर्गत इस वर्ष में 42 साधन केन्द्र स्थापित किए गए। देश भर के 250 स्कूलों में यह परियोजना लागू की गई। कम्प्यूटर शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इसके अलावा, 'क्लास' परियोजना के कार्यान्वयन के लिए नीति निर्धारित करने के लिए, साधन केन्द्रों के विशेषज्ञों, योजनाकारों और समन्वयकों की अनेक बैठकें आयोजित की गईं।

सामुदायिक गायन

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए स्कूल प्रणाली में सामुदायिक गायन के सांस्थानिकीकरण के प्रयासों के रूप में परिषद् ने विभिन्न राज्य स्तरीय एजेंसियों व संस्थाओं के सहयोग से, अध्यापकों को, सामुदायिक गायन की कला व तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए 26 शिविर आयोजित किए। इन शिविरों में 15 राज्यों व संघशासित प्रदेशों के 1502 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। उच्च कोटि, गाने में समय व ताल की एकरूपता और 15 क्षेत्रीय भाषाओं में गानों का सही उच्चारण सुनिश्चित करने के लिए, शिविर में भाग लेने वाले प्रत्येक अध्यापक को अपने स्कूल में प्रयोग के लिए एक टेपरिकार्डर और श्रव्य टेप दिए गए ताकि बच्चों को विभिन्न भाषाओं में, सामूहिक रूप से गाने गा सकने में प्रशिक्षित किया जा सके। स्वर लिपि के साथ, अपनी-अपनी भाषा लिपियों में, रोमन लिपि में और देवनागरी लिपि में दिए गए इन गानों की एक बहुरंगी पुस्तक, स्कूलों में बड़े पैमाने पर वितरण के लिए, प्रकाशित की गई।

शैक्षिक अनुसंधान

अपनी शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचारी समिति (एरिक) के माध्यम से परिषद् अनुसंधान के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों की पहचान करने और स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित, आवश्यकता आधारित अनुसंधान परियोजनाएं चलाने व प्रायोजित करने में सक्रिय रूप से लगी रही है। 1984-85 में 8 अध्ययन पूरे किए गए। पूरे किए गए अध्ययन, नैदानिक व उपचारी अध्यापन, मनोवैज्ञानिक परीक्षणों व उपलब्धता प्रतिमानों की श्रृंखला के निर्माण, सामाजिक रूप से प्रतिकूल परिस्थितिग्रस्त लोगों की विशेष समस्याओं, परीक्षा में असफल रहे अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के लोगों के मामलों के अध्ययन, ग्रामीण बच्चों में सीखने की असमर्थताओं और शिक्षा के व्यावसायीकरण से संबंधित थे। देश में सक्षम अनुसंधानकर्ताओं का एक समूह बनाने की दृष्टि से परिषद् ने, अनुसंधान क्रियाविधि का एक प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया। परिषद् ने, राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय से संबंधित अपनी गतिविधियां भी जारी रखीं। इस वर्ष में, अनके नए मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की समीक्षा लिए हुए चार बुलेटिन निकाले गए। परीक्षण निर्माण के मनोमितिक सिद्धांतों व तकनीकों पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

भारत सरकार ने अन्य देशों के साथ, स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में जिन द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों पर हस्ताक्षर किए हैं, उनकी धाराओं के कार्यान्वयन में, परिषद् एक प्रमुख एजेंसी की तरह काम करना जारी रखे हुए है। इसने, यूनेस्को/एपीड व यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रायोजित अनके परियोजनाओं/कार्यक्रमों को हाथ में लिया। इस वर्ष में, विभिन्न देशों के अनके प्रतिनिधि मंडल व विशेषज्ञ रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में आए। परिषद्, विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों के एशियाई कार्यक्रम (एपीड) के सम्बद्ध केन्द्र के रूप में और शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) के सचिवालय के रूप में कार्य करती रही। एन.डी.जी. की गतिविधियों के हिस्से के रूप में, देश व विदेश में कार्यान्वित अनके नवाचारी परियोजनाओं का विवरण लिए हुए एक सूचनापत्र जारी किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और रा.अनु.प्र. परिषद् के अन्य घटक एककों द्वारा 1984-85 में की गई गतिविधियों/कार्यक्रमों का विवरण बाद के अध्यायों में दिया गया है।

3

स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के कार्यक्रम के संदर्भ में परियोजनाओं/कार्यक्रमों का विकास एवं कार्यान्वयन ही स्कूल पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग का मुख्य कार्य है। यह विभाग आरंभिक बचपन शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों, समुदाय शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम के नवीकरण और पोषण व स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी कई गतिविधियों में संलग्न था। यह विभाग शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में चल रही यूनीसेफ़ द्वारा सहायता-प्राप्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन में एक केन्द्रीय, तकनीकी और समन्वयकारी अभिकरण के रूप में कार्य करता आ रहा है।

शैशवकालीन शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा के लिये पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास, स्कूल पूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास और स्कूल पूर्व अध्यापकों का प्रशिक्षण, शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कर्मचारी वर्ग का जुटाना, ये इस विभाग की कुछ प्रमुख गतिविधियां हैं। इन कार्यों को निम्नलिखित विशिष्ट परियोजनाओं और कार्यक्रमों के अन्तर्गत किया गया।

शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.)

युनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना 'शिशु माध्यम प्रयोगशाला' के अधीन आरंभिक प्राथमिक स्टेजों और स्कूल-पूर्व बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक मूल्य के सस्ते साधनों के विकास के प्रयास किये गये। इसी परियोजना के अन्तर्गत शैशवकालीन शिक्षा के लिये पारंपरिक खिलौनों और शैक्षिक खेलों को इस्तेमाल में लाने के लिये राज्य/संघशासित स्तर पर विशेषज्ञता विकसित करने के लिये प्रयास किये गये। और इसी परियोजना के अन्तर्गत शैशवकालीन शिक्षा और अध्यापक शिक्षा संबंधी विचार-प्रसार, प्रशिक्षण व अधिगम सामग्री, अनुसंधान जांच-परिणामों और प्रशिक्षण क्रियाविधि के लिये एक राष्ट्रीय स्तर के संसाधन केंद्र को बनाने के प्रयास किये गये।

सी.एम.एल. के अधीन शैशवकालीन शिक्षा और साथ ही साथ स्कूलपूर्व अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के लिये खेल सामग्री, चित्र पुस्तकों, लेखा-चित्र सामग्री, श्रव्य कार्यक्रमों, वीडियो कार्यक्रमों को विकसित किया गया। मुद्रित सामग्री जो विकसित की गई, उसमें शामिल हैं ज्ञान-बुद्धि के विकास के लिये पांच पुस्तिकाओं का एक सेट, विषयवस्तुपरक चित्र कार्डों के तीन सेट और दस विषयों पर वार्ता चार्ट। स्कूल-पूर्व अध्यापकों के प्रयोग के लिये पाँच श्रव्य टेप, जो बच्चों के पर्यावरण संबंधी अनुभवों से सम्बद्ध हैं, तथा स्कूल-पूर्व गतिविधियों को उजागर करने वाला एक वीडियों कार्यक्रम भी विकसित किया गया।

आकाशवाणी के कुछ केन्द्रों द्वारा शिशुओं के लिये प्रसारित रेडियो कार्यक्रमों के मानीटर और मूल्यांकन करने में भी सी.एम.एल. समाविष्ट थी। दूसरी गतिविधियां जो सी.एम.एल. ने कीं, उनमें शामिल हैं देशज और स्थानीय उपलब्ध खिलौनों तथा सिक्किम, अन्डमान निकोबार द्वीप और पांडीचेरी के शैक्षिक खेलों का सर्वेक्षण एवं इन खिलौनों व खेलों की दीपिकाओं का तैयार करना।

सी.एम.एल. के अधीन विकसित की गई सामग्री का जनजातीय, ग्रामीण और शहरी इलाकों में परीक्षण हो चुका है। इन्हें वर्तमान परियोजनाओं/कार्यक्रमों, जैसे एकीकृत बाल विकास सेवाओं (आई.सी.डी.एस.) और दूसरे ग्रमीण विकास कार्यक्रमों, जो स्कूल पूर्व व आरंभिक प्राथमिक स्कूल आयु वर्गों के बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, में सम्मिलित किया जा रहा है।

शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

समाज कल्याण या शैक्षिक कार्यक्रमों के अंग के रूप में कई राज्यों और संघशासित क्षेत्रों ने शैशवकालीन शिक्षा के कार्यक्रमों को विकसित किया है। फिर भी इन कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने के लिए समुचित अनुदेशी सामग्री व प्रशिक्षित मानव-शक्ति का अभाव रहा है। इसी कारण शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों को ठीक से चलाने के लिये स्कूल-पूर्व अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु राज्य स्तर पर क्षमता को विकसित करने की मांग रही है। यूनीसेफ सहायता-प्राप्त परियोजना 'शैशवकालीन शिक्षा' जोकि विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही है, इस आवश्यकता की पूर्ति में एक प्रयास है।

इस परियोजना के अधीन राज्यों को शैशवकालीन शिक्षा एकक स्थापित करने या मज़बूत करने में, स्कूल-पूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में, पर्यवेक्षक कर्मचारी वर्ग को शैशवकालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अनुरूप तैयार करने में और बच्चों के लिए अधिगम और खेल-सामग्री विकसित करने में सहायता प्रदान की गई है। इस परियोजना को बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश राज्यों में कार्यान्वित किया गया। इस परियोजना के कार्यान्वियन में प्रत्येक सहभागी राज्य में एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., पांच अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान और 65 आरंभिक

बचपन शिक्षा केन्द्र सम्मिलित हैं।

इस परियोजना के अधीन सम्पन्न की जा रही प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं, शैशवकालीन शिक्षा केन्द्रों के अध्यापकों व प्रधान अध्यापकों का प्रशिक्षण, शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में रखे गये पर्यवेक्षण कर्मचारी वर्ग को तदनरूप तैयार करना, शैशवकालीन शिक्षा के नियमों व क्रियाविधि संबंधी ई.सी.ई. केन्द्रों के अध्यापकों के लिये पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और बच्चों के प्रयोग के लिये अधिगम सामग्री तथा इस परियोजना में लगे स्कूल-पूर्व अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिये प्रशिक्षण सामग्रियों का विकास।

दिल्ली नगर निगम के नर्सरी स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

दिल्ली नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे उन कुछ स्कूलों में, जहां नर्सरी खंड हैं, यह विभाग शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में संलग्न रहा है। यह कार्यक्रम दस स्कूलों में कार्यान्वित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 22 प्रधान अध्यापक/प्रधान अध्यापिकाएं और नर्सरी स्कूलों के पर्यवेक्षक शैशवकालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अनुरूप तैयार किये गये। 21 नर्सरी स्कूल अध्यापकों, जिन्होंने एक-मासिक पाठ्यक्रम में भाग लिया, को शैशवकालीन शिक्षा संबंधी विभिन्न पहलुओं/दृष्टिकोणों और रचना कौशलों में प्रशिक्षित किया गया। दूसरी गतिविधयाँ जो सम्पन्न की गई, उनमें शामिल हैं दिल्ली नगर निगम और दिल्ली प्रशासन के नियोजकों व प्रशासकों के लिये एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम और कार्यक्रम में भाग लेने वाले नर्सरी स्कूलों के मददगारों के लिए छः दिवसीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम।

खिलौने बनाने संबंधी राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला

स्कूल-पूर्व तथा आरंभिक प्राथमिक स्टेजों पर अध्यापकों के मध्य खिलौनों की महत्ता और शैक्षिक खेलों और खेल द्वारा शिक्षण-विधि की जागृति विकसित करने के लिए, एक पांच-दिवसीय खिलौने बनाने संबंधी राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला के विषय थे 'संगीत खिलौने' और 'विज्ञान खिलौने' और कार्यशाला के दौरान कम मूल्य और स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों के प्रयोग द्वारा खिलौने। कार्यशाला के सहभागियों में राज्यस्तर खिलौने बनाने संबंधी प्रतियोगिता, जिसका आयोजन विभाग ने क्षेत्र कार्यालयों के सहयोग से किया था, के 14 प्रथम पुरस्कार विजेता थे।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

अनुसंधान और विकास गतिविधियां अनौपचारिक और समुदाय शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बद्ध थीं तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में लगे कर्मचारी वर्ग का प्रशिक्षण/अभिविन्यास इस विभाग का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र था। प्रमुख गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सहायता

विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किये जा रहे केन्द्र प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम और उसके अन्तर्गत स्थापित अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रविष्ट बच्चों के लिए उचित पाठ्यचर्या और शिक्षण सामग्रियों के विकास में यह विभाग कार्यरत हैं। मध्यम स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिये

पाठ्य विवरण और अनुदेशी सामग्रियां विकसित की गई। विज्ञान, समाजविज्ञान और गणित जैसे क्षेत्रों को समाविष्ट करते हुए एक एकीकृत दृष्टिकोण के अनुसरण में अनुदेशी सामग्रियां विकसित की गई हैं। तीन पुस्तकें प्राकृतिक विज्ञानों में, तीन समाजविज्ञान में और एक गणित में स्वीकृत की गई और उन्हें प्रकाशित किया गया। एक दूसरी महत्वपूर्ण गतिविधि प्राथमिक स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में प्रविष्ट शिक्षार्थियों के लिए उर्दू में अनुदेशी सामग्रियों के विकास की रही है। प्रथम छः मासों के लिए एक पुस्तकों का सेट प्रकाशित किया जा चुका है और औपचारिक स्कूल की कक्षा तीसरी व चौथी के स्तरों के शिक्षार्थियों के लिये उर्दू में पुस्तकें तैयार करने का कार्य शुरू किया गया था। इनके अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा पर कुछ संकल्पनात्मक सामग्री भी विकसित की गई। अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर 17 छोटी पुस्तिकाएं विकसित की गई हैं।

1984-85 के दौरान दो अनुसंधान परियोजनाएं, एक "एन.एफ.ई. अनुदेशी सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए उपकरणों का विकास" तथा दूसरी "एन.एफ.ई. के विभिन्न दृष्टिकोणों व प्रक्रियाओं की पहचान" पूरी की गई। प्रथम परियोजना के अन्तर्गत अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रयुक्त अनुदेशी सामग्री के मूल्यांकन के लिए उपकरण विकसित किये गये और उनका सफल प्रदर्शन हुआ। अनौपचारिक शिक्षा के लिए विभिन्न अभिकरणों द्वारा तैयार किये गये पाठ्य विवरण और अनुदेशी सामग्री के बारे में सर्वेक्षण भी किया गया। यह अध्ययन केवल हिन्दी भाषी राज्यों तक ही सीमित था। दूसरी परियोजना के अन्तर्गत ये प्रयास किये गये कि उन दृष्टिकोणों/प्रक्रियाओं का पता लगाया जाये जिनका कि (क) समुदाय केन्द्रों; (ख) स्वैच्छिक अभिकरणों द्वारा चलाए जा रहे केन्द्रों और (ग) राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे केन्द्रों में अनुसरण किया जाता है। जो कर्मचारी वर्ग अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में संलग्न हैं; उनके प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रमों के दौरान प्रयोग के लिए एक अनौपचारिक शिक्षा फिल्म के उत्पादन का कार्य इस वर्ष शुरू कर दिया गया। सी.आई.ई.टी. के सहयोग से तैयार की जा रही फिल्म की लिपि को अंतिम रूप दिया गया। 1985-86 के दौरान फिल्म का उत्पादन संभवतः पूरा हो जाएगा। दूसरी गतिविधियां जो की गई, उनमें शामिल हैं अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभारियों का वार्षिक सम्मेलन और एन.एफ.ई. क्षेत्र के कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के कार्यान्वियन में कार्य कर रहे कुशल व्यक्तियों का अभिविन्यास। पांच दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के 19 व्यक्तियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम के दौरान एन.एफ.ई. कार्यक्रम के कार्यान्वियन में प्राप्त अनुभव पर, एन.एफ.ई. केन्द्रों में अपनाई जा रही शिक्षण क्रियाविधि पर और खंड स्तर के एन.एफ.ई. पदाधिकारियों व ज़िला स्तर के एन.एफ.ई. अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए अपनाई जा रही क्रियाविधि और प्रशिक्षण पर विस्तृत चर्चा की गई।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी.ए.पी.ई.)

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम अभिविन्यस्त लक्ष्य समूह, जोकि पाठ्यचर्या, अनुदेशी/अधिगम सामग्रियों, शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति के बारे में विकेन्द्रित है, के विकास का प्रयास यूनीसेफ सहायता-प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी.ए.पी.ई.)" के अन्तर्गत किया गया है। इस परियोजना के अधीन स्थानीय प्रासंगिक अधिगम सामग्रियां (अधिगम घटनाएं) पर्याप्त मात्रा में और तरह-तरह की विकसित की जा रही हैं। अधिगम घटनाएं प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षण और उत्पादन विधि द्वारा और/या अध्यापकों के लिए सेवा दौरान अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को समाविष्ट करके विकसित की जाती हैं। अधिगम घटनाएं, संसाधन और परिष्करण के बाद, राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा स्थापित/अपनाए गये प्रयोगात्मक अधिगम केन्द्रों के नेटवर्क में संभवतः इस्तेमाल की जाएंगी। उसके बाद

मूल्यांकन केंद्र व प्रत्यायन सेवाएं स्थापित की जाएंगी ताकि अधिगम केन्द्रों में आ रहे बच्चे अपनी अकादमिक उपलब्धियों के एवज़ में श्रेय/प्रमाणपत्र प्राप्त कर सकें।

1984-85 के दौरान यह परियोजना 21 राज्यों और पांच संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित की गई। सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में उन गतिविधियों को, जो परियोजना के प्रथम चरण से संबंधित थीं और जिनमें प्रासंगिक आधार वाली अधिगम सामग्रियां थीं, लिया गया। 1984-85 के दौरान इस परियोजना के अधीन जो प्रमुख गतिविधियां सम्पन्न की गई, उनमें शामिल हैं अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों और अध्यापकों द्वारा विकसित अनंतिम अधिगम घटनाओं की जांच और चयन, अनंतिम अधिगम घटनाओं का संसाधन, अधिगम घटनाओं का निर्माण/प्रकाशन और विकसित अधिगम घटनाओं पर आधारित पाठ्यचर्याओं का विकास। लगभग 300 अनंतिम मापदण्ड प्रकाशन के लिये संसाधित किये गये और लगभग 60 मापदण्ड इस परियोजना में सहभागी विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में प्रकाशित किये गये। इनके अतिरिक्त केन्द्र स्तर पर इस विभाग ने आरंभिकों के प्रयोग के लिए 11 मापदण्ड हिन्दी में भी विकसित किये।

चार राज्यों में, वर्ष के दौरान, इस परियोजना के द्वितीय चरण के शुरुआत की तैयारी, जिसमें अधिगम केन्द्रों की स्थापना/ग्रहण और संचालन शामिल हैं, आरंभ कर दी गई थीं। तमिलनाडु राज्य ने 73 अधिगम केन्द्रों की स्थापना करके इस परियोजना के द्वितीय चरण की शुरुआत की। बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश राज्य सितम्बर 1986 तक इस परियोजना के द्वितीय चरण को संभवतः शुरू कर देंगे।

समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां

यूनीसेफ़ सहायता प्राप्त परियोजना "समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां" के अधीन उन समूहों, जो इस समय आंशिक रूप से या सम्पूर्ण रूप से किसी भी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वंचित हैं, की न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नये प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों के विकास और परीक्षण के बारे में कार्यवाई की गई।

वर्ष 1984-85 के दौरान, इस परियोजना के अधीन 107 समुदाय केन्द्रों ने कार्य किया। केवल संघशासित क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश और लक्षद्वीप को छोड़कर बाकी सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में इस प्ररियोजना को कार्यान्वित किया गया। प्रत्येक केन्द्र में औसतन 80 शिक्षार्थी थे, जिनमें 20 तीन से छः वर्ष के आयुवर्ग, 20 छः से चौदह वर्ष के आयुवर्ग और 40 पन्द्रह से पैंतीस वर्ष के आयुवर्ग के थे। नियमित नामांकन के अतिरिक्त प्रत्येक केन्द्र में अनियमित शिक्षार्थी भी थे जो अपनी सुविधानुसार विशिष्ट कार्यक्रमों में हाज़िर होते थे।

डी.ए.सी.ई.पी. परियोजना के अधीन, परियोजना में समाविष्ट विभिन्न आयुवर्गों के लिए विभिन्न पद्धतियों वाले अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को परियोजना में सहभागी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विकसित किया गया। समुदाय, जिसके आसपास अधिगम केन्द्र स्थित थे, की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 3 से 6, 6 से 14 और 15 से 35 वर्ष के आयुवर्ग के शिक्षार्थियों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियां विकसित की गईं। कुछ केन्द्रों ने माताओं के लिए अनुदेशी सामग्रियां प्रकाशित की हैं, जिनका मुख्य अभिप्राय बच्चे और माता की विभिन्न स्वास्थ्य आवश्यकताओं के प्रति सूचना प्रदान करना है। माताओं के मध्य साक्षरता और संख्या-ज्ञान को प्रोन्नत करने के लिए ये प्रयास किये गये कि उन सामग्रियों को आधारभूमि के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।

3 से 6 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए जो सामग्रियां तैयार की गई हैं, वे अभिभावकों को इस दिशा में भी शिक्षित करते हैं कि वे बच्चों को खुशी-खुशी स्कूल भेज सकें और तब भी जबकि स्कूल-पूर्व शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध नहीं हों। 6 से 14 वर्ष के आयुवर्ग के लिए सामग्रियां इस आशय से तैयार की गई थीं कि वे विशिष्ट

स्तरों की उपलब्धि प्राप्त कर औपचारिक स्कूलों में प्रवेश पा सकें और कार्यसाधक साक्षरता प्रोन्नत कर सकें। 15 से 35 वर्ष के आयुवर्ग के लिए सामग्रियां इस आशय से तैयार की गईं ताकि वे विकासात्मक और उत्पादक गतिविधियों में समुदाय सहभागिता को प्रोन्नत करें और साक्षरता व संख्या-ज्ञान की योग्यता प्रोन्नत करने के लिए आधारभूमि बनें।

आयुवर्ग 6 से 14 और 15 से 35 के लिए विकसित अनुदेशी सामग्रियों में से कुछ को कई राज्यों ने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में व्यापक प्रयोग के लिए अपना लिया है। उदाहरण के तौर पर पुस्तक "हिमकिरण–भाग-1", जो हिमाचल प्रदेश में 6 से 14 वर्ष के आयुवर्ग के लिए तैयार की गई, अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रयोगार्थ व्यापक रूप से स्वीकृत की गई। राजस्थान में, पुस्तक "ज्ञान दीपिका" अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में प्रयोग के लिए स्वीकृत की गई। पुस्तक "आशा भारती–भाग-1" उत्तर प्रदेश के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के प्रयोग के लिए ठीक समझी गई। अन्य कुछ राज्यों में, इस परियोजना के अधीन विकसित अनुदेशी सामग्रियों को व्यापक पैमाने पर प्रयोग के लिये निरीक्षित किया गया।

1984-85 वर्ष के दौरान, इस परियोजना के अधीन, प्रगति का जायज़ा लेने के लिए परियोजना कर्मचारियों की तीन बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में समुदाय कार्यकर्त्ताओं सहित 94 सहभागी उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त खंड विकास अधिकारियों, प्राथमिक स्कूलों के प्रधान अध्यापकों और राज्य स्तर के परियोजना समन्वयकों के लिए तीन अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किये गये। इन पाठ्यक्रमों में 49 सहभागी उपस्थित थे।

नौ राज्यों द्वारा तैयार की गई अनुदेशी सामग्रियों को अंतिम रूप देने तथा प्रकाशनार्थ जांचा गया। वर्ष के दौरान, परियोजना का आंतरिक मूल्यांकन प्रायः सभी राज्यों में पूरा किया गया। परियोजना का बाह्य मूल्यांकन इस वर्ष ए.एन. सिन्हा, समाज विज्ञान संस्थान, पटना द्वारा शुरू किया गया। 1985 के मध्य मूल्यांकन अध्ययन की रिपोर्ट अपेक्षित है।

प्राथमिक शिक्षा का नवीकरण

वर्ष 1984-85 के दौरान इस विभाग की गतिविधियों का महत्वपूर्ण पहलू था औपचारिक शिक्षा की प्रासंगिकता और गुणात्मक सुधार के लिये पाठ्यक्रमों और अनुदेशी सामग्रियों का नवीकरण और विकास। इन सहायक गतिविधियों के अतिरिक्त, दूसरी गतिविधियों जैसे पोषण में सामग्रियों का विकास, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता को भी हाथ में लिया गया।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी.ई.सी.आर.)

यूनीसेफ़ सहायता-प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी.ई.सी.आर.)" के अधीन विभिन्न समूहों के बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप, खासकर समाज के लाभवंचित भागों से आए हुओं के लिए और उन्हें दिये जाने वाले सामाजिक और आर्थिक अवसरों के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के नवीकरण विषयक कार्य किये गये। संघशासित अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर बाकी सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में इस परियोजना को कार्यान्वित किया गया। इस परियोजना के कार्यान्वियन में 180 प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, 2,480 प्राथमिक स्कूल, 11,000 अध्यापक और 4,00,000 शिष्य शामिल थे।

इस परियोजना के कार्यान्वयन की गति सभी राज्यों में एक समान नहीं है। क्योंकि इस परियोजना की

शुरुआत की तारीख राज्यों में एक समान नहीं है। बहुत से राज्यों में, समस्त प्राथमिक स्कूल स्टेज पर पाठ्यचर्या के नवीकरण और उसके कार्यान्वियन का चक्र 1986 के अन्त तक पूरा हो जाएगा। कुछ राज्यों ने कक्षा 4 तक नई अनुदेशी सामग्रियों को शुरू कर दिया है, कुछ ने कक्षा 3 तक और शेष ने कक्षा 2 तक।

प्रोजेक्ट स्कूलों के लिये नई पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों के विकास और परीक्षण के लिये क्रमबद्ध कार्यक्रम और राज्यों व संघशासित क्षेत्रों की शिक्षा प्रणाली में परियोजना के अधीन निर्मित की गई संकल्पनाओं और विकसित किये गये तकनीकों के व्यापक ग्रहण की विधियां रची गईं। परियोजना के अधीन विकसित पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों को राज्य शिक्षा प्रणाली में व्यापक ग्रहणार्थ कई राज्यों ने कदम उठाए।

इस परियोजना के कार्यान्वियन के फलस्वरूप, छोटे राज्य/संघशासित क्षेत्र जैसे सिक्किम, अन्डमान निकोबार द्वीप, गोआ, दमन और दिउ, लक्षद्वीप और पांडिचेरी ने प्रथम बार प्राथमिक स्कूल बच्चों के लिये अपने आप पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों का विकास करना शुरू कर दिया है। इस परियोजना के अन्तर्गत तैयार की गई अनुदेशी सामग्रियों में से कुछ को महाराष्ट्र, उड़ीसा और तमिलनाडु राज्यों ने अपना लिया है। इस परियोजना के अधीन तैयार की गई सभी पाठ्य सामग्रियों को हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा राज्य के सभी प्राथमिक स्कूलों में प्रयोग के लिए स्वीकृत तथा प्रकाशित कर दिया गया है। राजस्थान में पी.ई.सी.आर. परियोजना के अन्तर्गत विकसित पाठ्यचर्या को स्वीकार कर लिया गया है और परियोजना के अन्तर्गत तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों को राज्य प्रणाली में क्रमबद्ध तरीके से आरंभ किया जा रहा है। इस परियोजना के अधीन विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों में से कुछ को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित एक समिति ने राज्य के प्राथमिक स्कूलों में व्यापक प्रयोग के लिए निरीक्षित किया है।

प्रयोग काल के दौरान, विकास क्रियाविधि तथा पाठ्यचर्या व अनुदेशी सामग्रियों के कार्यान्वियन के विभिन्न पक्षों पर एक बड़ी संख्या में अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और शैक्षिक प्रशासकों को प्रशिक्षित किया गया। 1981-85 के दौरान टी.टी.आई. संस्थाओं के 450 अध्यापकों, 270 पर्यवेक्षण कर्मचारियों और 450 अध्यापक शिक्षकों के लिये लगभग 130 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। अनुदेशी सामग्रियों के विकास के लिये विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में लगभग 200 कार्यशालाएं की गईं और 300 से ऊपर पाठ्यपुस्तकों, कार्य पुस्तकों और अध्यापक मार्गदर्शिकाओं के रूप में अनुदेशी सामग्रियों को विकसित किया गया।

परियोजना पी.ई.सी.आर. के प्रभाव के बारे में व्यापक आंकड़े एकत्र करने के लिए नामांकन और निरोध पर शिष्य की सीख की विशेषता और उसके प्रभाव के सन्दर्भ में 'नामांकन, निरोध, निष्क्रियता और शिष्य उपलब्धि का एक अध्ययन' वर्ष 1984-85 के दौरान शुरू किया गया। अध्ययन के अन्तगर्त कक्षा 1 से 4 में पढ़ाई कर रहे बच्चे रखे गए। प्रोजेक्ट स्कूलों के विद्यार्थियों तथा वे बच्चे जो साथ के नान-प्रोजेक्ट स्कूलों के हैं, उनकी उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया। 1984-85 वर्ष के दौरान सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों, जहां जून/जुलाई में अकादमिक सत्र शुरू किया गया, से आंकड़े एकत्र किये गए। उन राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में जहां अकादमिक सत्र फरवरी में शुरू हुआ, वहां आंकड़ों का एकत्र किया जाना फरवरी 1985 से हुआ। अध्यन 30 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के 2,480 स्कूलों के 4,00,000 विद्यार्थियों को सन्निविष्ट करता है।

पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता (एन.एच.ई.ई.एस.)

पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता नामक परियोजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूल बच्चों के लिए, अध्यापकों के लिये और स्कूल से बाहर की लड़कियों और महिलाओं के लिये पोषण, स्वास्थ्य चिकित्सा

और पर्यावरणीय स्वच्छता पर अनुदेशी सामग्रियों के पैकेज विकसित किये गये। 1984-85 वर्ष के दौरान, परियोजना 12 राज्यों और एक संघशासित क्षेत्र में कार्यान्वित की गई। सम्पन्न की गई प्रमुख गतिविधियों में निम्न सम्मिलित हैं :

(i) प्रोजेक्ट स्कूलों के बच्चों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा मुद्रण सामग्रियों में सम्मिलित हैं–पाठ्यपुस्तकें/पूरक पाठमालाएं, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, प्रशिक्षण दीपिकाएं, आदि। 1984-85 के दौरान 28 शीर्षक प्रकाशित किये गये;

(ii) समुदाय सम्पर्क कार्यक्रमों तथा साथ ही प्रोजेक्ट स्कूलों के प्रयोग के लिए चार्टों/पोस्टरों, पुस्तिकाओं, फोल्डरों आदि का विकास;

(iii) प्रोजेक्ट स्कूलों के अध्यापकों के लिये अभिविन्यास पाठ्यक्रम। 1984-85 के दौरान 1960 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया;

(iv) अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षकों के लिये अभिविन्यास पाठ्यक्रम;

(v) मूल्यांकन उपकरणों के विकास के लिए कार्यशाला;

(vi) प्रोजेक्ट स्कूलों में अनुदेशी सामग्रियों का परीक्षण और परीक्षित आंकड़ों के आधार पर अनुदेशी सामग्रियों का संशोधन;

(vii) पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता से संबंधित संदेशों का समाज में प्रसार हेतु समुदाय सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन।

कक्षा 1 से 4/5 की अनुदेशी सामग्रियों का विकास आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान और मिजोरम द्वारा पूरा कर लिया गया। पोषण, स्वास्थ्य चिकित्सा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी संकल्पनाओं को प्राथमिक स्कूलों में चल रही पाठ्यपुस्तकों/अनुदेशी सामग्रियों में एकीकृत करने हेतु महाराष्ट्र, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश के राज्यों में कार्य शुरू किये गये।

परियोजना एन.एच.ई.ई.एस. ने प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता अंगों को अत्यधिक गहन दृष्टिकोण और अत्यधिक अर्थपूर्ण दिशा-निर्देशन देने का प्रयास किया है। भारत की पोषण संस्था द्वारा किये गये प्रोजेक्ट के मूल्यांकन से यह प्रकट हुआ कि प्रोजेक्ट काफी हद तक ग्रामीण स्कूलों में पोषण, स्वास्थ्य चिकित्सा और पर्यावरणीय स्वच्छता को, सुदृढ़ करने में और समुदाय सम्पर्क कार्यक्रमों द्वारा समाज को प्रासंगिक संदेश सम्प्रेषित करने में सफल रहा। मूल्यांकन रिपोर्ट ने परियोजना के अधीन विकसित किये गये पाठ्य विवरणों/पाठ्य सामग्रियों का एकीकरण प्राथमिक स्टेज की वर्तमान पाठ्यचर्या में सुझाया था तथा परियोजना के अधीन निर्मित की गई संकल्पनाओं और विकसित की गई तकनीकों का एकीकरण प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के पाठ्य विवरण/पाठ्यचर्या में सुझाया था। इन सभी पर कार्यवाइयां परियोजना में सहभागी सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में शुरू की जा चुकी हैं।

4

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा

स्कूल अवस्था में पाठ्यक्रम के सूत्रण और कार्यान्वियन से संबंधित अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान व मानविकी से संबंधित विभिन्न विषय-क्षेत्रों के पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना, अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों व स्कूली अवस्था में पाठ्यक्रम के कार्यान्वियन में लगे अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण तथा राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर की एजेंसियो व संस्थाओं के सहयोग से विस्तार एवं प्रसार गतिविधियों का आयोजन, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की मुख्य गतिविधियों में से कुछ हैं। विभाग, कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वियन में भी लगा रहा है और राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वियन के लिए केन्द्रीय तकनीकी, समन्वयकारी और मानीटर करने वाली एजेंसी के रूप में काम करता रहा है।

पाठ्यक्रम के विकास व कार्यान्वियन से संबंधित अध्ययन

विभाग ने, पाठ्यक्रम के विकास और इसके कार्यान्वियन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनुसंधान अध्ययन हाथ में लिए। 1984-85 में पूरे किए गए अध्ययनों में से प्रमुख इस प्रकार हैं –

भारत में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम में प्रमुख विकासों का अध्ययन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान (एन.आई.ई.आर.) जापान द्वारा प्रायोजित ''एशिया व प्रशांत महासागरीय देशों में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम का अध्ययन'' के हिस्से के रूप में विभाग ने ''भारत में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम में प्रमुख विकास'' पर एक स्टेटस पेपर तैयार किया।

प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम में मुख्य प्रवृत्तियों व सामान्य चिन्ताओं की समीक्षा करने और इन मुख्य प्रवृत्तियों में से कुछ का विस्तृत अध्ययन करने के लिए 21 से 23 नवंबर, 1984 तक एक तीन दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के दौरान भारत में प्रारंभिक स्कूल पाठ्यक्रम के प्रादुर्भाव पर और पाठ्यक्रम के समाकलित पाठ्यक्रम, मूल्य विन्यास एवं नैतिक शिक्षा, कार्य विन्यस्त शिक्षा और पाठ्यक्रम भार जैसे विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। कार्यशाला में हुए विचार-विमर्श के आधार पर बनाई गई अन्तिम रिपोर्ट, एन.आई.ई.आर., जापान द्वारा तोक्यो में 16 जनवरी से 7 फरवरी, 1985 तक आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत की गई।

स्कूली स्तर पर पाठ्यक्रम भार का अध्ययन

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने स्कूली स्तर पर, भार की दृष्टि से, वर्तमान पाठ्यक्रम के शीघ्र मूल्यांकन के लिए 1983 में एक अन्दरूनी कार्यकारी दल बनाया। पाठ्यक्रम भार के विभिन्न आयामों को पहचानने और अध्ययन करने के लिए कार्यकारी दल ने अनेक स्कूल प्रमुखों, पर्यवेक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के साथ चर्चाओं की झड़ी लगा दी। दिल्ली के चुने हुए प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में पाठ्यक्रम भार के मूल्यांकन से संबंधित एक सर्वेक्षण किया गया। दिल्ली के स्कूलों में प्रयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तक-सामग्री के विश्लेषण के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। बाद में इस अन्वेषण का कार्यक्षेत्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, ओड़ीसा व राजस्थान नामक चार और राज्यों में बढ़ा दिया गया। 1 से 5 सितंम्बर 1984 तक मैसूर, भोपाल, भुवनेश्वर और अजमेर में 4 क्षेत्रीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें इन राज्यों में विहित पाठ्यपुस्तक सामग्री का, अध्यापनरत अध्यापकों की सहायता से विश्लेषण किया गया। अन्ततः, 20 व 21 सितम्बर 1984 को नई दिल्ली में, पाठ्यक्रम भार पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी अयोजित की गई। पांच क्षेत्रीय कार्यशालाओं में किए गए अभ्यासों तथा कार्यकारी दल के विचार-विमर्शों पर आधारित एक रिपोर्ट राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत की गई, जिसमें अनेक जाने माने शिक्षाविदों तथा राज्य शिक्षा विभागों एवं राज्य शिक्षा बोर्ड के उच्च स्तरीय अधिकारियों ने भाग लिया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के कार्यकारी दल की ''स्कूली स्तर पर पाठ्यक्रम भार–एक सरसरी नज़र'' शीर्षक वाली रिपोर्ट निकाली गई।

जिन चार राज्यों व एक संघशासित प्रदेश में अध्ययन किया गया, वहां से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण इस तथ्य को सामने लाया कि पाठ्यक्रम विकास, अपने कार्यान्वियन व मूल्यांकन सहित, एक बहुआयामी घटना है। यह पाया गया कि पाठ्यक्रम भार के प्रश्न पर किसी भी चर्चा में, पाठ्यक्रम विकास व कार्य सम्पादन से संबंधित सभी प्रयासों जैसे कि भौतिक सुविधाएं और उनका उपयोग, पाठ्यक्रम संगठन व सामग्री, पाठ्यक्रम सम्पादन की व्यवस्था तथा परीक्षा, के तमाम पहलू शामिल होने चाहिए। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकले–

– पाठ्यक्रम के प्रभावी निष्पादन की पूर्वापेक्षाएं उपलब्ध न हो पाने के कारण पाठ्यक्रम भार की समस्या होती है।

- पाठ्यक्रम भार की समस्या, पाठ्यक्रम विकास की समस्या के बजाय शिक्षा प्रबंध व साधन प्रतिबंधों की समस्या अधिक है।

- पाठ्यक्रम विकास व कार्यान्वियन के किसी भी पहलू में, चाहे घर के लिए काम दिया जाना ही हो, व्यवस्था और प्रणाली की कमी का पाठ्यक्रम भार की समस्या में बहुत बड़ा हाथ होता है।

- पाठ्यक्रम निष्पादन की कोटि, पाठ्यक्रम भार की एक प्रमुख निर्धारक है। एक त्रुटिहीन पाठ्यक्रम भी यदि अनुचित तरीके से निष्पादित किया गया तो विद्यार्थियों के लिए भारी सिद्ध होगा।

- पाठ्यक्रम भार की समस्या एक सामाजिक समस्या भी है जिसकी जड़ें विद्यार्थियों व अभिभावकों की महत्वाकांक्षाओं में तथा हमारे सामाजिक जीवन में हर क्षेत्र में प्रचलित स्पर्धा की भावना में हैं।

- पाठ्यक्रम भार की समस्या के लिए, कंठस्थ करने पर जोर देने वाली हमारी वर्तमान परीक्षा प्रणाली काफी हद तक जिम्मेदार है।

- कई बार पाठ्यक्रम बनाने वालों द्वारा, विषयवस्तु की ज्ञानात्मक मांगों के, विद्यार्थियों के परिपक्वता स्तर से मिलान करने के बारे में लिए गए फैसले की गलती के कारण पाठ्यक्रम भार की समस्या होती है।

- शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने की दृष्टि से ज्यादा से ज्यादा सामग्री शामिल करने की इच्छा भी कभी-कभी पाठ्यक्रम को महत्वाकांक्षी बना देती है।

- विभिन्न अवस्थाओं व विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों के बीच समन्वय और तालमेल की कमी के कारण काफी परस्पर व्यापन होता है। पाठ्यक्रम की संचालनीयता सुनिश्चित करने के लिए इससे बचना चाहिए।

भारत में स्कूली पाठ्यक्रम–एक स्थिति अध्ययन

इस वर्ष में, भारत में स्कूली पाठ्यक्रम की स्थिति का एक अध्ययन पूरा किया गया। अध्ययन के दौरान इकट्ठे किए गए आंकड़ों के आधार पर ''भारत में स्कूल पाठ्यक्रम'' शीर्षक का एक स्थिति दस्तावेज निकाला गया। अध्ययन में, भारत में स्कूल पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे कि विभिन्न अवस्थाओं का ढांचा व स्थिति, शिक्षण समय, अध्ययन योजना, विभिन्न क्षेत्रों को दिए जाने वाला महत्व, वैकल्पिक कोर्स, शिक्षण सामग्री तैयार करना, परीक्षा प्रणाली की तुलना में पाठ्यक्रम, स्कूल पाठ्यक्रम के उभरते क्षेत्र, पाठ्यक्रम तैयार करने वाली एजेंसियों आदि पर विचार किया गया।

नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढांचा तैयार करना

पिछली एक दशाब्दी में स्कूली पाठ्यक्रम के कार्यान्वियन पर किए गए अध्ययनों से, स्कूली अवस्था में अनुसरण किए जा रहे पाठ्यक्रम के ढांचे में परिवर्तन करने की आवश्यकता का आभास हुआ। नए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढांचा तैयार करने से संबंधित गतिविधियां वर्ष 1984 में शुरू की गई।

भाषा की बोधगम्यता पर मनो-सामाजिक घटकों के प्रभाव का अध्ययन

प्राथमिक अवस्था में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रयोग की गई भाषा की

बोधगम्यता पर मनो-सामाजिक घटकों के प्रभाव का एक अध्ययन, विभाग ने हाथ में लिया। यह अध्ययन राजस्थान में 1984-85 में किया गया।

शिक्षण सामग्री तैयार करना

पाठ्यपुस्तकें, सहायक पुस्तकें व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करने का कार्य, विभाग की प्रमुख गतिविधियों में से एक बना रहा। इस वर्ष में निम्नलिखित पाठ्यपुस्तक सामग्री व शिक्षण सामग्री को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया।

- आई–द पीपुल (ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए अंग्रेजी रीडर)
- स्टोरीज़, प्लेज़ एण्ड टेल्ज आफ एडवेंचर (ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए अंग्रेजी की सहायक पुस्तक)

स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों की अंग्रेजी में प्रवीणता सुधारने के प्रयास में ''लेट्स एनरिच अवर इंग्लिश'' श्रृंखला के अन्तगर्त 6 पुस्तिकाएं तैयार की गईं। ये पुस्तिकाएं, सीखने वाले में पढ़ने व लिखने की आधारी कलाओं का विकास करने और साथ ही उसका शब्द भण्डार समृद्ध करने व अंग्रेजी के प्रयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उसे गहरी पहुंच देने के लिए बनाई गई थीं। मार्च 1985 में निम्नलिखित दो पुस्तिकाएं प्रकाशित हुईं–

- लेट्स एनरिच अवर इंग्लिश–बुक–1 (माध्यमिक स्कूल में प्रवेश पाए विद्यार्थियों के लिए)
- लेट्स एनरिच अवर इंग्लिश–बुक-2 (माध्यमिक स्कूल में प्रवेश पाए विद्यार्थियों के लिए)

विभाग ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के सहयोग से ग्यारहवीं श्रेणी के कोर तथा वैकल्पिक कोर्सों के लिए हिन्दी की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों को अंतिम रूप दिया –

- अभिनव काव्य भारती–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए)
- अभिनव गद्य भारती–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए)
- अभिनव कथा भारती–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के कोर कोर्स के लिए)
- काव्य संचयन–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के वैकल्पिक कोर्स के लिए)
- गद्य संचयन–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के वैकल्पिक कोर्स के लिए)
- कहानी संचयन–भाग-1 (ग्यारहवीं श्रेणी के वैकल्पिक कोर्स के लिए)

इनके अतिरिक्त, बच्चों व प्रौढ़ों को हिन्दी लिखना सिखाने के लिए लेखन पुस्तकें तैयार करने से संबंधित कार्य भी शुरू किए गए।

1984-85 में उर्दू की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया –

- उर्दू की नई किताब, पहली श्रेणी के लिए
- उर्दू की नई किताब, तीसरी श्रेणी के लिए
- उर्दू की नई किताब, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए।

इस वर्ष में तैयार की गई/संशोधित अन्य पाठ्यपुस्तकों व शिक्षण सामग्री में निम्नलिखित शामिल हैं –

- वी एण्ड अवर गवर्नमेंट (हम और हमारी सरकार) (नवीं व दसवीं श्रेणियों के लिए नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक का संशोधित संस्करण)
- फिजिकल ज्योग्राफी (भौतिक भूगोल) – हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर (ग्यारहवीं श्रेणी के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक)
- एन इन्ट्रोडक्शन टु अवर इकोनमी (हमारी अर्थव्यवस्था का एक परिचय) (नवीं व दसवीं श्रेणी के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक)
- ग्यारहवीं श्रेणी के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तक (संशोधित संस्करण)।

की गई अन्य गतिविधियों में, संस्कृत व्याकरण पढ़ाने के लिए चार्ट तैयार करना, संस्कृत साहित्य के इतिहास की पुस्तक तैयार करने से संबंधित कार्य और युवा सीखने वालों के लिए भारत के संविधान पर प्रकाशन का संशोधन शामिल है।

मध्य प्रदेश ने विभिन्न जनजाति इलाकों में रहने वाली जनजातीय महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप, पढ़ने-सीखने की सामग्री तैयार करने का काम, पंचायत व समाज कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से, हाथ में लिया गया। जनजातीय प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आज़माइश के बाद एक प्राइमर, एक वर्कबुक, एक शिक्षक निर्देशिका (गाइड) और कविताओं/गानों/कहानियों के संग्रह का एक सेट तैयार किया गया और उसे अन्तिम रूप दिया गया। विभाग ने नव-शिक्षितों के लिए भी कुछ शिक्षण सामग्री तैयार की। हरियाणा के राज्य साधन केन्द्र के सहयोग से तैयार की गई इस सामग्री में एक पाठ्यपुस्तक, एक वर्कबुक (अभ्यास पुस्तिका) और एक शिक्षक निर्देशिका शामिल हैं।

संघशासित प्रदेश अरुणाचल प्रदेश के लिए अंग्रेजी व हिन्दी के पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के काम में भी विभाग लगा रहा। 1984-85 में हिन्दी की निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया –

- अरुण भारती के लिए अभ्यास पुस्तिका भाग-3
- अरुण भारती भाग-1

अंग्रेजी की भी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया –

- डान रीडर्स–पहली श्रेणी के लिए पाठ्य पुस्तक
- डान रीडर्स–पहली श्रेणी के लिए सहायक पुस्तक

– डान रीडर्स–पहली श्रेणी के लिए अभ्यास पुस्तिका।

पाठ्यपुस्तकों व पठन सामग्री पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला 25 से 29 मार्च 1985 तक आयोजित की गई। संगोष्ठी में 80 शिक्षाविदों ने भाग लिया जिनमें पाठ्यपुस्तक ब्यूरो के अध्यक्ष, राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शै.अनु.प्र. परिषदों के निदेशक और प्राइवेट प्रकाशक शामिल थे। संगोष्ठी के दौरान, पाठ्यपुस्तकें तैयार करने और उनके प्रकाशन से संबंधित अनेक मसलों, जैसे कि एकल व एकाधिक पाठ्यपुस्तकों के लाभ व हानियां, पाठ्यपुस्तकों व पठन सामग्री के उत्पादन व वितरण की समस्याएं पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए अपनाई गई कार्यविधियां, पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श हुआ।

29 अगस्त से 5 सितम्बर 1984 तक आयोजित एक कार्यशाला में दसवीं व ग्यारहवीं श्रेणी के लिए राजनीति विज्ञान के प्रमुख शब्दों व धारणाओं की पहचान की गई। कार्यशाला के दौरान + 2 अवस्था में राजनीति विज्ञान में पढ़ाए जाने वाले 650 से अधिक शब्दों व धारणाओं के विस्तृत विवरण को अन्तिम रूप दिया गया।

कला शिक्षा में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम का ढांचा व निर्देश तैयार करने के लिए उदयपुर में 13 से 17 मार्च 1985 तक एक कार्यशाला एवं कार्यकारी दल की बैठक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में, कला शिक्षा के 30 विशेषज्ञों ने भाग लिया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा तैयार किए गए नए कला शिक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में, कला अध्यापकों के प्रशिक्षण से संबंधित मामलों पर, कार्यशाला के दौरान विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। दल ने, प्राथमिक अवस्था में कला अध्यापकों के रूप में नियुक्ति चाहने वालों के लिए उच्चतर माध्यमिक अवस्था के बाद दो वर्ष के अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम की, माध्यमिक अवस्था में कला अध्यापक के रूप में नियुक्ति चाहने वालों के लिए कला शिक्षा में डिप्लोमा/डिग्री दिलाने वाले तीन वर्ष के कला शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम की तथा माध्यमिक अवस्था में कला अध्यापक के रूप में नियुक्ति चाहने वाले, व्यावसायिक कला पाठ्यक्रम में डिप्लोमा/डिग्री प्राप्त लोगों के लिए कला शिक्षा में एक वर्ष के अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सिफारिश की।

अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण

दिल्ली के हिन्दी अध्यापकों को मातृभाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाने के नवाचारी दृष्टिकोणों से परिचित कराने के लिए एक 6 दिन का अभिविन्यास कोर्स आयोजित किया गया। इस कोर्स में 48 व्यक्तियों ने भाग लिया जिनमें अध्यापक, सहायक शिक्षा अधिकारी, स्कूल निरीक्षक और दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग के प्रमुख अधिकारी शामिल थे। कोर्स में भाग लेने वालों को, पहली श्रेणी में पढ़ रहे बच्चों को हिन्दी के अक्षरों से परिचित कराने के लिए बाल भारती पाठमाला में अपनाई गई नई क्रियाविधि से भी परिचित कराया गया।

हिन्दी में एक अन्य अभिविन्यास कोर्स मद्रास में 15 से 21 जनवरी 1985 तक आयोजित किया गया। इस कोर्स में तमिलनाडु व पांडिचेरी के 65 हिन्दी अध्यापकों व 15 हिन्दी प्रचारकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त गंगटोक में 4 से 11 जनवरी 1985 तक आयोजित एक 8 दिन के कोर्स के दौरान सिक्किम के मिडिल स्कूलों के 42 अध्यापकों को हिन्दी शिक्षण की क्रियाविधि से परिचित कराया गया।

केन्द्रीय विद्यालयों के अंग्रेजी अध्यापकों के प्रशिक्षण में विभाग ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन को भी सहयोग दिया।

विशेष परियोजनाएं

सामाजिक विज्ञान व मानविकी के क्षेत्रों में कुछ परियोजनाओं के कार्यान्वयन में, विभाग लगा रहा है। 1984-85 में निम्नलिखित परियोजनाओं के अन्तर्गत अनेक काम किए गए।

मूल्य शिक्षा

यह परियोजना शुरू में नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करने की दिशा में निर्दिष्ट थी। बाद में इस परियोजना का कार्यक्षेत्र, मूल्य शिक्षा के विस्तृत क्षेत्र को शामिल करने के लिए बढ़ा दिया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत पहली से बारहवीं श्रेणी तक के नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को अन्तिम रूप दिया गया। नैतिक शिक्षा पर कुमारी ए. चारी द्वारा "तीन बातों पर सोचिए (थिंक ओवर थ्री थिंग्स)" शीर्षक पर लिखित और श्री मनोज दास द्वारा "प्रोफाइल इन करेज" शीर्षक पर लिखी दो पुस्तकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया।

सीखने के लिए पढ़ना

"सीखने के लिए पढ़ना" परियोजना के अन्तर्गत पठन सामग्री तैयार करने से संबंधित कार्य जारी रहे। हिन्दी में प्राप्त सामग्री की पांडुलिपियों को अन्तिम रूप देने के लिए, हिन्दी लेखकों की एक 3 दिन की कार्यशाला 26 से 28 मार्च 1985 तक नई दिल्ली में आयोजित की गई। जाने माने हिन्दी लेखकों व विद्वानों सहित 28 व्यक्तियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

अंग्रेजी के लिए संचालन समिति की तीसरी बैठक मैसूर में 15 व 16 फरवरी 1985 को हुई। इसमें 13 सर्जनात्मक कलाकारों व अंग्रेजी के वरिष्ठ प्रोफेसरों ने भाग लिया। बैठक में सात प्रकाशनों की पांडुलिपियों की समीक्षा की गई। बाद में 5-9 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए, निम्नलिखित शीर्षकों की पांडुलिपियों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया :

- व्हाई इज़ फैटी हैप्पी ?
- ओह ! आई हैव लास्ट माई थम्प
- द शिप आफ द डेज़र्ट
- लाइ इज़ डिफिकल्ट

दृश्यों एवं दस्तावेजों के जरिए भारत का स्वतंत्रता संग्राम

इस परियोजना के अन्तर्गत, भारत के स्वतंत्रता संग्राम को विभिन्न घटनाओं, मूल विचारों व युगान्तरकारी घटनाओं से सम्बद्ध दृश्य पैनलों व लिखित विवरणों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया। दृश्य पैनल व लिखित विवरण इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि वे स्कूली बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करें और उनके मन में देशभक्ति, राष्ट्रवाद व राष्ट्रीय एकता की भावना फूंके।

राष्ट्रीय ज़नसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना ने 1984-85 में अपने पांचवें वर्ष में कदम रखा। परियोजना के अन्तर्गत मुख्य गतिविधियां राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर पर मुख्य अधिकारियों व अध्यापकों के प्रशिक्षण, मूल्यांकन के उपाय तैयार करने और जनसंख्या शिक्षा का प्रभाव आंकने के लिए अध्ययनों के इर्द-गिर्द केन्द्रित रहीं।

1984-85 में अध्यापकों को जनसंख्या शिक्षा में प्रशिक्षित करने का काम बड़े पैमाने पर किया गया। विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लगभग 8000 मुख्य कार्मिकों और लगभग 2,15,000 अध्यापकों को, इस परियोजना के कार्यान्वियन से संबंधित विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने लगभग 185 अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया।

मूल्यांकन उपाय तैयार करना, इस वर्ष में किया गया एक महत्वपूर्ण कार्य था। तैयार किए गए उपायों में जनसंख्या जागरूकता परीक्षण (स्तर क, स्तर ख और स्तर ग, हस्तपुस्तिका सहित), पाठ्यक्रम मूल्यांकन के उपाय, पाठ्यपुस्तकों के पाठों के मूल्यांकन के उपाय, श्रेणीकक्ष व प्रदर्शन पाठों के मूल्यांकन के उपाय, प्रशिक्षण गतिविधियों के मूल्यांकन के उपाय और शिक्षण सामग्री मूल्यांकन के उपाय शामिल हैं।

14 राज्यों में प्रयोग किए जा रहे, जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रमों व पाठ्यपुस्तकों के पाठों के गुणात्मक निर्धारण के लिए एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया और इस अध्ययन की रिपोर्ट, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक के पाठों में सुधार लाने की दृष्टि से, राज्यों में संचारित की गई।

16 राज्यों/संघशासित प्रदेशों में तात्कालिक पेंटिंग स्पर्धा आयोजित की गई। स्पर्धा का मूल विचार था "जनसंख्या स्थिति–मेरी नज़र में आज और बीस साल बाद।" राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता (स्पर्धा) के लिए 3000 से अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुईं जिनमें 240 वे भी शामिल थीं जिन्हें राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया था। राष्ट्रीय स्तर पर, प्राथमिक, मिडिल व माध्यमिक प्रत्येक वर्ग में से तीन प्रविष्टियों को पुरस्कार दिए गए।

जिन बच्चों ने पेंटिंग प्रतियोगिता में भाग लिया था उनकी कलाकृतियों में से लगभग 200 को चुनकर इन कलाकृतियों का एक एलबम, नई दिल्ली के यू एन एफ पी ए कार्यालय के सहयोग से प्रकाशित किया गया। इस एलबम के आधार पर एक श्रव्य-दृश्य किट भी, अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में, तैयार किया गया। किट का शीर्षक था "भारत, मेरे बच्चे, मेरा भविष्य (इंडिया, माइ चिल्ड्रन, माइ फ्यूचर)"।

एक अन्य महत्वपूर्ण किया गया कार्य था, जनसंख्या शिक्षा का संदेश प्रसारित करने के लिए सह-पाठ्यक्रमी गतिविधियों का आयोजन। आकाशवाणी व दूरदर्शन जैसे जनसंचार माध्यमों का भी प्रयोग किया गया और इस वर्ष में राज्यों/संघशासित प्रदेशों में, जनसंख्या से संबंधित विचारों वाली 134 वार्ताएं अध्यापकों के लिए तथा 41 वार्ताएं विद्यार्थियों के लिए प्रसारित की गईं।

स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में परीक्षाओं में जनसंख्या शिक्षा पर बनाए प्रश्नों को महत्व देने का, कुछ राज्यों/संघशासित प्रदेशों का निर्णय, इस वर्ष के दौरान का एक महत्वपूर्ण विकास था। आशा है कि इससे, स्कूल प्रणाली में जनसंख्या शिक्षा को लागू करने में सुविधा होगी।

अन्तरादेशीय दौरा कार्यक्रम के अन्तर्गत चार-चार व्यक्तियों के दो दलों में से प्रत्येक ने, एशियाई क्षेत्र के देशों में, इन देशों में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन करने के लिए दौरा किया। 3 से 18 फरवरी, 1985 तक एक दल ने चीन गणराज्य, कोरिया गणराज्य और थाइलैंड का दौरा किया जबकि दूसरे दल ने इंडोनेशिया, फिलीपीन्स और थाइलैंड का दौरा किया।

इनके अतिरिक्त, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के जनसंख्या शिक्षा एकक ने भी, विएतनामी समाजवादी गणराज्य के दो सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल की जनसंख्या शिक्षा का एक चार सप्ताह का संलग्नी कार्यक्रम आयोजित किया।

5

विज्ञान एवं गणित में शिक्षा

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के लिए एक मुख्य चिंता, स्कूल अवस्था में विज्ञान एवं गणित की शिक्षा के गुणात्मक सुधार की है। विभाग, विज्ञान एवं गणित शिक्षा से संबंधित अनुसंधान और प्रायोगिक परियोजनाओं के सूत्रण और कार्यान्वयन, पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण संबंधी अन्य सामग्री तैयार करने, और प्रशिक्षण तथा विस्तार क्रियाओं में लगा हुआ है। यह, ''स्कूलों में संगणक साक्षरता एवं अध्ययन'' परियोजना के कार्यान्वियन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर समन्वयन व मानीटर करने की एजेंसी के रूप में तथा ''अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना'' और ''अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना'' की नोडल एजेन्सी के रूप में काम करता है। विभाग राज्यों को विज्ञान एवं गणित के पाठ्यक्रम संशोभित करने तथा पाठ्य सामग्री तैयार करने में और संस्थाओं व संगठनों को उनके अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को विज्ञान एवं गणित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित करने में सहायता देता है।

विज्ञान शिक्षा

1984-85 के वर्ष में, स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में दी जाने वाली विज्ञान शिक्षा की कोटि सुधारने की ओर निर्दिष्ट अनेक कार्य हाथ में लिए गए। विभाग की प्रमुख गतिविधियों में, विज्ञान शिक्षा से संबद्ध अनुसंधान एवं प्रायोगिक परियोजनाएं, शिक्षा संबंधी सामग्री तैयार करना, आमतौर से विज्ञान की शिक्षा से संबंधित तथा विशेष रूप से भौतिक शिक्षा, रसायन शिक्षा और जैविकी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण और

विस्तार कार्य शामिल हैं। इसके अलावा विज्ञान शिक्षा के समाकलित व अन्तरा-विद्याशाखा दृष्टिकोणों के विकास से संबंधित कार्य तथा बच्चों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के आयोजन और विज्ञान क्लब की स्थापना जैसे पाठ्यचर्या के साथ के कार्य भी हाथ में लिए गए।

भौतिकी शिक्षा

इस वर्ष के दौरान 'व्यक्तिगत रूप से निर्देशित शिक्षा प्रणाली' की प्रायोगिक परियोजना पूरी की गई। इस परियोजना में सीखने वालों पर केन्द्रित, आत्म-समगामी, व्यक्तिगत रूपी और विशेषज्ञता आधारित शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया। 18 एकक अध्ययन गाइड, 18 अध्यापक गाइड और नवीं कक्षा में भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम से संबंधित विशेषज्ञता मूल्यांकन परीक्षाएं विकसित की गईं। दिल्ली के दो स्कूलों में प्रयोग किए गए। इसके अलावा ग्यारहवीं श्रेणी के, व्यक्तिगत रूप से निर्देशित शिक्षा प्रणाली के, पिछले वर्षों में विकसित और आजमाए हुए 21 भौतिकी एककों का, परियोजना में भाग लेने वाले विद्यार्थियों और अध्यापकों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पुनरावलोकन और संशोधन किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत विकसित विचारों और तकनीकों के बड़े पैमाने पर प्रचलन के लिए कदम उठाए गए। देश के विभिन्न भागों से चुने गए स्कूलों के अध्यापकों के लिए व्यक्तिगत रूप से निर्देशित शिक्षा प्रणाली पर एक तीन-दिवसीय दिशाविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 23 अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को, स्कूलों में व्यक्तिगत रूप से निर्देशित शिक्षा प्रणाली के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से दिविन्यस्त कराया गया।

एक अन्य परियोजना में, विस्तृत कोण वाले, कम कीमत के एक स्टीरियो कैमरे के डिज़ाइन का विकास हुआ। यह कैमरा, स्कूलों में शिक्षण सहायता के तौर पर इस्तेमाल किए जाने के लिए त्रिविमीय चित्र तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, नई दिल्ली में 5 से 8 फरवरी 1985 को हुई एक संगोष्ठी में लो कास्ट वाइड एंगल्ड कैमरा विद स्टीरियोस्कोपिक अटेचमेंट शीर्षक का एक निबंध प्रस्तुत किया गया। इस वर्ष में शुरु की गई अन्य अनुसंधान गतिविधियों में सर्वे आफ साइंस (फिजिक्स) लेबोरेटरी इन स्कूल्स (स्कूलों में विज्ञान (भौतिकी) प्रयोगशाला सर्वेक्षण) और 'डेवलेप्मेंट एंड फील्ड टेस्टिंग आफ मल्टीपर्पज मर्करी बैरोमीटर एंड अदर इन्नोवेशंस' (बहुउद्देश्य पारद वायुदाबमापी व अन्य नवाचारों का विकास तथा क्षेत्र परीक्षण) शामिल है।

विभाग ने, भौतिकी की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने से संबंधित अपने कार्य जारी रखे। नवीं श्रेणी की पाठ्यपुस्तक भौतिकी – भाग-1 के अंग्रेजी व हिन्दी रूपान्तरणों की पाण्डुलिपियों को अन्तिम रूप दिया गया।

रसायन शिक्षा

स्कूल स्तर पर विज्ञान पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में, प्रयोग करने के लिए प्रयोगशाला सुविधाओं की अपर्याप्तता एक बड़ी बाधा पाई गई है। वर्तमान सुविधाओं का मूल्यांकन करने के लिए 30 माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में रसायन प्रयोगशाला का सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण के आधार पर रसायन की एक आदर्श प्रयोगशाला का डिज़ाइन तैयार किया गया और वर्तमान प्रयोगशालाओं में, उनके अधिकतम उपयोग के लिए सुधारों के लिए निर्देश विकसित किए गए।

इलाहाबाद में 12 से 15 फरवरी 1985 को हुई एक कार्यशाला में नवीं श्रेणी के लिए नए पाठ्यक्रम पर आधारित, रसायन के एक आदर्श प्रायोगिक पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। इस कार्यशाला में रसायन शिक्षा के 23 विशेषज्ञों ने भाग लिया। 25 फरवरी से 2 मार्च 1985 तक हुई एक 6 दिन की कार्यशाला में

माडलों का उपयोग सुविधाजनक बनाने, प्रयोगों के प्रदर्शन, स्कूल अवस्था में रसायन शिक्षा में धारणा-आधारित प्रयोगों के प्रचलन के इरादे से, उच्चतर माध्यमिक अवस्था में प्रयोगशाला में किए जाने वाले प्रयोगों पर शिक्षण-सामग्री की एक रूपरेखा तैयार की गई। इस कार्यशाला में 32 अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। 11 से 16 मार्च, 1985 तक हुई एक अन्य 6 दिवसीय कार्यशाला में परमाणुओं, अणुओं और क्रिस्टलों के त्रिविमीय माडल तैयार किए गए। इस कार्यशाला में 18 अध्यापकों ने भाग लिया और सुलभ स्थानीय पदार्थों से कम कीमत वाले माडल तैयार किए गए।

अन्य गतिविधियों में उच्चतर माध्यमिक अवस्था में रसायन के नए प्रसंगों के मापदण्ड विकसित करना, उच्चतर माध्यमिक अवस्था के लिए रसायन के आदर्श प्रायोगिक पाठ्यक्रम विकसित करना, ग्यारहवीं श्रेणी की रसायन पाठ्यपुस्तक के लिए परीक्षा सामग्री विकसित करना, उच्चतर माध्यमिक अवस्था में रसायन के प्रायोगिक पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए निर्देश तैयार करना और अध्यापकों के लिए ग्यारहवीं श्रेणी की रसायन की पाठ्यपुस्तक के लिए गाइड तैयार करना शामिल है। यह सामग्री ऐसी कार्यशालाओं के माध्यम से तैयार की गई, जिनमें रसायन शिक्षा विशेषज्ञ, अध्यापक शिक्षक और माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक अवस्था में रसायन पढ़ाने वाले अध्यापक शामिल थे। नवीं श्रेणी के लिए रसायन की पाठ्यपुस्तक के अंग्रेजी व हिन्दी रूपांतर और फोटोग्राफी, डेरी, फसल उत्पादन व प्रयोगशाला तकनीशियन जैसे रसायन से संबंधित मसलों पर पूरक पठन सामग्री, वर्ष के दौरान विकसित अन्य सामग्रियां हैं।

जैविकी शिक्षा

वर्ष के दौरान पहली से बारहवीं श्रेणी तक के लिए जैविकी पाठ्यक्रम के गहरे अध्ययन से संबंधित कार्य जारी रहा। एक अन्य परियोजना में, विभिन्न राज्यों व संघ शासित प्रदेशों में, पहली से बारहवीं श्रेणी के लिए अनुसरण किए जा रहे जैविकी पाठ्यक्रमों का विश्लेषण किया गया। धारणाओं के अनुक्रमण, विषय- वर्णन की गहराई, नए विचारों के प्रचलन और अन्य पाठ्यक्रमों की तुलना में इनकी अन्तर्वस्तु के स्तर के संदर्भ में पाठ्यक्रमों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से प्राप्त जानकारियों के आधार पर जैविकी पाठ्यक्रम के पुनर्नवीकरण और अद्यतन बनाने के लिए कार्रवाई शुरु की गई।

इस वर्ष में नवीं श्रेणी की आधारी जैविकी पाठ्यपुस्तक तैयार की गई। नवीं श्रेणी की जैविकी की आधारी पाठ्यपुस्तक के हिन्दी रूपांतर के खण्ड-1 भाग-1 को भी अंतिम रूप दिया गया।

अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना

विज्ञान शिक्षा के लिए, युनाइटेड किंगडम में उन्नत प्रशिक्षण के लिए, राज्यों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन से अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को चुनने के लिए, विभाग ने, अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत एक संगोष्ठी एवं साक्षात्कार का आयोजन किया। उपलब्धि परीक्षाओं में प्रदर्शन, चुनींदा शीर्षकों पर तात्कालिक भाषण/प्रस्तुति, पाठ-योजना की प्रस्तुति और साक्षात्कार के आधार पर अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को चुना गया। संगोष्ठी एवं साक्षात्कार में भाग लेने वाले 53 अध्यापकों में से 20 अध्यापक अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना के अंतर्गत चुने गए। इसके अतिरिक्त बहुगुणन प्रभाव पैदा करने के लिए दो प्रशिक्षणोत्तर कार्यशालाएं, एक मध्य प्रदेश में और एक उत्तर प्रदेश में, आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं के दौरान, वर्ष 1983-84 में अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना के अंतर्गत युनाइटेड किंगडम में प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों ने इन राज्यों के अन्य अध्यापकों को अपने अनुभव बताए।

विज्ञान शिक्षा के लिए, समाकलित और अंतरा विद्या-शाखा दृष्टिकोण

प्रारंभिक अवस्था में विज्ञान के समाकलित पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य जारी रहे। किए गए प्रमुख कार्यों में, समाकलित विज्ञान-पाठ्यपुस्तकों के लिए परीक्षा सामग्री तैयार करना, छठी से आठवीं श्रेणी के लिए समाकलित विज्ञान पाठ्यक्रम के लिए विज्ञान किट गाइड प्रयोग करके किए जा सकने वाले कार्यों की पहचान, पांचवी श्रेणी में पर्यावरण अध्ययनों में विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए निर्देश व जरिए तैयार करना और एक समाकलित विज्ञान किट तैयार करना शामिल है। पर्यावरण प्रणाली के शिक्षण के कर्मिकों के प्रशिक्षण के इरादे से, पर्यावरण अध्ययन में साधन कार्मिकों के लिए दो, दस दिन के दिव्विन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। कर्नाटक के 26 साधन व्यक्तियों और महाराष्ट्र के 29 साधन व्यक्तियों को, प्राथमिक अवस्था में पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया गया। शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए विज्ञान के अन्तरा-विद्याशाखीय आधार पर एपीड-यूनेस्को द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन राष्ट्रीय कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, अन्तरा विद्याशाखीय विज्ञान सीखने के लिए अनिवार्य मूलभूत विचारों का निर्धारण करना था। सामान्य शिक्षा की अवस्था में विद्यार्थियों द्वारा इन मूलभूत विचारों को, प्राप्त करना संभवतः उन्हें उनके भविष्यत प्रभावी रहन-सहन में और अन्तरा विद्याशाखीय विज्ञानों में उच्चतर अध्ययन में शामिल होने के लिए आधार के रूप में सहायक होगा। कार्यशाला के दौरान हुए विचार-विमर्श पर आधारित, कार्यक्रम की रिपोर्ट तैयार की गई और विभिन्न शिक्षण संस्थाओं को भेजी गई। कार्यशाला के दौरान की गतिविधियों में, अन्तरा-विद्याशाखीय प्रकृति के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए नवीं से बारहवीं श्रेणी तक के, एन.सी.ई.आर.टी. के विज्ञान पाठ्यक्रम का विश्लेषण अन्तरा-विद्याशाखीय विज्ञान सीखने के लिए अपेक्षित मूलभूत विचारों की पहचान और अन्तरा-विद्याशाखीय विज्ञान सीखने के लिए अपेक्षित पढ़ाने-सीखने की स्त्रातजी विकसित करना शामिल है।

विज्ञान शिक्षा से संबंधित सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां

बच्चों के लिए चौदहवीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी उदयपुर में 11 से 17 नवंबर 1984 को होनी थी, किन्तु भारत की स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के दुःखद निधन के कारण इसे रद्द करना पड़ा। प्रदर्शनी के आयोजन के लिए पूरी तैयारियां कर ली गई थीं। प्रदर्शनी में रखे जाने के लिए, 29 राज्यों व संघशासित प्रदेशों से 137 प्रदर्शन चुने गए थे।

विभाग ने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी के आयोजन के लिए राज्यों व संघशासित प्रदेशों को शैक्षिक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता दी। विभाग ने, विषय प्रकरणों, प्रदर्शनी में शामिल किए जाने वाली किस्म के प्रदेशों और प्रदेशों के वर्गीकरण के लिए कसौटियों की एक सूची तैयार की और राज्यों व संघशासित प्रदेशों को दी।

परिषद् में राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र की स्थापना से संबंधित संगठनात्मक मामलों के बारे में चर्चा करने के लिए अनेक बैठकें हुईं। फरवरी 1985 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रांगण में, राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र के तत्वावधान में एक विज्ञान क्लब की स्थापना की गई। यह क्लब, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय स्थित केन्द्रीय विद्यालय व मदर्स इन्टरनेशनल स्कूल की माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक श्रेणियों में पढ़ रहे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। इस विज्ञान क्लब में 125 बच्चे भरती हुए। बच्चे, हफ्ते में दो दिन, लगभग दो घण्टे प्रतिदिन, अपनी पसंद की परियोजनाओं और प्रयोगों पर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग की फैकल्टी के मार्गदर्शन में काम करते हैं। परियोजना व अन्य सुविधाओं के लिए अपेक्षित कार्य सामग्री, विज्ञान

एवं गणित शिक्षा विभाग द्वारा उपलब्ध कराई जाती है।

विज्ञान केन्द्र के लिए दो विषय समितियां, एक भवन के लिए और एक विज्ञान उपस्करों के लिए, गठित की गईं। विज्ञान केन्द्र में किस प्रकार के कार्य किए जाएं और उसके लिए कितनी जगह चाहिए, इसे भी, दिल्ली व आसपास के स्कूलों की आवश्यकताओं के निर्धारण और विश्लेषण के आधार पर तय कर लिया गया है। विज्ञान केन्द्र द्वारा, सामान्य जागरूकता कार्यक्रम, विद्यार्थी-परियोजनाएं, प्रयोगशाला कार्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रम किए जाने की आशा की जाती है।

विज्ञान क्लब किटों के प्रयोग पर दो 15 दिवसीय पाठ्यक्रम आयोजित करके उत्तर-पूर्वी राज्यों व संघशासित प्रदेशों के 23 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। इनके अतिरिक्त मध्यप्रदेश व राजस्थान के अध्यापकों के लाभ के लिए दो पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें, अध्यापकों को, प्रारंभिक व माध्यमिक अवस्थाओं में पढ़ाने में विज्ञान किटों के उपयोग से परिचित कराया गया।

गणित शिक्षा

गणित शिक्षा से संबंधित अनुसंधान विकास व प्रशिक्षण कार्य, विभाग के कार्य का एक महत्वपूर्ण पहलू था। गणित सीखने में सुधार लाने के लिए, विभाग द्वारा चालू की गई अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत, गणित के अध्ययन में गिरावट और उसे ठीक करने के उपायों पर एक अन्वेषण किया गया। एक अन्य परियोजना के अन्तर्गत + 2 अवस्था में गणित पढ़ाने में सामान्य धारणात्मक त्रुटियों का विश्लेषण और उन्हें ठीक करने के लिए उपाय के रूप में सरल तरीकों और तकनीकों का विकास हाथ में लिया गया। एक तीसरी अनुसंधान परियोजना, लड़कियों (सामाजिक रूप से अक्षम लड़कियों सहित) के लिए गणित में अव-उपलब्धियों के निर्धारिक कारकों की पहचान की दिशा में निर्दिष्ट थी। अध्ययन के दौरान पहचानी गई, गणित में कमजोरियों के निदान के आधार पर एक स्वावलंबी उपचारी कोर्स विकसित किया गया।

गणित के क्षेत्र में हुई प्रमुख विकास गतिविधियों में, नवीं श्रेणी के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक तैयार करना, बीजगणित में समृद्धिकारक सामग्री तैयार करना, गणित में अनुप्रयोग मापदण्ड तैयार करना और नवीं श्रेणी के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक का हिन्दी रूपांतर तैयार करना शामिल है। ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी की गणित की पाठ्यपुस्तक में संशोधन करने के लिए, इनका पुनरावलोकन किया गया।

गणित शिक्षा में, युनाइटेड किंगडम में उन्नत प्रशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्ति हेतु, अध्यापकों के चयन के लिए, विभाग ने अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत एक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं साक्षात्कार का आयोजन किया। विभिन्न राज्यों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 62 प्रत्याशियों में से, अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए 19 को चुना गया। परियोजना के अन्तर्गत अनुवर्ती कार्यक्रम के रूप में, दो कार्यशालाएं क्रमशः दिल्ली व गोआ में आयोजित की गईं। 1983-84 में अखिल भारतीय गणित शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों ने, इन कार्यशालाओं के दौरान, इन राज्यों के अध्यापकों को अपने अनुभव बताए।

संगणक (कम्प्यूटर) शिक्षा

विद्यार्थियों को, कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोगों की मोटी-मोटी जानकारी देने के लिए, स्कूलों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन 1984 में शुरू किया गया। इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 1984 में 42 साधन केन्द्रों की पहचान की गई। भारत के विभिन्न भागों के 250 स्कूलों में यह कार्यक्रम शुरु किया गया।

'क्लास' (कम्प्यूटर साक्षरता एवं स्कूली पढ़ाई) परियोजना के पनुरावलोकन तथा कार्यान्वियन के लिए नीति तय करने के लिए, विज्ञान केन्द्रों के समन्वयकों, योजनाकारों और विषय विशेषज्ञों की अनेक बैठकें आयोजित की गईं। 16 मार्च 1985 को हुई एक बैठक में, गैर सरकारी संस्थाओं, सरकारी उद्यमों और व्यक्तियों द्वारा, संगणक शिक्षा के लिए विकसित साफ्टवेयर का मूल्यांकन, विद्यार्थियों द्वारा उनके उपयोग की सम्भाव्यता आंकने के लिए किया गया।

संगणक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। 'क्लास' परियोजना के कार्यान्वयन में लगे स्कूली अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए? इनके दौरान 75 अध्यापकों को, स्कूलों में कम्प्यूटर प्रयोग करने और उस पर काम करने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त, 'क्लास' परियोजना के कार्यान्वियन में लगे दस स्कूलों के अध्यापकों के लिए एक तीन दिवसीय दिक्विन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में, अध्यापकों को साफ्टवेयर पैकेज प्रदर्शित किए गए। इसके अलावा, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के प्रशासनिक, लेखा और पुस्तकालय, स्टाफ के लिए, उनके रोज़मर्रा के काम में कम्प्यूटर के उपयोग पर एक 6 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 12 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया।

राज्यों व संघशासित प्रदेशों को सहायता तथा अन्य कार्य

विभाग ने अरुणाचल प्रदेश को, तीसरी, चौथी व पांचवीं श्रेणी के लिए पर्यावरण अध्ययन – भाग-2 की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए सहायता दी। स्थानीय अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को साथ लेकर शिक्षण-सामग्रियां तैयार कीं। विभाग ने, विज्ञान के सभी विषयों के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में संशोधन करने के लिए, मेघालय, हरियाणा और पंजाब सरकारों को भी सहायता दी। माध्यमिक अवस्था के लिए पाठ्यपुस्तकें लिखने के लिए लेखकों के चुनाव में भी हरियाणा राज्य को सहायता दी गई। परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालयों, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के स्कूलों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए सहायता दी गई। कम्प्यूटर शिक्षा के लिए देशी साफ्टवेयर पैकेज बनाने के लिए विभाग ने हैदराबाद की कम्प्यूटर मेन्टेनेन्स कार्पोरेशन के साथ सहयोग किया।

इनके अलावा, विभाग ने, अल्पसंख्यकों के स्कूलों के अध्यापकों के लिए, विज्ञान एवं गणित शिक्षा पर एक 10 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। 20 फरवरी से 1 मार्च 1985 तक हुए इस कार्यक्रम में अल्पसंख्यकों के स्कूलों के 45 अध्यापकों को स्कूली स्तर पर विज्ञान एवं गणित पढ़ाने के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया।

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष में 15 प्रकाशन निकाले गए। इनमें पाठ्यपुस्तकें, शोध पत्र, संगोष्ठियों व कार्यशालाओं की रिपोर्ट और पहली से बारहवीं श्रेणियों तक के पाठ्यक्रमों के लिए अन्य सहायक सामग्री शामिल हैं। 1984-85 में निकले प्रकाशनों की सूची नीचे दी जा रही है:

क्रम सं.	शीर्षक/पत्रिका का नाम
1.	स्कूल साइंस–पत्रिका–4 अंक
2.	"ए लो कास्ट वाइड-एंगल स्टीरियो कैमरा" शीर्षक का एक निबंध (अनुलिपिबद्ध)
3.	**ओशन्स** में प्रश्नोत्तर पर एक लेख, स्कूल साइंस पत्रिका में प्रकाशित
4.	"आस्पेक्ट्स आफ लो कास्ट स्कूल बिल्डिंग एण्ड फर्नीचर डिज़ाइन विद स्पेशल रेफरेंस टु प्राइमरी स्कूल" शीर्षक का एक निबंध (अनुलिपिबद्ध)
5.	फिजिक्स–भाग-1, **माध्यमिक विद्यालयों** (नवीं श्रेणी) के लिए एक पाठ्यपुस्तक
6.	केमिस्ट्री करिकुलम एण्ड टीचिंग मेटीरियल्स (अनुलिपिबद्ध)
7.	कन्सेप्ट बेस्ड एक्सपेरिमेन्ट्स इन केमिस्ट्री उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए (अनुलिपिबद्ध)
8.	केमिस्ट्री–भाग-1 नवीं श्रेणी के लिए पाठ्यपुस्तक
9.	गाइडलाइन्स फार इन्वेस्टिगेटरी प्रोजेक्ट्स इन केमिस्ट्री
10.	एनेलिसिस आफ + 2 मेथेमेटिक्स सिलेबाइ आफ एन.सी.ई.आर.टी., डिफरेंट स्टेट्स एण्ड आल इंडिया कम्पीटीटिव एक्जामिनेशन्स
11.	सम कामन डिफेक्ट्स इन फ्रेमिंग मल्टीपल चाइस टाइप क्वेश्चंस इन मेथेमेटिक्स, स्कूल साइंस पत्रिका में प्रकाशित
12.	मेथेमेटिकल मेथड आफ बैलेंसिंग केमिकल इक्वेशन, इंट.ज.मैथ.एजू.सा.टेक्नो. (यू.के.) में प्रकाशित
13.	टेक्स्ट बुक आफ मेथेमेटिक्स (गणित की पाठ्य पुस्तक) नवीं श्रेणी के लिए (अंग्रेजी व हिन्दी रूपान्तर)
14.	टेक्स्ट बुक आफ बेसिक बायोलाजी, वाल्यूम 1, पार्ट 1, नवीं श्रेणी के लिए (अंग्रेजी रूपान्तर)
15.	'क्लास': कम्प्यूटर लिटरेसी एण्ड स्टडीज इन स्कूल्स

स्कूलों के लिए विज्ञान उपस्कर

कार्यशाला विभाग, स्कूलों के लिए विज्ञान उपस्करों के डिजाइन बनाने, आदि-प्रारूप विकसित करने, विज्ञान किटों के घान उत्पादन और विज्ञान उपस्करों के विकास और उपयोग पर प्रशिक्षुओं और राज्य स्तरीय कार्मिकों के प्रशिक्षण में लगा रहा है। संघीय जर्मन गणराज्य की सहायता से, विज्ञान उपस्कर उत्पादन की परियोजना के कार्यान्वयन के लिए मानीटर करने वाली एजेन्सी के रूप में भी यह काम करता है। प्रयोगशाला उपस्करों, कार्यालय उपस्करों, मोटर गाड़ियों, गर्म व ठंड मौसम के उपस्करों की मरम्मत व रखरखाव का काम

भी इसने अपने हाथ में लिया है और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा अपेक्षित उपस्कर और फर्नीचर की खरीद, भंडारण और वितरण में भी लगा हुआ है।

विज्ञान उपस्कर का डिज़ाइन बनाना

प्रयोगशाला में प्रयोग करने के लिए अपेक्षित प्रत्यावर्ती धारा (ए.सी. करंट) और दिष्ट धारा (डी.सी. करंट) के लिए एक छोटे हस्तचालित जेनेरेटर के डिज़ाइन को, वर्ष 1984-85 में अंतिम रूप दिया गया। एक कम लागत वाला ऊर्ध्वस्थ प्रोजेक्टर विकसित किया गया जिसका प्रदर्शन रुढ़िगत मंहगे प्रोजेक्टर के प्रदर्शन से अच्छा मेल खाता था। कम लागत वाले इस ऊर्ध्वस्थ प्रोजेक्टर की उत्पादन लागत रूढ़िगत प्रोजेक्टर की तुलना में कुल 1/10 थी। इस प्रोजेक्टर की एक बड़ी खासियत, पृष्ट दृश्य प्राजेक्शन की अतिरिक्त सुविधा है।

प्राथमिक स्कूल के कम लागत वाले भवन व फर्नीचर के उपलब्ध मानकों का एक अध्ययन किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन में, प्राथमिक स्कूल के कम लागत वाले भवन एवं फर्नीचर पर एक निबंध प्रस्तुत किया गया। इस निबंध की प्रस्तुति के साथ-साथ, कार्यशाला विभाग द्वारा विकसित, श्रेणी कक्ष के कम लागत वाले फर्नीचर की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

आदि प्रारुपों का विकास और विज्ञान किटों का घान उत्पादन

विभाग द्वारा किए गए प्रमुख विकास कार्यों में, आण्विक माडलों पर एक किट तैयार करना, माध्यमिक स्तर पर विज्ञान पढ़ाने के लिए उपस्कर तैयार करना, दस्ती औजारों, यंत्रों और देसी डिज़ाइन के बहुप्रयोगी औजारों के 58 नगों वाली एक विज्ञान क्लब किट का डिज़ाइन बनाना शामिल है। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक द्वारा गठित एक समिति ने विज्ञान उपस्कर किट के डिज़ाइन की विवेचना की और किट में सुधार से संबंधित कार्य हाथ में लिया गया। विभाग ने, बच्चों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के लिए प्रदर्श, पैनल स्टेंड आदि भी तैयार किए। प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के एक स्टाल "न्यू वेज़ आफ लर्निंग (सीखने के नए रास्ते)" में विभाग द्वारा तैयार की गई एक विद्युत किट और विज्ञान क्लब किट प्रदर्शित की गई। विभिन्न राज्यों व संघ शासित प्रदेशों के अनुरोध पर विज्ञान किटों, समाकलित विज्ञान किटों और विज्ञान क्लब किटों का उत्पादन हाथ में लिया गया। इस वर्ष में रु. 1251180.00 मूल्य की किटें तैयार की गईं और विभिन्न राज्यों को भेजी गईं।

प्रशिक्षण एवं विस्तार गतिविधियां

दिल्ली के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के 7 प्रशिक्षुओं को तथा एक डिप्लोमा धारी प्रशिक्षु को विभिन्न व्यापारों में प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त राज्य शै.अनु.प्र. परिषदों/राज्य शिक्षा संस्थानों के अध्यापकों, कार्मिकों तथा विदेशों के फेलो और विज़िटरों को विज्ञान उपस्कर के डिज़ाइन, विकास और उत्पादन से परिचित कराया।

संघीय जर्मन गणराज्य से सहायता प्राप्त परियोजना

शिक्षा मंत्रालय ने, विज्ञान उपस्करों के व्यापक उत्पादन की परियोजना, दो राज्यों में हाथ में ली है। संघीय जर्मन गणराज्य से सहायता प्राप्त यह परियोजना मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में कार्यान्वित हुई। परियोजना के

अन्तर्गत, इस वर्ष में, इलाहाबाद व भोपाल के उत्पादन केन्द्रों की स्थापना से संबंधित कार्य शुरु किया गया। कार्यशाला विभाग इस परियोजना को मानीटर करता है। इस परियोजना पर राज्य स्तर पर काम कर रहे तीन कार्मिकों को, पश्चिमी जर्मनी में उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजा गया। विभाग, इस परियोजना के कार्यान्वित करने वाले राज्यों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहा है, विशेषकर विज्ञान उपस्करों के विकास व उत्पादन तथा परियोजना के कार्यान्वियन से जुड़े हुए तकनीकी स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए क्षमता बनाने में।

मरम्मत और रखरखाव कार्य

रू. 2.58 लाख की कीमत का फर्नीचर, उपस्कर, अतिरिक्त हिस्से-पुर्जे और कच्चा माल केन्द्रीय रूप से प्राप्त किया गया, भंडार में रखा गया और वितरित किया गया/राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान व रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के अन्य घटक यूनिटों के विभिन्न विभागों में उपलब्ध उपस्कर, फर्नीचर, वाहनों, गर्म व सर्द मौसम के उपस्करों, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, विद्युत और इलेक्ट्रानिक जुगलों की मरम्मत व रखरखाव के लिए उपयोग में लाया गया।

6

शिक्षा का व्यवसायीकरण

राज्यों और संघशासित क्षेत्रों को आवश्यक अकादमिक निवेश प्रदान करना शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) का बहुमुखी दायित्व है और यह विभाग इस कार्य को देश में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर उच्च माध्यमिक शिक्षा तथा समाजीय लाभकारी उत्पादक कार्य व्यवसायीकरण (एस.यू.पी.डब्ल्यू.) नामक द्विकार्य वाली अभिविन्यस्त शिक्षा योजनाओं के माध्यम से सम्पन्न करता है। इस विभाग के मुख्य कार्यों में शामिल हैं:

- अनुदेशी-पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री का विकास
- व्यावसायिक अध्यापकों के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- राज्य कर्मचारियों तथा आधार व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम
- कार्योन्मुखी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान
- विभिन्न संगठनों को परामर्श

स्टाफ़ के सदस्यों में उद्यान विज्ञान, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, पैरा-चिकित्सीय, गृह विज्ञान और शिक्षा के 11

अकादमिक स्टाफ़ के सदस्य हैं और 16 सदस्य सहायक स्टाफ़ के हैं।

अनुसंधान

12वीं कक्षा के बाद व्यावसायिक विद्यार्थी क्या अनुसरण करते हैं, इसके बारे में एक अनुसंधान अध्ययन किया गया। इस अध्ययन ने चार वर्ष की अवधि (1979-82) में चार राज्यों के लगभग 143 स्कूलों को सन्निविष्ट करते हुए कई रुचिकर तथ्यों को प्रकट किया जोकि 'व्यावसायिक स्पैक्ट्रम अध्ययन के विद्यार्थियों के माध्यमिकोत्तर अनुसरण' नामक प्रकाशन में उल्लिखित हैं। यह पाया गया कि अधिकतर व्यावसायिक विद्यार्थी (67-77.8 प्रतिशत) सफलतापूर्वक पास हुए और कर्नाटक के लगभग 44 प्रतिशत विद्यार्थियों को रोज़गार सुलभ हुआ जबकि रोज़गार स्थिति महाराष्ट्र तथा अन्य राज्यों में काफ़ी निराशाजनक थी। रोज़गार क्षमता पैरा-चिकित्सीय व्यावसायिक विद्यार्थियों की उच्चतम (74 प्रतिशत) थी, उसके बाद दूसरे क्षेत्रों का नम्बर आता है, गृह विज्ञान (59.5 प्रतिशत), तकनीकी (57.9 प्रतिशत), कृषि (46.3 प्रतिशत) और वाणिज्य आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम (28 प्रतिशत)। अध्ययन की प्रतियां व्यावसायिक शिक्षा से सम्बद्ध देश की सारी एजेंसियों को वितरित की गई हैं।

प्रशिक्षण

व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसायों में ज्ञान व विशेषज्ञता को अद्यतन करने के लिए वर्ष 1984-85 के दौरान व्यावसायिक शिक्षा विभाग ने पांच अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। अध्यापकों के आवश्यक व्यावसायिक कौशलों को विकसित करने के लिए विशिष्ट संस्थाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये और विशिष्ट संस्थाओं की ही आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं तथा विशेषज्ञता का उपयोग किया गया। सहभागियों को अपेक्षित सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया गया और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान दिये गये लैक्चरों/प्रयोग के आधार पर संकलित की गई संदर्भ पुस्तकें व्यवसायों में दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विवरण निम्न प्रकार हैं:

(i) घरेलू बिजली औज़ारों की मरम्मत और सेवा संबंधी अध्यापकों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम बंगलौर में 14 मई से 2 जून, 1984 तक आयोजित किया गया। इसमें 21 सहभागी हाजिर थे।

(ii) आटोमोबाइल सेवा और रखरखाव से संबंधित व्यावसायिक अध्यापकों का एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम पूना में 21 मई से 9 जून, 1984 को आयोजित किया गया। इसमें 12 सहभागी थे।

(iii) रेशम उत्पादन में एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम मैसूर में 22 मई से 18 जून, 1984 तक आयोजित किया गया। इसमें 28 सहभागी थे।

(iv) वाणिज्य-लेखाविधि, कार्यालय प्रबंध और आशुलिपि के व्यावसायिक अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम सूरत में 22 मई से 18 जून, 1984 तक आयोजित किया गया। इसमें 43 सहभागी थे।

(v) डेरी उद्योग पर एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम करनाल में 11 जून से 8 जुलाई, 1984 तक आयोजित किया गया। इसमें 13 सहभागी थे।

विकास

विकासात्मक गतिविधियों को निम्नलिखित कारणों की वजह से उच्च अग्रता प्रदान की गईः (क) व्यावसायिक विद्यार्थियों और अध्यापकों के पास उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समुचित अनुदेशी सामग्रियां नहीं हैं, और (ख) राज्यों में प्रचलित ज्यादातर व्यावसायिक कार्यक्रमों के पाठ्यविवरण में समुचित व्यावसायिक अभिविन्यास, उद्देश्यों की स्पष्टता तथा सिद्धांत व प्रयोग के सम्मिश्रण आदि का अभाव है, जिसकी वजह से वर्तमान पाठ्य विवरण के तात्कालिक संशोधन तथा व्यावसायिक कोर्सों के लिए क्षमता आधारित माडल पाठ्यविवरण के विकास की आवश्यकता है।

विभाग ने कई कार्यशालाएं आयोजित कीं जिनका फल निम्न प्रकार है:

- 18 व्यावसायिक कोर्सों के लिए न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या का विकास।
- विडियो रिसीवर पर प्रोटोटाइप किट का विकास।
- यांत्रिक इंजीनियरी में मापदंडों का विकास।
- विद्युत वायरिंग में प्रयोगशाला दीपिका का विकास।
- अन्तर्देशीय मछली पालन में अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका का विकास।
- बहूद्देश्य कार्यकर्ता कोर्स के लिये दो पूरक पाठमालाओं का विकास।
- आन्ध्र प्रदेश में नौ व्यावसायिक पाठ्यविवरणों का संशोधन।
- व्यावसायिक कोर्सों के लिए छः अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिकाओं, अध्यापक मार्गदर्शिकाओं और पूरक पाठमालाओं का पुनरीक्षण एवं सम्पादन।

कार्यशालाओं में विषय विशेषज्ञों, सुविज्ञों, नया क्षेत्र अनुभव रखने वाले वृति-विदों, रोज़गार प्रदान करने वाली एजेंसियों के प्रतिनिधियों और व्यावसायिक अध्यापकों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं में विकसित की गई सामग्रियों को संबंधित राज्यों को उपलब्ध कराया जाएगा और ये देश में व्यावसायिक शिक्षा की प्रोन्नति की दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. की देन होगी।

आयोजित कार्यशालाओं का विवरण निम्न प्रकार है:

(i) "मछली पालन में न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता की पहचान की कार्यशाला" केन्द्रीय मछली पालन संस्थान, बम्बई, में 19 से 24 मार्च, 1984 तक आयोजित की गई। इसमें 31 सहभागी थे।

(ii) "व्यावसायिक वाणिज्य विषय–लेखाविधि और लेखा परीक्षण, कर विधि–में न्यूनतम क्षमता की पहचान की कार्यशाला" एन.आई.ई. में 14 से 20 सितम्बर, 1984 तक आयोजित की गई। इसमें 14 सहभागी थे।

(iii) "न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या संबंधी कार्यशाला (क) विद्युत मोटरों की मरम्मत, रख-रखाव और पुनर्लपेटन, (ख) रेडियो और टेलीविज़न की मरम्मत व

रख-रखाव" बंगाल इंजीनियरी कालेज, हावड़ा में 26 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 1984 तक आयोजित की गई। इसमें 22 सहभागी थे।

(iv) "पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा और क्रेच प्रबंध संबंधी न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास की कार्यशाला" एन.आई.ई. में 10 से 15 दिसम्बर, 1984 तक आयोजित की गई। इसमें 10 सहभागी थे।

(v) "कृषि में तीन व्यावसायिक कोर्स करने हेतु न्यूनतम क्षमता की पहचान संबंधी कार्यशाला" एन.आई.ई. में 9 से 14 जनवरी, 1985 तक आयोजित की गई। इसमें 23 सहभागी थे।

(vi) "न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या कार्यशाला (क) ग्रामीण इंजीनियरी प्रौद्योगिकी और (ख) श्रव्य-दृश्य टेक्नीशियन" इलाहाबाद में 9 से 14 जनवरी, 1985 तक आयोजित की गई। इसमें 19 सहभागी थे।

(vii) "मुद्रण और जिल्दबंदी टैक्नालोजी संबंधी न्यूनतम क्षमता की पहचान वाली कार्यशाला" एन.बी.आई. पालिटैक्नीक राजाजी नगर, बंगलौर में 7 से 11 जनवरी, 1985 तक आयोजित की गई। इसमें 15 सहभागी थे।

(viii) "रेशम उत्पादन में न्यूनतम क्षमता की पहचान संबंधी कार्यशाला" सी.एस.आर. संस्थान, मैसूर में 14 से 18 जनवरी, 1985 तक आयोजित की गई। इसमें 12 सहभागी थे।

(ix) "पुस्तकालय विज्ञान में व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास संबंधी कार्यशाला" का आयोजन एन.आई.ई. में 11 से 16 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 12 सहभागी थे।

(x) "अन्तर्देशीय मछली पालन में अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका के विकास संबंधी कार्यशाला" का आयोजन सी.आई.टी. शिक्षा, बम्बई, में 4 से 13 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 28 सहभागी थे।

(xi) "बहूद्देश्य स्वास्थ्य कार्यकर्ता व्यावसायिक कोर्स संबंधी 2 पूरक पाठमालाओं के विकास संबंधी कार्यशाला" का आयोजन मौलाना आज़ाद मैडिकल कालेज, नई दिल्ली में 21 फरवरी से 2 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 14 सहभागी थे।

(xii) "क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में सेवापूर्व कोर्सों के लिए फ्रेमवर्क विकास संबंधी कार्यशाला" का आयोजन एन.आई.ई. में 21 से 23 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 26 सहभागी थे।

(xiii) "यांत्रिक इंजीनियरी में चार विषयों में मापदंडों के विकास संबंधी कार्यशाला" का आयोजन एन.आई.ई. में 19 से 24 जनवरी, 1985 तक किया गया। इसमें 10 सहभागी थे।

(xiv) "विद्युत तार, प्राक्कलन और लागत निर्धारण संबंधी प्रयोगशाला दीपिका विकास पर कार्यशाला (फेज़-1)" का आयोजन तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, कलकत्ता में 1 से 8 फरवरी, 1985 तक किया गया। इसमें 19 सहभागी थे।

(xv) "ट्रांजिस्टराइज्ड रिसीवर पर प्रोटोटाइप संबंधी कार्यशाला" का आयोजन आई.आई.टी.

मद्रास में 17 अक्तूबर 1984 को किया गया। इसमें 8 सहभागी थे।

(xvi) "नेत्र टैक्नीशियन और पुनर्वास में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास से संबंधित कार्यशाला" का आयोजन एन.आई.ई. में 21 से 26 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 11 सहभागी थे।

(xvii) "अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका परीक्षण संबंधी कार्यशाला (क) कृषि मौसम विज्ञान, (ख) जल प्रबंध का आयोजन कृषि कालेज, हैब्बल, बंगलौर में 1 से 5 नवम्बर, 1984 तक किया गया। इसमें 8 सहभागी थे।

(xviii) "डेरी उद्योग में पढ़ाई सामग्रियों का पुनरीक्षण तथा उन्हें अंतिम रूप देने से संबंधित कार्यशाला का आयोजन एन.डी.आर.आई., करनाल, में 19 से 23 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 19 सहभागी थे।

(xix) "सूक्ष्म जीवविज्ञान और संक्रामक रोग संबंधी पूरक पाठमाला के पुनरीक्षण की कार्यशाला" एम.ए. मैडिकल कालेज, दिल्ली, में 18 से 20 मार्च, 1985 तक आयोजित की गई। इसमें 5 सहभागी थे।

(xx) "पाठ्यविवरण संशोधन कार्यशाला" का आयोजन इंटरमिडिएट शिक्षा मंडल, आन्ध्र प्रदेश हैदराबाद, में 7 से 11 नवम्बर, 1984 तक किया गया। इसमें 36 सहभागी थे।

(xxi) "बी.आई.ई. हैदराबाद में पाठ्यविवरण संशोधन कार्यशाला" का आयोजन इंटरमीडिएट शिक्षा मंडल आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद में 21 से 25 मार्च, 1985 तक किया गया। इसमें 22 सहभागी थे।

विस्तार

नीचे और उच्चतर स्तरों पर कार्यान्वियन करने वाला कर्मचारी वर्ग किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम के सफल संचालन में अपना अत्यूतम योगदान तभी दे सकता है यदि वे बाद वालों के प्रति पर्याप्त संकल्पनात्मक स्पष्टता रखते हों। यही बात शिक्षा व्यावसायीकरण और एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यक्रमों पर भी लागू होती है जहां अनेक अन्तर्भूत अकादमिक और प्रशासनिक सुविधाएं विद्यमान हैं। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए इस विभाग ने एन.आई.ई. में 23 से 25 अप्रैल, 1984 तक शिक्षा व्यावसायीकरण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। इसके बाद केरल, कर्नाटक और उड़ीसा के मूल व्यक्तियों के लिए अगस्त और सितम्बर, 1984 में तीन अभिविन्यास कार्यक्रम त्रिवेन्द्रम, बंगलौर और भुवनेश्वर में आयोजित किये गये।

विभिन्न राज्यों तथा राष्ट्र स्तर के विशेषज्ञों और कर्मचारियों की राष्ट्र स्तरीय एक परामर्शदात्री बैठक, शिक्षा मंत्रालय की प्रार्थना, पर एस.यू.पी.डब्ल्यू. के लिए कार्यान्वियन के भावी पग को लेकर सातवीं योजना के प्रतिपादन में उचित निवेश प्रदान करने हेतु डी.वी.ई. में भी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त एस.यू.पी.डब्ल्यू. संबंधी तीन अभिविन्यास कार्यक्रम राजस्थान, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश के मूल व्यक्तियों के लिए अजमेर, बंगलौर और हैदराबाद में आयोजित किये गये। ये कार्यक्रम राज्यों में एस.यू.पी.डब्ल्यू. और शिक्षा व्यावसायीकरण को प्रोन्नत करने में प्रभावी अभिकर्ता सिद्ध हुए, क्योंकि सहभागी योजनाओं की वांछनीयता के प्रति पूर्णतः आश्वस्त थे और उनके सफल कार्यान्वियन के लिए कृत संकल्प थे।

परामर्श

विभाग विभिन्न राज्य सरकारों तथा अन्य अभिकरणों को चर्चाओं, बैठकों, संगोष्ठियों व सम्मेलनों में सहभागिता, विशेष लैक्चरों आदि के रूप में परामर्श प्रदान करता है। 1984-85 के दौरान इस विभाग ने प्रभावी रूप से हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, असम, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान राज्यों; चंडीगढ़, दिल्ली संघ शासित क्षेत्रों, नीपा (एन.आई.ई.पी.ए.), जामिया मिलिया, माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के मंडल, मद्रास और पंजाब विश्वविद्यालयों, श्रम मंत्रालय, यूनेस्को आदि पर पारस्परिक प्रभाव डाला। विवरण निम्न सारणी में दिया गया है :

क्रम सं.	परामर्श लाभार्थी संगठन	परामर्श का लक्ष्य
1.	अकादमिक परिषद् तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्	10 + 2 प्रणाली का शुरू किया जाना, व्यावसायिक कोर्स।
2.	हिमाचल प्रदेश, शिक्षा विभाग	10 + 2 शिक्षा प्रणाली के अधीन व्यवसायीकरण का श्रीगणेश।
3.	पंजाब विश्वविद्यालय	10 + 2 प्रणाली का आरंभ।
4.	हरियाणा, औद्योगिक प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा निदेशालय	राज्य व्यवसायीकरण परिषद् द्वारा व्यवसायीकरण का कार्यान्वियन।
5.	हरियाणा, स्कूल शिक्षा निदेशालय	+ 2 स्टेज पर एस.यू.पी.डब्ल्यू. का श्रीगणेश।
6.	राजस्थान, माध्यमिक शिक्षा मंडल	माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्टेज पर एस.यू.पी.डब्ल्यू. का आरंभ।
7.	राजस्थान, एस.सी.ई.आर.टी.	ग्रेड III तथा एस.यू.पी.डब्ल्यू. का श्रीणेश (पाठ्यचर्या निर्माण)।
8.	मध्य प्रदेश, माध्यमिक शिक्षा मंडल	+ 2 स्टेज पर व्यवसायीकरण की तैयारी।
9.	बिहार, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय	+ 2 स्टेज पर व्यवसायीकरण का श्रीगणेश।
10.	मद्रास विश्वविद्यालय तथा टी.टी.टी.आई., मद्रास	एम.टैक.एड. पाठ्यक्रम का प्रतिपादन।
11.	उत्तर प्रदेश, माध्यमिक शिक्षा मंडल तथा स्कूल शिक्षा निदेशालय	वाणिज्य क्षेत्र में + 2 स्टेज के व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यविवरण प्रतिपादन और कार्यक्रम का कार्यान्वियन।
12	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना तथा प्रशासन संस्थान	एस.यू.पी.डब्ल्यू. तथा व्यवसायीकरण से संबंधित दो कार्यक्रमों पर कृतिक बल।
13.	श्रम मंत्रालय, भारत सरकार	सी.आई.आर.टी.ई.एस. तकनीकी समिति तथा महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण के कार्यदल की बैठक।

14.	गृह मंत्रालय अल्पसंख्यक विभाग	शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों के कार्यक्रमों पर चर्चा तथा बैठक।
15.	माध्यमिक शिक्षा मंडलों की परिषद्	व्यवसायीकरण कार्यक्रम का कार्यान्वियन।
16	जामिया मिलिया, नई दिल्ली	+ 2 स्टेज के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का विकास।
17.	क्षेत्रीय कार्यालय, यूनेस्को ए.सी.ई.आई.डी.	कार्य अनुभव कार्यक्रम में विशेषज्ञों की सहभागिता।
18.	शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार	एस.यू.पी.डब्ल्यू. तथा व्यवसायीकरण से संबंधित मामले।

प्रकाशन

1984-85 के दौरान डी.वी.ई. के अपने विभागों तथा अन्य क्रियाकलापों के माध्यम से किये गये प्रयत्नों द्वारा न केवल व्यावसायिक विद्यार्थियों व अध्यापकों के प्रयोग के लिए बल्कि शैक्षिक आयोजकों और प्रशासकों के प्रयोग के लिए भी अनेक लाभदायक प्रकाशन सामने आए हैं। संबंधित ग्राहकों के प्रयोग के लिए इन प्रकाशनों को तुरंत सुलभ किया जाता है। शुरु में अनुदेशी सामग्रियों, अध्यापक मार्गदर्शिकाओं, पूरक सामग्रियों और दूसरी पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियों को स्कूलों में परीक्षित किया जाता है और बाद में फीडबैक के पूर्ण संशोधन हेतु प्राप्ति पर उन्हें व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए मुद्रित किया जाता है।

नीचे उन प्रकाशनों की सूची दी गई है जिन्हें इस विभाग में 1984-85 में प्रकाशित किया है:

1. व्यावसायिक शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (1984)–एक संक्षिप्त रिपोर्ट।
2. + 2 स्टेज पर व्यावसायिक शिक्षा।
3. विद्यार्थियों के व्यावसायिक स्पेक्ट्रम के लिए विद्यार्थियों का माध्यमिकोत्तर अनुसरण (1979-82)।
4. व्यावसायिक विद्यार्थियों के लिए अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिकी–पुष्पोत्पादन।
5. अनुदेशी व्यावहारिक दीपिका–सब्ज़ी फसलें।
6. व्यावसायिक विद्यार्थियों के लिए अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका–बाग़वानी फसलों में पौधा संरक्षण।
7. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका–पौधा प्रचार।
8. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका–फलोत्पादन के मूलभूत सिद्धांत।
9. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका–फल संस्कृति।
10 पढ़ाई सामग्री–पशु पुनरुत्पादन और अप्राकृतिक गर्भधारण।
11. पढ़ाई सामग्री–दूध और दुग्ध उत्पादन।
12. बैंकिंग में अध्यापक मार्गदर्शिका-I
13. बैंकिंग में अध्यापक मार्गदर्शिका-II

14. खंड-II, टैक्नीशियनों के लिए मौलिक आयुर्विज्ञानः शरीर रचना विज्ञान।
15. खंड-II, टैक्नीशियनों के लिए मौलिक आयुर्विज्ञानः शरीर क्रियाविज्ञान।
16. जन स्वास्थ्य कीट विज्ञान।
17. अनुदेशी व्यावहारिक दीपिका–विद्युत टैक्नालोजी के तत्व (कक्षा-11)।
18. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका-लाइनमैन प्रक्रिया (कक्षा-12)।
19. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका-मूल सामग्री और सम्बद्ध कार्यशाला (कक्षा-11)।
20. अनुदेशी व व्यावहारिक दीपिका–डी.सी. सरकिट इलेक्ट्रोमेगनेटिज्म और ए.सी. सरकिट के सिद्धांत (कक्षा-11)।
21. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–अन्तर्देशीय मछली पालन।
22. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–मछली संसाधन टैक्नालोजी।
23. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–मुर्गी पालन उत्पादन।
24. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–सूअर उत्पादन।
25. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–फार्म मैकेनिक।
26. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–कृषि रसायन।
27. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–रेशम उत्पादन।
28. बीमा में न्यूनतम व्यावसायिक क्षमताएं।
29. खरीद और भंडार संरक्षण में न्यूनतम व्यावसायिक क्षमताएं।
30. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–लेखाविधि व लेखा परीक्षण।
31. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–कर विधि प्रक्रियाएं/कर विधि नियम/कर सहायक।
32. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–स्कूल पूर्व और क्रेच प्रबंध।
33. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–विद्युत मोटर की मरम्मत, रख-रखाव और पुनर्लपेटन।
34. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–रेडियो और टेलीविज़न रिसीवर की मरम्मत और रख-रखाव।
35. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–ग्रामीण इंजीनियर टैक्नालोजी।
36. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–श्रव्य-दृश्य टैक्नीशियन।
37. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–घड़ियाल और घड़ी मरम्मत टैक्नालोजी।
38. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या–मुद्रण और जिल्दबंदी टैक्नालोजी।

7

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं विभाग (डी.टी.ई., एस.ई., ई.एस.), अध्यापक शिक्षा, महिला शिक्षा, असुविधाग्रस्तों की शिक्षा और विशेष शिक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, शिक्षण सामग्री तैयार करने तथा प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाओं का काम करता रहा है। विभाग, अध्यापकों की सतत शिक्षा के केन्द्रों की गतिविधियों के कार्यान्वियन के लिए प्रमुख (नोडूल) एजेंसी के रूप में तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के सचिवालय के रूप में भी काम करता है।

अध्यापक शिक्षा

प्राथमिक व माध्यमिक अध्यापकों की शिक्षा के कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार करना, विभाग के मुख्य विषयों में से एक है। विभाग की अन्य प्रमुख गतिविधियों में, अध्यापक प्रशिक्षुओं व अध्यापक शिक्षकों की अध्ययन क्षमता सुधारने की दिशा में निर्दिष्ट अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में संशोधन, अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए पाठ्यपुस्तक सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना और अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के कार्यान्वियन में लगे अन्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण शामिल है।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा

इस वर्ष में "प्रारंभिक स्कूल प्रणाली में ग्रामीण व शहरी ढांचों में अध्यापक छवियों का तुलनात्मक अध्ययन" पूरा किया गया है। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य, प्रारंभिक अध्यापकों की छवियों का, उनकी पृष्ठभूमि और व्यावसायिक एवं सामाजिक–आर्थिक परिवर्तों के संदर्भ में अध्ययन तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं कुछ चुने हुए मनोवैज्ञानिक परिवर्तों के संदर्भ में पुरुष व महिला अध्यापकों की छवियों की तुलना करना थे। अध्ययनार्थ लिए गए नमूने में बिहार, मध्यप्रदेश, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों के 450 अध्यापक (ग्रामीण इलाकों के प्रारंभिक स्कूलों के 223 और शहरी इलाकों के स्कूलों के 227) शामिल थे।

वर्ष के दौरान "प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के तीसरे राष्ट्रीय सर्वेक्षण" से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं। उदयपुर में 12 से 15 मार्च 1985 तक आयोजित एक कार्यशाला में सर्वेक्षण के लिए तैयार की गई प्रश्नावली की समीक्षा की गई और उसे अंतिम रूप दिया गया। इसके अतिरिक्त "भारत में अध्यापकों की स्थिति" के अध्ययन के भाग के रूप में, प्रारंभिक स्कूल अध्यापकों के बारे में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए विहित "उभरते हुए भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा" शीर्षक की स्रोत पुस्तक को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया गया। 1981-82 व 1982-83 में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं द्वारा आजमाए गए नवाचारी व्यवहारों के संबंध में सूचना इकट्ठी करना और "भारत में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा में नवाचारी व्यवहार" शीर्षक की रिपोर्ट तैयार करना, की गई अन्य गतिविधियां थीं।

इस वर्ष में संगोष्ठी पठन कार्यक्रम में ग्यारहवीं अखिल भारतीय प्रतियोगिता (1984-85) में आयोजित की गई। राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शै.अनु.प्र. परिषदों के माध्यम से प्राप्त, प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्यों, अध्यापक शिक्षकों व समन्वयकों द्वारा किए गए नवाचारी व्यवहारों से संबंधित निबंधों का मूल्यांकन, मूल्यांककों के एक दल ने किया और पुरस्कार के लिए पांच निबंध चुने गए। पुरस्कार में 6,500/- रु. नकद और एक योग्यता प्रमाण-पत्र शामिल थे।

सिक्किम के प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के स्टाफ के सदस्यों के लिए गैंगटाक में एक 6 दिन का सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 6 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। एक अन्य किया गया कार्य, समग्र सूक्ष्म-शिक्षण प्रकर्मों की प्रभाविता अभिपुष्ट करना और अध्यापक प्रशिक्षुकों की सामान्य क्षमता के संदर्भ में इसके घटकों में परिवर्तनों की आपेक्षिक प्रभाविता का अध्ययन करना था। इस संदर्भ में, प्रारंभिक अवस्था के लिए विशिष्ट, अध्यापन प्रवीणताओं व उनके व्यावहारिक घटकों की पहचान करने तथा प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्यापक शिक्षकों द्वारा दिए जा सकने वाले विशिष्ट अध्ययन तैयार करने के लिए एक 6 दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। 6 दिन की एक अन्य कार्यशाला में, अध्यापक शिक्षकों द्वारा किए गए अध्ययनों के दौरान इकट्ठे किए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा अध्यापक शिक्षकों ने अध्ययनों की रिपोर्ट तैयार की।

माध्यमिक अध्यापक शिक्षा

माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में, उत्तरी क्षेत्र के चार शिक्षा महाविद्यालयों के सहयोग से "बी.एड. विद्यार्थी अध्यापकों का मूल्य-विन्यास" से संबंधित अनुसंधान परियोजना शुरू की गई। अध्ययन के स्वरूप को, 2 से 4 जुलाई 1984 तक हुई, इन महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों की बैठक में अंतिम रूप दिया

गया। अध्यवसाय, वैज्ञानिक सोच, राष्ट्रवादिता व कार्य के प्रति निष्ठा नामक चार मूल्यों के मूल्यांकन के लिए उपाय तैयार किए गए। तदनन्तर, मूल्यों के स्पष्टीकरण की नीतियों की परियोजना के कार्यान्वियन से सम्बद्ध अध्यापक शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए 6 से 9 अगस्त 1984 तक, "मूल्य स्पष्टीकरण नीतियां" पर एक 4 दिन की कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला के दौरान, मन में मूल्य बैठाने के परम्परागत तरीकों, चुनिंदा मूल्यों के व्यावहारिक आयाम, मूल्य स्पष्टीकरण नीतियों तथा मूल्यविन्यास मापन के तरीकों पर चर्चा हुई।

इस वर्ष में "भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण" से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं। बी.एड. या शिक्षा में पहली डिग्री दिलाने वाले इसके समकक्ष पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर सूचना प्राप्त करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई और सभी शिक्षा महाविद्यालयों में भेजी गई। "अनुसूचित जाति/जनजाति तथा गैर-अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थी अध्यापकों की उपलब्धियों के साथ आत्म-धारणा, प्रवृत्ति एवं समायोजन के संबंध के अध्ययन" के अन्तर्गत इकट्ठे किए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट लिखने का काम 1984-85 में शुरू किया गया।

माध्यमिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की सिफारिशों के आधार पर संशोधन करने में, विभाग ने कुछ विश्वविद्यालयों की सहायता की। विश्वविद्यालयों के बी.एड. पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला जम्मू विश्वविद्यालय व कश्मीर विश्वविद्यालय के बी.एड. पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए श्रीनगर में 18 से 22 अक्तूबर 1984 तक हुई। इसमें 32 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। दूसरी कार्यशाला, कानपुर विश्वविद्यालय व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के बी.एड. पाठ्यक्रमों में संशोधन के लिए कानपुर में 14 से 18 जनवरी 1985 को हुई। इसमें 37 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। तीसरी कार्यशाला केरल के विश्वविद्यालयों के बी.एड. पाठ्यक्रमों में संशोधन के लिए हुई, इसमें 35 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त विभाग ने, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एम.एड. पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए कुरुक्षेत्र में 27 से 30 अगस्त, 1984 तक, एक चार दिन की कार्यशाला भी आयोजित की।

इस वर्ष में "स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन" पर एक पुस्तक तैयार करने के संबंध में भी कार्य शुरू किया गया। पुस्तक की पांडुलिपि की समीक्षा करने के लिए, कार्यकारी दल की दो बैठकें आयोजित की गईं।

इस वर्ष में, माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक शिक्षकों के लिए ग्यारहवीं अखिल भारतीय संगोष्ठी पठन प्रतियोगिता आयोजित की गई। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए 31 प्रविष्टियां चुनी गईं और पुरस्कार के लिए 8 निबंध चुने गए। पुरस्कार में रु. 500 की राशि और एक योग्यता प्रमाण-पत्र शामिल था। वर्ष के दौरान किया गया एक अन्य कार्य, अध्यापक शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान परियोजनाओं की योजना व स्वरूप बनाने के लिए, अध्यापक शिक्षकों की एक कार्यशाला थी। इंदौर में 4 से 9 फरवरी, 1985 तक हुई इस कार्यशाला में 25 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों से संबंधित अनुसंधान प्रस्तावों का अनुमोदन हुआ।

शिक्षण के माडलों पर एक राष्ट्रीय साधन दल बनाने के लिए अध्यापक शिक्षकों की दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। पुणे में हुई पहली कार्यशाला में 14 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया जबकि इंदौर में हुई दूसरी कार्यशाला में 25 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के बाद, शिक्षण के माडलों पर प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परियोजना बनाने के लिए, शिक्षण के माडलों के विशेषज्ञ दल की एक बैठक हुई।

अध्यापक शिक्षकों को संशोधित माध्यमिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम से परिचित कराने के लिए, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में एक तीन दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस

कार्यशाला में 32 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त, अध्यापक शिक्षकों को, पाठ्यक्रम के विभिन्न क्षेत्रों तथा माध्यमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए विहित "पाठ्यक्रम और मूल्यांकन" शीर्षक की पाठ्यपुस्तक पर आधारित मूल्यांकन से परिचित कराने के लिए विभाग ने एक 6 दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। नागपुर में आयोजित इस कार्यक्रम में 27 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया।

महिला शिक्षा

महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में, "एक जनजाति के लिए, आवश्यकता आधारित शिक्षा" और "लड़कियों के लिए आवश्यकता आधारित व्यवसाय" शीर्षक वाली अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत काम जारी रहा। प्रारंभिक स्तर के मुख्य कार्मिकों के लिए बंबई में, स्कूल पाठ्यक्रम के जरिए महिलाओं की स्थिति पर एक चार दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 24 व्यक्तियों ने भाग लिया। उच्चतर माध्यमिक व माध्यमिक स्तर के मुख्य कार्मिकों को, पाठ्यक्रम के जरिए महिलाओं की स्थिति से परिचित कराने के लिए एक अन्य चार दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम त्रिवेन्द्रम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 21 व्यक्तियों ने भाग लिया।

असुविधाग्रस्तों की शिक्षा

समाज के असुविधाग्रस्त वर्गों, विशेषकर अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा से संबंधित अनेक अनुसंधान व विकास गतिविधियां, वर्ष 1984-85 में हाथ में ली गईं। "जनजातीय व गैर जनजातीय इलाकों के प्राथमिक स्कूलों में भौतिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन" पूरा किया गया। इस वर्ष में जारी रखा गया एक अन्य अध्ययन "अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक – आर्थिक गतिशीलता के बीच परस्पर संबंध का अध्ययन" था। अध्ययन के लिए नमूना, बिहार की खारिया, झुंडा व ओराओं जनजातियों में से लिया गया था। वर्ष के दौरान जारी रखे गए अन्य अध्ययनों में, "प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों के विषयवार प्रदर्शन का, उनकी कमजोरियों व मजबूतियों के निर्धारण के लिए, अध्ययन" और "उत्तर प्रदेश के दसवीं श्रेणी के अनुसूचित जातियों व गैर अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन" शामिल है।

जनजातीय विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करने में, विभाग सक्रिय रूप से लगा रहा। ओड़िसा की साओरा जनजाति के बच्चों के लिए दूसरी श्रेणी की पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं और ओड़िसा के दो जिलों के चुने हुए 120 स्कूलों में लागू की गईं। इसके अतिरिक्त जनजातीय इलाकों में स्थित गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्रों के जनजातीय विद्यार्थियों के लिए पठन सामग्री भी तैयार की गई। पश्चिम बंगाल के गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्रों में पढ़ रहे संथालों के उपयोग के लिए भाषा व गणित दोनों की व्यापक प्राइमर तैयार की गई। प्राइमर, संथाली भाषा में व बंगाली लिपि में लिखी गई।

इस वर्ष में, जनजाति जीवन व संस्कृति तथा जनजाति शिक्षा की समस्या पर दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। प्रत्येक कोर्स सात दिन की अवधि का था। पहले कोर्स में जनजातीय इलाकों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के 12 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया जबकि दूसरे कोर्स में, जनजातीय इलाकों में स्थित माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के 8 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। इसके अलावा, जनजातीय इलाकों में गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्रों के कार्यान्वयन में लगे मुख्य कार्मिकों के

लिए दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। भाग लेन वाले 37 व्यक्तियों को, जनजातीय इलाकों में गैर औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वियन के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया।

विशेष शिक्षा

इस वर्ष में "विशेष शिक्षा में अनुसंधान का सर्वेक्षण" से संबंधित कार्य जारी रखा गया। सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य, 1984 तक, विशेष शिक्षा के क्षेत्र में, व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा हाथ में ली गई परियोजनाओं के सार इकट्ठे करना था।

विशेष शिक्षा के साधन अध्यापकों के उपयोग के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए, लेखकों की एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। असमर्थता के विभिन्न क्षेत्रों–दृष्टिबाधा, सुनने में खराबी, विकलांगता और मानसिक मन्दता के विशेषज्ञों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के दौरान, ऐसी सामग्री की विषयवस्तु की रुप रेखाओं पर चर्चा हुई और शिक्षण सामग्री लिखने के लिए एक सामान्य ढाँचे को अंतिम रूप दिया गया। बाद में शिक्षण सामग्री की समीक्षा की गई और प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया गया।

विभाग ने असुविधाग्रस्तों की समाकलित शिक्षा में लगे मुख्य अधिकारियों के लिए तीन महीने के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का पाठ्यक्रम भी तैयार किया। इस क्षेत्र में एक अन्य गतिविधि, सुनने में खराबी वाले बच्चों के लिए समाकलित शिक्षा पर नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी थी। संगोष्ठी के दौरान, सुनने में खराबी वाले बच्चों के संदर्भ में असुविधाग्रस्तों के लिए समाकलित शिक्षा की धारणा, सुनने में खराबी वाले बच्चों की जल्दी पहचान और समाकलन के लिए तैयार करना, समाकलन की रुपात्मकताओं, असुविधाग्रस्तों के लिए समाकलित शिक्षा योजना का कार्यान्वियन, सुनने में खराबी वाले बच्चों की शिक्षा तथा विकास में सामुदायिक भागीदारी और असुविधाग्रस्तों के लिए समाकलित शिक्षा की अनुसंधान तथा विकास आवश्यकता पर विचार विमर्श केन्द्रित रहा।

अध्यापकों की सतत शिक्षा के केन्द्र

विभाग, अध्यापकों की सतत शिक्षा के केन्द्रों की गतिविधियों का समन्वय करता रहा है। ये केन्द्र, राज्यों/संघशासित प्रदेशों के माध्यमिक अध्यापकों एवं प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों को सेवाकालीन शिक्षा देने में लगे रहे हैं। इन केन्द्रों को दिए जाने वाले अनुदान की राशि, केन्द्र व राज्य सरकार आधे-आधे के आधार पर देती है। 1984-85 में, उत्तर प्रदेश में, सतत शिक्षा के 12 अतिरिक्त केन्द्र और केरल में तीन, स्थापित किए गए और इस प्रकार देश में ऐसे केन्द्रों की संख्या बढ़कर 91 हो गई। हालांकि, इनमें से 12 केन्द्रों ने इस वर्ष में कोई कार्य शुरु नहीं किया।

बिहार व कर्नाटक के सतत शिक्षा केन्द्रों के कार्यों की समीक्षा, इन राज्यों के सतत शिक्षा केन्द्रों (सी.सी.ई.) के अवैतनिक निदेशकों/समन्वयकों की दो बैठकों में की गई। सतत शिक्षा केन्द्रों को, अपने कार्यक्रमों की प्रभावी ढंग से योजना बनाने में सहायता करने के लिए, फरवरी 1985 में कार्यकारी दल की दो बैठकें हुईं। इन बैठकों में, माध्यमिक स्कूल अध्यापक तथा प्राथमिक स्कूल अध्यापक शिक्षकों के लिए कार्यक्रमों की योजना के लिए प्राथमिकता प्राप्त मूल विचारों पर चर्चा हुई।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.)

एन.सी.टी.ई. में चार प्रमुख शैक्षिक स्थायी समितियां हैं। ये हैं संचालन समिति, स्कूल पूर्व प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति, माध्यमिक एवं कालेज अध्यापक शिक्षा समिति, शारीरिक असुविधाग्रस्तों व मानसिक मन्दता वालों के लिए विशेष स्कूलों के अध्यापकों की प्रशिक्षण समिति। एन.सी.टी.ई. की संचालन समितियों की बैठकें, अपनी विशेषज्ञता के भीतर के मामलों पर विचार करने के लिए अक्सर होती हैं जबकि समितियों की सिफारिशों पर विचार करने और नीति संबंधी मामलों पर निर्देश और सिफारिशें देने के लिए एन.सी.टी.ई. के बैठक वर्ष में एक बात होती है। बनाए गए मोटे-मोटे निर्देशों का अनुसरण करते हुए एन.सी.टी.ई., कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, अभिविन्यास कार्यक्रम, कार्यकारी दलों या उपरोक्त समितियों की उपसमितियों की बैठकें प्रायोजित करती है। इस वर्ष में एन.सी.टी.ई. के तत्वावधान में निम्नलिखित बैठकें/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं हुईं:

- नई दिल्ली में 23-24 नवंबर 1984 को हुई, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति की आठवीं बैठक।
- नई दिल्ली में 29-30 नवम्बर 1984 को हुई, माध्यमिक व कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की आंठवीं बैठक।
- शारीरिक असुविधाग्रस्तों व मानसिक मन्दतावालों के विशेष स्कूलों के अध्यापकों की प्रशिक्षण समिति की, नई दिल्ली में 4 फरवरी 1985 को हुई छठी बैठक।
- नई दिल्ली में 15 व 16 मार्च 1985 को हुआ राज्य अध्यापक शिक्षा बोर्डों का पांचवां सम्मेलन।
- नई दिल्ली में 26 से 28 नवम्बर, 1984 तक हुई, अध्यापक शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी।
- नई दिल्ली में 25 से 28 नवम्बर, 1984 तक हुई, प्राथमिक स्कूल अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए, रेडियो के उपयोग के लिए विचारों की पहचान करने की राष्ट्रीय कार्यशाला।
- नई दिल्ली में 3 से 5 मार्च, 1984 तक हुई, कालेज अध्यापन पर स्रोत पुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की नामिका की पहली बैठक।
- नई दिल्ली में 11 से 13 मार्च 1985 तक हुई, मूल्य विन्यस्त अध्यापक शिक्षा की स्रोत पुस्तक तैयार करने के लिए, कार्यकारी दल की बैठक।
- नई दिल्ली में 6 से 8 फरवरी 1985 तक हुई, कालेज अध्यापन पर स्रोत पुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की नामिका की दूसरी बैठक।
- जोरहाट में 18 से 23 जून, 1984 तक हुई, उत्तर पूर्वी क्षेत्रों के राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लिए प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए कार्यशाला।

एन.सी.टी.ई. की विभिन्न समितियों की विभिन्न बैठकों के कार्यवृत्त, राज्य शिक्षा विभागों व देश की अन्य शिक्षण संस्थाओं जैसी विभिन्न एजेंसियों में संचारित किए गए प्रारंभिक व माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. की हस्तपुस्तिकाओं को प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया गया।

अध्यापक शिक्षा से संबंधित अन्य गतिविधियां

विभाग की एक नियमित गतिविधि, राज्यों व संघशासित प्रदेशों की रा.शि. संस्थाओं/राज्य शै.अनु.प्र. परिषदों के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन रहा है। आलोच्य वर्ष में यह सम्मेलन 11 से 13 फरवरी 1985 तक चंडीगढ़ में आयोजित किया गया। रा.शि. संस्थान/राज्य शै.अनु.प्र. परिषदों के 20 निदेशकों या उनके द्वारा मनोनीत व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन के दौरान प्रत्येक प्रतिनिधि ने रा.शि. संस्थान/रा. शै.अनु.प्र.परि द्वारा किए गए कार्यक्रमों व गतिविधियों को प्रस्तुत किया और प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा के अनेक पहलुओं, विशेषकर शिक्षा के औपचारिक व गैर औपचारिक दृष्टिकोणों के माध्यम से कमजोर वर्गों व लड़कियों में शिक्षा को बढ़ावा देने के तरीकों व साधनों पर विचार-विमर्श हुआ। प्राथमिक स्कूल अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा के लिए नीतियों पर भी चर्चा हुई।

सामुदायिक गायन

सामुदायिक गायन को जन आन्दोलन के रूप में विकसित करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत विभाग, भारत के सभी भागों से लिए गए संगीत शिक्षकों के लिए सामुदायिक गायन के प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता रहा है। स्कूल प्रणाली में सामुदायिक गायन को सांस्थानिक बनाने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के प्रयासों के हिस्से के रूप में विभाग ने, अपने राज्य स्तर की एजेंसियों व संस्थाओं के सहयोग से, सामुदायिक गायन की कला व तकनीकों में, अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 26 शिविर आयोजित किए। इन शिविरों के माध्यम से, 15 राज्यों व संघशासित प्रदेशों के 1502 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक अध्यापक को 15 गाने, विभिन्न भारतीय भाषाओं में गाने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्कूलों में प्रयोग करने के लिए एक टेप रिकार्डर और श्रव्य टेप दिए गए थे ताकि बच्चों को, विभिन्न भाषाओं में, सामूहिक रूप से, गाने में प्रशिक्षित किया जा सके।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में, राष्ट्रगान सहित 16 गानों की "आओ मिलकर गाएं" शीर्षक की पुस्तक प्रकाशित की गई। गाने, स्वरलिपि सहित, देवनागरी व रोमन लिपि में लिखे गए थे। पुस्तक का विमोचन, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने 7 फरवरी, 1985 को किया।

8

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज

सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा के नवोद्‌भावी कार्यक्रमों का विकास क्षेत्रीय शिक्षा कालेज़ों की प्रमुख चिन्ता है। ये कालेज स्कूल-स्तर की पाठ्‌यचर्या संबंधी अनुसंधान और प्रयोगात्मक अध्ययनों के प्रतिपादन व कार्यान्वियन, शिक्षण क्रियाविधि, शैक्षिक मूल्यांकन और शैक्षिक प्रशासन में कार्यरत रहे हैं। अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास एंव स्कूली शिक्षा व अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित प्रशिक्षण और प्रसार गतिविधियां इन कालेजों के दूसरे कार्य हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय कालेज अपने कार्यक्षेत्र के राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अजमेर का कालेज हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों तथा चण्डीगढ़ और दिल्ली संघशासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। भोपाल का कालेज गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों तथा दादर व नगर हवेली और गोआ, दमन व दिउ संघशासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। भुवनेश्वर का कालेज असम, बिहार, मणिपुर, नागालैंड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा और पश्चिमी बंगाल राज्यों तथा अडंमन निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश और मीज़ोरम संघशासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है जबकि मैसूर का कालेज आन्ध्रप्रदेश, कार्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों तथा लक्षद्वीप और पांडिचेरी संघशासित क्षेत्रों का ख्याल रखता है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर

बी.एस-सी.बी.एड. डिग्री दिलाने के लिए यह कालेज विज्ञान शिक्षा में चार-वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम प्रदान करता है। विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेजी/हिन्दी/उर्दू) में विशेष योग्यता सहित एक-वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, विज्ञान/वाणिज्य/भाषाओं में विशेष योग्यता सहित एक-वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और बी.एड.डिग्री प्राप्त करने हेतु ग्रीष्मकालीन स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

नामांकन

वर्ष 1984-85 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन निम्न प्रकार थे:

प्रथम वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी) बी.एड.	69
द्वितीय वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी) बी.एड.	49
तृतीय वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी.) बी.एड.	69
चुतर्थ वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी) बी.एड.	26
बी.एड. (विज्ञान)	75
बी.एड. (कृषि)	27
बी.एड. (वाणिज्य)	33
बी.एड. (हिन्दी)	44
बी.एड. (अंग्रेज़ी)	28
बी.एड. (उर्दू)	30
एम.एड.	17
कुल:	467

परिणाम

विभिन्न पाठ्यक्रमों में 1983-84 सत्र में नामांकित/रजिस्टर में दर्ज छात्रों के 1984 में परिणाम निम्न प्रकार थे:

पाठ्यक्रम	कुल नामांकित/ रजिस्टर पर	परीक्षा में बैठने वालों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
प्रथम वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी) बी.एड	57	65	51	78.46
द्वितीय वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी) बी.एड.	65	71	70	98.59

तृतीय वर्ष बी.एस-सी. (एच/पी.) बी.एड.	28	26	26	100.00
बी.एड. (विज्ञान)	55	49	48	97.95
बी.एड. (कृषि)	25	22	21	95.45
बी.एड. (वाणिज्य)	26	25	24	96.00
बी.एड. (अंग्रेजी)	27	26	25	96.15
बी.एड. (हिन्दी)	38	37	37	100.00
बी.एड. (उर्दू)	29	28	24	85.71
एम.एड.	17	17	17	100.00

प्रसार सेवाएं

कालेज के प्रसार सेवा विभाग ने अपने कार्य-क्षेत्र के राज्यों/संघशासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं व मांगों को ध्यान में रखते हुए स्कूली शिक्षा संबंधी कई पक्षों पर कार्यशालाएं/संगोष्ठयां आयोजित कीं। 1984-85 वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये।

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	सहभागियों की संख्या
1.	जनसंख्या शिक्षा संबंधी कार्यशाला	16
2.	पाठ्यचर्या भार संबंधी कार्यशाला	63
3.	अनुसंधान क्रियाविधि व प्रयोगात्मक ड़िजाइन संबंधी कार्यशाला	22
4.	एकीकृत शिक्षा संबंधी कार्यशाला	12
5.	विज्ञान पठन संबंधी जांच दृष्टिकोण की कार्यशाला	13
6.	जीव-ऊर्जा शिक्षा संबंधी संगोष्ठी व कार्यशाला	45
7.	फल संरक्षण व सब्ज़ी उत्पादन में अध्यापक मार्गदर्शिका के विकास संबंधी कार्यशाला	10

प्रकाशन

रिपोर्टाधीन वर्ष में कालेज ने अर्धवार्षिक पत्रिका ''शैक्षिक प्रवृत्तियां'' के दो अंक निकाले और प्रस्तावित त्रैमसिक ''स्कूल विज्ञान स्रोत पत्र'' के प्रकाशन का कार्य आरंभ किया।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल

बी.एस-सी.बी.एड. डिग्री दिलाने हेतु क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल, चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम प्रदान करता है, बी.ए.बी.एड. डिग्री प्राप्ति हेतु अंग्रेजी में चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम विज्ञान/वाणिज्य/भाषा में विशेष योग्यता सहित एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में विशेष योग्यता सहित एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम तथा बी.एड. डिग्री प्राप्ति हेतु ग्रीष्मकालीन स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

नामांकन

अकादमिक सत्र 1984-85 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन निम्न प्रकार था :

प्रथम वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	79
द्वितीय वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	65
तृतीय वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	58
चतुर्थ वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	46
प्रथम वर्ष बी.ए.बी.एड.	31
द्वितीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	29
तृतीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	30
चतुर्थ वर्ष बी.ए.बी.एड.	23
बी.एड. (विज्ञान)	35
बी.एड. (वाणिज्य)	41
बी.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)	36
एम.एड.	11
कुल :	484

परिणाम

विभिन्न पाठ्यक्रमों में अकादमिक सत्र 1983-84 के दौरान अप्रैल 1984 को समाप्त होने वाले अकादमिक सत्र में नामांकित/रजिस्टर में दर्ज छात्रों के परिणाम निम्न प्रकार थे :

पाठ्यक्रम	परीक्षा में बैठने वालों की संख्या	कुल उत्तीर्ण
1	2	3
प्रथम वर्ष बी.एस-सी. बी. एड.	79	61
द्वितीय वर्ष बी.एस-सी. बी. एड.	61	54

तृतीय वर्ष बी.एस-सी. बी. एड.	56	41
चतुर्थ वर्ष बी.एस-सी. बी. एड.	46	36
प्रथम वर्ष बी.ए.बी.एड.	30	27
द्वितीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	30	20
तृतीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	26	23
चतुर्थ वर्ष बी.ए.बी.एड.	20	19
बी.एड. (विज्ञान और वाणिज्य)	71	70
बी.एड. (प्रारंभिक)	35	35
एम.एड.	11	07
बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम)	98	91

प्रसार सेवाएं

स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों में अध्यापक शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों को प्रशिक्षित करने के लिए कालेज ने अनेक अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। कालेज ने वर्ष 1984-85 के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये :

क्र.सं.	कार्यक्रम	अवधि	सहभागियों की संख्या
1	2	3	4
1.	महाराष्ट्र तथा गोआ से आए अध्यापक शिक्षकों के लिए विज्ञान शिक्षण संबंधी विषयवस्तु व क्रियाविधि में अभिविन्यास कार्यक्रम।	6 दिन	18
2.	महाराष्ट्र तथा गोआ से आए प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी संबंधी अभिविन्यास कार्यक्रम।	9 दिन	21
3.	भाष्य और विश्लेषण आंकड़ों को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए अनुसंधान क्रिया-विधि में गुजरात के ए.डी.आई. अधि-	9 दिन	21

	कारियों/सहायक ए.डी.आई. अधिकारियों/ ज़िला योजना अधिकारियों के लिए अभि-विन्यास कार्यक्रम।		
4.	प्राथमिक स्कूलों में गुजराती शब्दों की वर्तनी तथा बोलीगत प्रभाव संबंधी कार्य-शाला।	6 दिन	22
5.	भोपाल शहर के स्कूलों के छात्रों के लिए समुदाय गान कार्यक्रम।	3 दिन	108
6.	शैक्षिक मूल्यों (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग संस्थापन पाठ्यक्रम पर आधारित) में अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	6 दिन	16
7.	गुजरात से आए अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्रियों की उपयोगिता तथा लेखाचित्रों के उत्पादन संबंधी प्रशिक्षण शालाएं।	9 दिन	41
8.	मध्यप्रदेश से आए उच्च माध्यमिक अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के लिए भूगोल में अभिविन्यास कार्यक्रम।	6 दिन	20
9.	माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए मानदंड संदर्भी परीक्षण पर अभिविन्यास कार्यक्रम।	4 दिन	22
10.	नेत्र विकलांगों के लिए एकीकृत शिक्षा संबंधी अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	6 दिन	5
11.	कृषि यंत्र संबंधी दीपिका की निर्माण पर कार्यशाला।	4 दिन	2
12.	जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के समन्वयकों और अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम (दो पाठ्य-क्रम)।	6 दिन	61
13.	जनसंख्या शिक्षा में अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम।	5 दिन	58

14.	भोपाल के निदर्शन बहूद्देश्य स्कूलों के छात्रों के लिए समुदाय गान शिविर।	10 दिन	74
15.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के स्रोत व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	3 दिन	26
16.	अध्यापक शिक्षकों के लिए लेखाचित्रीय प्रविधियों में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (दो पाठ्यक्रम)।	10 दिन	14
17.	माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों व अध्यापकों के लिए भूगोल में मूल संकल्पनाओं की पहचान संबंधी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम व कार्यशाला।	10 दिन	14
18.	वाणिज्य में अनुदेशी सामग्रियों के निर्माण संबंधी कार्यशाला।	6 दिन	11
19.	शिक्षण में पर्यावरणीय दृष्टिकोण संबंधी कार्यशाला।	5 दिन	25
20.	मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में गणित के शिक्षण पर स्रोत व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	6 दिन	27
21.	गुजरात में अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों के स्रोत व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम।	4 दिन	2
22.	अनुसंधान प्रोजेक्टों के लिए प्रस्ताव तैयार करने हेतु अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।	4 दिन	14

अनुसंधान और विकासात्मक प्रोजेक्ट

वर्ष 1984-85 के दौरान सात प्रोजेक्टों से संबंधित क्रियाकलाप सम्पन्न किये गये। प्रोजेक्ट के अधीन, कार्य के अंग के रूप में, ''प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण के प्रति पर्यावरणीय दृष्टिकोण कार्यान्वित करने के लिए शिक्षण कौशलों और प्रशिक्षण विधि की पहचान'', तीसरी, चौथी, पांचवीं कक्षाओं में पठन के लिए पर्यावरणीय अध्ययन 1 और 2, जो हिंन्दी में एक व्यापक अनुदेशी सामग्री है, विकसित किये गये। इनमें अनुदेशी सामग्री की उपयोगिता सिद्ध करने तथा पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रयोग में लाने में उपयोगी कुछ परीक्षण कौशलों की एक सूची दोनों समानांतर रूप से पर्यावरणीय जागरूकता परीक्षण शामिल हैं।

परियोजनाएं ''अनौपचारिक केन्द्रों व औपचारिक स्कूलों के मध्य छात्रों की उपलब्धि में समरूपता खोजने

के लिए उपकरणों और प्राविधियों का विकास'' तथा परियोजना ''अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों से सम्बद्ध अनुदेशी सामग्री का विकास तथा अनुदेशी कौशलों की पहचान'' पूरी की गई।

अन्य परियोजनाएं जिन पर काम शुरू किया गया, वे थीं ''जीवविज्ञान अध्यापक पुस्तिका के निर्माण की ओर ले जाने वाला शुद्ध जलों में जीवन का अध्ययन'', ''मध्यप्रदेश के जीवविज्ञान अध्यापकों के लिए स्रोत सामग्री विकसित करने हेतु भोपाल के पेड़-पौधों का अध्ययन'', ''अध्यापकों की बढ़ती गतिशीलता पर पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण (बी.एड.) का प्रभाव'' के मूल्यांकन का अध्ययन तथा एक परियोजना ''विज्ञान में कुछ एकीकृत प्रक्रियाओं (अनुमान करना, भविष्यवाणी करना, परिकल्पना करना तथा परिकल्पित परीक्षण करना) के विकास के लिए स्वतः पठन प्रक्रिया आधारित सामग्री की उपयोगिता को विकसित, नवीनीकृत तथा परीक्षित करना'' था।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अंश के रूप में कालेज के कैम्पस में एक ''बालवाड़ी'' चलाया गया। अनौपचारिक शिक्षा संबंधी प्रयोगात्मक परियोजना के अधीन शुरू किये गये अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के कार्य की रिपोर्ट को प्रकाशनार्थ अंतिम रूप दिया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर, बी.एस-सी. (आनर्स), बी.एड. और बी.ए. (आनर्स) बी.एड. डिग्रियां दिलाने हेतु चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम प्रदान करता है, एक वर्षीय (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्षीय एम.एस-सी.एड. (जीवन विज्ञान) पाठ्यक्रम और बी.एड. डिग्री प्राप्त करने हेतु गीष्मकालीन व पत्राचार पाठ्यक्रम।

नामांकन

1984-85 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन निम्न प्रकार था :

प्रथम वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	83
द्वितीय वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	75
तृतीय वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	63
चतुर्थ वर्ष बी.एस-सी. बी.एड.	50
प्रथम वर्ष बी.ए.बी.एड.	57
द्वितीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	46
तृतीय वर्ष बी.ए.बी.एड.	31
चतुर्थ वर्ष बी.ए.बी.एड.	43
बी.एड. (सभी धाराएं)	195
प्रथम वर्ष एम.एस-सी.एड. (जीव विज्ञान)	22

द्वितीय वर्ष एम.एस-सी.एड.		17
एम.एड.		20
	कुल	702

परिणाम

सत्र 1983-84 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित/रजिस्टर में दर्ज छात्रों के वर्ष 1984 के परिणाम निम्न प्रकार थे :

पाठ्यक्रम	कुल नामांकित	परीक्षा में बैठने वालों की कुल संख्या	कुल उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
1	2	3	4	5
बी.एस-सी. बी.एड. भाग-1	86	85	64	75
बी.एस-सी. बी.एड. भाग-2	75	73	73	100
बी.एस-सी. बी.एड. भाग-3	52	52	41	80
बी.ए. बी.एड. भाग-1	50	50	42	84
बी.ए. बी.एड. भाग-2	33	33	32	98
बी.ए. बी.एड. भाग-3	44	43	43	100
बी.एड. (माध्यमिक विज्ञान)	105	104	77	74
बी.एड. (माध्यमिक कला)	65	62	43	70
बी.एड. (माध्यमिक वाणिज्य)	20	19	15	80
बी.एड. (प्रारंभिक विज्ञान)	10	9	9	100
बी.एड. (प्रारंभिक कला)	13	13	13	100
एम.एड.	23	18	18	100
एम.एस-सी. एड. भाग-1	14	14	14	100
एम.एस-सी. एड. भाग-2	15	15	12 + 3*	
बी.एड. (एम.एस.सी.सी. माध्यमिक (भुवनेश्वर केन्द्र)	–	106	227	72

बी.एड. (एस.एस.सी.सी.) माध्यमिक (मणिपुर उपकेन्द्र)	–	155	116	75
बी.एड. (एस.एस.सी.सी.) प्रारंभिक (मणिपुर उपकेन्द्र)	–	85	63	74

प्रसार सेवाएं

इस कालेज ने 1984-85 के दौरान निम्नलिखित कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम आयोजित किये:

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	सहभागियों की संख्या
1	2	3	4
1.	मूल इलेक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी संबंधी कार्यशाला।	5 दिन	3
2.	संरचना व निर्माण प्रौद्योगिकी संबंधी कार्यशाला।	5 दिन	4
3.	प्रयोगशाला प्रविधियों में प्रशिक्षण सामग्रियों के परीक्षण संबंधी कार्यशाला।	8 दिन	15
4.	माध्यमिक स्कूलों में सामाजिक अध्ययनों के पाठन में वर्तमान प्रवृत्तियों पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	7 दिन	29
5.	जीवविज्ञान में विषयवस्तु वृद्धि कार्यक्रम।	6 दिन	29
6.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा कम लागत शिक्षण सहायक सामग्रियों पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	9 दिन	20
7.	जीवन विज्ञान शिक्षा में वर्तमान प्रवृत्तियों पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	8 दिन	18
8.	मूल इलैक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी पर कार्यशाला।	10 दिन	6
9.	भाषा प्रयोगशाला में अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	6 दिन	4
10.	भौतिक विज्ञानों में मौलिक संकल्पनाओं संबंधी विषयवस्तु-वृद्धि कार्यशाला।	8 दिन	14
11.	संरचना व निर्माण प्रौद्योगिकी (द्वितीय चरण) पर कार्यशाला।	10 दिन	6
12.	भौतिक शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम।	10 दिन	31
13.	अध्यापक शिक्षकों के लिए अनुसंधान क्रियाविधि में अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	2 दिन	3

14.	प्रारंभिक स्कूलों में काम कर रहे अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	7 दिन	24
15.	उड़ीसा के माध्यमिक स्कूलों के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	7 दिन	15

अनुसंधान और विकास क्रियाकलाप

शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति (ई.आर.आई.सी.) द्वारा प्रायोजित तीन अनुसंधान प्रोजेक्टों को इस वर्ष पूरा किया गया। ये थे "अध्यापक प्रशिक्षण बोध", "स्कूल के प्रति मनोवृत्तियों का मापन" और "दायित्व आरोपण में परिवर्तन"। इनके अतिरिक्त कालेज के बी.ए. बी.एड. छात्रों में "उड़ीसा के पाटिया गांव के सपेरों के लिए सामाजिक-आर्थिक अध्ययन" तथा "आर.सी.ई., भुवनेश्वर, के छात्रों के लिए उपभोगता व्यवहार" के सर्वेक्षण का आयोजन किया।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर, चार वर्षीय बी.एस-सी. एड. डिग्री पाठ्यक्रम देता है, चार वर्षीय बी.ए. बी.एड. डिग्री पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और रसायन, भौतिकी तथा गणित में दो वर्षीय एम.एस-सी. एड. पाठ्यक्रम।

नामांकन

1984-85 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन निम्न प्रकार था :

प्रथम वर्ष बी.एस-सी. एड.	77
द्वितीय ,, ,, ,,	50
तृतीय ,, ,, ,,	53
चतुर्थ ,, ,, ,,	45
प्रथम वर्ष बी.ए.बी.एड.	30
द्वितीय ,, ,, ,,	29
तृतीय ,, ,, ,,	31
चतुर्थ ,, ,, ,,	19
बी.एड. (माध्यमिक)	86
एम.एड.	30
प्रथम वर्ष एम.एस-सी. एड. (रसायन)	21
द्वितीय वर्ष एम.एस-सी. एड. (रसायन)	22
प्रथम वर्ष एम.एस-सी. एड. (भौतिकी)	22
द्वितीय वर्ष एम.एस-सी. एड. (भौतिकी)	11

प्रथम वर्ष एम.एस-सी. एड. (गणित)	22
द्वितीय वर्ष एम.एस-सी. एड. (गणित)	13
कुल	561

परिणाम

विभिन्न पाठ्यक्रमों में अकादमिक सत्र 1983-84 के दौरान नामांकित/रजिस्टर में दर्ज छात्रों के 1984 वर्ष के परिणाम निम्न प्रकार हैं:

पाठ्यक्रम	कुल नामांकित	परीक्षा में बैठने वालों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
1	2	3	4	5
एम.एस-सी. एड. (रसायन)	22	22	19	86
एम.एस-सी. एड. (भौतिकी)	15	15	9	60
एम.एस-सी. एड. (गणित)	14	14	10	71
एम.एड.	18	18	18	100
बी.एड. (माध्यमिक)	125	125	18	100
बी.एड. (प्रारंभिक)	17	17	16	94
बी.एस-सी.एड.	55	55	48	87
बी.ए.बी.एड.	–	–	–	–

सेवा दौरान कार्यक्रम और प्रसार

समीक्षाधीन वर्ष में 865 अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों को निम्नलिखित कार्यशालाओं/पाठ्यक्रमों/संगोष्ठियों द्वारा अभिविन्यास/प्रशिक्षण दिया गया:

क्र.सं	कार्यक्रम	अवधि	सहभागियों की संख्या
1	2	3	4
1.	**अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का शैक्षिक विकास**		
(क)	ज्ञानात्मक कौशलों के विकास के लिए अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के बच्चों के लिए क्षतिपूरक शिक्षा संबंधी कार्यशाला।	6 दिन	39
(ख)	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए विज्ञान और गणित में विषयवस्तु व क्रियाविधि पाठ्यक्रम।	6 दिन	23
(ग)	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति बच्चों के लिए क्षतिपूरक शिक्षा कार्यक्रम के अनुसरण में कार्यशाला।	7 दिन	7
2.	**जनसंख्या शिक्षा**		
(क)	आन्ध्र प्रदेश के महत्वपूर्ण कार्मिक के लिए जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम।	5 दिन	36
(ख)	शिक्षा कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम।	3 दिन	31
3.	**परियोजना : सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी**		
(क)	सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी नामक परियोजना के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए कार्यशाला।	5 दिन	8
(ख)	सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी नामक परियोजना के अधीन विकसित सामग्रियों व किटों के परीक्षण के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थान।	25 दिन	35
(ग)	सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी नामक परियोजना के अधीन विकसित सामग्रियों व किटों के परीक्षण के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थान।	12 दिन	70
(घ)	सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी नामक परियोजना के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला।	3 दिन	10
(ङ)	सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी नामक परियोजना के अधीन विकसित सामग्रियों और किटों के परीक्षण के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थान।	10 दिन	70
4.	**परियोजना : वर्ग**		
(क)	स्कूलों (क्लास) में कंप्यूटर साक्षरता व अध्ययनों पर कार्यशाला।	20 दिन	27
(ख)	परियोजना : क्लास के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	20 दिन	26
5.	**इंटर्नशिप**		
(क)	सरकारी स्कूलों के अध्यापकों के लिए शिक्षण कार्यक्रम में बी. एस-सी. एड. इंटर्नशिप संबंधी इंटर्नशिप-पूर्व सम्मेलन	6 दिन	27

(ख)	सहकारी स्कूलों के अध्यापकों के लिये शिक्षण कार्यक्रम में बी.एड. इटर्नशिप संबंधी इंटर्नशिप-पूर्व सम्मेलन	3 दिन		23
6.	**विकलांगों की एकीकृत शिक्षा**			
(क)	दक्षिणी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों के लिए विकलांगों की एकीकृत शिक्षा पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	4 दिन		13
7.	**व्यावसायिक वाणिज्य**			
(क)	बहीखाता तथा लेखाविधि की शिक्षण क्रियाविधियों पर अनुदेशी सामग्रियों के विकास की कार्यशाला।	5 दिन		21
(ख)	बहीखाता तथा लेखा विधि पर अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	7 दिन		27
8.	**एन.टी.एस. परीक्षा**			
	एन.टी.एस. परीक्षा के डिज़ाइन पर बंगलौर शहर के उच्च स्कूल अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम।	2 दिन	27	
9.	**समाजोपयोगी उत्पादक कार्य**			
(क)	स्वास्थ्य शिक्षा, एस.यू.पी.डब्ल्यू. और अन्य गतिविधियों के मूल्यांकन के लिए कार्यशाला।	4 दिन		10
(ख)	बंगलौर नगर स्कूलों के अध्यापकों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. में प्रशिक्षण कार्यक्रम।	3		25
(ग)	मिडिल/प्राइमरी स्कूलों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. में महत्वपूर्ण कार्मिक के लिए कार्यशाला।	7 दिन		14
10.	**रसायन में जांच-पड़ताली परियोजनाएं**			
(क)	सी.बी.एस.ई. से सम्बद्ध स्कूलों के अध्यापकों के लिए रसायन में जांच-पड़ताली परियोजनाओं से संबंधित कार्यशाला (इस क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालयों को सुलभ ऐसे कार्यक्रम के अनुसरण में यह है)।	6 दिन		10
(ख)	के.वी.एस. के माध्यमिक स्कूल रसायन अध्यापकों के लिए रसायन में चुनिंदा प्रयोगशाला प्रविधियों की कार्यशाला।	8 दिन		23
11.	**अनुसंधान क्रियाविधि**			
	अध्यापक शिक्षकों के लिए अनुसंध..न क्रियाविधि पर पाठ्यक्रम।	10 दिन		28
12.	**अंग्रेजी शिक्षण**			
(क)	केन्द्रीय तिब्बतन स्कूल प्रशासन (सी.टी.एस.ए.) के अधीन अंग्रेजी शिक्षण क्रियाविधि में अंग्रेज़ी अध्यापक का अभिविन्यास।	10 दिन		10
(ख)	कर्नाटक के कनिष्ठ कालेजों में अंग्रेजी के नये स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम।	8 दिन		50
(ग)	अंग्रेज़ी में भाषित कौशलों के लिए पैकेजों के विकास पर कार्यशाला	6 दिन		28

(तमिलनाडु के लिए गत वर्ष के कार्यक्रम की एक अनुवता कार्रवाई)

13.	**माड्यूलों/परीक्षणों/किटों का विकास**		
(क)	व्यावसायिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए मनोविज्ञान में माड्यूलों के विकास के लिए कार्यशाला।	5 दिन	12
(ख)	माध्यमिक स्तर पर गणित में यूनिट टैस्टों के विकास पर कार्यशाला।	7 दिन	15
(ग)	प्रइमरी स्कूल स्तर से सभी यूनिटों के लिए विज्ञान में किटों के विकास के लिए कार्यशाला।	6 दिन	20
14.	**प्रेक्षणमूलक खगोलविज्ञान** एस.सी.ई.आर.टी. और अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों के महत्वपूर्ण कर्मचारी-वर्ग के लिए प्रेक्षणमूलक खगोलविज्ञान में अभिविन्यास पाठ्यक्रम (इस क्षेत्र के लिए सुलभ ऐसे ही कार्यक्रम की एक अनुवर्ती कार्रवाई)।	4 दिन	15
15.	**भूगोल में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम** स्कूल स्तर पर भूगोल पढ़ा रहे अध्यापकों के लिए भूगोल में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम।	10 दिन	26
16.	**प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण** आक्सारा सेना प्रोजेक्ट के अधीन कर्नाटक के ए.ई.ओ. व आई. ओ. कर्मचारियों तथा अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम।	5 दिन	29

अनुसंधान

कालेज ने स्कूली शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों में कुछ अनुसंधान अध्ययन आरंभ किये हैं। 1984-85 के दौरान निम्नलिखित अनुसंधान परियोजनाएं आरंभ की गईं:

क्र.सं	अनुसंधान परियोजना/समस्या का शीर्षक
1.	आर.सी.ई. (मैसूर) कार्यक्रमों (ई.आर.आई.सी. प्रोजेक्ट) की स्वीकृति, जागरूकता तथा प्रभाव।
2.	एक संस्थागत कैम्पस, आर.सी.ई., मैसूर (ई.आर.आई.सी. प्रोजेक्ट) में सहकारी उपचारी केन्द्र के लिए एक प्रयोगात्मक माडल।
3.	पांडिचेरी में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम कार्मिक की जनसंख्या शिक्षा में विशेषज्ञता मूल्यांकन हेतु एक जांच-पड़ताल और इसका ऐसे कार्यक्रम के प्रति संबंध-व्यवहार (एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान अध्येतावृति: पी-एच.डी. अनुसंधान)।
4.	गणित शिक्षण और इसके नवीनीकरण की क्रियाविधि के लिए एक सक्षमता आधारित पाठ्यचर्या डिज़ाइन का विकास।
5.	घर की भाषा, स्कूल की भाषा और शैक्षिक कार्य-निष्पादन–विभिन्न सामाजिक वर्गों के अनुसूचित जाति के

बच्चों का एक आनुभविक अध्ययन (एन.सी.ई.आर.टी. अध्येतावृति: पी-एच.डी. अनुसंधान)।

6 भौतिकी प्रयोगों के निष्पादन में खुले अंतिम दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन बनाम उच्चतर माध्यमिक स्टेज पर पारंपरिक अभिगम (एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान अध्येतावृति; पी-एच.डी. अनुसंधान)।

प्रकाशन

1984-85 के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गये:

1. जनसंख्या शिक्षा: अध्यापक शिक्षकों के लिए दीपिका
2. शिक्षण में इंटर्नशिप पर पुस्तिका
3. स्कूल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के निम्नलिखित यूनिटों में स्वत: अनुदेशी माड्यूल (यूनेस्को प्रोजेक्ट: सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी)

ऊर्जा और साधारण मशीनें
घर्षण
प्रकाश के लिए दहन
घरेलू बिजली
विद्युत-चुम्बकीय यंत्र
अपने आहार को डिज़ाइन करो

निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल

क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से सम्बद्ध निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल कालेजों द्वारा प्रदत्त विभिन्न अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों में नामांकित अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के लिए अभ्यासी स्कूलों का कार्य करते हैं। स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में ये स्कूल नवोत्पादी प्रक्रियाओं के परीक्षण के लिए प्रयोगशाला का कार्य करते हैं।

1984-85 के दौरान विभिन्न निदर्शन स्कूलों में नामांकन निम्न प्रकार था:

निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल, अजमेर	814
निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल, भोपाल	826
निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल, भुवनेश्वर	1074
निदर्शन बहूद्देश्य स्कूल, मैसूर	1013

मार्च-अप्रैल 1984 के दौरान की गई बोर्ड की परीक्षाओं के परिणाम निम्न प्रकार थे:

स्कूल	कक्षा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
डी.एम.एस., अजमेर	12वीं	72	69	96
	10वीं	71		

डी.एम.एस., भोपाल	12वीं	20	16	80
	10वीं	61	59	95
डी.एम.एस., भुवनेश्वर	12वीं	49	44	89.7
डी.एम.एस., मैसूर	12वीं	8	7	87.5
	10वीं	73	62	84.8

9

शैक्षिक टैक्नालोजी

देश में शिक्षा के सुधार तथा विस्तार हेतु शैक्षिक टैक्नालोजी की प्रोन्नति को बढ़ावा देने के लिये केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) की स्थापना मई 1984 में एन.सी.ई.आर.टी. के तत्कालीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र और शिक्षण साधन विभाग को मिलाकर की गई। संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में सी.आई.ई.टी. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के एक अंग के रूप में कार्य करता है।

देश में शिक्षा की समस्या को हल करने संबंधी शैक्षिक टैक्नालोजी की क्षमता का अनुभव करते हुए सी.आई.ई.टी. ने इस क्षेत्र में बढ़ती मांगों के साथ तालमेल रखते हुए अनेक बहु-आकारीय कार्यक्रमों का दायित्व लिया है।इस दिशा में अनेक प्रणालियों/साधनों/कार्यक्रमों को डिज़ाइन, कार्यान्वित, उत्पादित एवं मूल्यांकित करने के प्रयास शुरु हो गये हैं। इसके अतिरिक्त, अनेक क्षेत्रों में शैक्षिक टैक्नालोजी, अनुसंधान और विकास की गतिविधियों की क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु किये गए। अनेक राज्यों एवं राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों के साथ सहयोग बनाए रखा गया है। फरवरी, 1984 में एक त्रिवर्षीय यून.एन.डी.पी. प्रोजेक्ट, शिक्षा के लिए इनसेट, भारत सरकार द्वारा हस्ताक्षरित किया गया। इस वर्ष की गई विशेष गतिविधियों का विवरण निम्न प्रकार है:

शिक्षा के लिए इनसेट

सी.आई.ई.टी. ने ग्रामीण (स्कूली) बच्चों अध्यापकों की शिक्षा के लिए इनसेट-1 बी उपग्रह के प्रयोग का कार्य जारी किया। प्रोजेक्ट में सम्मिलित हैं टी.वी. पाठ्यचर्या की योजनाः कथा लेखकों का प्रशिक्षण, कार्यक्रम निर्माणकर्ता और ई.टी.वी. निर्माण से संबंधित अन्य वर्गों का कार्मिक; कथाओं का विकास और कार्यक्रमों का उत्पादन; कार्यक्रम अनुसंधान; टी.वी. उपयोगकर्ता अध्यापकों का प्रशिक्षण; और कार्यक्रमों के उपयोग का मानीटर करना।

कार्यक्रम विकास

इनसेट-1 बी का प्रयोग करते हुए उपग्रह संचार सेवा को छः राज्यों–आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार–तक पहुंचाया गया। टी.वी. पाठ्यचर्या को विकसित करने के लिए, सी.आई.ई.टी. ने ग्रामीण स्तर पर ई.टी.वी. कार्यक्रमों के अनुकूल प्रसंगों और विषयों के चयन तथा पहचान हेतु एक पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का मार्च-अप्रैल, 1984 में आयोजन किया। प्रस्तावित प्रसंगों और विषयों की सूची आगे फिर एक समिति, जोकि तत्संबंधी उद्देश्य के परिप्रेक्षय में गठित की गई, ने संशोधित की। इसके तत्काल बाद की 10-दिवसीय कार्यशाला में चुनिंदा ई.टी.वी. प्रसंगों/विषयों के लिए विस्तृत कार्यक्रम संक्षेप तैयार किए गये। कथाओं और कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला की सिफारिशें तथा विस्तृत कार्यक्रम संक्षेप सभी इनसेट राज्यों व दूरदर्शन केन्द्रों को भेजे गए।

कार्यक्रम उत्पादन

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, ई.टी.वी. कार्यक्रमों का उत्पादन, डब्बिंग और कैपसूलिंग उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के लिए चलता रहा। कार्यक्रम कैपसूलों को संचार के लिए उपग्रह के जरिए यू.डी.के., दिल्ली भेजा गया और डी.डी.के., नागपुर, को संचार के लिए पार्थिव ट्रांसमीटरों के द्वारा।

संचार सारणी

विभिन्न इनसेट राज्यों के लिये एकीकृत संचार सारणियां तैयार की गईं और सभी संबंधितों को भेजी गईं।

ई.टी.वी. प्रशिक्षण

प्रसारण विकास संबंधी एशिया प्रशांत संस्थान (ए.आई.बी.डी.) कुआलालम्पुर और यूनीसेफ़ के सहयोग से एस.आई.ई.टी. संस्थाओं, सी.आई.ई.टी., यूनीसेफ़ और श्रीलंका के ई.टी.वी. उत्पादन से संबंधित विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों के लिए एकीकृत टी.वी. उत्पादन में एक 5-सप्ताह वाला आरंभिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सितम्बर-अक्तूबर, 1984 में आयोजित किया गया। छः प्रोटोटाइप कार्यक्रम कोर्स के भाग के रुप में निर्मित किये गये।

बिहार के ई.टी.वी. कथा लेखकों के लिए एक 15-दिवसीय अभिविन्यास व चयन कार्यशाला 3 से 17 दिसम्बर, 1984 तक आयोजित की गई। कुल मिलाकर ;7 सहभागी कार्यशाला में उपस्थित थे।

इनसेट सेल, गुजरात, के अधिकारियों के लाभ के लिये ई.टी.वी. कार्यक्रमों के डब्बिंग और कैपसूलिंग में

कार्य पर प्रशिक्षण से संबंधित एक चार-सप्ताह वाला प्रशिक्षण सितम्बर-अक्तूबर, 1984 में आयोजित किया गया।

यूनीसेफ़ के सहयोग से विकलांगों के लिए कार्यक्रम निर्मित करने के लिए एक सप्ताह की ई.टी.वी. उत्पादन प्रशिक्षण कार्यशाला 'घर में निर्माताओं के लिए सितम्बर 1984 में आयोजित की गई। कार्यशाला के दौरान बच्चों के लिए एक कार्यक्रम 'घड़ी' (क्लॉक) पर निर्मित किया गया।

कार्यक्रम पूर्वदर्शन तथा क्षेत्र परीक्षण

आंतरिक कार्यक्रम पूर्वदर्शन समिति ने सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों को पूर्वदर्शित और विश्लेषित करना जारी रखा। टी.वी. कार्यक्रम निर्माताओं को पूर्वदर्शन समिति की सम्मतियां एवं सुझाव उपलब्ध कराए गए। इसके अलावा, कुछ कार्यक्रमों को क्षेत्र में परीक्षित किया गया और कार्यक्रम निर्माताओं को फीडबैक दिया गया।

कार्यक्रम अनुसंधान

एक विशिष्ट वर्ग के श्रोताओं के लिए आवश्यकता आधारित और प्रासंगिक ई.टी.वी. कार्यक्रमों को नियोजित व निर्मित करने के लिए, उत्तर प्रदेश के इनसेट जिलों में एक अध्ययन श्रोताओं के पार्श्वचित्र तथा लोगों की विशेषताओं व जीवन शैली का अध्ययन करने के लिए आरंभ किया गया। रिपोर्ट तैयार की जा रही है। बीच में तीन वीडियो रिपोर्ट तैयार की गई हैं और कार्यक्रम निर्माताओं के लाभ के लिए उन्हें भेंट की गईं।

किन बच्चों की आवश्यकताएं ई.टी.वी. समर्थन की दरकार हैं, इसका मूल्यांकन करने के लिए सी.आई.ई.टी. ने उड़ीसा में एक दूसरा अध्ययन पूरा किया। अध्ययन का निष्कर्ष था कि बच्चों के ज्ञान की वृद्धि के लिए टी.वी. का प्रयोग करना शायद बेहतर होगा। ई.टी.वी. के उचित लक्ष्यों में यह भी महसूस किया गया कि बच्चों को अपने आप सीखने और अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रमों की उपयोगिता को मानीटर करना

उड़ीसा के बारे में ई.टी.वी. उपयोगिता संबंधी दो अध्ययन–एक 1983-84 के लिए तथा दूसरा सितम्बर, 1984 के अन्त की अवधि का–पूरे किये जा चुके हैं। अध्ययनों ने प्रकट किया है कि सभी तीन ज़िलों अर्थात् संबलपुर, बोलनगीर और धेनकेनाल में कार्यकारी सेटों में उत्तरोत्तर ह्रास है। सितम्बर, 1984 के अन्त तक की अवधि के अन्तर्गत सभी तीनों ज़िलों को समग्र रूप म लेते हुए यह पाया गया कि औसतन टी.वी. सेटों ने 33 प्रतिशत टी.वी. स्कूलों में कार्य किया। अध्ययन ने रिसीविंग सेटों के सुचारु रूप से कार्य करने के लिए रख-रखाव उपप्रणाली को अभिनवकृति करने की ओर इंगित किया। जांच-परिणाम सभी संबंधितों को सूचित कर दिये गये हैं।

सी.आई.ई.टी. व एस.आई.ई.टी. संस्थाओं के लिए उपकरण तथा भवन के लिए योजना

'शिक्षा के लिए इनसेट' प्रोजेक्ट को कार्यान्वित करने के लिए जिसके लिए सहायता यू.एन.डी.पी. से भी उपलब्ध है दिल्ली स्थित सी.आई.ई.टी. के केन्द्रीय उत्पादन केन्द्र के अतिरिक्त, एस.आई.ई.टी. के

उत्पादन केन्द्रों छः इनसेट राज्यों के प्रत्येक राज्य में लगाए जाने हैं। इन सभी उत्पादन केन्द्रों में उपकरण-प्रस्थापन का समन्वयन करने का दायित्व सी.आई.ई.टी. ने लिया हुआ है। टर्न-की आधार पर उपकरण प्रस्थापित करने के लिए भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड को आदेश भेजे जा चुके हैं।

सी.आई.ई.टी. स्टूडियो

अन्तरिक्ष विभाग को सी.आई.ई.टी. के स्थायी भवन निर्माण, जिसके साथ तकनीकी उत्पादन व प्रशिक्षण कंप्लेक्स भी हो, की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। इस बीच एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस में पुराने पुस्तकालय को एक (निरंतर चलने वाले) टी.वी. स्टूडियों में परिवर्तित किया जा चुका है। यह 10 सितम्बर, 1984 को शुरु किया गया था और प्रथम ई.टी.वी. प्रशिक्षण कोर्स ए.आई.बी.डी. कुआलालम्पुर, मलेशिया के सहयोग से, इस स्टूडियों को प्रयुक्त करते हुए, सितम्बर, 1984 में ओोजित किया गया था। स्टूडियो को विभिन्न भाषाओं में ई.टी.वी. कार्यक्रमों के उत्पादन तथा डब्बिग हेतु भी इस्तेमाल किया गया।

एस.आई.ई.टी. स्टूडियो

अस्थायी स्टूडियो सभी छः राज्यों में, केवल आन्ध्र प्रदेश को छोड़, संभवतः अक्तुबर, 1985 तक तैयार हो जाएंगे। सी.आई.ई.टी. तथा एस.आई.ई.टी. संस्थाओं को टी.वी. कार्यक्रमों के उत्पादन हेतु ज्यादातर ई.एन.जी. उपकरण पहले ही दिए जा चुके हैं।

ई.टी.वी. कार्यक्रम

शिक्षा सभी के लिए: शिक्षा मंत्रालय के अनुरोध पर, सी.आई.ई.टी. ने एक 20-मिनट का वीडियों कार्यक्रम, 'शिक्षा सभी के लिए' नाम से राष्ट्रीय प्रसारण हेतु निर्मित किया। कार्यक्रम प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण की प्राप्ति की और उपलब्धियों एवं चुनौतियों को उजागर करता है।

शिक्षा में कंप्यूटर: कंप्यूरों में अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए सी.आई.ई.टी. ने राष्ट्रीय शैक्षक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग तथा आई.आई.टी., मद्रास के सहयोग से 45-मिनट वाली तीन वीडियो टेपों का निर्माण कंप्यूटर साक्षरता पर किया है।

कम लागत की सहायक सामग्रियां: ग्रामीण प्राथमिक स्कूल अध्याकपों के लिए कम लागत/शून्य लागत वाली सहायक सामग्रियों के निर्माण पर छः वीडियों कार्यक्रमों की माला बनाई जा चुकी है। आगामी कार्य के लिए कार्यक्रमों को एक दिन की कार्यशाला में विश्लेषित किया जा चुका है।

समुदाय गायन: 'समुदाय गायन' पर आधे घंटे का एक वीडियो कार्यक्रम राष्ट्रीय नेटवर्क पर संभव प्रसारण के लिए विकसित किया जा चुका है। कार्यक्रम को 7 फरवरी, 1985 को रिकार्ड किया गया जबकि शिक्षा मंत्री श्री के.सी. पन्त, एन.सी.ई.आर.टी. में पधारे और समुदाय गायन की प्रथम प्रति का विमोचन किया। दिल्ली के संगीत अध्यापकों के एक समूह द्वारा रचित इस कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं के समुदाय गायनों का प्रस्तुतीकरण शामिल था।

शैक्षिक रेडियो

रेडियो कार्यक्रमों के मूल्यांकन में प्रशिक्षण : आकाशवाणी बंगलौर के शैक्षिक रेडियो प्रसारणों का अध्ययन करने के लिए, इस परियोजना के अधीन, रेडियो कार्यक्रमों के मूल्यांकन हेतु, दो भिन्न-भिन्न ताल्लुकों के 50 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। उत्पादन और पाठ्यचर्या में प्रासंगिकता की दृष्टि से कार्यक्रमों के प्रतिनिधि समूह को विश्लेषित किया जा चुका है। आंकड़े इकट्ठे कर लिये गये हैं और रिपोर्ट निर्माणधीन है।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम कार्यक्रम : 9वीं और 10वीं स्तरों के लिए भारत का स्वतंत्रता संग्राम के रेडियो कार्यक्रम बनाने हेतु इस परियोजना के अधीन 11 कार्यक्रम निर्माणाधीन हैं।

कवियों पर कार्यक्रम : लब्धप्रतिष्ठ हिन्दी कवियों पर रेडियो कार्यक्रम बनाने हेतु इस परियोजना के अधीन अब तक 9वीं 10वीं स्तर के बच्चों के लिए 7 कार्यक्रम निर्मित किये जा चुके हैं।

राष्ट्रीय एकता पर कार्यक्रम : राष्ट्रीय एकता पर रेडियो कार्यक्रम बनाने हेतु इस परियोजना के अधीन 10 कार्यक्रमों की एक माला निर्मित की जा चुकी है। कार्यक्रमों का क्षेत्र-परीक्षण किया जा रहा है।

हिन्दी की प्रथम भाषा के तौर पर पढ़ाई : राजस्थान के जयपुर जिले में निचले प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के लिए हिन्दी की प्रथम भाषा के तौर पर पढ़ाई चलती रही। 1984-85 के दौरान कक्षा-2 के बच्चों के लिए हमारा कार्यक्रम प्रतिदिन प्रसारित किया गया।

शैक्षिक फिल्में

उत्पादन : विचाराधीन अवधि में, सी.आई.ई.टी. ने 16 मि. मी. की तीन काली-सफेद शैक्षिक फिल्में निर्मित की हैं: अकोटीकृत स्कूल, समाजीय उपयोगी उत्पादक कार्य और यह एक दिन हुआ।

फिल्मों की प्रतियों की बिक्री : बिना लाभ-हानि पर शैक्षिक संस्थाओं को शैक्षिक फिल्में प्रदान किये जाने के कार्यक्रम के अधीन सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित विभिन्न फिल्मों की 83 प्रतियां बनाई गईं।

केन्द्रीय फिल्म पुस्तकालय (सी.एफ.एल.)

खरीद : सी.आई.ई.टी. ने 30 नई शैक्षिक फिल्में खरीदीं और एक फिल्म उसे उपहार-स्वरूप मिली। इस प्रकार सी.एफ.एल. में कुल फिल्मों की संख्या 8220 तक पहुंच गई।

उधार सेवा : विचाराधीन अवधि में प्रदर्शनी हेतु विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को विभिन्न फिल्मों की 7012 प्रतियां निःशुल्क दी गई। 142 और शैक्षिक संस्थाओं को सी.एफ.एल. का सदस्य बनाया गया। कुल सदस्य संख्या अब बढ़कर 4547 हो गई है।

फिल्मोहत्सव : शैक्षिक फिल्मों को लोकप्रिय बनाने के लिए, फरवरी, 1985 में एस.सी.ई.आर.टी. के महाराष्ट्र एम.एस. श्रव्य दृश्य शिक्षा संस्थान के सहयोग से बच्चों व अध्यापकों के लिए एक उत्सव पूना, अहमदनगर और औरंगाबाद में आयोजित किया गया। लगभग 5,000 विद्यार्थी प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर के और 500 अध्यापकों व प्रधान अध्यापकों ने विभिन्न फिल्मों को देखा।

दृश्य-श्रव्य साधन (कमेंट्री के साथ स्लाइड)

आर.सी.ई. मैसूर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से वालेंसी पर टेप-स्लाइड के लिए कमेंट्री व रेखाचित्र पूरे किये गये।

प्रतियां व बिक्री: सांची, आक्ज़ीडेशन एण्ड रिडक्शन, कोवलेंट एण्ड आओनिक बांड एण्ड पापुलेशन एजुकेशन पर हरेक टेप-स्लाइड वाले कार्यक्रमों की 50-50 सेटों की प्रतियां बनाई गईं और उन्हें विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को बेचा गया। इसके अलावा जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम पर फिल्म स्ट्रिपों के दस सेट भी बेचे गये।

लेखाचित्रीय सहायक सामग्रियां

भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर एलबम: 'स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष' नामक परियोजना दृश्य सामग्रियों व प्रलेखों द्वारा जारी रखी गई। इस परियोजना के अन्तर्गत एक एलबम विकसित किया गया है जिसमें 80 पैनेल हैं और ये भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न पहलुओं को उजगार करते हैं। डी. इ.एस.एस.एच. व एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से सी.आई.ई.टी. द्वारा की गई दो कार्यशालाओं व प्रदर्शनियों से प्राप्त सुझावों के आधार पर ये पैनेल चुने गये। शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रसिद्ध इतिहासकारों की एक समीक्षा समिति ने पैनेलों का पुनरीक्षण किया। पैनेलों को मुद्रणार्थ प्रेस में भेजा जा रहा है।

भौतिकी में चार्ट: सी.आई.ई.टी. में भौतिकी कार्यदल की एक बैठक भौतिकी चार्टों को अंतिम रूप देने के लिए आयोजित की गई। कुल मिलाकर दस चार्ट पूरे किये गए।

जीवविज्ञान में चार्ट: जीवविज्ञान चार्टों के लिये शिक्षण टिप्पणियां लिखने के लिए जीवविज्ञान कार्यदल की दो बैठकें आयोजित की गईं। इन दो बैठकों में 6 चार्टों के लिये शिक्षण टिप्पणियों को अंतिम रूप दिया गया और दूसरे चार्टों में कार्य प्रगति पर है।

कम लागत वाली शिक्षण सहायक सामग्रियां

सी.वी. शिक्षा कालेज, संगारिया (राजस्थान) में एक सप्ताह की कम लागत की शिक्षण सामग्रियों संबंधी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें गंगानगर जिले के ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों से 28 प्रधान अध्यापक व अध्यापक उपस्थित थे। सहभागियों ने समाज विज्ञान, भाषाओं व गणित क्षेत्र की कठिन संकल्पनाओं को पहचाना और स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों की सहायता से 31 शिक्षण सहायक सामग्रियां तैयार कीं। स्थानीय कारीगरों व बच्चों के सहयोग से सहभागी कम लागत की शिक्षण सामग्रियों के दर्शन शास्त्र, प्रक्रिया व क्रियाविधि से भलीभांति परिचित थे।

जुलाई 1984 में सी.आई.ई.टी. ने गणित में शिक्षण सहायक सामग्रियां तैयार करने संबंधी कार्य दल की एक बैठक आयोजित की, जिसमें गणित के अध्यापकों की सहायता से माध्यमिक और उच्च स्कूल स्तर की 80 सहायक सामग्रियों का परीक्षण किया गया। इन सहायक सामग्रियों को पहले गणित सुधार संघ, विजयवाड़ा, आन्ध्र प्रदेश, के सहयोग से कार्यदल की चार बैठकों में तैयार किया गया था।

गणित शिक्षण सहायक सामग्रियों के परिष्कार संबंधी दूसरे कार्यदल की बैठक अगस्त, 1984 में विजयवाड़ा में की गई। प्राथमिक स्कूलों से उच्च स्कूल स्तर तक ही गणित में उपलब्ध सभी शिक्षण सहायक

सामग्रियों का निरीक्षण किया गया। अध्यापकों द्वारा दिये गये सुझावों के आधार पर लगभग 90 माडलों, सारों और उदाहरणों को संशोधित किया गया। कठिन संकल्पनाओं संबंधी गणित शिक्षण सहायक सामग्रियों में दीपिका मुद्रित करने के लिए आवश्यक पग उठा लिए गये हैं।

सुदूर शिक्षा

अन्नामलई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु, में 11 से 16 फरवरी, 1985 के दौरान एक छः दिवसीय कर्याशाला 'पत्राचार शिक्षा में संसाधन/अध्ययन केन्द्र स्थापित करने संबंधी विकासशील सिद्धांत' पर की गई। इस कार्यशाला में पत्राचार शिक्षा कोर्स देने वाले आठ विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। एक छोटी पुस्तक 'पत्राचार शिक्षा संबंधी संसाधन/अध्ययन केन्द्र स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्धांत' कार्यशाला के दौरान विकसित की गई।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

दिल्ली में उत्तरी क्षेत्र के अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक टैक्नालोजी पर एक दो सप्ताह का अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। जम्मू व कश्मीर, पंजाब और हरियाणा से 13 सहभागी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

विद्या भवन, उदयपुर, में राजस्थान और गुजरात के अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक टैक्नालोजी पर दस दिनों का एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जनवरी, 1985 में राज्य शैक्षिक टैक्नालोजी सेल अधिकारीयों के लिए संक्षिप्त अभिविन्यास पाठ्यक्रम व कार्यशाला आयोजित की गई। 19 राज्यों के 29 सहभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में उपस्थित समस्याओं को विशेष तौर से लक्ष्य करके 1984-85 के दौरान विभिन्न ई.टी. सेलों द्वारा किये गए कार्य की विस्तारपूर्वक समीक्षा की गई। सहभागियों ने अपने राज्यों के लिए 1985-86 के लिए कार्य-योजना तैयार की।

जनवरी, 1985 में विशेषकर टेप-स्लाइड कार्यक्रमों को लेकर दृश्य-श्रव्य सामग्रियों के उत्पादन में शैक्षिक टैक्नालोजी और उसके प्रयोग पर दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। देश के विभिन्न भागों से आए 27 सहभागियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। ई.टी. के सैद्धांतिक पक्षों के अलावा, सहभागियों को टेप-स्लाइड कार्यक्रम तैयार करने के लिए अभ्यास कराया गया।

दृश्य-श्रव्य सामग्री, विशेषकर लेखाचित्रीय सहायक सामग्रियों, के उत्पादन में शैक्षिक टैक्नालोजी और उसके प्रयोग के संबंध में दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम मार्च, 1985 में आयोजित किया गया। देश के विभिन्न माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के 18 सहभागियों ने इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम के दौरान सहभागियों को विभिन्न रूपों की शिक्षण सहायक सामग्रियों, जैसे चार्टों, फलालेन लेखाचित्रों, फ्लैश कार्डों, पोस्टरों, चित्र-पुस्तकों इत्यादि को तैयार करने के सिद्धांत प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया गया। सहभागियों को नक्शा और डिजाइनिंग, कम्पोजीशन, लैटरिंग और सिल्क स्क्रीन मुद्रण प्रविधियों की कलाएं बताई गईं।

लेखाचित्र सहायक सामग्रियों, विशेषकर चार्टों को संदर्भित करते हुए अक्तूबर, 1984 में 5 दिनों का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली के सहयोग से दिल्ली के वाणिज्य अध्यापकों के लिए आयोजित किया गया।

सी.आई.ई.टी. ने अक्तूबर में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई.एल.ओ.) तथा आई.एन.टी.सी. कार्यकर्त्ता शिक्षा प्रोजेक्ट के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। सहभागियों को सस्ती शिक्षण सहायक सामग्रियां तैयार करने, विभिन्न रूपों के दृश्य-श्रव्य उपकरणों के संचालन तथा सिल्क स्क्रीन मुद्रण प्रक्रिया के बारे में कलाएं बताई गईं।

फोटोग्राफी में एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें दस अध्यापकों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को दृश्य सामग्रियों को विकसित, मुद्रित तथा लम्बा करने तथा साथ ही फोटोग्राफ लेने का प्रशिक्षण दिया गया।

सी.आई.ई.टी. ने दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग के सहयोग से जुलाई 1984 में दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया। उद्देश्य यह था कि प्राथमिक स्तर पर सस्ती शिक्षण सहायक सामग्रियों के प्रयोग के बारे में अध्यापकों में जागृति उत्पन्न की जाए। भाषा को प्रभावी रूप से सिखाने संबंधी श्रव्य टेपों, कम मूल्य वाली शिक्षण सामग्रियों तथा लेखाचित्रीय सामग्रियों के इस्तेमाल के निदर्शन दिये गये।

कार्यशालाएं

एस.सी.ई.आर.टी., बंगलौर में कर्नाटक राज्य के शिक्षा विभाग के सहयोग से कर्नाटक राज्य के 23 चुने हुए ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों के प्रधान अध्यापकों के लिए कम मूल्य वाली शिक्षण सहायक सामग्रियों संबंधी एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गई। कुल मिलाकर 30 संकल्पनाएं पहचानी गईं और प्रत्येक सहभागी ने स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों की सहायता से माडल के तौर पर एक-एक सहायक सामग्री डिज़ाइन की।

ई.आर.आई.सी. प्रोजेक्ट के अन्तर्गत 'गूंगों और बहरों संबंधी संकल्पनाएं विकसित करने हेतु शिक्षण सहायक सामग्रियों के प्रयोग पर एक खोजी अध्ययन' पर एक कार्यदल बैठक और स्रोत व्यक्तियों की एक कार्यशाला आयोजित की गई।

अन्य कार्यक्रम

परियोजना 'माध्यमिक स्तर पर भूगोल की कठिन संकल्पनाएं सिखाने संबंधी बहूद्देश्य साधन पैकेज' के अधीन सी.आई.ई.टी. ने जून 1984 में राजकीय बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान पचमढ़ी, मध्यप्रदेश में भूगोल की कठिन संकल्पनाओं को सिखाने तथा विषयवस्तु के अनुकूल साधनों के चयन संबंधी अनुदेशी सामग्रियों के पुनरीक्षण के लिए एक कार्यशाला आयोजित की। अनुदेशी सामग्रियों को पहले की गई कई कार्यशालाओं के द्वारा विकसित किया गया।

सी.आई.ई.टी. के उत्पादनों और प्रोटोटाइप सामग्रियों को मूल्यांकित करने के लिए एक कार्यशाला की गई। सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित निम्नलिखित दो फ़िल्मों को तकनीकी गुण और साथ ही साथ विषयवस्तु की दृष्टि से मूल्यांकित किया गया:

(i) स्कूल-शिक्षण (ii) शिक्षण में लेखा चित्रीय सहायक सामग्रियां

उपर्युक्त कार्यशाला में दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं के अध्यापक शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों सहित 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।

सी.आई.ई.टी. ने अपनी शैक्षिक सामग्रियों को प्रदर्शनी हेतु एम.आई.एन.ई.डी.ए.पी., ढाका, बंगला देश तथा जैनेवा में शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर भेजा।

सी.आई.ई.टी. ने चार शैक्षिक फिल्में भेजकर अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म उत्सव में भाग लिया।

सी.आई.ई.टी. ने मंत्रालय के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अधीन वियतनाम में चार फिल्में भेजीं।

10

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन विभाग (डी.एम.ई.एस.डी.पी.) के कुछ प्रमुख काम इस प्रकार हैं–शैक्षिक मूल्यांकन के लिए नवाचारी दृष्टिकोणों व नीतियों का विकास, स्कूली शिक्षा की सभी अवस्थाओं में परीक्षा संबंधी सुधारों की ओर निर्दिष्ट अनुसंधान व विकास कार्य, शिक्षण योजन के लिए डेटा बेस उपलब्ध कराने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षण कराना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाएं आयोजित करना और अनेक शैक्षिक सर्वेक्षणों व अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित आंकड़ों का संसाधन। राज्यों व संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों/निदेशकों और स्कूल/माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के साथ कंधे से कंधा मिला कर यह विभाग अपने कार्य करता आ रहा है।

शैक्षिक मूल्यांकन

विषयपरक, बृहत् और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रमों के विकास के प्रयास के एक भाग के रूप में डी.एम.ई.एस.डी.पी., विभिन्न विषय क्षेत्रों में आइटम बैंक व युनिट टेस्ट के रूप में नमूना मूल्यांकन सामग्री विकसित करने और शैक्षिक मूल्यांकन व परीक्षा सुधारने में लगे अध्यापकों, अध्यापक शिक्षिकों व अन्य कार्मिकों के प्रशिक्षण में लगा हुआ है। 1984-85 में 'डेवेलप्मेंट आफ क्राइटेरियन रेफरेंड टेस्ट् इन एन्वायरनमेंटल स्टीडीज़ एट द प्राइमरी स्टेज' परियोजना से संबंधित कार्य जारी रहा। 'एजूकेशनल एण्ड वोकेशनल एस्पिरेशंस आफ स्टुडेंट्स आफ क्लास 12' के अध्ययन के हिस्से के तौर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक

और व्यावसायिक आकांक्षाओं को आंकने के लिए साक्षात्कार तालिका और और अकप्राप्ति प्रक्रमों व विश्लेषण फार्मों वाली एक हस्तपुस्तिका तैयार की गई।

विभाग द्वारा हाथ में लिए गए कार्य का एक महत्वपूर्ण पहलू शैक्षिक मूल्यांकन से संबंधित वैचारिक सामग्री तैयार करना और विभिन्न विषयों के आइटम बैंक और परिक्षाओं की तैयारी था। तैयार की गई सामग्री में जैविका, अर्थशास्त्र व भूगोल में मूल्यांकन की हस्तपुस्तिकाएं, दसवीं श्रेणी के लिए अंग्रेजी के ए कोर्स के यूनिट टेस्ट, दसवीं व ग्यारहवीं श्रेणी के अंग्रेजी पढ़ने वालों के लिए यूनिट टेस्ट और अर्थशास्त्र का प्रश्न बैंक शामिल है।

1984-85 में, जांच, मूल्यांकन व परीक्षा सुधार में लगे राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर के अध्यापक शिक्षकों, कार्मिकों तथा माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विभिन्न बोर्डों द्वारा ली जा रही परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बनाने वालों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। इतिहास, भूगोल व अंग्रेजी के विषय लेखकों को प्रशिक्षित करने के लिए तीन दस दिवसीय कोर्स आयोजित किए गए। इन कोर्सों के द्वारा 62 व्यक्तियों को परीक्षण विषय-लेखन में प्रशिक्षित किया गया। अन्य चलाए गए प्रशिक्षण कार्यों में, गणित में विषय लेखकों के लिए एक सप्ताह के दो गहन प्रशिक्षण कोर्स और जैविकी में विषय लेखकों के लिए एक गहन प्रशिक्षण कोर्स शामिल है। गणित में विषय लेखकों के लिए आयोजित कोर्स में 51 व्यक्तियों ने भाग लिया और जैविकी में विषय लेखकों के लिए आयोजित कोर्स में 26 व्यक्तियों ने।

जम्मू व कश्मीर के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बनाने वालों के प्रशिक्षण के लिए विभाग ने एक-एक सप्ताह की दो कार्यशालाएं आयोजित कीं। इन कोर्सों में विभिन्न विषयों के प्रश्नपत्र बनाने वाले 100 संभावित व्यक्तियों को परीक्षा-पत्र बनाने और मूल्यांकन की तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया। इनके अतिरिक्त, राजस्थान, मणिपुर, असम और गोवा, दमन व दिउ में स्कूल/माध्यमिक शिक्षा बोर्डों की बाहरी परीक्षाओं के सुधार के लिए आठ-आठ दिन की अवधि की चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में 196 व्यक्तियों ने भाग लिया।

शैक्षिक सर्वेक्षण

हिमालच प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, कर्नाटक, ओड़िसा, पंजाब, तमिलनाडु और त्रिपुरा राज्यों तथा अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह, दिल्ली और गोआ, दमन व दिउ संघशासित प्रदेशों के लिए 'नमूना आधार पर चतुर्थ अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण आंकड़ों का द्वितीयक विश्लेषण' पूरा किया गया। विश्लेषण से भवन व स्कूलों में श्रेणी कक्षों की संख्या जैसी भौतिक सुविधाओं, स्कूलों में पुस्तकालय, पुस्तक बैंकों, श्यामपट्टों, खेल के मैदानों, खेल सामग्री, पीने के पानी की सुविधाओं आदि की उपलब्धि के बारे में आंकड़े प्राप्त हुए। यह पाया गया कि प्राथमिक स्कूलों में इनमें से अधिकतर सुविधाओं की कमी थी जबकि मिडल, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में भौतिक सुविधाओं व अन्य ढांचे संबंधित सुविधाओं की स्थिति बेहतर थी।

1984-85 में 'लड़कियों को शिक्षा के पिछड़ेपन का अध्ययन' भी पूरा कर लिया गया। लड़कियों के, स्कूल में भरती न होने और पढ़ाई बीच में छोड़ देने के कारणों का अध्ययन करने के लिए यह अध्ययन नमूने के तौर पर आठ राज्यों-आंध्रप्रदेश, हरियाणा, जम्मू व कश्मीर, मध्यप्रदेश, बिहार ओड़िसा राजस्थान और उत्तर प्रदेश में किया गया। अध्ययन के लिए प्रत्येक राज्य से विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले दो से पांच तक जिले चुने गए। नमूने के गठन में 27 जिले शामिल थे। अध्ययन के लिए प्रत्येक जिले में से एक ऐसा ब्लाक जिसका कुल भरती अनुपात समग्र जिले के ऐसे अनुपात से अधिक था, एक ऐसा ब्लाक जिसका कुल भरती अनुपात समग्र जिले के ऐसे अनुपात के बराबर था और एक ऐसा ब्लाक जिसका कुल भरती अनुपात समग्र

जिले के ऐसे अनुपात से कम था, चुने गए। अध्ययन में प्रत्येक जिले के 50 गांव लिए गए। अध्ययन के लिए, विभिन्न वर्गों के अभिभावकों का प्रतिनिधित्व करने वाले, प्रत्येक जिले के 400 अभिभावकों का नमूना चुना गया। प्रत्येक जिले में से 9-16 वर्ष के आयु-वर्ग की लगभग 100-150 ऐसी लड़कियों का अध्ययन के लिए साक्षत्कार किया गया, जिन्होंने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी थी।

अध्ययन से यह पता चला कि बीच में पढ़ाई छोड़ने वालों में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या अधिक है और यह दर सामान्य रूप से अनुसूचित जातियों व जनजातियों की लड़कियों के मामले में सबसे अधिक थी। अध्ययन से उन कोर्सों की पहचान में भी सहायता मिली जिनमें लड़कियां भरती ही नहीं होती या फिर बीच में ही छोड़ जाती हैं।

1984-85 में जिन अन्य अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य जारी रखा गया उनमें 'शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए राज्यों में प्राथमिक अवस्था में ठहराव और पढ़ाई छोड़ जाने का अध्ययन', 'अरुणाचल प्रदेश में लड़कियों की शिक्षा के पिछड़ेपन का अध्ययन' और 'राजस्थान में अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए शिक्षा सुविधाओं का नमूना सर्वेक्षण' शामिल है।

शिक्षा में नमूना सर्वेक्षण रीतियों में पांचवां प्रशिक्षण कार्यक्रम पुणे में 13 से 22 फरवरी, 1985 को हुआ। इसमें 150 व्यक्तियों ने भाग लिया।

विभाग ने, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र व उत्तर प्रदेश नामक चार राज्यों में 'शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) के लिए शिक्षा सुविधाएं' पर रिपोर्ट तैयार की। भारत सरकार ने गृह मंत्रालय के कहने पर यह कार्य किया गया। विभाग ने अध्यापकों के दो राष्ट्रीय आयोगों को, उनके विचार-विमर्श के लिए अपेक्षित डेटा बेस देकर सहायता दी।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

दसवीं, ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (1984), मई 1984 में आयोजित की गई। कुल मिलाकर 103161 विद्यार्थी परीक्षा में बैठे– दसवीं श्रेणी के लिए 47450, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए 33313 और बारहवीं श्रेणी के लिए 22398। साक्षात्कार के लिए, दसवीं श्रेणी के लिए 702, ग्यारहवीं के लिए 282 और बारहवीं के लिए 431, कुल मिलाकर 1415 विद्यार्थियों को बुलाया गया। छात्रवृत्ति दिए जाने के लिए इनमें से दसवीं श्रेणी के लिए 375, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए 150 और बारहवीं श्रेणी के लिए 225, कुल मिलाकर 750 विद्यार्थियों को चुना गया। इनमें से अनुसूचित जातियों/जनजातियों के 75 विद्यार्थी 35 दसवीं श्रेणी के, 19 ग्यारहवीं के और 21 बारहवीं श्रेणी के थे। वर्ष 1984 में दसवीं, ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के लिए राज्यवार कितने विद्यार्थी परीक्षा में बैठे, कितनों का साक्षात्कार हुआ और कितने चुने गए, इसका विवरण इस अध्याय के अंत में क्रमशः सारणी 10.1, 10.2 और 10.3 में दिया गया है।

1984-85 के शिक्षा सत्र में राष्ट्रीय प्रतिभ खोज छात्रवृत्तियां देने के लिए चयन की योजना में एक परिवर्तन लागू किया गया। इस नई योजना में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का राज्य स्तर पर विकेन्द्रीकरण किया गया और छात्रवृत्ति दिए जाने के लिए चयन, दसवीं श्रेणी के अन्त में दो अवस्थाओं में करने का प्रस्ताव किया गया। राज्य स्तर पर लिखित परीक्षाएं आयोजित करके, राज्यों/संघशासित प्रदेशों द्वारा पहली अवस्था का चयन 1984 की तीसरी तिमाही में किया गया। इन परीक्षाओं के आधार पर, विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों द्वारा सिफारिश किए गए उम्मीदवारों में से, छात्रवृति पाने के लिए वांछित संख्या में विद्यार्थियों को चुनने के लिए मई 1985 में

होने वाली दूसरे स्तर की परीक्षा के लिए उम्मीदवारों की निश्चित संख्या की सिफारिश की जाती है।

राज्ज/संघशासित प्रदेश स्तर पर पहली लिखित परीक्षा आयोजित करने के लिए डी.एम.ई.एस.डी.पी. ने राज्यों/संघशासित प्रदेशों को सभी सहायता दी। राज्यों/संघशासित प्रदेशों को, अपने विषय लेखकों को प्रशिक्षित करने में सहायता देने के विचार से विभाग ने साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण (जी.एम.ए.टी.) के लिए आइटम तैयार करने में, राज्य स्तरीय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए, दो कार्यशालाएं आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं में 62 राज्य स्तरीय कार्मिकों ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त, आन्ध्रप्रदेश, असम, गुजरात, हरियाणा, मध्यप्रदेश, मणिपुर, ओड़िसा, राजस्थान, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तरप्रदेश व पश्चिम बंगाल के राज्यों और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह, अरुणाचल प्रदेश, चण्डीगढ़ व पांडेचेरी के संघशासित प्रदेशों में, शैक्षिक अभिरुचि परीक्षण (एस.ए.टी.) के लिए विषय लेखकों के प्रशिक्षण के लिए 15 प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन पाठ्यक्रम के माध्यम से शैक्षिक अभिरुचि परीक्षा के लिए विषय लेखन में 5430 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए, विभिन्न विश्वद्यालयों में पढ़ रहे स्नातक व स्नातकोत्तर पुरस्कृतों के लिए चार ग्रीष्मकालीन स्कूल और 9 ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। 80 स्नातक पुरस्कृतों ने और 28 स्नातकोत्तर पुरस्कृतों ने इन ग्रीष्मकालीन स्कूलों व कार्यक्रमों में भाग लिया।

विभिन्न स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में दर्ज, 1984-85 में पुरस्कृतों को शामिल करके, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज के विद्ववानों की कुल संख्या 4191 थी इसमें अनुसूचित जातियों के 162 विद्यार्थी और अनुसूचित जनजातियों के 44 विद्यार्थी शामिल थे। इनमें से 750 तो + 2 की अवस्था में अपनी पढ़ाई चला रहे थे, 571 स्नातक स्तर पर, 316 स्नातकोत्तर स्तर पर, 80 पी.एच.डी. की अवस्था में, 2098, व्यावसायिक कालेजों में पहली डिग्री की अवस्था में और 376, व्यावसायिक कालेजों में दूसरी डिग्री की अवस्था में।

इस वर्ष (1984-85) में छात्रवृत्तियों के भुगतान के लि रु. 88,32,698 की राशि का उपयोग हुआ जिसमें रु. 4,32,698 की वह राशि भी शामिल है जो अनुसूचित जाति/जनजाति के पुरस्कृतों को दी गई।

आंकड़ा संसाधन

डी.एम.ई.एस.डी.पी. के आंकड़ा संसाधन एकक की प्रमुख गतिविधियां, कम्प्यूटर के अन्तर्वेश (इनपुट) माध्यम पर आंकड़े तैयार करने, अनुप्रयोग साफ्टवेयर के विकास और कम्प्यूटर पर आंकड़ों के संसाधन के चारों और केन्द्रित थीं। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों और रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के घटक एककों द्वारा चलाई जा रही अनेक अनुसंधान परियोजनाओं के सम्बद्ध आंकड़ों को कम्प्यूटर पर संसाधित किया गया। किए गए अन्य महत्वपूर्ण कार्य थे– ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (1984) के परिणाम तैयार करना और प्रत्याशियों द्वारा साक्षात्कार में प्राप्त अंकों को तालिकाबद्ध करने के बाद, दसवीं, ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का अंतिम परिणाम तैयार करना।

प्रकाशन

1984-85 में निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए:

(1) इम्पेक्ट आफ मिड डे मील्स प्रोग्राम आन एनरोलमेंट एण्ड रिटेन्शन रेट्स एट प्राइमरी स्टेज (संक्षिप्त रुपांतर)।

(2) नीड फार डेवेलपिंग कम्पोजिट मार्किंग सिस्टम (अनुलिपिबद्ध)।

(3) नंबर अपीयर्ड, पास्ड एण्ड परसेंटज आफ फर्स्ट डिवीजनर्स इन बोर्ड एक्ज़ामिनेशन्स इन 1980 एण्ड 1918। (अनुलिपिबद्ध)

सारणी 10.1

वर्ष : 1984
दसवीं श्रेणी

वर्ष 1984 में दसवीं श्रेणी के उन प्रत्याशियों की संख्या का राज्यवार विवरण जो राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठे/साक्षात्कार के लिए बुलाए गए और चुने गए।

राज्य/संघशासित प्रदेश	परीक्षा में बैठे	सामान्य		अनुसूचित जाति/जनजाति		कुल चुने गए	सामान्य				अनुसूचित जाति/जनजाति			
		साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए		मूलभूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए		मूलभूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए	
							लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1. आंध्र प्रदेश	3116	12	6	02	1	7	5	–	1		1	–	–	–
2. असम	372†	01	1	04	'	2	–	–	–	1	1	–	–	–
3. बिहार	7382	123	57	20	10	67	32	2	21	2	3	–	7	–
4. गुजरात	1664	04	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5. हरियाणा	745	08	1	–	–	1	–	1	–	–	–	–	–	–
6. हिमाचल प्रदेश	280	03	1	–	–	1	1	–	–	–	–	–	–	–
7. जम्मू व कश्मीर	123	02	2	–	–	2	1	–	–	1	–	–	–	–
8. कर्नाटक	2470	15	5	03	2	7	4	1	–	–	2	–	–	–
9. केरल	3040	14	4	01	–	4	4	–	–	–	–	–	–	–
10. मध्यप्रदेश	2076	09	04	–	–	4	4	–	–	–	–	–	–	–
11. महाराष्ट्र	4783	94	41	08	2	43	32	6	2	1	2	–	–	–
12. मणिपुर	22	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13. मेघालय	90	02	2	02	1	3	1	–	1	–	1	–	–	–
14. नागालैण्ड	06	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
15. ओड़िसा	1161†	21	13	01	–	13	5	1	7	–	–	–	–	–
16. पंजाब	695†	10	4	01	1	5	2	–	2	–	–	–	–	1
17. राजस्थान	2587	28	19	–	–	19	15	–	4	–	–	–	–	–
18. सिक्किम	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19. तमिलनाडु	3662	35	18	08	7	25	14	4	–	–	3	3	1	–
20. त्रिपुरा	15	01	1	–	–	1	1	–	–	–	–	–	–	–
21. उत्तर प्रदेश	5179	35	17	04	1	18	13	1	2	1	–	–	1	–
22. पश्चिम बंगाल	2923	49	24	10	5	29	19	–	5	–	4	–	1	–
संघशासित प्रदेश														
1. अंडमान निकोबार द्वीपसमूह	28	1	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
2. अरुणाचल प्रदेश	33	–	–	01	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. चंडीगढ़	393	08	2	–	–	2	2	–	–	–	–	–	–	–
4. दादर, नगर हवेली	17	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5. दिल्ली	4504	225	117	05	4	121	84	21	10	2	3	–	1	–
6. गोआ, दमन व दिउ	96	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7. लक्षद्वीप	02	–		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8. मिजोरम	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
9. पांडिचेरी	169	02	1	–	–	1	–	1	–	–	–	–	–	–
विदेश														
1. लन्दन	01	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
2. तेहरान	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. बहराइन राज्य	04	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
4. काठमांडू	04		–		–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5. मस्कट	01	–	–		–	–	–	–	–	–	–	–		–
जोड़	47450	702*	340	70	35	375**	239	38	55	8	20	3	11	1

*अनुसूचित जाति/जनजाति के वे 5 प्रत्याशी शामिल हैं जिन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया।

** सामान्य वर्ग में साक्षात्कार के लिए बुलाए गए अनुसूचित जाति/जनजाति के 5 प्रत्याशी इसमें शामिल हैं।

† पूरक परीक्षा में बैठने वाले प्रत्याशियों की संख्या भी इन संख्याओं में शामिल हैं।

सारणी10.2

वर्ष: 1984

श्रेणी ग्यारहवीं

उन प्रत्याशियों की संख्या का राज्यवार विवरण जो राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठे/साक्षात्कार के लिए बुलाए गए और चुने गए।

राज्य/संघशासित प्रदेश	परीक्षा में बैठे	सामान्य		अनुसूचित जाति/जनजाति		कुल चुने गए	सामान्य				अनुसूचित जाति/जनजाति			
		साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए		मूलभूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए		मूलभूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए	
							लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1. आंध्र प्रदेश	1920	13	4	–	–	4	3	1	–	–	–	–	–	–
2. असम	209*	–	–	1	1	1	–	–	–	–	–	–	1	–
3. बिहार	2539	28	11	3	3	14	7	3	1	–	3	–	–	–
4. गुजरात	639	03	2	–	–	2	2	–	–	–	–	–	–	–
5. हरियाणा	499	02	1	–	–	1	1	–	–	–	–	–	–	–
6. हिमाचल प्रदेश	154	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7. जम्मू व कश्मीर	101	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8. कर्नाटक	1127	10	4	–	–	4	4	–	–	–	–	–	–	–
9. केरल	1050	03	2	–	–	2	2	–	–	–	–	–	–	–
10. मध्यप्रदेश	2795	07	5	1	–	5	5	–	–	–	–	–	–	–
11. महाराष्ट्र	2168	20	11	6	5	16	11	–	–	–	4	–	1	–
12. मणिपुर	21	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13. मेघालय	30*	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
14. नागालैण्ड	13	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
15. ओड़िसा	3145*	03	2	2	2	4	–	1	–	1	2	–	–	–
16. पंजाब	404*	06	1	–	–	1	1	–	–	–	–	–	–	–
17. राजस्थान	2718	33	15	1	1	16	10	2	2	1	1	–	–	–
18. सिक्किम	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19. तमिलनाडु	2939	13	6	3	2	8	4	1	–	1	1	–	1	–
20. त्रिपुरा	18	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
21. उत्तर प्रदेश	3873	15	4	–	–	4	3	1	–	–	–	–	–	–
22. पश्चिम बंगाल	2600	17	8	2	–	8	8	–	–	–	–	–	–	–
संघशासित प्रदेश														
1. अंडमान निकोबार द्वीपसमूह	26*	02	2	–	–	2	2	–	–	–	–	–	–	–
2. अरुणाचल प्रदेश	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. चण्डीगढ़	234	03	1	–	–	1	–	1	–	–	–	–	–	–
4. दादर, नगर हवेली	07	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5. दिल्ली	3766	104	57	–	–	57	41	14	2	–	–	–	–	–
6. गोआ, दमन व दीउ	84	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7. लक्षद्वीप	01	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8. मिजोरम	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
9. पांडिचेरी	123	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
विदेश														
1. नेपाल	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
जोड़:	33313	282	136	19	14	150	104	24	05	03	11	–	03	–

* पूरक परीक्षाओं में बैठे प्रत्याशियों की संख्या भी इन संख्याओं में शामिल हैं।

सारणी 10.3

वर्ष:1984
श्रेणी बारहवीं

उन प्रत्याशियों की संख्या का राज्यवार विवरण जो राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में बैठे/साक्षात्कार के लिए बुलाए गए और चुने गए।

राज्य/संघशासित प्रदेश	परीक्षा में बैठे	सामान्य		अनुसूचित जाति/जनजाति		कुल चुने गए	सामान्य				अनुसूचित जाति/जनजाति			
		साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए		मूल भूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए		मूल भूत विज्ञान में चुने गए		सामाजिक विज्ञान में चुने गए	
							लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1. आन्ध्रप्रदेश	1684	22	10	01	01	11	09	–	01	–	1	–	–	–
2. असम	273	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. बिहार	1783	26	03	02	02	5	03	–	–	–	2	–	–	–
4. गुजरात	999	03	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
5. हरियाणा	285	06	05	01	–	5	05	–	–	–	–	–	–	–
6. हिमाचल प्रदेश	52	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
7. जम्मू व कश्मीर	89	01	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8. कर्नाटक	747*	19	08	01	01	9	08	–	–	–	–	1	–	–
9. केरल	981	08	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
10. मध्यप्रदेश	288*	09	04	01	01	5	03	1	–	–	1	–	–	–
11. महाराष्ट्र	2052	48	29	05	04	33	26	01	01	01	4	–	–	–
12. मणिपुर	25	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
13. मेघालय	30	1	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
14. नागालैण्ड	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
15. ओड़िसा	1022*	04	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
16. पंजाब	172*	02	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
17. राजस्थान	399	10	05	–	–	5	04	–	01	–	–	–	–	–
18. सिक्किम	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
19. तमिलनाडु	2644	47	20	03	02	22	17	02	01	–	2	–	–	–
20. त्रिपुरा	11	02	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
21. उत्तर प्रदेश	3116	36	13	01	01	14	13	–	–	1	–	–	–	–
22. पश्चिम बंगाल	1870	29	14	02	02	16	13	01	–	–	1	1	–	–
संघशासित प्रदेश														
1. अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह	14**	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
2. अरुणाचल प्रदेश	09	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. चण्डीगढ़	196	07	03	01	01	4	02	–	01	–	1	–	–	–
4. दादर, नगर हवेली	10	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5. दिल्ली	3425	147	77	07	06	83	60	09	06	02	5	1	–	–
6. गोआ, दमन व दीव	47	2	01	–	–	1	01	–	–	–	–	–	–	–
7. लक्षद्वीप	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
8. मिजोरम	01	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
9. पांडिचेरी	160	2	02	–	–	2	02	–	–	–	–	–	–	–
विदेश														
1. लन्दन	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
2. बहराइन	03	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
3. काठमांडू	02	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
कुल जोड़:	22398	431	204	25	21	225	176	14	11	03	18	03	–	–

*पूरक परीक्षा में बैठे प्रत्याशियों की संख्या भी इन संख्याओं में शामिल है।

11

नीति अनुसंधान, योजना तथा कार्यक्रम

नीति अनुसंधान, योजना तथा कार्यक्रम विभाग की स्थापना मई, 1984 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान तथा दिल्ली स्थित एन.सी.ई.आर.टी. के दूसरे एककों के पुनर्गठन के समय की गई थी। इसके पूर्ववर्ती विभाग/एकक थे:

1. शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति (ई.आर.आई.सी.)
2. योजना समन्वयन तथा मूल्यांकन एकक (पी.सी.ई.यू.) और
3. कार्यक्रम अनुभाग।

इस विभाग में 10 अकादमिक कर्मचारी (प्रोफेसर-4; रीडर-4, लेक्चरर-1, अनुसंधान सहयोगी-1) और 34 सहायक कर्मचारी हैं।

1984-85 के दौरान डी.पी.आर.पी.पी. द्वारा आरंभ किये गये प्रमुख क्रिया-कलाप नीचे संक्षेप में दिये गये हैं:

अनुसंधान और नवोत्पाद

शैक्षिक अनुसंधान तथा नवोत्पाद समिति (ई.आर.आई.सी.), जिसकी स्थापना 1974 में की गई थी, अनुसंधान वृद्धि में एक प्रधान तंत्र है। इस समिति में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान तथा आर.सी.ई. संस्थाओं के

विभागों/एककों के अध्यक्षों के साथ-साथ राज्य शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधियों तथा विश्वविद्यालयों व अनुसंधान संस्थानों के शिक्षा तथा शिक्षा सम्बद्ध विषयों के लब्धप्रतिष्ठ अनुसंधानकर्ता रखे गये हैं।

एन.आई.ई. विभागों तथा आर.सी.ई. संस्थाओं के प्रोफेसर स्थायी अतिथि हैं।

ई.आर.आई.सी. के मुख्य प्रकार्य हैं:

- शिक्षा तथा सम्बद्ध विज्ञानों में अनुसंधान तथा नवोत्पादी परियोजनाओं में बल प्रदान करना।
- पी-एच.डी. शोध प्रबंधों, विनिबंधों, आदि के लिए प्रकाशन अनुदान प्रदान करना।
- समय-समय पर अनुसंधान जांच-परिणामों का प्रसार करना और शैक्षिक अनुसंधान पर अनुसंधान सम्मेलन तथा भाषण मालाएं आयोजित करना।
- विभिन्न स्तरों की अनुसंधान क्रियाविधि में पाठ्यक्रम करना।

एन.आई.ई. भाषण मालाएं

एन.आई.ई. भाषण मालाओं के अन्तर्गत 13 वक्ता आमंत्रित किये गये थे। उनके वक्तव्य व्यापक विषयों से संबंधित थे। इन प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम तथा जिन विषयों पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये, वे निम्न प्रकार हैं–

वक्ता	विषय	दिनांक
डा. वाकर एच. हिल., मिचिगा	शिक्षा परीक्षण में नई प्रवृतियां	10-4-1984
डा. इविंग एडले और श्रीमती जायसे एस. एडले	शिष्य खोज, इसे याथार्थ बनाना और कुंडलियां तथा फिल्लीवोकई लगाना, नम्बर्ज़ ए मैथ्स गोल्ड माइन	21-5-84 और 22-5-84
प्रो. जेम्स डेले, यू.एस.ए.आई.एस.	समुदाय कालेजों में संस्कृति पर अध्ययन	22-8-84
प्रो. जे.डी. हरमन, बरमिंघम विश्वविद्यालय (यू.के.)	मौखिक परीक्षण	3-9-84
श्रीमती उषा नारायण, अनुसंधान अध्येता	अध्यापक दिवस	5-9-84
डा.पी.आर. नैयर, प्रफेसर तथा अध्यक्ष, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर	शैक्षिक सिद्धांत में विवेक और अविवेक	29-11-84
डा. बूसी आर. जायसे	कक्षा शिक्षण में अनुसंधान तथा अभ्यास	7-12-84
सुश्री गाइना लेवटे, निदेशक इन्टरलेंक।	नृत्य, नाटक, संगीत और दृश्य कलाएं	6-12-84

सुश्री मार्ग्रेट ब्लैकवेल मांचेस्टर अस्पताल में आर्ट प्रोजेक्टर।		
सुश्री मारिया फर्नमलीज़, निदेशक ड्रामा, फेयर होम।		
श्री विलियम बुलमैन, प्रिंसिपल-लैक्चरर, विशेष शिक्षा, वेस्ट हिल शिक्षा कालेज (बरमिंघम)		
श्री टोगर उबर्शलैग, फ्रांस।	फ्रांस में स्कूली शिक्षा में आधुनिक विकास तथा फ्राइनैट्स शिक्षा शास्त्र	11-12-84
प्रो. जो. खतेना मिस्सीसिपी विश्वविद्यालय	1980-89 में योग्यतम को शिक्षित करना	6-3-85

पूर्ण की गई अनुसंधान परियोजनाएं

निम्नलिखित सारणी में उल्लिखित अनुसंधान परियोजनाओं को इस वर्ष पूरा किया गया। बाद में इन परियोजनाओं के मुख्य जांच-परिणामों का संक्षिप्त ब्यौरा भी दिया गया है।

शीर्षक	प्रधान जांचकर्ता
भाषा अशुद्धियों की परख तथा संस्कृत में उपचारी शिक्षण का एक कार्यक्रम।	प्रो. पी.सी. जैन, जयपुर।
हिमाचल प्रदेश में मिडिल और मैट्रिक स्तरों के अनुसूचित जाति फेलशुदा छात्रों के केस अध्ययन।	डा. लोकेश कौल, शिमला।
जनजातीय परिप्रेक्ष्य में कक्षा पर्यावरणों का विश्लेषण, अधिगम व उपलब्धि पर इसके प्रभाव की दृष्टि से अध्ययन।	डा. एस.एन. उपाध्याय, रायपुर।
गिलफाइर्ड्स एस-1 माडल पर आधारित मनोवैज्ञानिक परीक्षण की बैटरी का निर्माण।	डा. (श्रीमती) उषा, खैरे पूना।
तमिलनाडु के प्रारंभिक स्कूल के बच्चों का उपलब्धि मानदंड अध्ययन, कुछ स्कूली कारणों और छात्र संयोजन को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए।	श्री एम. दुरैस्वामी, मद्रास।
ग्रामीण बच्चों की अधिगम अशक्तताओं का एक अध्ययन।	डा. वाइ. रामजी राव, मद्रास।
वाणिज्य धारा में + 2 और + 3 स्टेजों पर शिक्षा व्यावसायीकरण का एक अध्ययन (महाराष्ट्र)।	श्री एच.वी. गोखले
समाज विज्ञान में पाठ्यचर्या विकास, इतिहास शिक्षण क्रियाविधि विकास को संदर्भित करते हुए।	श्री एन.बी. दासगुप्ता

भाषा अशुद्धियों की परख तथा संस्कृति में शिक्षण का एक कार्यक्रम

प्रधान जांचकर्ता: डा. पी.सी.जैन

अध्ययन के मुख्य जांच-परिणाम ये हैं:

(i) ज्यादातर अध्यापक, संस्कृत मुख्य भाषा के रूप में तथा संस्कृत तृतीय भाषा के रूप में जो अन्तर है, इसे नहीं जानते थे।

(ii) स्कूल समय-सारणी में पीरियड कम होने के कारण संस्कृत व्याकरण की पढ़ाई ठीक तरह से नहीं दी जाती है।

(iii) संस्कृत सीखने के लिए छात्रों में ज्यादा उत्साह नहीं है। अध्ययन पाठ्यचर्या, परीक्षा प्रणाली, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण क्रियाविधि, अध्यापक तैयार करना, स्कूल समय-सारणी, गृह-कार्य, इत्यादि के बारे में अनके सुझाव देता है।

हिमाचल प्रदेश में मिडिल और मैट्रिक स्तरों के अनुसूचित जाति फेलशुदा छात्रों के केस अध्ययन

प्रधान जांचकर्ता: डा. लोकेश कौल

हिमाचल प्रदेश के ज़िलों चम्बा, लाहौल, स्पिती और किन्नौर में रहने वाले दोनों सेक्सों के नवीं, दसवीं, ग्यारहवीं और पी.यू.सी. परीक्षाओं के 109 फेलशुदा और 116 पासशुदा छात्रों के बारे में यह अध्ययन किया गया। मुख्य जांचपरिणाम थे: (क) जनजातीय फेलशुदा छात्र शाब्दिक बुद्धि में विशेष रूप से कम थे, (ख) जनजातीय फेलशुदा छात्र पासशुदा प्रतिपक्षियों से अशाब्दिक बुद्धि में ज्यादा अन्तर नहीं रखते थे, (ग) जनजातीय फेलशुदा छात्र पासशुदा समूह के जनजातीय-छात्रों के मुकाबले शाब्दिक और अशाब्दिक सृजनात्मक सोच-विचार में विशेषरूप से कम थे, (घ) जनजातीय फेलशुदा छात्रों की औसत आयु पासशुदा प्रतिपक्षियों के मुकाबले विशेषरूप से ज्यादा थी, (ङ) जनजातीय फेलशुदा छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति पासशुदा जनजातीय छात्रों के मुकाबले खराब थी, (च) भावात्मक, सामाजिक और शैक्षिक सामंजस्यों में जनजातीय फेलशुदा छात्र पासशुदा छात्रों के मुकाबले कम सामंजस्य वाले थे, (छ) जनजातीय फेलशुदा छात्र पासशुदा छात्रों के मुकाबले सामान्य तथा साथ-साथ परीक्षण स्थितियों में विशेषकर ज्यादा इच्छुक थे, (ज) जनजातीय फेलशुदा छात्रों में पाया गया कि (1) वे घर में खराब वातावरण रखते हैं; (2) उनमें पढ़ने व सम्मति देने की कमी है; (3) वे विभिन्न स्कूल विषयों में सम वितरण में ठीक व्यवस्था नहीं रखते हैं; (4) अध्ययनों में उनमें दत्तचित की कमी है; (5) परीक्षा की तै री में उनकी ठीक योजना नहीं होती है और अकादमिक विषयों में उनकी रूची नहीं है; (6) जनजातीय फेलशुदा छात्र जनजातीय पासशुदा छात्रों के मुकाबले अधिक असुरक्षित हैं; इत्यादि।

जनजातीय परिप्रेक्ष्य में कक्षा के पर्यावरणों का विश्लेषण—अधिगम व उपलब्धि पर इसके प्रभाव की दृष्टि से अध्ययन

प्रधान जांचकर्ता: डा. एस.एन. उपाध्याय

मध्यप्रदेश के ज़िला बस्तर के 50 मिडिल और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 8वीं कक्षा के छात्रों पर यह अध्ययन किया गया। मुख्य जांच-परिणाम थे: (क) मानकीकृत उद्देश्यपरक परीक्षण से यह सामने आया कि अधिक अन्तर्वैयक्तिक संबंध में उपलब्धि बढ़ी। उलझाव और संबंधन के आयामों से न कि अध्यापक के समर्थनों से यह सिद्ध हुआ; (ख) कक्षा पर्यावरण का उद्देश्योन्मुख पहलू और साथ ही साथ इसके दो आयाम आर्थात् कार्य अभिविन्यास और प्रतियोगिता ने शिष्यों की अकादमिक उपलब्धि के साथ बहुत उच्च सकारात्मक सहसंबंध प्रकट किया, (ग) अकादमिक उपलब्धि वाले शिष्यों के साथ व्यवस्थित रख-रखाव, (घ) स्कूल उपलब्धि के साथ सकारात्मक रूप से और विशिष्ट रूप से सहसंबंधित कक्षा पर्यावरण के तीसरे पहलू के रूप में व्यवस्थित रख-रखाव और परिवर्तन। इसके एक आयाम, अध्यापक नियंत्रण ने यही परिणाम प्रकट किये, लेकिन पद्धति और व्यवस्था के आयाम और साथ-ही-साथ नवोत्पाद ने ऐसा नहीं किया। नियम स्पष्टता के आयाम ने उपलब्धि के साथ खासकर नकारात्मक रूप से सहसंबंध दर्शाया, (ङ) आंवरिक परीक्षा अंकों ने कक्षा पर्यावरण के किसी भी पहलू/आयाम से कोई विशेष संबंध नहीं प्रकट किया। यही बात अधिगम सक्षमता से मेल खाती थी। फिर भी यह कहा जा सकता है कि यह नमूना बहुत नगण्य है और नीति संबंधी कोई निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते ।

गिलफाइर्स एस-1 माडल पर आधारित मनोवैज्ञानिक परीक्षण की बैटरी का निर्माण।

प्रधान जांचकर्ता: डा. (श्रीमति) उषा खैरे, पूना

मार्गदर्शी अध्ययन के नमूने में पांच वृत्तिक क्षेत्रों के 49 स्नातक लिये गये अर्थात् इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, वास्तुकला, वाणिज्य और साहित्य। मुख्य जांच-परिणाम थे (क) पांच वृत्तिक समूहों के पार्श्व चित्र स्तर, आकार और बिखराब की दृष्टि से पर्याप्त अन्तर रखते थे; (ख) एस-1 माडल परीक्षणों को सशक्त भेदमूलकों के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है; (ग) सेक्स अन्तर या तो नगण्य था या फिर दोनों में से किसी भी सेक्स के पक्ष में क्रमबद्ध रूप में नहीं था; (घ) शहरी ग्रामीण अन्तर सदैव स्पष्ट लक्षित होते थे।

तमिलनाडु के प्रारंभिक स्कूल के बच्चों का उपलब्धि मानदंड अध्ययन, कुछ स्कूल कारणों और छात्र संयोजन को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए

प्रधान जांचकर्ता: श्री एम. दुरैस्वामी

इस अध्ययन में सन्निविष्ट स्कूल के बच्चों को तीन प्रश्नपत्र दिये गये अर्थात् तमिल-1, तमिल-2 और अंकगणित। मुख्य जांच-परिणाम थे; (क) पर्वतीय क्षेत्रों के स्कूल के बच्चों का कार्य-निष्पादन कुछ कम था; (ख) शहरी क्षेत्रों के स्कूली बच्चों का कार्य निष्पादन ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूली बच्चों के मुकाबले बेहतर था, जोकि शहरी क्षेत्रों में बेहतर सुविधाओं के कारण हो सकता है; (ग) शुरू की कक्षाओं में छात्रों का कार्य-निष्पादन स्कूल के प्रबंध की प्रकृति पर निर्भर नहीं था; (घ) स्कूल के बच्चों के कार्य निष्पादन पर

अभिभावकों की आय का कोई बुरा प्रभाव नहीं था क्योंकि इस स्तर पर शिक्षा निःशुल्क होने के कारण ऐसा हो सकता है।

ग्रामीण बच्चों की अधिगम अशक्तताओं का एक अध्ययन

प्रधान जांचकर्ता डा. वाई रामजी राव, मद्रास

तमिलनाडु के चिंगलपुट जिले के चिनलपक्कम पंचायत संघ के पांचवीं कक्षा के शिष्यों पर एक अध्ययन किया गया। कुल मिलाकर 720 शिष्यों ने परीक्षा दी और 133 बच्चे अधिगम अशक्तताओं वाले पाये गये जोकि 18.5 प्रतिशत बैठता है। शिष्यों संबंधी व्यवहार विशेषताएं थीं: (क) कक्षा निर्देशों को समझाने और याद करने की कमी जब तक कि व्यक्तिगत सहायता न दी जाए; (ख) चीजों को याद रखने की कमी जब तक कि बार-बार दुहराया न जाए; (ग) शब्दों को गलत समझने की प्रवृति; (घ) साधारण शब्दों/अर्थों को समझने की कमी; (ङ) पूर्णवाक्यों को शुद्ध वाक्य रचनाओं की सहायता से बोलने की कमी; (च) कम शब्द-भंडार का होना; (छ) अर्थपूर्ण मामलों के साथ विचारों को जोड़ने की कमी; (ज) अपनी उम्र और ग्रेड स्तरों के दूसरों से सहयोग करना; (झ) अपनी पारी की प्रतीक्षा।

वाणिज्य धारा में + 2 और + 3 स्टेजों पर शिक्षा व्यवसायीकरण का एक अध्ययन (महाराष्ट्र)

प्रधान जांचकर्ता: श्री एम.वी. गोखले

नमूने के अध्ययन में नागपुर, औरंगाबाद, पूना और थाने जिलों के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा नियोक्ताओं को लिया गया। नमूना शहर और ग्राम दोनों के लिये था। मुख्य जांच-परिणाम थे: (क) छात्र सामान्यतः इस मत के थे कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम सामान्य शिक्षा के मुकाबले बहुत ज्यादा उपयोगी थे; (ख) व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए सुविधाएं पर्याप्त थीं और उन्होंने नौकरी या स्वतः रोज़गार जोखिम के लिए छात्रों को तैयार नहीं किया; (ग) अनुदेशी सामग्रियां जो प्रयुक्त की गईं; अध्यापकों की सम्मति के अनुसार वे पर्याप्त थीं; (घ) नियोक्ताओं ने नौकरियों के वर्गीकरण तथा संकायक्रम नियुक्ति मंडलों का पक्ष लिया; (ङ) वाणिज्य धारा में + 2 और + 3 स्टेजों पर विशेषीकृत व्यवसायीकरण से प्रशिक्षण लागतों व मानव-घंटों में बचत होगी।

समाजविज्ञान में पाठ्यचर्या विकास–इतिहास शिक्षण विधि विकास को संदर्भित करते हुए

प्रधान जांचकर्ता: श्री एन.बी. दासगुप्ता

जांचकर्ता ने प्रश्नावलियों का एक सेट विकसित किया और उन्हें अध्यापकों को प्रेषित किया। उनके उत्तर संख्या में सीमित थे और प्राकृति में वर्णनात्मक। मुख्य जांच-परिणाम थे: (क) इतिहास न केवल मानव उपलब्धियों का एक रेकार्ड है बल्कि मानव असफलताओं का भी; (ख) इतिहासकार का कार्य है पाखंड के दिमाग को साफ करना और मानव तथा उसके समाज की अधिकतम महत्वपूर्ण चीज़ों के बारे में सच्चे विवरण देना; (ग) प्रमाणित ऐतिहासिक साक्ष्य के अभाव के कारण हिन्दू काल असूचना और समय-समय पर गलत

सूचना से हानि उठाता है; (घ) इतिहास को इस तथ्य को निश्चित रूप से उजागर करना चाहिए कि भारत अनेकता में एकता अर्पित करता है; (ङ) इतिहास का पठन अनिवार्य रूप से अर्थपूर्ण बनाया जाना चाहिए, इत्यादि।

चल रही परियोजनाएं

रिपोर्टाधीन वर्ष में 41 विभागीय और 19 बाहरी अनुसंधान परियोजनाएं चल रहीं थीं। परियोजनाओं की सूची नीचे दी गई है।

	परियोजना का शीर्षक	प्रधान जांचकर्ता
(क)	विभागीय	
1.	उत्तर प्रदेश की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	डा. बी.एस. गुप्ता
2.	कमज़ोर और मजबूत बिन्दुओं के निर्धारण हेतु प्राथमिक स्तर के जनजातीय छात्रों के विषयवार निष्पादन का अध्ययन	डा. बी.एम. गुप्ता
3.	पांचवीं कक्षा के छात्रों की शिक्षा के मध्य अन्तरसंबंधी अध्ययन तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता	डा. बी.पी. अवस्थी
4.	जनजातिय छात्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की क्रिया-विधियों, संसाधनों और प्रक्रियाओं का एक अध्ययन	डा. लाला राम निरंजन श्रीवास्तव
5.	शिक्षा के शिक्षण विकास तथा सामाजिक उद्देश्य के सन्दर्भ में 10 + 2 स्टेज पर पाठ्यचर्या मूल्यांकन—एक अनंतिम अध्ययन	डा. बाकर मेंहदी
6.	समुदाय के लिए आवश्यकता आधारित मानवजाति निर्धारित और परिवर्तनोन्मुख शिक्षा प्रणाली—खानाबदोश जनजाति	डा. (कु.) सरोजिनी बिसारिया
7.	शिक्षा व्यवसायीकरण के लिए लड़कियों व महिलाओं के लिए सथानीय-क्षेत्रीय आवश्यकता आधारित व्यवसायों की पहचान	डा. सुरजा कुमारी
8.	जनजातीय तथा अजनजातीय प्राथमिक स्कूलों के मध्य शारीरिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन	डा. लाला राम निरंजन श्रीवास्तव
9.	बालिका व महिला शिक्षा व्यवसायीकरण पर आधारित क्षेत्रीय-स्थानीय आवश्यकता की पहचान	डा. (कु.) सरोजिनी बिसारिया
10.	10 + 2 शिक्षा प्रणाली के अधीन एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बनाई गयी नई पाठ्यचर्या के कार्यान्वियन का अध्ययन	डा. जी.एल. अरोड़ा
11.	प्राथमिक स्तर पर समाजवैज्ञानिक अध्ययनों और भाषा पाठ्य-पुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की अर्थबोधता का एक अध्ययन	डा. इंद्रसैन शर्मा
12.	स्कूल शिक्षा में पूर्व-प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक पाठ्यचर्या भार का एक अध्ययन	डा. जी.एल. अरोड़ा

13.	एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय स्कूल शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन	डा. गोविंदलाल आद्या
14.	माध्यमिक विद्यालयों, गुरुकुलों तथा पारस्परिक संस्कृत पाठशालाओं के छात्रों की संस्कृत विद्या की उपलब्धि का मूल्यांकन	डा. कृष्णकांत मिश्रा
15.	अध्यापक पुस्तिका ''अपने इर्दगिर्द के पोधों को जानो'' का मुद्रण	डा. (श्रीमती) गौरी राणी घोष
16.	लड़कियों (सामाजिक रूप से विकलांग लड़कियों सहित) की गणित में कम उपलब्धि के निर्धारक तत्व	डा. सुरजा कुमारी
17.	+2स्तर पर गणित पाठन में संकल्पनात्मक समान गलतियों का विश्लेषण और उपचारी उपायों के रूप में सरल पद्धतियां व प्रविधियों के नवोत्पाद	डा. एम.सी. दास
18.	राष्ट्रीय परीक्षण पुस्तकालय का विकास–एक केन्द्रीय समिति	प्रो ए.एन. शर्मा
19.	निष्पादन आधारित अनुदेशी सामग्री की प्रभावकता और प्राथमिक ग्रेडों पर गणित पठन-पाठन की प्रविधियों की जांच-पड़ताल रिपोर्ट	प्रो. ए.एन. शर्मा
20.	दिल्ली संघशासित क्षेत्र के विभिन्न प्रबंधों के अन्तर्गत अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्यापक तैयार करने संबंधी निजी लागतों का एक तुलनात्मक अध्ययन। शिक्षा के वित्तीय पक्षों का एक अध्ययन	डा. एस.एल. गुप्ता
21.	हिन्दी भाषी क्षेत्र के प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के हिन्दी शब्द भण्डार का संकलन एवं भाषायी विश्लेषण	डा. कृष्णगोपाल रस्तोगी
22.	अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अनुदेशी सामग्रियों का मूल्यांकन	डा. (श्रीमती) नीरजा शुक्ला
23.	अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/प्रक्रिया की पहचान।	डा. एच.एल. शर्मा
24.	शिलांग (मेघालय) में तथा इसके इर्दगिर्द जनजातीय हाईस्कूल के छात्रों की शैक्षिक व्यावसायिक योजना, अकादमिक उपलब्धि और आवासीय पृष्ठभूमि चरों का एक अध्ययन	डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता
25.	अध्ययन व्यवसाय व्यवहार और अकादमिक व व्यावसायिक धाराओं में छात्रों के व्यावसायिक समायोजन संबंधी कार्यक्रम	डा. स्वदेश मोहन और डा. निर्मला गुप्ता
26.	प्राथमिक स्तर (तीसरी से पांचवीं तक) पर पर्यावरणीय अध्यायों में उल्लिखित परीक्षणों के विकास की कसौटी	डा. प्रीतम सिंह
27.	राजस्थान में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की शैक्षिक सुविधाओं का नमूना सर्वेक्षण	डा. एस.एम. भार्गव
28.	शैक्षिक दृष्टि से नौ पिछड़े राज्यों में प्राथमिक स्तर पर स्टेगनेशन और ड्राप-आउट्स का नमूना अध्ययन	डा. आर.आर. सक्सेना

29.	एन.आई.ई. केन्द्रों में सम्बद्ध अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा अनुदेशी कलाओं की पहचान	श्री एस.एन.एल. भार्गव और श्री जे.एस. ग्रेवाल
30.	प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय दृष्टिकोण कार्यान्वित करने के लिए पाठन कौशलों तथा प्रशिक्षण विधि की पहचान संबंधी एक अनुसंधान अध्ययन	डा. जे.एस. राजपूत
31.	मध्यप्रदेश के जीवविज्ञान के अध्यापकों के लिए स्रोत सामग्री उत्पादन संबंधी भोपाल के पेड़-पौधों का एक अध्ययन	डा. पी.के. खन्ना
32.	ताज़े जलों में जीवन देखो (ताज़ा जल जीवविज्ञान संबंधी अध्यापक पुस्तिका)	डा. (श्रीमती) चंद्र-लेखा रघुवंशी
33.	विज्ञान के परिकल्पना परीक्षण योग्यताओं संबंधी परिकल्पना निर्माण विकास हेतु स्वतः अधिगम प्रक्रिया आधारित सामग्री की क्षमता को विकसित, निवीनीकृत तथा परीक्षित करना	डा. ए. ग्रेवाल
34.	किशोरावस्था में विज्ञान में विवेचन संबंधी योजनाओं का निर्धारण और विकास	प्रो. एन. वैद्य
35.	उच्च/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए कार्य अनुभवों/ व्यावसायिक कार्यक्रम के रूप में खाद्य खुंभियों का सर्वेक्षण और जुताई	डा. जी.एन. कानूनगो
36.	उड़ीसा में जलचर पारिस्थितिकी का संरक्षण	डा. पी.के. दुर्रानी
37.	खुले अनुभव पर आधारित भौतिकी में उच्चतर माध्यमिक स्टेज के लिए एक प्रयोगशाला विकसित करने संबंधी एक तुलनात्मक अध्ययन	डा.एस.जी. गांगुली

(ख) बाहरी परियोजनाएं

1.	ग्रामीण समुदाय में महिला शिक्षा कार्यक्रम में महिला स्वास्थ्य कार्मिक के समावेश की सुविधा का अध्ययन	प्रो. पूर्णिमा माथुर, नई दिल्ली
2.	जनजातीय और अजनजातीय हाई स्कूलों के शिष्यों की ज्ञानात्मक शैली और ज्ञानात्मक योग्यता–एक तुलनात्मक अध्ययन	डा. बी. डे, पटना
3.	लड़कियों और महिलाओं के लिए स्थानीय-क्षेत्रीय आवश्यकता आधारित व्यवसायों की पहचान तथा ऐसे स्कूलों को मेडक जिले मे स्थित करना	डा. डोली शिनाय, हैदराबाद
4.	उत्तर प्रदेश के निराश्रय घरों में बच्चों के रहन-सहन में मार्गदर्शन की आवश्यकता	डा. साहेब सिंह वाराणसी
5.	पठन सुधार कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पांचवीं, छठी, सातवीं कक्षा के शिष्यों के लिए गुजराती में मूक पठन अभ्यास परीक्षाओं का निर्माण एवं मानकीकरण	डा. बी.वी. पटेल, बल्लभ विद्यानगर

6.	भारत में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग संबंध केस अध्ययन–एक मार्गदर्शी अध्ययन	श्रीमती कुसुम कामत, बम्बई
7.	+ 2 तथा स्नातक से नीचे स्तर पर हिन्दी की छोटी कहानी संबंधी मूल्यांकन उपकरण व शिक्षण विधियां	डा. आर. एस. शर्मा तथा डा. (कु.) शशि कान्ता वोहरा, नई दिल्ली
8.	चोरयासी खंड के प्रथम ग्रेड के बीच डिसकलकुला–एक मनोमिति खोज	प्रो एस.जी. शाह
9.	विशेष शिक्षा कार्यक्रम का एक मूल्यांकित सर्वेक्षण। आन्ध्र प्रदेश के मानसिक मंदितों के लिए स्कूल और सेवाएं	डा. (श्रीमती) डोली शिनाय, हैदराबाद
10.	अधिगम स्मरण उपलब्धि और शैक्षिक रुचि पर इसके प्रभावों के अध्ययन को दृष्टि में रखते हुए जनजातीय, ग्रामीण और शहरी सेटिंग संबंधी कक्षा पर्यावरण का विश्लेषण	डा. एस.एन. उपाध्याय, रायपुर
11.	वाणिज्य धाराओं (महाराष्ट्र) में + 2 और + 3 स्टेज पर शिक्षा व्यवसायीकरण का अध्ययन	श्री एच.वी. गोखले
12.	प्रतियोगिता आधारित प्रेरणा और श्रीगणेश आधारित प्रेरणा पाठन विधियों की प्रासंगिक प्रभावकता का एक तुलनात्मक अध्ययन	प्रो एम.बी. मलहारा, जलगांव
13.	ग्रामीण युवा वर्ग तथा विषयों संबंधी ग्रमीण पर्यावरण शिक्षा परियोजनाएं जिनमें वैकल्पिक माडल तथा स्वतः अधिगम विधियां विकास का दिग्दर्शन होता है	डा. एन.के. उपासनी पूना
14.	सृजनात्मक प्रशिक्षण सहित अनुदेशी सामग्री में संरचना संबंधी पारस्परिक प्रभाव	डा. (श्रीमती) सुदेश गखर, चंडीगढ़
15.	जांच परीक्षणों के दो सेटों का निर्माण व मानकीकरण, एक बंगाल (मातृभाषा) तथा दूसरा गणित में–बंगाल स्कूलों के तीसरे, चौथे और पांचवें ग्रेड के पिछड़े बच्चों के प्रयोग के लिए	डा. एम. आचार्य, कलकत्ता
16.	पूर्व-स्कूल बच्चे, जो सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक वंचन (हानियां) रखते हैं, के लिए एवजी भाषा कार्यक्रम संबंधी रचना-कौशलों का विकास करना	डा. जी. पंकजम, मदुरई
17.	सृजनात्मकता वाले, प्रतिभाशाली कालेज छात्रों के लिए अनुवर्ती अध्ययन	डा. गिरिजेश कुमार, मुरादाबाद
18.	ग्रामीण क्षेत्र में कार्य कर रहे बच्चों के लिए अनुवर्ती शिक्षा पर अनुभव	डा. एम.जी. माली, गरगोटा
19.	उड़ीसा में जनजातीय स्कूल छात्रों के सामाजिक-मनोविज्ञान पर शिक्षा का प्रभाव	डा. गिरीश पटेल, फूलबनी

नई परियोजनाएं

योजनाधीन चार अनुसंधान योजनाएं वित्तीय समर्थन के लिए अनुमोदित की गई:

परियोजना का शीर्षक	प्रधान जांचकर्ता
अकादमिक तथा व्यावसायिक एकक में छात्रों का व्यावसायिक व्यवहार तथा व्यावसायिक सामंजस्य	डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता, अध्यक्ष, डी.ई.पी. एंड जी.
उपचारी उपाय सुझाने के दृष्टिकोण से जनजातीय लड़कियों के कम पंजीयन की गणना का निर्धारण	डा. लाला रामनिरंजन श्रीवास्तव, डी.टी.ई., एस.ई. एंड ई.एस.
माध्यमिक विद्यालयों, गुरुकुलों के छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन	डा. कृष्णकांत मिश्रा, रीडर, डी.ई.एस.एस. एंड एच.
अकादमिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों में व्यवसाय व्यवहार और व्यावसायिक सामंजस्य के अध्ययन संबंधी अनुसंधान कार्यक्रम	डा. स्वदेश मोहन, डा. निर्मला गुप्ता

पी-एच.डी. शोधप्रबंधों/विनिबंधों के लिए प्रकाशन अनुदान

ई.आर.आई.सी. की सहायता से निम्नलिखित पी-एच.डी. शोधप्रबंध/विनिबंध प्रकाशित किये गये।

शीर्षक	लेखक का नाम
कार्यक्रमी अधिगम–एक शानदार दृष्टिकोण	डा. एन.एम. भावी, कुरुक्षेत्र
इंजीनियरी सृजनात्मकता का मनोविज्ञान	डा. मनजीत सेन गुप्ता, एन.सी.ई.आर.टी.
समय परिप्रेक्ष्य–एक विकासात्मक अध्ययन	डा. (श्रीमती) मंजु श्रीवास्तव, गोरखपुर
राजनीतिक समाजीकरण के लिए शिक्षा	डा (कु.) उमा वार्ष्णेय
जातियों को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए कुमाऊं विश्व-विद्यालय के स्नातक छात्रों के लिए शैक्षिक विकास का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डा. बीमा शाह, श्रीनगर (गढ़वाल)
कृषि शिक्षा को विशेष रूप से सन्दर्भित करते हुए शिक्षा पद्धति विश्लेषण और सुधार	डा. एम.पी. गुप्ता, पालमपुर डा. ए.एन. तिवारी, गोरखपुर विश्वविद्यालय
वंचित समाज में उपलब्धि प्रेरणा	
माइक्रो अधिगम की विभेदी प्रभावकता	प्रो. एम.आर. पालीवाल, बीकानेर
अनिरोध एकक और ड्रापआउट्स	डा. जी. सुब्रमण्यम पिल्लै

प्राचीन भारत प्रकृति ज्ञान शिक्षा ऊपर धर्मीय प्रभाव	डा. डी.पी. मुकर्जी, विश्वभारती, शांतिनिकेतन
'क्लास रूम समूह गतिविज्ञान' संकल्पना और इसके उलझाव	डा. ज्योति क्रिस्टीयन बड़ौदा
मगली और भोजपुरी के रूप-विज्ञान का एक तुलनात्मक अध्ययन	डा. लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा, बोधगया, बिहार
पश्चिमी बंगाल में प्राथमिक शिक्षा का प्रशासन	डा. विश्व रंजन पुरकैत, जिला हुगली, पश्चिमी बंगाल
अध्यापक सामंजस्य के आयाम	डा. एस.के. मंगल
विचित्र भारतीय व्यक्तित्व जैसा कि भारतीयों से बोध होता है	डा. (श्रीमती) इन्दु दवे उदयपुर
मार्गदर्शन व पूर्वानुमान	डा. एम.बी. पाण्डे, नागपुर
राजभाषा समस्या व्यावहारिक समाधान	डा. के.एल. गांधी, नई दिल्ली
मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के पत्राचार शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव तथा कार्य-निष्पादन	डा. जे.के. पिल्लै और एस. मोहन, मदुरै
भारत में राजभाषा की समस्या	डा. के.एल. गांधी, नई दिल्ली
अध्यापक सृजनात्मकता और क्लासरूम व्यवहार	डा. अजीत सिंह, एन.सी.ई.आर.टी.
उच्चतर शिक्षा में लागत विश्लेषण	डा. वी.पी. गर्ग, एन.सी.ई.आर.टी.

निम्नलिखित पी-एच.डी. शोध-प्रबंधों/विनिबंधों के प्रकाशन के लिए परिषद् द्वारा सहायता अनुमोदित की गई।

शीर्षक	लेखक का नाम
उच्च शिक्षा विद्यार्थियों में वंचन-बोध का अध्ययन	डा. (कु.) उषा उपाध्याय, वाराणसी
शिष्य भौतिकी और क्लासरुम में समूह प्रक्रिया का एक अध्ययन	डा. ज्योति ए. क्रिस्टीयन, बड़ौदा
पूर्वी उत्तर प्रदेश में जाति, नस्ल जागृति और संकल्पना उदय विकास का एक अध्ययन	डा. राम कल्प तिवारी, फैज़ाबाद
प्राइमरी स्तर पर विज्ञान, समाज विज्ञान और भाषा पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की स्पष्टता का एक अध्ययन	डा. आई.एस. शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी.
कुछ मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में अनुमोदन प्रेरणा एक कारक के रूप में—एक प्रयोगात्मक अध्ययन	डा. एन.के. त्रिपाठी, गोरखपुर

स्कूली बच्चों के चरित्र विकास का एक अध्ययन	डा. के.एम. गुप्ता, एन.सी.ई.आर.टी.
सिख गुरुओं का शैक्षिक दर्शन	डा. डी.एन. खोसला, एन.सी.ई.आर.टी.
शैक्षिक उपलब्धि में आर्थिक वंचन–एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन	डा. जगदीश सिंह, गाज़ीपुर
बच्चों में द्वेष का विकास	डा. नीरजा शर्मे, भोपाल
अध्यापक कार्य-सन्तुष्टि में कार्य सामंजस्य	डा. एम. नारायण राव, तिरुपति
प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में सामाजिक अनुकूलन और इसका छात्र अध्यापकों के व्यवहार और सामजस्य संबंधी एक अध्ययन	डा. (श्रीमती) होमा दत्त, नई दिल्ली
शिक्षण के तीन स्तरों पर कार्य-सन्तुष्टि का एक अध्ययन	डा. एस.पी. गुप्ता, इलाहाबाद
अवैत को वाचस्पति मिश्रों की अद्वितीय देन संबंधी एक विवेचनात्मक अध्ययन	डा. वी.एन. शेषगिरी राव, मानस गंगोत्री, मैसूर
अधिगम कठिनाइयों के साथ प्राथमिक स्कूली बच्चों के लिए एक क्लासरूम शिक्षण कार्यक्रम	डा. (श्रीमती) प्रेरणा दिलीप सिंह, मोहिते, बड़ौदा
आगरा शहर के सर्वेक्षण पर आधारित बच्चों में वाग्दोष पर एक भाषायी अध्ययन	डा. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव, आगरा
हिन्दी शब्द-संग्रह निर्माण में रेखीय कार्यक्रम में कार्य-निष्पादन पर परिणामों की पुष्टि तथा उपलब्धि प्रेरणा संबंधी एक प्रयोगात्मक अध्ययन	डा. बुद्ध प्रकाश
शिक्षा में योग्यता निष्ठ मापन संबंधी परीक्षण	डा. ए. एडविन हार्पर, इलाहाबाद

अनुसंधान के लिये प्रशिक्षण

4 संक्षिप्त चक्र पाठ्यक्रम शुरू करने का निर्णय किया गया, इनमें से प्रथम इस प्रकार तैयार किया गया ताकि वे जो जांच-पड़ताल संबंधी रूपरेखा तैयार कर रहे हों, वह उनकी आवश्यकता पूरी कर सके। अनुसंधान क्रियाविधि पाठ्यक्रम स्तर-1 इस विभाग के एन.आई.ई. कैम्पस में 27 मार्च, 1985 से 6 अप्रैल, 1985 के मध्य आयोजित किया गया। समाचार-पत्रों में दिये गये विज्ञापन से प्राप्त 352 आवेदन-पत्रों में से सारे देश में से 15 सहभागी चुने गये। कनिष्ठ अनुसंधान शिक्षावृत्तियों के लिये चुने गये और 15 व्यक्ति इस पाठ्यक्रम में प्रविष्ट किये गये।

ई.आर.आई.सी. बुलेटिन

ई.आर.आई.सी. बुलेटिनों में ई.आर.आई.सी. द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त पूर्ण किये गये अनुसंधान

प्रोजेक्टों के संक्षिप्त सार प्रकाशित किये जाते हैं। एक ई.आर.आई.सी. बुलेटिन (खंड-1 सं. 2 जुलाई-सितम्बर, 1984) 1984-85 के दौरान प्रकाशित किया गया।

विभागीय क्रियाकलाप

वर्ष 1984-85 के दौरान डी.पी.आर.पी.पी. के क्रियाकलापों में 10 संगोष्ठियां/कार्यशालाएं/बैठकें आती हैं। इन्हें नीचे सूचीबद्ध किया जाता है। इसके बाद दो राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

क्रम सं.	कार्यशाला/संगोष्ठी/बैठक का शीर्षक	अवधि	समन्वयकर्ता का नाम
1.	प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण संबंधी समस्याओं व मामलों के बारे में राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला – मामलों की पहचान	5 दिन 19 मार्च – 23 मार्च, 1985	डा. एस.एल. गुप्ता
2.	बुद्धि परीक्षणों के निर्माण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	6 दिन 26 दिसम्बर, 1984 से 1 जनवरी, 1985	डा. के.के. वशिष्ट
3.	अनुसंधान क्रियाविधि पर पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य-विवरण निर्माण संबंधी कार्यशाला	2 दिन 28-89 सितम्बर, 1984	प्रो. चौधरी हेमकांत मिश्र
4.	गुणात्मक अनुसंधान पद्धतियों पर संगोष्ठी व कार्यशाला	2 दिन 10-11 जनवरी, 1985	प्रो. चौधरी हेमकांत मिश्र
5.	शिक्षा नवोत्पाद पर उप समिति की बैठक	2 दिन 24-25 जनवरी, 1985	प्रो. एल.सी. सिंह (संयोजक)
6.	भारतीय टैस्ट की समीक्षा पर कार्यशाला	4 दिन 19 दिसम्बर, 1984 से 22 दिसम्बर, 1984	श्री जे.पी. मित्तल
7.	मुद्रण में भारतीय टैस्ट की समीक्षा पर कार्यशाला	4 दिन 28 जनवरी से 31 जनवरी, 1985	श्री जे.पी. मित्तल
8.	मुद्रण में भारतीय टैस्ट की समीक्षा की कार्यशाला	4 दिन 25 फरवरी से 28 फरवरी 1985	श्री जे.पी. मित्तल

9.	टैस्ट समीक्षाओं का संपादन	7 दिन 25 फरवरी से 3 मार्च, 1985	श्री. जे.पी. मित्तल
10.	राष्ट्रीय टैस्ट विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.) की केन्द्रीय सलाहकार समिति की छठी बैठक	1 दिन 26 मार्च 1985	श्री जे.पी. मित्तल

प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण संबंधी समस्याओं व मामलों के बारे में राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला

अनुसंधान पर कार्य करने के लिए समस्या की पहचान संबंधी एक संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की गई। यह 19 मार्च से 23 मार्च 1985 को एन.आई.ई.–एन.सी.ई.आर.टी. में की गई। 57 व्यक्ति इसमें सम्मिलित थे–शिक्षा आयुक्त, शिक्षा निदेशक तथा उनके प्रतिनिधि; अनुसंधान संस्थाओं के निदेशक और उनके प्रतिनिधि, बम्बई, दिल्ली, अहमदाबाद, पूना के नगर निगमों के शिक्षा अधिकारी, अध्यापक संघों के नेता; और एन.आई.ई. संकाय सदस्यों तथा अन्यों ने अपने-अपने राज्य पत्रों और रिपोर्टों को प्रस्तुत करके चर्चाओं में भाग लिया। इस संगोष्ठी व कार्यशाला का उद्घाटन एन.सी.ई.आर.टी. के संयुक्त निदेशक ने किया। सहभागियों ने चार समूहों में कार्य किया और बल दिये जाने वाले क्षेत्रों की पहचान की तथा ऐसे मामले जैसे (क) मात्रात्मक पहलू (ख) गुणात्मक कार्यनिष्पादन (ग) नियोजन करना, मानीटर करना, वित्तीय सहायता प्रदान करना तथा प्रबंध एवं (घ) प्रारंभिक स्तर पर औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा प्रणालियों के मध्य समुदाय सहयोग तथा सम्बन्ध। देश में अनुसंधानों को विकसित करने के लिए संगोष्ठी व कार्यशाला की रिपोर्ट को प्रकाशित कर दिया गया है और उसे व्यापक तौर पर विश्वविद्यालयों, राज्य विभागों, इत्यादि के मध्य प्रेषित कर दिया गया है।

बुद्धि परीक्षणों के निर्माण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

बुद्धि परीक्षणों पर तैयार की गई टैस्ट-समीक्षाओं में पेश आई त्रुटियों को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान परीक्षणों में सुधार लाने के लिए बुद्धि क्षेत्र में परीक्षण निर्माता के विभिन्न मनोमितीय सिद्धांतों और प्रविधियों के प्रति समझ विकसित करने के लिए तथा भारतीय समाज व संस्कृति के संदर्भ में बुद्धि-मापन की नई संकल्पनाओं पर चर्चा करने के लिए बुद्धि परीक्षणों के निर्माण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 27 दिसम्बर, 1984 से 1 जनवरी, 1985 तक आयोजित की गई। 13 सहभागियों द्वारा 21 पत्रों पर चर्चा की गई। संगोष्ठी ने 6 मूल्यवान सिफ़ारिशें कीं। रिपोर्ट को प्रकाशित कर दिया गया है और उसे परीक्षण निर्माताओं, समीक्षकों और परीक्षणों के प्रयोक्ताओं के मध्य परिचालित कर दिया गया है।

राष्ट्रीय टैस्ट विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.)

परिषद् द्वारा स्थापित एन.टी.डी.एल. इस प्रकार काम करता है (क) एक सन्दर्भ टैस्ट पुस्तकालय (ख) मनोवैज्ञानिक टैस्टों के लिए एक सूचना केन्द्र (ग) सभी प्रकाशित भारतीय टैस्टों की विवेचनात्मक समीक्षाएं प्रदान करने का एक अभिकरण और (घ) टैस्ट विकास में रिक्तियों की पहचान की एक संस्था।

एन.टी.डी.एल. के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार समिति (एन.टी.डी.एल. की केन्द्रीय सलाहकार

समिति) है जिसमें देश के चोटी के मनोमितिविद् इसके सदस्य हैं। समिति वर्ष में मार्च मास में एक बार मिलती है और एन.टी.डी.एल. द्वारा किये गये वर्ष-भर के कार्य की समीक्षा करती है और अगले वर्ष की कार्य-योजना सुझाती है। एन.टी.ड़ी.एल. की केन्द्रीय सलाहकार समिति की छठी बैठक 26 मार्च, 1985 को हुई थी।

एन.टी.एल. बुलेटिनें

एन.टी.एल. (राष्ट्रीय टैस्ट पुस्तकालय) बुलेटिन एन.टी.डी.एल. परियोजना की निरंतर चलने वाली गतिविधि है। इसने चार बुलेटिनें प्रकाशित की हैं जो निम्न प्रकार हैं:

बुलेटिन सं. 16	:	बुद्धि परीक्षणों की समीक्षाएं, प्रकाशन-II
बुलेटिन सं. 17	:	व्यवहार सूचियों की समीक्षाएं, प्रकाशन-I
बुलेटिन सं. 18	:	व्यवहार सूचियों की समीक्षाएं, प्रकाशन-II
बुलेटिन सं. 19	:	व्यक्तित्व परीक्षणों की समीक्षाएं, प्रकाशन-II

परीक्षणों (टैस्टों) की समीक्षा

वर्ष 1984-85 में एन.टी.डी.एल. ने मुद्रण में भारतीय टैस्टों की समीक्षा संबंधी तीन कार्यशालाएं आयोजित कीं। 78 टैस्टों के लिए कुल 107 विवेचनात्मक समीक्षाएं लिखी गईं–29 बुद्धि परीक्षणों के लिए 36 समीक्षाएं, 41 व्यक्तित्व टैस्टों के लि 57 समीक्षाएं और 8 व्यवहार श्रेणियों के लिए 14 समीक्षाएं।

विवेचनात्मक समीक्षाओं की आशा की जाती है।

(i) देश में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों पर गुणता नियंत्रण रखना।

(ii) मानकीकृत परीक्षणों में और अधिक विवेकी चुनाव करने में परीक्षण प्रयोक्ताओं (अनुसंधान कर्त्ताओं, नियोकतोओं, अध्यापकों, मनोविज्ञान और शिक्षा के छात्रों आदि) की सहायता करना।

(iii) बाज़ार में थोड़े और बेहतर परीक्षण रखने के लिए परीक्षण लेखकों और प्रकाशकों को प्रेरित करना।

समीक्षाओं का सम्पादन

प्रकाशन संबंधी उनकी उपयोगिता मूल्यांकित करने के लिए परीक्षणों की समीक्षाएं प्रसिद्ध मनोमितीविदों द्वारा सम्पादित कराई गईं। 1984-85 में कुल 134 समीक्षाएं सम्पादित की गईं, जिनमें से 96 सम्पादकों द्वारा स्वीकृत की गईं। 76 समीक्षाएं एन.टी.एल. बुलिटनों 16, 17, 18 और 19 में प्रकाशित की गईं और शेष 20 एन.टी.एल. के आगामी बुलेटिन में स्थान लेंगी।

मन : मापन पुस्तिका

सम्पादकों द्वारा अंतिम रूप से स्वीकृत परीक्षण समीक्षाओं और एन.टी.एल. बुलिटनों से 14 से 19 में प्रकाशित समीक्षाओं को मन : मापन पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इस सबध में कार्रवाई चल रही है।

12

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विषयों के प्रयोग द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना, विशेषकर प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर स्तरों पर, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग की एक प्रमुख चिंता है। विभाग, परामर्श व मार्गदर्शन, प्रतिभा व्यवहार टैक्नालोजी की पहचान व विकास और पाठ्यविवरणों व अनुदेशी सामग्रियों के विकास संबंधी अनुसंधान विकास व प्रशिक्षण क्रियाकलापों में संलग्न है। कार्यान्वित किये जा रहे प्रोजेक्टों/कार्यक्रमों का प्रमुख तत्व है शिक्षार्थी के सभी पहलुओं की क्षमताओं और कार्यकारिता में अधिकतम विकास और स्वतः यथार्थवादिता।

परामर्श और मार्गदर्शन

परामर्श और मार्गदर्शन सेवाओं को शिक्षा के सभी स्तरों पर एक आवश्यक भूमिका अदा करनी है, यदि शिक्षा प्रणाली को बच्चे की क्षमताएं विकसित करनी हैं। शिक्षा व्यवसायीकरण के सन्दर्भ में उनका महत्व और भी बढ़ जाता है। अतः यह विभाग देश के स्कूलों में परामर्श व मार्गदर्शन सेवाएं प्रोन्नत और मजबूत करने की अनेक गतिविधियों में संलग्न है। कायान्वित की जा रही प्रमुख गतिविधियों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन एक वृत्तिक सेवा होने के नाते ऐसे विशेषज्ञ चाहती है जो सिद्धांत और

प्रक्रिया में पर्याप्त प्रशिक्षित हों। यह पाठ्यक्रम माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कलों के मार्गदर्शन ब्यूरो के परामर्शदाताओं को प्रशिक्षित करने के लिए डिज़ाइन किये गये हैं तथा साथ ही साथ मार्गदर्शन के उन अध्यापकों के लिए जो कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्य करेंगे। 27 व्यक्तियों को जिनमें से 4 व्यक्ति अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों से संबंधित हैं, को 1984-85 के दौरान प्रशिक्षण दिया गया। 19 प्रशिक्षणार्थियों को 325 रु. प्रतिमास वज़ीफ़ा दिया गया। अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के प्रशिक्षणार्थियों को सिद्धांत प्रश्नपत्रों तथा अंग्रेजी की विशेष पढ़ाई कराई गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंग के रूप में अहमदाबाद की एक शैक्षिक यात्रा भी कराई गई।

अल्पसंख्यक स्कूलों के प्रिंसिपलों और प्रबंधकों के लिए संगोष्ठी व कार्यशाला

वर्ष के दौरान अल्पसंख्यक स्कूलों के प्रिंसिपल और प्रबंधकों के लिए एक संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की गई। संगोष्ठी में अल्पसंख्यक स्कूलों के 110 प्रिंसिपलों और प्रबंधकों ने भाग लिया। संगोष्ठी के सहभागियों को स्कूल के परामर्श व मार्गदर्शन संबंधी अनेक पहलुओं में अभिविन्यस्त किया गया।

अल्पसंख्यक स्कूलों में वृत्तिक अध्यापकों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

अल्पसंख्यक स्कूलों के वृत्तिक अध्यापकों के लिए 28 दिनों का एक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम में 39 सहयोगी थे। निचले माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं के लिए कार्य-योजनाएं तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम का प्रमुख बल अध्यापकों को मार्गदर्शन सेवाओं और विकासशील कारीगरियों की आवश्यकता से अवगत कराना था। इसके अतिरिक्त संघशासित क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश में वृत्तिक अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित किया गया।

मार्गदर्शन में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य था सहभागियों को मार्गदर्शन क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों से अवगत कराना और साथ ही साथ उन अनुसंधान समस्याओं व अनुसंधान अध्ययनों के प्रकार से परिचय कराना था जिन्हें मार्गदर्शन क्षेत्र में लिया जा सकता है। इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में विभिन्न राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में 27 सहभागियों ने भाग लिया।

स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन

मार्गदर्शन सेवाओं के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाने के लिए इस विभाग द्वारा एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा सचिवों तथा शिक्षा निदेशकों ने भाग लिया। सम्मेलन ने स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं के निर्विघ्न कार्यान्वयन के लिए अनेक सिफ़ारिशें कीं। सम्मेलन की रिपोर्ट जिसका शीर्षक 'स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं की राष्ट्रीय नीति की ओर' है, को इसी वर्ष अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशित किया गया।

वृत्तिक अध्यापकों के लिए पाठमालाएं

इस विभाग ने वृत्तिक अध्यापकों के लिए अनुदेशी सामग्रियों का निर्माण आरंभ किया है। पाठमाला के तौर

पर प्रथम पुस्तक इसी वर्ष वृत्तिक अध्यापकों के लिए विकसित की गई और उसे अंतिम रूप दिया गया। स्कूलों में मार्गदर्शन कार्यकर्त्ताओं तथा वृत्तिक अध्यापकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पुस्तक तैयार की गई है।

मार्गदर्शन और परामर्श में क्षेत्र सेवाएं

राज्य स्तर पर संलग्न मार्गदर्शन सेवाओं संबंधी अभिकरणों की प्रार्थना पर इस विभाग ने मार्गदर्शन तथा परामर्श में क्षेत्र सेवाएं प्रदान कीं। वृत्तिक अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने तथा मार्गदर्शन सेवाओं के विभिन्न पहलुओं के प्रति शैक्षिक प्रशासकों को अभिविन्यास संबंधी सहायता प्रदान की गई। देश में मार्गदर्शन सेवाओं की स्थिति, विभिन्न अभिकरणों द्वारा कार्यान्वित की जा रही गतिविधियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए पाठ्यविवरणों आदि के संबंध में इस विभाग ने सूचना एकत्र की तथा उसे प्रसारित किया।

इसके अतिरिक्त, सातवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि के दौरान इस विभाग ने स्कूलों में मार्गदर्शन सेवा के लिए एक व्यापक योजना भी विकसित की थी।

परामर्श तथा मार्गदर्शन पर अनुसंधान

वर्ष के दौरान इस विभाग ने परामर्श तथा मार्गदर्शन से संबंधित अनेक अनुसंधान परियोजनाओं को आरंभ किया। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का एक अध्ययन बनाम अनुसूचित जाति हाई स्कूल के लड़कों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक योजना

इस अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य ग्रामीण और शहरी अनुसूचित जातियों तथा अनानुसूचित जाति हाई स्कूल के लड़कों बनाम उनकी वृत्तिक परिपक्वता के मध्य मनोवैज्ञानिक अन्तरों की पहचान करना था। वर्तमान अग्रताओं को दृष्टिगत रखते हुए, इस अध्ययन के जांच-परिणाम विद्यमान मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं की पुनर्रचना में सहायक सिद्ध होंगे। इस नमूने के अध्ययन में 280 लड़के हैं जो हरियाणा के सरकारी स्कूलों में अध्ययन कर रहे हैं। आंकड़ों का विश्लेषण पूरा किया गया और रिपोर्ट की तैयारी का कार्य शुरु किया गया।

शैक्षिक व व्यावसायिक योजना, अकादमिक उपलब्धि और चुनिंदा मनोवैज्ञानिक अध्ययन और शिलांग (मेघालय) के इर्दगिर्द जनजातीय पृष्ठभूमि पर हाईस्कूल विद्यार्थियों का आवास

इस परियोजना के अधीन बच्चों के लिए व्यावसायिक, व्यक्तिगत, सामाजिक विकास सुलभ कराने संबंधी अपेक्षित मार्गदर्शन सेवाएं नियोजित करने के लिए मौलिक सूचना एकत्र करने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण पूरा किया गया और रिपोर्ट की तैयारी का कार्य शुरु किया गया।

उच्च विद्वत्तापूर्ण योग्यता रखने वाले लड़कों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाओं का अध्ययन

इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य उच्च विद्वत्तापूर्ण योग्यता रखने वाले लड़के के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक व्यवहार का पता लगाया जाए और इस बात की जांच की जाए कि इन चरों की औसत योग्यता

रखने वाले विद्यार्थियों से उनका क्या अन्तर है। प्रमुख कार्य जो पूरा किया गया उसमें सम्मिलित है आंकड़ों का एकत्र तथा एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण का पूरा किया जाना।

किशोरों में पेशायी आकांक्षा का स्तर

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में पेशायी आकांक्षा के स्तर में अन्तरों की जांच करना था और साथ ही पेशायी आकांक्षाओं के स्तर के भविष्य-सूचकों की स्थापना करना था। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बच्चों के बीच पेशायी आकांक्षाओं के स्तर का तुल्नात्मक अध्ययन आरंभ किया गया।

अध्ययन ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बच्चों के मध्य पेशायी आकांक्षा के स्तर में कोई अन्तर प्रकट नहीं किया। लड़कों के मुकाबले, लड़कियों में पेशायी आकांक्षाओं का स्तर ऊंचा पाया गया। लड़कों में पेशायी आकांक्षा के स्तर का सबसे अच्छा भविष्यसूचक 'ज्ञान पेशाओं की संख्या' और 'विद्वत्तापूर्ण उपलब्धि' का होना बताया गया। लड़कियों में सबसे अच्छा भविष्य सूचक 'ज्ञात पेशाओं की संख्या' और उसके बाद 'बुद्धिमता', 'सामाजिक-आर्थिक स्थिति – विश्वीय अनुक्रम' और 'व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि अन्य स्रोतों से ज्ञात जनसाधारण' होना बताया गया।

प्रतिभा की पहचान तथा विकास

प्रतिभा की सृजनात्मकता और तथ्य विकास संबंधी अनुसंधान, विकास तथा प्रशिक्षण गतिविधियों में यह विभाग कार्यरत रहा है। जो प्रमुख परियोजनाएं/कार्यक्रम चलाए गये, वे निम्न प्रकार हैं:

प्रारंभिक ग्रेडों पर सृजनात्मक क्षमता की पहचान तथा प्रोत्साहन संबंधी अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

प्रतिभा पहचान क्रियाविधि एवं प्रारंभिक स्तर पर सृजनात्मकता पोषण संबंधी दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किये गए। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ऐसे अध्यापक शिक्षकों का कोर-समूह विकसित करना था जो विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में आरंभिक स्तर पर पहचान और सृजनात्मकता पोषण क्रियाविधि संबंधी आयोजित कार्यक्रमों में स्रोत व्यक्तियों के रूप में काम करेंगे। प्रथम पाठ्यक्रम में 18 सहभागी थे जो केरल और तमिलनाडु राज्यों के थे। द्वितीय पाठ्क्रम में 36 सहभागी थे जो राजस्थान और मध्य प्रदेश के थे।

प्रतिभा की पहचान तथा विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्ष के दौरान तीन दिवसीय प्रतिभा पहचान व विकास संबंधी राष्ट्रीय गोष्ठी की गई। विभिन्न राज्यों व संघशासित क्षेत्रों से 32 सहभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में कुछ चल रहे प्रतिभा खोज कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया गया और प्रतिभा की पहचान व विकास संबंधी अनेक सिफारिशें की गईं। संगोष्ठी ने प्रतिभा पहचान व विकास के क्षेत्र में किये जाने वाले अनुसंधान अध्ययनों के विवरणों पर भी चर्चा की। संगोष्ठी में प्रस्तुत किये गये पत्रों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस वर्ष के दौरान पत्रों का सम्पादन शुरु किया गया था।

प्रतिभा की सृजनत्मकता, पहचान तथा विकास पर अनुसंधान

इस विभाग ने प्रतिभा की सृजनात्मकता, पहचान तथा विकास संबंधी अनेक अनुसंधान अध्ययनों पर कार्य किया है। इनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन तथा बच्चों की सृजनात्मक कार्यकारिता में परिवर्तन

इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य भारत में 1967 से 1977 के मध्य बच्चों के सृजनात्मक विकास संबंधी हुए सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रभाव का अध्ययन करना था। ग्रेड 1-6 के दिल्ली के स्कूलों में अध्ययन कर रहे लगभग 1000 बच्चों को नमूने के तौर पर इस अध्ययन में शामिल किया गया। जिन प्रमुख पहलुओं का अध्ययन किया गया, उनमें शामिल हैं बच्चों का सृजनात्मक विकास तथा निष्पादन, सृजनात्मकता में सेक्स अन्तर, बच्चों की पेशायी रुचियां और अध्यापकों के शैक्षिक विचार और क्रियाएं तथा आदर्श शिष्य के प्रति उनका बोध।

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज छात्रों संबंधी उपलब्धियों का एक गहन अध्ययन

इस परियोजना के तहत 1964-65 के एन.टी.एस. छात्रों की उपलब्धियों व निष्पादन और उनकी पृष्टभूमि तथा व्यक्तित्व संबंधी अनेक मामलों का अध्ययन किया गया। वर्ष के दौरान जिन प्रमुख क्रियाकलापों को सम्पन्न किया गया, उनमें शामिल हैं एकत्र आंकड़ों का विश्लेषण तथा रिपोर्ट का प्रारूप तैयार किया जाना।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रों (1978-80) की पृष्ठभूमि का अध्ययन

इस परियोजना के अधीन 1978-80 के वर्षों में 9 प्रमुख पृष्ठभूमि चरों पर छात्रवृति के लिए चुने गये, साक्षात्कार के लिये बुलाए गए और अस्वीकृत किये गए कक्षा दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं के छात्रों के विभिन्न पृष्ठभूमि कारणों का अध्ययन किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण पूरा किया गया तथा रिपोर्ट के प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया।

प्रतिभा की पहचान व विकास के लिए माडल का विकास

इस परियोजना के अन्तर्गत प्रतिभा खोज संबंधी उपलब्ध विभिन्न माडलों का समीक्षा-कार्य पूरा किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट का प्रथम भाग लिखा गया। भारत के स्कूलों में इस अध्ययन से प्रतिभा खोज संबंधी उपयुक्त माडल विकसित करने में मार्गदर्शक-सिद्धांत प्राप्त होने की आशा है।

व्यवहारात्मक प्रौद्योगिकी

यह विभाग व्यवहारात्मक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान विकास तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करता आ रहा है। इस वर्ष के दौरान आरंभ किये गये कार्यक्रमों/प्रोजेक्टों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

अधिगम और विकास वृद्धि पाठ्यक्रम

इस विभाग ने प्राथमिक/प्रारंभिक तथा माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों तथा एस.आई.ई./एस.सी.

इ.आर.टी. कार्मिक के लिए दस दिवसीय तीन अधिगम और विकास वृद्धि पाठ्यक्रम आयोजित किए। इनमें से दो पाठ्यक्रम प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए तथा एक माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापक शिक्षकों के लिए था। अधिगम और विकास के विभिन्न पक्षों पर प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों व एस.आई./एस.सी.ई.आर.टी. संस्थाओं के 50 अध्यापक शिक्षकों तथा माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के 18 अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग संबंधी कार्यशाला

इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य राज्य स्तर कार्मिक को स्कूल सज्जा संबंधी व्यवहार संशोधन प्रविधियों के प्रयोग में प्रशिक्षित करना था। इस वर्ष के दौरान केरल तथा तमिलनाडु राज्यों में दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन राज्यों के 33 व्यक्तियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

व्यवहार संशोधन पर दीपिका विकसित करना

इस वर्ष के दौरान एक दीपिका, जिसमें स्कूल सज्जा संबंधी व्यवहार संशोधन के नियम एवं प्रविधियां हैं, का विकास किया गया। इस वर्ष विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा दस लेख लिखे गए। आशा है कि यह दीपिका बेहतर शैक्षिक उपलब्धि में छात्रों के अधिगम तथा कक्षा व स्कूल स्थिति के सुधार में व्यवहार संशोधन के नियमों और प्रविधियों का इस्तेमाल करने में अध्यापक शिक्षकों और अध्यापकों के लिये सहायक होगी।

अनुदेशी सामग्रियों का विकास

इस विभाग का प्रमुख कार्यक्षेत्र अनुदेशी सामग्रियों का विकास रहा है, जिसमें + 2 स्टेज के प्रयोग के लिए मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार करना भी शामिल है। जो प्रमुख क्रियाकलाप सम्पन्न किये गये, उनमें सम्मिलित हैं उच्चतर माध्यमिक स्टेज के लिए मनोविज्ञान में माडल पाठ्यविवरण तैयार करना, + 2 स्टेज पर मनोविज्ञान में प्रश्न बैंकों का विकास, ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिये मनोविज्ञान प्रैक्टिकम की एक दीपिका का विकास। इसके अलावा एक लेख 'विकास स्तर के अनमेल क्षेत्रों के पार प्रथम संतति के शिक्षार्थी' तथा दूसरा लेख 'दिल्ली के उच्चतर माधमिक स्कूलों के लड़के व लड़कियों के सामंजस्य का अध्ययन' व्यावसायिक पत्रिकाओं में प्रकाशित किये गये।

13

क्षेत्र सेवाएं और समन्वयन

क्षेत्र सेवाएं और समन्वयन विभाग (डी.एफ.एस.सी.), क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों में स्थित, परिषद् के क्षेत्र कार्यालियों की गतिविधियों का समन्वय करता है। यह, परिषद् के क्षेत्र कार्यालयों के माध्यम से राज्यों व संघशासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों व अन्य संस्थाओं के लगातार सम्पर्क बनाए रखता है और स्कूल शिक्षा व अध्यापक शिक्षा से सम्बद्ध, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की नीतियों व कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहायता करता है।

वर्ष 1984-85 में विभाग ने, स्कूली शिक्षा से संबंधित, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों के कुछ कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में की गई प्रगति, उनकी आवश्यकताओं व समस्याओं को पहचानने के लिए तथा इन समस्याओं पर काबू पाने के लिए राज्यों/संघशासित प्रदेशों द्वारा अपनाई गई नीतियों/दृष्टिकोणों के बारे में सूचना इकट्ठी करने के लिए तीन क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन किया। पहली बैठक त्रिवेन्द्रम में 29 जनवरी से 1 फरवरी, 1985 तक हुई जिसमें आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों के अधिकारियों ने भाग लिया। दूसरी बैठक नई दिल्ली में 18 से 21 फरवरी, 1985 तक हुई जिस्में हरियाणा, जम्मू व कश्मीर, पंजाब और राजस्थान राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीसरी बैठक नई दिल्ली में 28 फरवरी से 2 मार्च, 1985 तक हुई जिसमें मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय

परिषद् ने राज्यों/संघशासित प्रदेशों के विभागों/शिक्षा निदेशालयों व अन्य संस्थाओं से संपर्क रखने के

लिए 17 क्षेत्र कार्यालय खोले। वे रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के विभिन्न घटकों की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के बारे में राज्य शिक्षा विभागों को आवश्यक सूचना देते हैं। वे राज्यों/संघशासित प्रदेशों की, अपने अधिकार क्षेत्र में, विभिन्न आवश्यकताओं के बारे में सूचनाएं इकट्ठी करते हैं और रा.शै.अनु.प्र. परिषद् व इसके घटक एककों को पहुंचाते हैं तथा प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम आयोजित करने में रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के विभिन्न घटक एककों को आवश्यक सहायता देते हैं। क्षेत्र कार्यालय, स्कूल अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई छोटे पैमाने की क्रिया अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता भी देते हैं और राज्य शिक्षा विभागों के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं।

वर्ष 1984-85 में क्षेत्र कार्यालयों ने रा.शि.सं. के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केंद्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान को, राज्यों व संघशासित प्रदेशों में अपने कार्यक्रम के आयोजन में सहायता दी। राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाएं आयोजित करने में इन्होंने राज्य शिक्षा विभागों/बोर्डों को आवश्यक मार्गनिर्देश व सहायता दी। सभी क्षेत्र कार्यालयों का एक साझी काम, अपनी कार्यक्रम सलाहकार समितियों की बैठकें आयोजित करना था, जिनमें वर्ष 1984-85 व 1985-86 के लिए कार्यक्रमों के प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया गया था।

वर्ष 1984-85 में, विभिन्न क्षेत्र कार्यालयों द्वारा किए गए अन्य कार्यों का विवरण इस प्रकार है –

अहमदाबाद का क्षेत्र कार्यालय

अहमदाबाद में स्थित कार्यालय के अंतर्गत गुजरात राज्य और दादर व नगर हवेली का संघशासित प्रदेश आता है। वर्ष 1984-85 में किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं:

- गुजरात के, स्कूल-पूर्व व प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, शैक्षिक खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। 52 अध्यापकों से 81 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं और 6 पुरस्कार दिए गए।
- दादर व नगर हवेली के स्कूल-पूर्व एवं प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, शैक्षिक खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। दादर व नगर हवेली के अध्यापकों से 155 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।
- शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए हस्तलिपि (स्क्रिप्ट) तैयार करने पर, एस.आई.ई.टी., गुजरात के सहयोग से 15 से 19 जनवरी, 1985 तक आयोजित प्रशिक्षण कोर्स।
- एन.वी. पटेल विद्यामंदिर, नारोडा व देव, अहमदाबाद (ग्रामीण) के सहयोग से 22 से 24 फरवरी, 1985 तक आयोजित, शिक्षण सहायताएं व अन्य शैक्षिक सामग्री तैयार करने पर प्रशिक्षण कोर्स।
- +2 की अवस्था में व्यावसायिक धारा में पढ़ाई कराने वाले स्कूलों के अध्यापकों के लिए, गुजराती उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (10 + 2) सैल, अहमदाबाद के सहयोग से 10 से 13 मार्च, 1985 तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम।

क्षेत्र कार्यालयों ने, अनुसूचित जाति/जनजातियों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक जरूरतों व रुचियों पर एक अनुसंधान परियोजना हाथ में ली। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य किए गए:

- अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों व अन्य पिछड़े वर्गों के लिए कढ़ाई व सिलाई में प्रशिक्षण

कोर्स। 20 से 22 जून, 1984 तक आयोजित इस कोर्स में 36 बालिका विद्यार्थियों ने भाग लिया।

- चोरी, बलवाड़ा और सरवनी के उत्तर बुनियादी स्कूल में 22, 23 व 25 जून, 1984 को आयोजित, व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रम।

- चिखली में 8 से 13 जून, 1984 तक आयोजित व्यावसायिक मार्गदर्शन सामग्री/प्रदर्शन सामग्री/चार्ट बनाने की कार्यशाला।

- सार्वजनिक हाई स्कूल, वाघलधारा, जिला बलसार में 2 अगस्त, 1984 को आयोजित व्यावसायिक मार्गदर्शन कार्यक्रम तथा प्रदर्शनी।

- अहमदाबाद में 26 अक्तूबर से 7 नवम्बर, 1984 तक आयोजित, चिखली तालुका के अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों के लिए चार्ट व प्रदर्शन सामग्री बनाने की कार्यशाला।

- राजकीय हाई स्कूल, सिलवसा में 4 अगस्त, 1984 को, व्यावसायिक मार्गदर्शन पर हुई प्रदर्शनी।

क्षेत्र कार्यालय, इन कार्यों के अलावा प्रायोगिक परियोजना स्कीम का कार्यान्वयन भी करता रहा। गुजरात के विभिन्न स्कूलों से प्राप्त 40 परियोजना प्रस्तावों में से 18 चुनी गई परियोजनाओं के लिए 1984-85 में वित्त दिया गया। क्षेत्र कार्यालय ने, सतत शिक्षा केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के लिए, आवश्यक मार्गदर्शन भी किया।

इलाहाबाद का क्षेत्र कार्यालय

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय में किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं:

- एल.टी. के पाठ्यक्रम की समीक्षा के लिए, इलाहाबाद में 4 से 7 दिसम्बर, 1984 तक आयोजित कार्यशाला। उत्तर प्रदेश के एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 20 वरिष्ठ लैक्चररों ने कार्यशाला में भाग लिया।

- प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण कोर्स की समीक्षा एवं संशोधन के लिए 7 से 10 जनवरी, 1985 तक आयोजित कार्यशाला। प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के 28 अध्यापक शिक्षकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

- प्रायोगिक परियोजना डिजाइनों पर 21 से 23 फरवरी, 1985 तक हुई कार्यशाला। माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 27 लेक्चररों ने कार्यशाला में भाग लिया।

- 12 मार्च, 1985 को हुई, खिलौने बनाने की प्रतियोगिता। उत्तर प्रदेश के 4 जिलों के 20 व्यक्तियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

बंगलौर का क्षेत्र कार्यालय

बंगलौर के क्षेत्र कार्यालय में निम्नलिखित कार्य किए गए–

– प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण के संदर्भ में अक्षरसेना कार्यक्रम पर, स्कूल निरीक्षकों के लिए चार-चार दिन के दो अभिविन्यास कार्यक्रम। स्कूलों व सीखने के केन्द्रों के 53 निरीक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

– शैक्षिक खिलौने बनाने पर, गुजराती हाई स्कूल, बंगलौर में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम। प्राथमिक स्कूलों के 50 अध्यापकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

– खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। प्राथमिक-पूर्व और प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों से 51 प्रविष्टियाँ, प्रतियोगिता के लिए प्राप्त हुईं।

भोपाल का क्षेत्र कार्यालय

भोपाल का क्षेत्र कार्यालय अनेक विकास, अनुसंधान और प्रशिक्षण गतिविधियों में लगा रहा है। वर्ष 1984-85 में किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

– प्राथमिक-पूर्व और प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। प्रतियोगिता के लिए 12 अध्यापकों से 50 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

– मध्य प्रदेश के स्कूलों की पहली से आठवीं श्रेणी तक के लिए स्वास्थ्य शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार करना।

– राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन में हुआ, राज्य स्तरीय सामुदायिक गायन कार्यक्रम।

– मध्य प्रदेश के गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्रों में उपयोग के लिए, हिन्दी के बहुस्तरीय स्वयं-शिक्षा पैकेज तैयार करना।

इनके अतिरिक्त, मध्य प्रदेश में पहली से आठवीं श्रेणी तक की राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों में अनुसूचित जातियों के निरूपण के परीक्षण के लिए एक अध्ययन किया गया। क्षेत्र कार्यालय ने, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय मेल-जोल और राष्ट्रीय सामंजस्य की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों की छटनी में राज्य शिक्षा विभाग की सहायता की।

क्षेत्र कार्यालय की प्रायोगिक परियोजना स्कीम के अंतर्गत, अध्यापकों द्वारा नवाचारी व्यवहारों पर विकसित 13 प्रायोगिक परियोजनाओं के लिए धन लगाया गया। इस वर्ष में, क्षेत्र कार्यालय द्वारा हाथ में ली गई, जनसंख्या शिक्षा की एक अनुसंधान परियोजना पूरी की गई। क्षेत्र कार्यालय द्वारा, मध्य प्रदेश के शैक्षिक परिदृश्य पर एक प्रकाशन सहित, पांच प्रकाशन निकाले गए।

भुवनेश्वर का क्षेत्र कार्यालय

भुवनेश्वर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

– खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता। 44 प्राथमिक एवं प्राथमिक-पूर्व अध्यापकों से, प्रतियोगिता के लिए 46 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

– प्राथमिक अवस्था पर शिक्षा के सार्वीकरण पर कार्यशाला 20 से 23 फरवरी, 1984 तक आयोजित की
– गई। प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण (यू.ई.ई.) की समस्याओं से संबंधित प्रायोगिक परियोजनाएं तैयार

करने के लिए आयोजित इस कार्यशाला में 30 अध्यापकों ने भाग लिया।

– जनजाति सेवाश्रम में बच्चों की सार्विक भरती व अवधारण पर, 12 से 15 मार्च, 1985 तक हुई कार्यशाला। कार्यशाला में ऐसे जिलों के 30 अध्यापकों ने भाग लिया, जिनमें जनजातीय लोग रहते थे।

प्रायोगिक परियोजना स्कीम के अंतर्गत, क्षेत्र कार्यालय को 56 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से 25 को, वित्तीय सहायता दिए जाने के लिए चुना गया।

कलकत्ता का क्षेत्र कार्यालय

कलकत्ता के क्षेत्र कार्यालय में सिक्किम व पश्चिम बंगाल के राज्य और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह का संघशासित प्रदेश आता है। क्षेत्र कार्यालय ने, प्राथमिक-पूर्व व प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, 4 मार्च, 1985 को, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसने, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर, के सहयोग से शारीरिक शिक्षा पर एक 10 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया। क्षेत्र कार्यालय ने, पश्चिम बंगाल में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने के लिए, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के विभिन्न घटक एककों को भी सहायता दी।

चंडीगढ़ का क्षेत्र कार्यालय

चंडीगढ़ में, क्षेत्र सलाहाकार का कार्यालय, हरियाणा व पंजाब राज्यों तथा संघशासित प्रदेश चंडीगढ़ के लिए काम करता है। क्षेत्र कार्यालय ने 1984-85 में निम्नलिखित मुख्य कार्य किए –

- हरियाणा व पंजाब राज्यों तथा संघशासित प्रदेश चंडीगढ़ के लिए खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता।

– प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण की नीतियों पर, 3 से 5 जनवरी, 1985 तक हुई कार्यशाला।

– प्राथमिक अवस्था में शिक्षा सुधारने पर, 11 से 13 मार्च, 1985 तक हुई कार्यशाला। पंजाब, हरियाणा व चंडीगढ़ के 55 शिक्षा अधिकारियों, मुख्याध्यापकों और प्राथमिक स्कूल अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

– "शैक्षिक और व्यावसायिक समस्याएं हल करने में, अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की सहायता" पर 17 से 28 मार्च, 1985 तक हुई कार्यशाला। इस कार्यशाला में 25 व्यक्तियों ने भाग लिया।

– "प्रारंभिक अवस्था में, अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की भरती में सुधार" पर, 30 व 31 मार्च, 1985 को हुई कार्यशाला।

प्रायोगिक परियोजना स्कीम के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को 37 परियोजना प्रस्ताव प्राप्त हुए–3 हरियाणा से, 12 पंजाब से और 22 चंडीगढ़ से। इनमें से, चंडीगढ़ की 9 व पंजाब की 5 परियोजनाओं में धन लगाया गया।

गुवाहाटी का क्षेत्र कार्यालय

गुवाहाटी के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत असम, नागालैंड व मणिपुर के राज्य तथा संघशासित प्रदेश व अरुणाचल प्रदेश आते हैं। किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

– चंगलैण्ड, अरुणाचल प्रदेश में 24 से 28 जनवरी, 1985 तक आयोजित, गैर औपचारिक शिक्षा पर कार्यशाला/गैर औपचारिक शिक्षा केन्द्रों के 23 पर्यवेक्षकों व प्रशिक्षकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

– डिफूल, असम में 25 फरवरी से मार्च, 1985 तक, पर्यावरणी दृष्टिकोण के माध्यम से विज्ञान, शिक्षण, पर हुई कार्यशाला। 26 प्राथमिक अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

हैदराबाद का क्षेत्र कार्यालय

क्षेत्र कार्यालय ने, जवाहर बाल भवन, हैदराबाद के सहयोग से, गुड़िया बनाने तथा सर्जनात्मक कला पर एक 5 दिन की कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में 35 व्यक्तियों ने भाग लिया। माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं पर दो दिन का एक अभिविन्यास कोर्स, एक अन्य किया गया कार्यक्रम था। विभाग ने, प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण के कार्यक्रम के अंतर्गत उपस्थिति मानीटर करने का नमूना सर्वेक्षण करने में, राज्य शिक्षा विभाग की भी सहायता की।

जयपुर का क्षेत्र कार्यालय

क्षेत्र कार्यालय ने, राजस्थान में प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा के विकास तथा गुणात्मक सुधार के लिए अनेक गतिविधियां आयोजित कीं। किए गए कार्यों में से प्रमुख हैं –

– समाज कल्याण अनुसंधान केन्द्र, तिलोनिया में 7 से 10 मई 1984 तक आयोजित, शिक्षा कर्मियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम।

– भीलवाड़ा में 17 से 20 सितम्बर, 1984 तक हुई, वाणिज्य से संबंधित व्यावसायिक विषयों पर संगोष्ठी तथा कार्यशाला।

– उदयपुर में 26 से 31 मार्च, 1985 तक, एकल अध्यापक स्कूलों के लिए अध्यापक नीतियां तैयार करने के लिए हुई कार्यशाला। इस कार्यशाला में 29 व्यक्तियों ने भाग लिया।

– प्राथमिक-पूर्व तथा प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता।

मद्रास का क्षेत्र कार्यालय

मद्रास के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत तमिलनाडु व पांडिचेरी आते हैं। 1984-85 में क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गंए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

– थुक्ले में 19 से 23 फरवरी, 1985 तक, प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण पर हुई कार्यशाला। इस कार्यशाला में 41 अध्यापकों ने भाग लिया।

– सालेम में 5 से 9 मार्च, 1985 तक आयोजित, प्रारंभिक शिक्षा के सार्वीकरण पर कार्यशाला। इस कार्यक्रम में 39 अध्यापकों ने भाग लिया।

– बहुविकल्प आइटम तैयार करने पर, 4 से 8 फरवरी, 1985 तक हुई कार्यशाला। बहुविकल्प आइटम
– तैयार करने की क्रियाविधि में, अनुसूचित जाति/जनजाति के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई।

क्षेत्र कार्यालय ने स्कूल शिक्षा निदेशालय, तमिलनाडु को, विज्ञान व गणित के पाठ्यक्रमों की समीक्षा करने में सहायता दी। इसने पांडिचेरी के शिक्षा विभाग को भी, "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरण" परियोजना के अंतर्गत तीसरी श्रेणी के लिए शैक्षिक सामग्री तैयार करने तथा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के संदर्भ में अध्यापकों के प्रशिक्षण कोर्स और पांडिचेरी के सतत शिक्षा केन्द्र द्वारा आयोजित जैविकी प्रशिक्षण कोर्स चलाने में सहायता दी।

पटना का क्षेत्र केन्द्र

पटना के क्षेत्र केन्द्र द्वारा 1984-85 में किए गए महत्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं –

– बिहार के शिक्षा विभाग के अधिकारियों और सतत शिक्षा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों की बैठक।

– प्राथमिक-पूर्व व प्राथमिक शिक्षा के लिए शिक्षण सहायताएं तैयार करने के लिए, 4 से 6 फरवरी, 1985 तक हुई कार्यशाला।

– + 2 अवस्था में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर, 12 से 14 मार्च, 1985 तक हुई कार्यशाला।

– प्राथमिक-पूर्व व प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, 4 मार्च, 1985 को हुई, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता।

पुणे का क्षेत्र केन्द्र

पुणे का क्षेत्र केन्द्र महाराष्ट्र राज्य व संघशासित प्रदेश गोआ की जरूरतें पूरी करता है। किए गए महत्वपूर्ण कार्य इस प्रकार हैं –

– बी. एड. में प्रश्न बैंक के लिए आइटम तैयार करने के लिए 6 दिन का अभिविन्यास कोर्स तथा कार्यशाला। पृष्ठ–1, पाठ्यक्रम।

– प्राथमिक-पूर्व व प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता।

इस वर्ष में "अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान में अध्यापक तैयार करने की निजी लागत" अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत कार्य जारी रहा। बाद में, प्रधान अन्वेषक के, नई दिल्ली में स्थानान्तरण के साथ, यह परियोजना राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् को स्थानांतरित कर दी गई।

शिलांग का क्षेत्र कार्यालय

शिलांग के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत मेघालय व त्रिपुरा राज्य तथा संघशासित प्रदेश मिज़ोरम आते हैं। आलोच्य वर्ष में किए गए मुख्य कार्य इस प्रकार हैं –

- रा.शि.सं., त्रिपुरा और राज्य शै.अनु.प्र. परिषद् मिज़ोरम में हुई, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता।
- अगरतला में 4 से 9 मार्च, 1985 तक हुई, एकल अध्यापक प्राथमिक स्कूलों के शैक्षिक कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए उपयुक्त रूपात्मकताएँ तैयार करने के लिए कार्यशाला। एकल अध्यापक स्कूलों के 19 अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।
- शिलांग में 25 से 29 मार्च, 1985 तक, प्रायोगिक/अनुसंधान परियोजना स्वरूपों पर हुआ अभिविन्यास कार्यक्रम। इस कार्यक्रम में 15 अध्यापकों ने भाग लिया।

इनके अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने, ''त्रिपुरा में एकल अध्यापक प्रारंभिक स्कूलों की पारिस्थितिकी: शैक्षिक कार्यक्रम सुधारने के लिए रूपात्मकताएं'' शीर्षक पर एक रिपोर्ट तैयार की। कार्यालय ने, अनुसूचित जाति/जनजाति के शैक्षिक विकास की एक अनुसंधान परियोजना भी हाथ में ली। परियोजना का शीर्षक है, ''मेघालय में + 2 अवस्था के जनजातीय विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम।''

शिमला का क्षेत्र कार्यालय

क्षेत्र कार्यालय ने, छठी से दसवीं श्रेणी तक के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तकें अपनाने और इन्हें अद्यतन करने में, हिमाचल प्रदेश के स्कूल शिक्षा बोर्ड की सहायता की। कार्यालय ने, हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले के घुमन्तु गद्दी जनजातियों के प्रारंभिक स्कूल विद्यार्थियों के फायदे के लिए, विभिन्न विषयों में शिक्षण नीतियां तैयार करने के लिए, एक कार्यक्रम आयोजित किया। छठी से आठवीं श्रेणी तक में नवीन गणित पढ़ाने के दृष्टिकोण और तरीके तैयार करने के लिए, माध्यमिक स्कूलों में, नवाचारी शैक्षिक व्यवहारों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए, अध्यापकों को सहायता देने की, परिषद् की योजना के अंतर्गत, प्रायोगिक परियोजनाओं के लिए प्रस्ताव तैयार करने के लिए भी इसने कार्यक्रमों का आयोजन किया।

जम्मू व कश्मीर का क्षेत्र कार्यालय

जम्मू व कश्मीर के क्षेत्र कार्यालय ने, शैक्षिक नीतियां तैयार करने के लिए, अध्यापकों की एक कार्यशाला, जम्मू में 26 फरवरी से 2 मार्च, 1985 तक आयोजित की। इस कार्यशाला में 35 अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। अध्यापकों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए एक अन्य कार्यशाला श्रीनगर में 12 से 15 मार्च, 1985 तक आयोजित की गई। जम्मू व कश्मीर के लगभग 40 अध्यापक शिक्षकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। ग्यारहवीं श्रेणी के लिए गणित, रसायन, भौतिकी व जैविकी के माडल प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए एक 2 सप्ताह की कार्यशाला के आयोजन में, क्षेत्र कार्यालय ने स्कूल शिक्षा बोर्ड जम्मू व कश्मीर के साथ सहयोग किया।

त्रिवेन्द्रम का क्षेत्र कार्यालय

त्रिवेन्द्रम का क्षेत्र कार्यालय, केरल राज्य व संघशासित प्रदेश लक्षद्वीप के इलाकों की मांगें पूरी करता है। इसने, वायनाड जिले के जनजातीय इलाकों के अध्यापकों के लिए प्रतिपूरक शिक्षा पर एक 5 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 32 उच्च प्राथमिक स्कूल अध्यापकों ने भाग लिया। इसने प्रायोगिक परियोजनाओं पर एक 5 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया। कालीकट जिले के 34 अध्यापकों ने कार्यक्रम में भाग लिया। फरवरी, 1985 के अंतिम सप्ताह में, प्राथमिक-पूर्व व प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए, खिलौने बनाने की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की गई।

14

प्रकाशन और प्रलेखन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन संबंधी कार्य प्रकाशन विभाग और जर्नल सेल करते हैं। परिषद् में मुख्यतः निम्न प्रकार के प्रकाशन होते हैं:

- विद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, निर्धारित संपूरक पाठ्मालाएं।
- 14-17 वर्ष के छात्रों के लिए संपूरक पठन सामग्री।
- शिक्षक निर्देशिका, शिक्षक-पुस्तिका तथा अन्य निर्देशात्मक सामग्री।
- अनुसंधान अध्ययन और मोनोग्राफ
- शैक्षिक सम्मेलनों की रिपोर्ट, संगोष्ठियों की कार्रवाई, पैम्फ्लेट, पुस्तिकाएं, ब्रोशर, फोल्डर आदि।
- शैक्षिक जर्नल
- चयनिका

पुस्तकालय, प्रलेखन तथा सूचना विभाग रोजमर्रा के काम के अलावा प्रलेखन का भी काम करता है। आलोच्य वर्ष में कुल 251 प्रकाशन प्रकाशित किए गए। संवर्गों के अनुसार इनकी संख्या निम्नलिखित है:

प्रकाशन का संवर्ग	शीर्षकों की संख्या
पाठ्यपुस्तकों/अभ्यास पुस्तिकाओं/निर्धारित संपूरक पाठमालाओं के प्रथम संस्करण	16
पाठ्यपुस्तकों/अभ्यास पुस्तिकाओं/निर्धारित संपूरक पाठमालाओं के पुनर्मुद्रण।	139
अन्य सरकारी अभिकरणों के लिए पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिकाएं	12
शोध मोनोग्राफ/रिपोर्ट और अन्य प्रकाशन	51
आवधिक पत्रिकाएं (अंक)	33
कुल	251

आवधिक पत्रिकाओं को छोड़कर अन्य पत्रिकाओं की एक सूची इस अध्याय के अंत में दी गई है।

1985-86 के स्कूल सत्र के लिए नई पाठ्यपुस्तक

5 वर्षीय पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण चक्र के एक अंग के रूप में 1985 से स्कूल सत्र में नई पाठ्यपुस्तक लगाने से संबद्ध लिए गए निर्णय के अनुसार नवीं कक्षा के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का सहयोग प्राप्त किया। एन.सी.ई.आर.टी. ने नवीं–दसवीं कक्षाओं तथा ग्यारहवीं कक्षा के लिए भाषा और समाज विज्ञान में भी नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशन विभाग ने इन पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन का कार्य किया और पैराग्राफ 2.00 की सारणी में उल्लेख किए गए 16 नई पाठ्यपुस्तकों में से 15 पाठ्यपुस्तकों को प्रकाशित किया।

नवीं कक्षा

1. फीजिक्स पार्ट-1
2. कैमिस्ट्री पार्ट-1
3. बेसिक बायोलाजी पार्ट-1 खण्ड-1
4. मैथेमेटिक्स पार्ट-1

नवीं-दसवीं कक्षा

5. सिटिजैन एण्ड द गवर्नमेंट
6. नागरिक और शासन

ग्यारहवीं कक्षा

7. अभिनव काव्य भारती (हिन्दी कोर)

8. अभिनव गद्य भारती (हिन्दी कोर)
9. अभिनव कथा भारती (हिन्दी कोर)
10. काव्य संचयन (हिन्दी वैकल्पिक)
11. गद्य संचयन (हिन्दी वैकल्पिक)
12. कहानी संचयन (हिन्दी वैकल्पिक)
13. आई द पीपुल-इंग्लिश रीडर (कोर)
14. स्टोरीज़, प्लेज एण्ड टेल्स आफ एडवेन्चर इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर)
15. संस्कृत साहित्य परिचय।

चयनिकाएं

एन.सी.ई.आर.टी. ने चयनिकाएं निकाली हैं जिनमें बच्चों के लिए न केवल पढ़ने की आदत डालने तथा पढ़ाई के लाभ से संबद्ध सामग्री होती है बल्कि उनमें महान चिन्तकों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, सुधारकों और राष्ट्र नेताओं के विचार तथा दृष्टिकोण भी होते हैं जिससे कि बच्चे अच्छी-अच्छी बात जान सकें और साथ ही उनका अच्छा चरित्र निर्माण हो सके। इस माला की डा.पी.एल. मल्होत्रा द्वारा संपादित 'नेहरु, ऐन एन्थोलाजी फार यंग रीडर्स' नामक पुस्तक का विमोचन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने 21 जनवरी, 1985 को किया। इस पुस्तक में बच्चों के लिए नेहरु के विचारों एवं आदर्शों का उल्लेख किया गया है जिससे कि हमारी नई पीढ़ी इन बातों को अपने दिल और दिमाग में बैठा सके।

वितरण

गत वर्षों की तरह इस साल भी परिषद् के प्रकाशनों का वितरण तथा उनकी बिक्री का कार्य सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने ही किया जो कि परिषद् के राष्ट्रीय वितरक हैं और जिनके बिक्री केन्द्र पूरे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नई दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, पटना, लखनऊ और हैदराबाद में स्थित हैं।

गत वर्षों की तरह परिषद् के जर्नलों का वितरण तथा उनकी बिक्री स्वयं परिषद् ही करता है।

ऊपर उल्लेख की गई बिक्री और वितरण की व्यवस्था के अतिरिक्त परिषद् द्वारा भारत के बड़े-बड़े समाचार पत्रों में दिए गए विज्ञापनों को देखकर स्कूलों तथा अन्य शैक्षिक संस्थाओं द्वारा परिषद् की पुस्तकों के लिए दिए गए आर्डरों की पूर्ति भी स्वयं परिषद् करता है। आलोच्य वर्ष में परिषद् को सीधे 153 आर्डर प्राप्त हुए जिनको परिषद् ने पूरा किया, इनमें से 8 आर्डर केन्द्रीय विद्यालयों से 11 आर्डर सैनिक स्कूलों से, 24 आर्डर तिब्बत केन्द्रीय विद्यालयों से, 81 आर्डर अन्य स्कूलों से और 29 आर्डर अरुणाचल प्रदेश के स्कूलों और जिला शिक्षा अधिकारियों से प्राप्त हुए थे। परिषद् ने 1985-86 सत्र के लिए सिक्किम के शिक्षा निदेशालय को भी पाठ्यपुस्तक सप्लाई किया है। इसके अतिरिक्त परिषद् ने ग्यारहवीं–बारहवीं कक्षाओं के लिए अंग्रेजी माध्यम के 13 शीर्षक मुद्रित किए जिन्हें उसने अपने राष्ट्रीय वितरकों के जरिए जम्मू व कश्मीर के विद्यालय शिक्षा बोर्ड को उपलब्ध कराया।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनियों में भाग लेना

एन.सी.ई.आर.टी. ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लिया:

विज्ञान-भवन, नई दिल्ली में सभी विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों, राज्यो के शिक्षा सचिवों, राज्य के शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में	मई 1984 में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित।
द्वितीय बाल पुस्तक मेला, इंडिया गेट, नई दिल्ली	नवंबर 1984 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
राष्ट्रीय शिक्षक-पुरस्कार वितरण समारोह, विज्ञान-भवन, नई दिल्ली	5 सितम्बर, 1984 को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित
पाठ्यपुस्तकों और पठन सामग्री पर मार्गदर्शी राष्ट्रीय कार्यशाला, एन.आई.ई. आडिटोरियम, नई दिल्ली	मार्च, 1985 में डी.ई.एस.एस. एच., एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित

राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, भारत के जरिए एन.सी.ई.आर.टी. के कुछ चुने हुए प्रकाशनों को भेज कर निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला/प्रदर्शनियों में भी परिषद् ने भाग लिया:

लंदन पुस्तक मेला	अप्रैल, 1984
अंतर्राष्ट्रीय बाल पुस्तक प्रदर्शनी, अंकारा	अप्रैल, 1984
राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, पोर्ट आफ स्पेन, ट्रिनिडाड और टोंबेगो	मई, 1984
सोलहवां अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, सोफिया (बुलगारिया)	जून, 1984
मलेशिया पुस्तक मेला, 1984	सितम्बर, 1984
द्वितीय जिंबाब्बे अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला और प्रदर्शनी	अगस्त-सितम्बर, 1984
16वां सिंगापुर पुस्तक समारोह और पुस्तक मेला	सितम्बर, 1984
36वां फ्रैंकफर्ट पुस्तक मेला	अक्तूबर, 1984
मॉरिशस में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी	अक्तूबर, 1984
अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला, बेलग्रेड	अक्तूबर, 1984
खारतौम (सुडान) में पुस्तकों की प्रदर्शनी	नवम्बर, 1984
ढाका (बंगलादेश) में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी	नवंबर-दिसम्बर, 1984
तीसरी मध्य पूर्वी पुस्तक मेला, बेहरीन	दिसम्बर, 1984
पोर्ट आफ स्पेन, ट्रिनिडाड (वेस्टइंडीज़) में भारतीय पुस्तकों की विशेष प्रदर्शनी	जनवरी, 1985
17वीं काहिरा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला	जनवरी-फरवरी, 1985
कैन्या (नेरोबी) में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी	फरवरी-मार्च, 1985
खारतौम में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी	फरवरी, 1985
लिटरौशिया–प्रथम अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन समारोह, हांगकांग	मार्च, 1985

बिक्री

आलोच्य वर्ष में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की रु. 2,51,43,999.70 की बिक्री हुई। $ 431.23 और £3,00 के प्रकाशन की विभिन्न विदेशी पार्टियों को बेचे गए। इसके अतिरिक्त

एन.सी.ई.आर.टी. को मैसर्स टीव्ज़-बिन-शौ कं. लि., जापान से 'दि स्टोरी आफ सिविलिजैशन' और 'इंडिया आन द मूव' नामक पुस्तकों से रायल्टी के रूप में 241.82 अमरीकी डालर प्राप्त हुए।

राज्य सरकारों तथा अन्य एजेंसियों को कापीराइट की अनुमति

राज्य स्तर की अनेक एजेंसियों ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी रुचि दर्शायी है। नीचे की सारणी में उन एजेंसियों के नाम दिए गए हैं जिन्हें आलोच्य वर्ष में एस.सी.ई.आर.टी. ने अपनी पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य प्रकाशनों को स्वीकरण/व्यनुकूलन करने तथा प्रकाशित करने की अनुमति दी है:

चण्डीगढ़ निदेशक राज्य शिक्षा संस्थान चण्डीगढ़	एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित दसवीं कक्षा की "दि स्टोरी आफ सिविलीजैशन पार्ट-।।" नामक इतिहास की पाठ्यपुस्तक को पंजाबी भाषा में अनूदित करने की अनुमति दी गई।
महाराष्ट्र निदेशक राज्य शिक्षा संस्थान, पूना	महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्रों तथा वनों के.एन.एफ.ई. केंद्रों के लिए मराठी भाषा में छापने की अनुमति दी गई।
मेघालय पूर्वोत्तर पहाड़ी विश्वविद्यालय, शिलांग	निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों से सामग्री का व्यनुकूलन करने की अनुमति दी गई। 1. फाउन्डैशन आफ पौलिटिकल साइंस 2. पोलिटिकल सिस्टम 3. इंडियन डैमोक्रेसी ऐट वर्क 4. इंडियन कंस्टीच्यूशन एण्ड गवर्नमेंट
पंजाब सचिव पंजाब विद्यालय शिक्षा बोर्ड एस ए. एस. नगर, मौहली	एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित 1 से 10 तक की कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का स्वीकरण करने की अनुमति दी गई।

जर्नलों का प्रकाशन

जर्नल कक्ष का मुख्य कार्य परिषद् के लक्ष्य-अभिविन्यास जर्नलों का निर्माण करना है इसके अतिरिक्त जर्नल-कक्ष कुछ शैक्षिक कार्यक्रम चलाने तथा अनुसंधान कार्यकलाप करने का काम भी करता है। जर्नल कक्ष ने निम्नलिखित जर्नल प्रकाशित किए हैं।

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (त्रैमासिक) एक शोध जर्नल है जिसमें शैक्षिक अनुसंधानकर्ताओं तथा विद्वानों की आवश्यकताओं से संबद्ध सामग्री होती है।

जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन (पाक्षिक) माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का जर्नल है जो शिक्षकों का विशेष रूप से कक्षा में पढ़ने की विधि में सुधार लाने तथा व्यापक रूप से विद्यालय के वातावरण को अच्छा बनाने में सहायक है।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक, हिंदी, में) अनुसंधानकर्ताओं तथा माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक–विद्यालय शिक्षकों का जर्नल है। इस जर्नल में कक्षा में समस्याओं को हल करने तथा शिक्षा में नवीन प्रक्रिया के प्रचार-प्रसार से संबद्ध सामग्री होती है।

स्कूल साइन्स (त्रैमासिक) का लक्ष्य माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षण के स्तर में सुधार लाने तथा व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए भिन्न-भिन्न विद्यालयों में किए जा रहे नवीनतम प्रयोगों से प्राप्त परिणामों का संक्षिप्त विवरण देना है।

प्राइमरी टीचर (त्रमासिक) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का जर्नल है जिससे कि उन्हें विद्यालय की समस्याओं को हल करने तथा कक्षा शिक्षण में सुधार लाने में सहायता मिल सके।

प्राइमरी शिक्षक (त्रैमासिक, हिन्दी में) मुख्यतः यह प्राइमरी टीचर नामक जर्नल का हिन्दी रूपांतरण है।

स्पष्ट है कि इन लक्ष्य अभिविन्यस्त जर्नलों का बुनियादी उद्देश्य नवीनतम जानकारी को शिक्षा के संगत क्षेत्र/चरणों में प्रचार-प्रसार करने के अलावा विभिन्न स्तरों पर विद्यालय शिक्षा के स्तर में सुधार लाना है। आलोच्य वर्ष में इन जर्नलों के निम्नलिखित अंक प्रकाशित हुए:

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	अप्रैल-84, जुलाई-84 और अक्तूबर-84
जर्नल आफ इंडियन एजुकेशन	सितंबर-83, नवम्बर-83, जनवरी-84, मार्च-84, मई-84, जुलाई-84 और सितंबर-84
भारतीय आधुनिक शिक्षा	अक्तूबर-83, जनवरी-84, अप्रैल-84
स्कूल साइन्स	दिसम्बर-82, मार्च-83, जून-83, सितम्बर-83, दिसम्बर-83, मार्च-84 और जून-84
दि प्राइमरी टीचर	जनवरी-83, अप्रैल-83, जुलाई-83, अक्तूबर-83, जनवरी-84, अप्रैल-84, जुलाई-84 और अक्तूबर-84
2प्राइमरी शिक्षक	अक्तूबर-82, जनवरी-83, अप्रैल-83, जुलाई-83 और अक्तूबर-83

विकासात्मक शैक्षिक कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. के जर्नलों तथा विद्यालय पत्रिकाओं/शैक्षिक जर्नलों के स्तर में सुधार से जर्नल कक्ष में शैक्षिक पत्रकारिता में संगोष्ठी एवं कार्यशाला आयोजित करने का कार्य भी अपने हाथ में लिया है। आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- शैक्षिक पत्रकारिता से संबद्ध समस्याओं और मामलों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों की प्रारंभिक बैठक–जिसका आयोजन दिसम्बर, 1984 में एन.आई.ई. में किया गया।
- शैक्षिक पत्रकारिता पर संगोष्ठी एवं कार्यशाला–जिसका आयोजन 25 फरवरी से 1 मार्च, 85 तक जयपुर में किया गया।
- शैक्षिक पत्रकारिता पर एक संगोष्ठी–जिसका आयोजन 25 मार्च से 31 मार्च, 85 तक गैंगटाक में किया गया।

यह प्रस्ताव किया गया है कि इन कार्यक्रमों से प्राप्त परिणामों के आधार पर खास-खास कार्मिकों का एक ऐसा दल बनाया जाए जो शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और शिक्षा में कार्यरत पत्रकारों का अभिविन्यास करने का कार्य अपने हाथ में लें जिससे कि वे उनके उत्पादन के स्तर में सुधार लाने में सहायता कर सके। आजकल जर्नल कक्ष (क) हैण्डबुक आन एजुकेशनल जर्नलिज्म और (ख) ए इयर बुक आन एजुकेशनल जर्नलिज्म नामक शैक्षिक पत्रकारिता पर दो बुनियादी संदर्भ पुस्तक का निर्माण करने में लगा हुआ है। ये पुस्तकें सभी स्तर के शैक्षिक जर्नलों, विद्यालय-पत्रिकाओं के स्तर में सुधार करने में सहायक होगीं।

अनुसंधान कार्यकलाप

शैक्षिक जर्नलों का सर्वेक्षण

क्योंकि देश के किसी एक स्थान से कोई ऐसा प्रलेख उपलब्ध नहीं हो पाता जिससे कि देश में प्रकाशित हो रहे शैक्षिक जर्नलों की एक पूरी सूची प्राप्त की जा सके। अतः जर्नल कक्ष ने शैक्षिक जर्नलों का एक व्यापक राष्ट्रीय सर्वेक्षण करने का कार्य अपने हाथ में लिया है।

जर्नल कक्ष द्वारा चलाए गए इन विकास एवं अनुसंधान संबंधी कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यालय शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के लिए शैक्षिक पत्रकारिता के महत्व को समझाना है। प्रस्ताविक सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारियां अभी ऊपर उल्लेख किए गए हैण्ड बुक और वार्षिकी का निर्माण न केवल एक आदर्श ही होगा बल्कि इनसे कुछ ऐसे व्यवहारिक साधन भी उपलब्ध हो जाएंगे जो जर्नलों/विद्यालय पत्रिकाओं के स्तर को ऊपर उठाने में सहायक हो सकते हैं। यह परियोजना 1984-85 वर्ष में शुरू की गई है।

प्रलेखन

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग परिषद् के एक शैक्षिक अंग के रूप में काम करता है। इसका मुख्य कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रख कर पठन सामग्री को एकत्रित करना, नियोजित करना तथा प्रचार-प्रसार करना है।

- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के संकाय के सदस्यों तथा देश भर में शिक्षा क्षेत्र में लगे विद्वानों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- शैक्षिक सूचना के लिए एक समशोधन गृह के रूप में काम करना।
- अनुसंधान एवं अध्ययन का बढ़ावा देना।
- विद्यालयों तथा शिक्षक-प्रशिक्षण कालेजों में उन्नत पुस्तकालय सेवा उपलब्ध करा कर शिक्षा के स्तर में सुधार लाना।

संग्रह

31-3-1984 को पुस्तकों की संख्या	
बढ़ाई गई पुस्तकों की संख्या	+ 124208
(क) खरीद कर	+ 3717

(ख) उपहार के रूप में प्राप्त करके	+ 364
(ग) मंगाई गई साजिल्द पत्रिकाओं की संख्या	+ 136
(घ) बट्टे खाते में डाली गई पुस्तकों की संख्या	– 12319
31-3-1985 को पुस्तकों और आवधिक पत्रिकाओं की कुल संख्या	116106
खरीदी गई, उपहार के रूप में प्राप्त हुई अथवा आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त हुई आवधिक पत्रिकाओं की कुल संख्या	372

प्रेस कतरन

विभाग 17 समाचार-पत्र मंगाता है। आलोच्य वर्ष में भिन्न-भिन्न समाचार-पत्रों से 600 प्रेस कतरन लिया गया और इन्हें सूचकांकित कर दिया गया।

प्रकाशन—विभाग ने निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए:

- एक्सेशन लिस्ट (मासिक)
- करेन्ट कन्टेन्ट्स (मासिक)
- सेलेक्ट एब्स्ट्रैक्ट आन टीचर (राष्ट्रीय शैक्षिक आयोग के अनुरोध पर एक संक्षिप्त–ग्रंथ सूची संकलित की गई है)
- सेलेक्ट बिब्लियोग्राफी आन करिकुलम डैवलेपमेंट (सार पत्रिका)
- सेलेक्ट बिब्लियोग्राफी आन एजूकेशनल टैक्नोलाजी और कम्प्यूटर असिस्टंड इनस्ट्रकशन (सार पत्रिका)

परिचालन

1984-85 में सदस्यों की संख्या	2182
1984-85 में बाहर से आने वाले स्कालरों की संख्या जिन्होंने परामर्श सुविधा का लाभ उठाया।	360

काम करने के घंटे

पुस्तकालय से लाभ उठाने वाले लोगों की बढ़ती हुई मांग को दृष्टि में रख कर पुस्तकालय को 9 बजे सुबह से 8 बजे रात तक खुला रखा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

उन्नत पुस्तकालय सेवा उपलब्ध करा कर विद्यालय शिक्षा के स्तर में सुधार लाने तथा स्कूली बच्चों में अच्छी-अच्छी पुस्तक पढ़ने की आदत डालने को दृष्टि में रख कर अतिरिक्त आदमी लगाए बिना पुस्तकालय

सेवा में नई विधि लागू करने तथा उसमें सुधार लाने के लिए विद्यालय के पुस्तकालयों और शिक्षिक प्रशिक्षण कालेज के पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्ष/इंचार्ज के लिए विभाग ने निम्नलिखित सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया :

- संघीय राज्य पाण्डिचेरी के विद्यालय-पुस्तकालयों में कार्य कर रहे सहायक पुस्तकाध्यक्षों के लिए 20 अगस्त से 25 अगस्त, 1984 तक पाण्डिचेरी में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया।
- सितम्बर 1984 में आर.सी.ई. भुवनेश्वर में शिक्षिक प्रशिक्षण कालेज के पुस्तकालयों के विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 18 जनवरी से 22 जनवरी, 1985 तक बम्बई विश्वविद्यालय बम्बई में पश्चिमी क्षेत्र के शैक्षिक प्रशिक्षण कालेज के पुस्तकालयों के विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विस्तार–शिक्षा निदेशालय दिल्ली के निमंत्रण पर पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग के अध्यक्ष ने दिल्ली के विद्यालय-पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्षों के सामने पुस्तकाध्यक्षवृत्ति के विभिन्न पहलुओं पर 8 व्याख्यान दिए।

विकास–एन.सी.ई.आर.टी. के अधीन आने वाले पुस्तकालयों में सहयोग बढ़ाने और उनमें समन्वय करने की नई विधियों और नए साधनों का पता लगाने के लिए एन.आई.ई. और आर.सी.ई. के पुस्तकाध्यक्षों की एक बैठक मई 1984 में मैसूर में और एक और बैठक दिसम्बर, 1984 में दिल्ली में हुई जिससे कि एक ही कार्य दो जगहों पर न हो सके, खर्चे में बचत की जा सके और साथ ही सहाकरी आधार पर पुस्तकालयों के बीच पुस्तकों की उधार सेवाऐं चलायी जा सकें तथा अनुक्रमीकरण सेवा विकसित की जा सके।

पुस्तक प्रदर्शनी

अभिकलित्र-मृदुसामग्री की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर दिसम्बर, 1984 में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में अभिकलित्र-विज्ञान, विज्ञान तथा इनसे संबद्ध विषयों पर लगभग 5,000 पुस्तकें रखी गईं।

1984-85 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के प्रकाशनों की सूची

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन-मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	पाठ्यपुस्तक और निर्धारित संपूरक पाठमालाएं		
कक्षा-1			
पाठ्यपुस्तक			
1.	बाल भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1975	1,60,000
2.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स बुक-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	75,000

अभ्यास पुस्तिका

3.	वर्कबुक फार लेट अस लर्न इंग्लिस बुक-I (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	25,000

कक्षा-2

पाठ्यपुस्तक

4.	बाल भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,15,000
5.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-2 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,45,000
6.	मैथेमैटिक्स फार प्रइमरी स्कूल्स बुक-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	1,35,000

अभ्यास पुस्तिका

7.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	1,10,000
8.	वर्कबुक फार लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-2 (विशेष प्रकाशन्) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	1,40,000

कक्षा-3

पाठ्यपुस्तक

9.	बाल भारती भाग-3 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	95,000
10.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-3 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,90,000
11.	मैथेमैटिक्स फार प्रइमरी स्कूल्स बुक-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	30,000
12.	एन्वायरनमैण्टल स्टडीज़ फार क्लास-3 पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	25,000
13.	कक्षा-3 के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	35,000
14.	एन्वायरनमैण्टल स्टडीज फार क्लास-3 पार्ट-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	60,000

अभ्यास पुस्तिका

15.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-3 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	60,000
16.	वर्कबुक लेट अस लर्न इंग्लिश बुक-3 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,35,000

कक्षा-4

पाठ्यपुस्तक

17.	बाल भारती भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,05,000
18.	इंग्लिश रीडर बुक-2 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,50,000
19.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स बुक-4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	60,000
20.	कक्षा-4 के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	45,000
21.	एनवायरनमेण्टल स्टडीज़ फार क्लास-4 पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	45,000

अभ्यास पुस्तिका

22.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	65,000
23.	वर्कबुक फार इंग्लिश रीडर बुक-1 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,79,000

निर्धारित संपूरक पाठमाला

24.	रीड फार प्लेजर बुक-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	45,000

कक्षा-5

पाठ्यपुस्तक

25.	बाल भारती भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर-1984	1,20,000
26.	स्वस्ति भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1985	48,000
27.	स्वस्ति भाग-1 („)	जनवरी-1985	15,000
28.	इंग्लिश रीडर बुक-2 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,17,000
29.	मैथेमैटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स	जनवरी-1985	35,000
30.	इंडिया एण्ड द वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	35,000
31.	लर्निंग इंग्लिश थ्रू एनवायरनमेंट पार्ट-3 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	30,000
32.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	1,00,000
33.	वर्कबुक फार इंग्लिश रीडर बुक-II (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	15,000
34.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	1,07,000

निर्धारित संपूरक पाठमाला

35.	रीड फार प्लैज़र-3 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	45,000

कक्षा-6

पाठ्यपुस्तक

36.	भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	56,000
37.	भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	60,000
38.	स्वस्ति भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	20,000
39.	इंग्लिश रीडर बुक-III (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	1,25,000
40.	मैथमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-1 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	65,000
41.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	68,000
42.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	20,000
43.	देश और उनके निवासी भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	15,000
44.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	20,000
45.	लर्निंग साइन्स पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	55,000
46.	आओ विज्ञान सीखें भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	6,000

अभ्यास पुस्तिका

47.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	29,000
48.	वर्कबुक फार इंग्लिश रीडर बुक-II (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	75,000

निर्धारित संपूरक पाठमालाएं

49.	संक्षिप्त रामायण (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	35,000
50.	रीड फार प्लैजर-III (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	53,000
51.	रीड फार प्लैजर-III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	30,000

कक्षा-8

पाठ्यपुस्तक

52.	भारती भाग-5 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	30,000

53.	इंग्लिश रीडर बुक-4 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1984	78,000
54.	इंग्लिश रीडर बुक-4 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	45,000
55.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-II पार्ट-1 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	45,000
56.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-II, पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	40,000
57.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-II पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	50,000
58.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक-2 भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	10,000
59.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	31,000
60.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	30,000
61.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	45,000
62.	लर्निंग साइन्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	50,000

निर्धारित संपूरक पाठमालाएं

63.	संक्षिप्त महाभारत (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	15,000
64.	स्टैप्स टू इंग्लिश-2 सप्लीमेंटरी रीडर (नई पुस्तक)	सितम्बर-1984	3,000
65.	रीड फार प्लैजर-4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	30,000

कक्षा-8
पाठ्यपुस्तक

66.	भारती भाग-3 (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	30,000
67.	स्वस्ति भाग-4 („)	अप्रैल-1984	48,000
68.	इंग्लिश रीडर बुक-5 (विशेष प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	37,000
69.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-III पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	55,000
70.	मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स बुक-III पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	52,000
71.	हिस्टरी एण्ड सिविक्स पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	35,000
72.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	30,000
73.	लर्निंग साइन्स पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	49,000

निर्धारित संपूरक पाठमालाएं

74.	त्रिविधा (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर-1984	20,000

75.	रीड फार प्लेजर-5 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	10,000
76.	जीवन और विज्ञान (,,)	फरवरी-1985	15,000

कक्षा-9
पाठ्यपुस्तक

77.	विज्ञान भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	15,000
78.	फीजिक्स पार्ट-I (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	1,00,000
79.	कैमिस्ट्री पार्ट-I (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	1,00,000
80.	बैसिक बायौलाजी पार्ट-I नं.1 (नई पुस्तक)	फरवरी-1985	1,00,000
81.	मैथेमैटिक्स (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	1,00,000
82.	द स्टोरी आफ सिविलिजैशन बाल्यूम-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	36,000
83.	सभ्यता की कहानी भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	50,000
84.	मैन एण्ड एनवायरलमेंट (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	35,000
85.	मैन एण्ड एनवायरलमेंट (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	34,000
86.	मनुष्य और वातावरण (,,)	अप्रैल-1984	15,000
87.	मनुष्य और वातावरण (,,)	मार्च-1985	26,000

कक्षा-9 व 10

88.	सिटिजंन एण्ड गवर्नमेंट (नई पुस्तक)	मार्च-1985	80,000
89.	नागरिक और शासन (नई पुस्तक)	फरवरी-1985	1,00,000

कक्षा-10
पाठ्यपुस्तक

90.	साइन्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	9,000
91.	मैथेमैटिक्स पार्ट-II (,,)	जनवरी-1985	40,000
92.	सभ्यता की कहानी भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	35,000
93.	इंडिया आन द मूव (पुनर्मुद्रित)	मई-1984	50,000
94.	भारत विकास की ओर (,,)	अप्रैल 1984	15,000

कक्षा-11
पाठ्यपुस्तक

95.	अभिनव काव्य भारती (नई पुस्तक)	दिसम्बर-1984	80,000
96.	अभिनव कथा भारती (नई पुस्तक)	दिसम्बर-1984	80,000
97.	अभिनव गद्य भारती (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	80,000
98.	काव्य संचयन (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	36,000
99.	गद्य संचयन (नई पुस्तक)	दिसम्बर-1984	36,000
100.	कहानी संचयन (नई पुस्तक)	जनवरी-1984	30,000
101.	आई --द पीपुल (इंग्लिश रीडर) (कोर) (नई पुस्तक)	दिसम्बर-1984	1,40,000
102.	स्टोरीज, प्लेज एण्ड टेल्स आफ एडवैन्चर (इंग्लिश सप्लीमैण्टरी रीडर (नई पुस्तक)	जनवरी-1985	1,40,000
103.	संस्कृत साहित्य परिचय (नई पुस्तक)	फरवरी-1985	13,000
104.	रङ्गिणी (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	11,000
105.	भौतिक विज्ञान भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	3,500
106.	कैमिस्ट्री पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	32,000
107.	रसायन विज्ञान भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	3,000
108.	बायौलाजी वाल्यूम-। („)	फरवरी-1985	19,000
109.	मैथेमैटिक्स बुक-। („) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	40,000
110.	मैथेमैटिक्स बुक-।। („)	फरवरी-1985	50,000
111.	प्राचीन भारत (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	24,000
112.	मैडेएवल इंडिया पार्ट-। (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	19,000
113.	मध्यकालीन भारत भाग-1 („)	मार्च-1985	13,000
114.	फाउन्डेशंस आफ पोलिटिकल साइन्स (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	17,000
115.	राजनीतक विज्ञान के आधार (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	18,000
116.	पोलिटिकल्स सिस्टम (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	10,000
117.	राजनीतिक व्यवस्था („)	फरवरी-1985	18,000
118.	अण्डरस्टैण्डिग सोसाइटी (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	4,000
119.	भारत का सामान्य भूगोल-भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	10,000

कक्षा-11 व 12

120.	व्याकरण सौरभम् (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	12,000
121.	फीजिक्स (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1984	20,000
122.	फीजिक्स (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	46,000

कक्षा-12

123.	निबन्ध भारती (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	8,000
124.	विविधा (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	18,000
125.	हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	13,000
126.	साहित्य शास्त्र परिचय (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	5,000
127.	ए कोर्स इन रिट्टेन इंग्लिश (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	16,000
128.	संस्कृत काव्य तरङ्गिणी (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	5,000
129.	कैमिस्ट्री पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	24,000
130.	बायोलाजी पार्ट-II वाल्यूम-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	6,000
131.	बायौलाजी पार्ट-II वाल्यूम-I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	15,000
132.	बायोलाजी पार्ट-II वाल्यूम-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	13,000
133.	मैथेमैटिक्स बुक-III (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	22,000
134.	मैथेमैटिक्स बुक-III (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	26,000
135.	मैथेमैटिक्स बुक- (iv) (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल-1984	22,000
136.	मैथेमैटिक्स बुक- (iv) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	27,000
137.	मैडेएवल इंडिया पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	14,000
138.	मार्डन इंडिया (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	19,000
139.	आधुनिक भारत (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	4,000
140.	इंडियन कन्स्टीच्यूशन एण्ड द गवर्नमेंट (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	13,000
141.	नेशनल एकाउन्टिग (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1984	9,000
142.	नेशनल एकाउन्टिग (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	7,000
143.	आर्थिक सिद्धांत का परिचय (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	5,000
144.	ह्यूमन एण्ड एकोनोमिक जियोग्राफी (पुनर्मुद्रित)	मई-1984	8,000

145.	मानव एवं आर्थिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	2,500
146.	नियोग्राफी आफ इंडिया पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च-1985	8,000
147.	चाइल्ड साइकौलाजी (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1984	2,000
148.	सोशल चैंज (नई पुस्तक)	मई-1984	3,000

उर्दू पाठ्यपुस्तक

कक्षा-7

149.	हिसाब (मैथेमैटिक्स) बुक-II पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	3,000
150.	हिसाब (मैथेमैटिक्स) बुक-II पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	3,000
151.	साइन्स सीखना (लर्निंग साइन्स) पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जून, 1984	3,000
152.	मुनालिक और उनके बाशिन्दे (लैण्ड्स एण्ड पीपुल) पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	3,000

कक्षा-8

153.	तारीख और इल्मे शहरियत (हिस्टरी एण्ड सिविक्स) पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	5,000
154.	हिन्दुस्तान तरक्की की राह पर (इंडिया आन व मूव) (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	600
155.	तहजीव की कहानी (स्टोरी आफ सिविलिजैशन) वाल्यूम-II (पुनर्मुद्रित)	जून-1984	1,000

अन्य राज्यों/संगठनों के लिए पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका

156.	स्टोरी एण्ड फेबल्स इंग्लिश सप्लीमैण्टरी रीडर फार द ओपन स्कूल (पुनर्मुद्रित)	अक्तूबर-1984	5,000
157.	इंग्लिश रीडर बुक-1 फार द ओपन स्कूल (पुनर्मुद्रित)	अक्तूबर-1984	5,000
158.	इंग्लिश रीडर बुक फारद ओपन स्कूल (पुनर्मुद्रित)	अक्तूबर-1984	3,000
159.	अरुण-भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	20,000
160.	अरुणा भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	मई-1984	11,000
161.	अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी-1985	17,000
162.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	नवम्बर-1984	17,000
163.	न्यू डान रीडर-I (प्रथम संस्करण)	जनवरी-1985	35,000
164.	वर्क बुक फार न्यू डान रीडर-I (प्रथम संस्करण)	मई-1984	35,000

165.	सप्लीमैण्टरी रीडर फार न्यू डान रीडर-। (प्रथम संस्करण)	जुलाई-1984	35,000
166.	इंग्लिश रीडर बुक-4 (विशिष्ट प्रकाशन) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी-1985	11,000
167.	साओरा कोम्बोलिन (प्रथम संस्करण)	दिसम्बर- 1984	5,000

संपूरक पाठमालाएं

168.	ब्रेव ब्वायज़ आफ द पोस्ट	मई-1984	5,000
169.	रूरल डेवलपमेंट आफ इंडिया	अप्रैल-1984	2,000
170.	उमन एण्ड लाइफ	जून-1984	3,000
171.	नेहरूः ऐन अन्थौलाजी फार यग रीडर्स	नवम्बर-1984	6,000
172.	सिटीजैनशिप डेवलपमेंट	फरवरी-1985	3,000
173.	गौतम बुद्ध	फरवरी-1985	2,000
174.	द हिडन गोल्ड	मार्च-1985	5,000
175.	बच्चों के फानी	दिसम्बर-1984	2,000
176.	हिन्दी कथा लेखिकाओं की प्रतिनिधि कहानियां	दिसम्बर-1984	5,000
177.	कीड़ों की जिन्दगी	मार्च-1985	2,000

शोध मोनोग्राफ और अन्य प्रकाशन

178.	थर्ड नेशनल सर्वे आफ सैकण्डरी टीचर एजुकेशन इन इंडिया	अप्रैल-1984	1,000
179.	रेफलैक्शन्स् आन करिकुलम	अप्रैल-1984	3,000
180.	स्टैटस आफ उमन थ्रू टिचिंग आफ मैथेमैटिक्स-ए टीचर्स हैण्डबुक	अप्रैल-1984	2,000
181.	स्टैटस आफ उमन थ्रू करिकुलम-सैकण्डरी एंड हायर सैकण्डरी स्टैज	अप्रैल-1984	2,000
182.	रिलैटिड एफैक्टिवनैस आफ वैरिएशन्स इन माइक्रोटीचिंग कंपोनेंट्स–ऐन एक्सपैरिमैण्टल स्टडी	अप्रैल-1984	1,000
183.	योगासन–ए टीचर्स गाइड	मई-1984	5,000
184.	वोकेशनल एजुकेशन ऐट द + 2 स्टेज	मई-1984	10,000
185.	प्रोगेस आफ एलिमैंटरी एजुकेशन इन आंध्र प्रदेश-इम्पैक्ट्स आफ डैमोग्राफिक फैक्टर्स	मई-1984	1,000
186.	हैण्डबुक आफ प्रक्टिकल वर्क इन जियोग्राफी फार टीचर्स आफ +2 स्टेज	मई-1984	1,000
187.	डेवलपमेंटल नार्म्स आफ इंडियन चिल्ड्रेन 2½ से 5 इयर्स-पार्ट थ्री	मई-1984	1,000

188.	रीडिग टू लर्न	जून-1984	5,000
189.	करिकुलम एण्ड एवैलुएशन	जून-1984	1,000
190.	एन्वायरनमैण्टल स्टडीज पार्ट-II क्लास 5 टीचर्स गाइड	सितम्बर-1984	5,000
191.	एन.सी.ई.आर.टी. रैगुलैशन्स (प्रोमुलेटेड डब्ल्यू.ई.एफ. 12 मई-1971)	अक्तूबर-1984	1,000
192.	कन्टेन्ट-कम-मैथाडोलाजी आफ टीचिग मैथेमैटिक्स फार बी.एड. स्टुडैण्ट्स	दिसम्बर, 1984	1,000
193.	डैवलपमेंट आफ ए माडल फार फौरकास्टिंग टीचर मैनपावर रिक्वायरमेंट	दिसम्बर-1984	4,000
194.	कन्सैण्ट एण्ड मेजरमैण्ट आफ लंग्वेज कम्प्रैहैंसिविलिटी-इमर्जिग ट्रैण्ड्स	दिसम्बर-1984	2,000
195.	वैटेज गिवैन टू डिफरेन्ट एरियाज़ आफ स्कूल करिकुलम इन वैरियस स्टेट्स	दिसम्बर-1984	2,000
196.	अनुअल रिपोर्ट 1983-84	दिसम्बर-1983	1,600
197.	ए गाइड फार नर्सरी स्कूल टीचर्स	दिसम्बर-1984	5,000
198.	प्रोजेक्टाइल मोशन-यूनिट -फीजिक्स	सितम्बर-1984	2,000
199.	एप्लाइड मैथेमैटिक्स एण्ड काइनैटिक्स–टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	सितम्बर-1984	2,000
200.	मैजरमेंट टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	सितम्बर-1984	2,000
201.	लाज़ आफ मौशन-टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	सितम्बर-1984	2,000
202.	स्कैलर्स एण्ड वैक्टर्स-टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	सितम्बर-1984	2,000
203	पोस्ट सैकण्डरी पर्सूट आफ व स्टुडेन्ट्स आफ बोकेशनल स्पैक्ट्रम आफ स्टडीज (1979-82)	सितम्बर-1984	1,000
204.	वार्षिक रिपोर्ट-1983-84	दिसम्बर-1984	1,000
205.	ऐन एनिटेटेड विविलयोग्राफी इन द कम्प्रहैन्सिविलीटी आफ लंग्वेज	दिसम्बर-1984	1,000
206.	कन्टैम्पोरेरी इशूज़ इन पब्लिक एक्जामिनेशन्स	जनवरी-1985	1,000
207.	आडिट रिपोर्ट 1983-84	मार्च-1985	500
208.	सरल हिन्दी व्याकरण और रचना	मार्च-1985	5,000
209.	स्टुडैन्ट टीचिग एण्ड एवेलुएशन	फरवरी-1985	2,000
210.	फ्लुइड डाइनैमिक्स–टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	जुलाई-1985	2,000

211.	थर्मोडाइनैमिक्स-II टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	फरवरी-1985	2,000
212.	रैडिएशन-टीचिग यूनिट इन फीजिक्स	मार्च-1985	2,000
213.	सर्फेस टेन्शन-टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	फरवरी-1985	2,000
214.	एस्ट्रोनामी-टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	फरवरी-1985	2,000
215.	इलेक्ट्रिसिटी-II-टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	मार्च-1985	2,000
216.	इम्पैक्ट आफ मिड-डे मील्स प्रोग्राम	फरवरी-1985	5,000
217.	वर्क, इनर्जी एण्ड पावर टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	फरवरी-1985	2,000
218.	इम्पल्स एण्ड मोमेन्टम-टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	फरवरी-1985	2,000

15

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता

भारत सरकार द्वारा अन्य देशों के साथ, स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में, हस्ताक्षर किए गए दुतरफा--सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों की शर्तों के कार्यान्वयन के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् एक प्रमुख एजेंसी की भूमिका निभा रही है। यह यूनेस्को/एपीड/यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं/कार्यक्रमों को हाथ में लेती है और स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में विचार विनिमय के लिए अन्य देशों से आए प्रतिनिधि मंडलों/विशेषज्ञों के साथ बैठकें आयोजित करती है तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों/बैठकों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने जाने के लिए परिषद् के संकाय सदस्यों को प्रायोजित करती है। स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और शिक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अटेचमेंट कार्यक्रमों के अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी राष्ट्रिकता वालों के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाती है।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की उपरोक्त गतिविधियों/कार्यक्रमों के समन्वयन के लिए परिषद् का अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक जिम्मेदार है। यह एकक शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) के सचिवालय का कार्य करता है और भारत में स्कूली शिक्षा की सूचनाएं अन्य देशों व अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों को देने के लिए एक क्लियरिंग हाउस एजेंसी का काम करता है।

दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

1983-84 के लिए भारत-सोवियत संघ सांस्कतिक विनिमय कार्यक्रम की मद संख्या 40 के अंतर्गत

व्यावसायिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण का अध्ययन करने के लिए सोवियत संघ की व्यावसायिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण राज्य समिति के पहले उपाध्यक्ष श्री वी.आई. कोंकिन के नेतृत्व में एक चार सदस्यों वाला रुसी प्रतिनिधि मंडल 2 से 11 अप्रैल, 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया।

1982-84 के लिए भारत–जर्मन जनवादी गणराज्य सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम की मद संख्या 22 व 23 के अन्तर्गत विज्ञान उपस्करों, शिक्षा प्रौद्योगिकी व व्यावसायिक शिक्षा का रूप और विकास अध्ययन करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के डी.ई.एस.एम. के लैक्चरर डा. ब्रह्मप्रकाश के नेतृत्व में एक तीन सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल 5 मार्च, 1985 से 2 सप्ताह की अवधि के लिए जर्मन जनवादी गणराज्य गया।

अन्य देशों के प्रतिनिधि मंडलों/शिक्षाविदों के दौरे

अन्तराष्ट्रीय संबंध एकक ने अन्य देशों के प्रतिनिधि मंडलों/विशेषज्ञों के निम्नलिखित दौरे आयोजित किए:

(1) श्री लंका के वरिष्ठ शिक्षा निदेशकों का एक 6 सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल 9 अप्रैल 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया। इस प्रतिनिधि मंडल ने संकाय सदस्यों के साथ रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के कार्यक्रमों और गतिविधियों पर चर्चा की।

(2) अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम की संयुक्त परियोजना के मूल्यांकन के लिए यूनेस्को परामर्शदाताओं के तीन सदस्यों (डा. जी. फ्रांसिस, डा. वी.वी. कोजबिने और कु. वी. पुविया) का एक दल 17 मई से 25 मई 1984 की अवधि के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया।

(3) नीपा द्वारा आयोजित आई.आई.ई.पी. प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 14 एशियाई प्रशिक्षु, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के संकाय से विचार विनिमय के लिए 29 जून 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

(4) अफगानिस्तान के यूनेस्कों फेलो श्री मोहम्मद अजान ने 9 जुलाई से 9 अगस्त 1984 तक विज्ञान शिक्षा के अटेचमेंट (संलग्नी) कार्यक्रम में भाग लिया।

(5) अमरीका से, सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के 16 सर्वेक्षक व परामर्शदाता 10 जुलाई 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए और उन्हें परिषद् के कार्यक्रमों व गतिविधियों से परिचित कराया गया।

(6) डी.ई.एस.एम. में संगणक (कम्प्यूटर) शिक्षा कार्यक्रम के संबंध में, तोक्यों के गाकुगी विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर शिक्षा विशेषज्ञ प्रो. फयूनिहिके शिनोहारा 26 जुलाई से 1 अगस्त 1984 की अवधि के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

(7) 10 अगस्त 1984 को कोरियाई जनवादी गणराज्य के शिक्षा मंत्री महामहिम श्री चोई टी बोक अपने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के साथ रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों को परिषद् के कार्यक्रमों/गतिविधियों से परिचित कराया गया।

(8) पाकिस्तान सरकार के शिक्षा मंत्रालय में शिक्षा सलाहकार श्री अब्दुल्ला खादिम हुसैन 6 से 8 अगस्त 1984 के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। उन्होंने अध्यापक शिक्षा विभाग, कार्यशाला विभाग और केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान के संकाय सदस्यों से, उनके विभागों द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की।

(9) स्कूली स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के अध्ययन दौरा कार्यक्रम के अन्तर्गत वियतनाम (हनोई) से एक 8 सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल 5 से 7 सितम्बर 1984 के लिए, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया।

(10) जनसंख्या शिक्षा के संलग्नी कार्यक्रम के बारे में दो वियतनामी शिक्षक 17 सितम्बर 1984 से 13 अक्तूबर 1984 अर्थात् 4 सप्ताह के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

(11) प्राथमिक शिक्षा में उपलब्धि स्तर उन्नत करने की संयुक्त नवाचारी परियोजना के रूप और

संचालन पर विचार-विमर्श करने के लिए बैंगकाक में, शिक्षा में विकास अनुसंधान के यूनेस्को के विशेषज्ञ डा. प्रेम कसाजू. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

(12) विएतनाम सरकार के उप शिक्षा मंत्री श्री नगुयान कान्ह टाउन के नेतृत्व में एक आठ सदस्यों वाला प्रतिनिधि मंडल 6 से 18 अक्तूबर 1984 में भारत आया। प्रतिनिधि मंडल के भारत आने का मुख्य उद्देश्य, प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के सेवा पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण में भारत के अनुभवों का अध्ययन करना और विएतनाम में अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार के लिए इन अनुभवों का उपयोग करना था। भारत में प्रतिनिधि मंडल के कार्यक्रम के भाग के रूप में रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने अध्यापक प्रशिक्षण पद्धतियों पर एक 4 दिन की कार्यशाला आयोजित की। प्रतिनिधि मंडल पुणे और औरंगाबाद की तथा इसके आस-पास की कुछ प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में भी गया।

(13) विएतनामी समाजवादी गणराज्य के तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल, विशेष शिक्षा कार्यक्रम में युनेस्को के चलदल के अन्तर्गत रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा, विशेष शिक्षा के क्षेत्र में हाथ में लिए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों से इस दल को परिचित कराया गया। वे दिल्ली में विशेष शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे कुछ स्कूलों में भी गए।

(14) आठ सदस्यों का एक चीनी प्रतिनिधि मंडल 5 नवंबर 1984 को रा.शै.अनु.प्र.परिषद् में आया। उन्हें परिषद् के कार्यक्रमों, विपशेषकर ग्रंथ निर्माण में आलेखिकी व अन्य संबद्ध समस्याओं से अवगत कराया गया।

(15) जर्मन जनवादी गणराज्य का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल जिसमें एक राज्य मंत्री व 4 सदस्य शामिल थे, 20 नवम्बर 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में आया और जर्मन जनवादी गणराज्य तथा भारत की शिक्षा प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। शिक्षा के क्षेत्र में पारस्परिक रुचि और विभिन्न कार्यक्रमों पर सूचना और विचारों के विनिमय के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागाध्यक्षों के साथ एक बैठक आयोजित की गई।

(16) जनसंख्या के संलग्नी कार्यक्रम में, विएतनाम के दो शिक्षक 17 सितम्बर 1984 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

(17) बैंगकाक में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा के यूनेस्को विशेषज्ञ डा. एम.सी. पंत 25 व 26 अक्तूबर, 1984 में रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। उन्होंने भारत में स्कूली शिक्षा पर और एपीड की कुछ गतिविधियों पर भी चर्चा की।

(18) एपीड के विशेष तकनीकी सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत संलग्नी/अंतरंग प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अफगानिस्तान के व्यावसायिक शिक्षा विभाग के , विद्यार्थियों के मामलों के निदेशक श्री हबीबुल्ला हुसैनी, 19 नवम्बर, 1984 से 21 दिसम्बर 1984 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। वे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को चलाने वाले कुछ मुख्य केन्द्रों में गए।

(19) इंटरनेशनल फेडरेशन आफ माडर्न स्कूल्स ट्रैन्ड्स फ्रायन्ट्स पीडेगोजी (शिक्षा शास्त्र) के अध्यक्ष और फ्रांस सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अवैतनिक स्कूल निरीक्षक श्री राजर उस्बेराश्लाग, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के निदेशक, संयुक्त निदेशक तथा विभागाध्यक्षों से विचार-विमर्श किया उन्होंने ई.आर.आई.सी. के तत्वावधान में 'फ्रांस में स्कूली शिक्षा में हाल के विकास और फ्रायनेन्ट शिक्षा शास्त्र' पर एक परिचर्चा भी प्रस्तुत की।

(20) सार्विक प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के स्थानीय स्तर पर योजना बनाने, प्रबंध करने और पर्यवेक्षण की समस्याओं पर चर्चा करने के लिए बंगला देश के शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों का एक दल 13 जनवरी से 21 जनवरी 1984 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया। इस संबंध में यह दल 20-21 जनवरी 1985 को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर भी गया।

(21) शिक्षा योजना और प्रशासन में, नीपा के अन्तर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्ति 24 जनवरी 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। उन्हें परिषद् के गठन व कार्यकलापों से परिचित कराया गया।

(22) ईरान के उप शिक्षा मंत्री 14 फरवरी 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। स्कूली शिक्षा, अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पाठ्यक्रम व शिक्षण सामग्री तैयार करने से संबंधित समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ।

(23) इथियोपिया के उच्चतर शिक्षा आयोग के तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल 15 फरवरी, 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आया। प्रतिनिधिमंडल को परिषद् के कार्यक्रमों/गतिविधियों से परिचित कराया गया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के संकाय के साथ उन्होंने विचारों और अनुभवों का विनिमय भी किया।

(24) अफगानिस्तान के उप शिक्षा मंत्री श्री फाज़िली हक 16 मार्च 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। उन्होंने परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की। शिक्षा में संभावित आपसी सहयोग के बारे में भी चर्चा हुई।

(25) मिसिसिपी स्टेट यूनिवर्सिटी के शिक्षा–मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष प्रो. जी खतेना 5 फरवरी से 10 मार्च 1985 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए। उन्होंने रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श व मार्गदर्शन विभाग द्वारा, प्रतिभा की पहचान और विकास पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के परामर्शदाता की भूमिका भी निबाही।

(26) भारत में शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर स्कूल पूर्व और प्रांरभिक शिक्षा के क्षेत्र में हुए हाल के विकासों पर चर्चा करने के लिए, आग़ाखान फाउंडेशन, जेनेवा के प्रोग्राम आफीसर (कार्यक्रम अधिकारी) (शिक्षा) श्री जेरेमी ग्रीनलैंड 26 मार्च 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् आए।

परिषद् के संकाय सदस्यों को विदेश में आयोजित कार्यक्रमों में भेजना

(1) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर के प्रो. ए.एन. महेश्वरी ने, यूनेस्को के तत्वावधान में बेजिंग, चीन में 5 से 7 अप्रैल 1984 तक, 'एक्सचेंजिंग एक्सपीरियेंस आन पायलट प्रोजेक्ट आन साइंस एण्ड टैकनोलाजी इन जनरल एज्यूकेशन' पर आयोजित एक बैठक में भाग लिया।

(2) बैंगकाक में 4 से 29 जून, 1984 तक, 'जनसंख्या शिक्षा के लिए प्रलेखन और सूचना सेवाएं' पर हुए यूनेस्को संलग्नी कार्यक्रम में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री एम. सीता रामास्वामी ने भाग लिया।

(3) रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के प्रो. आर.एम. कालरा ने, प्राथमिक शिक्षा के सार्वीकरण के संदर्भ में, बैंगकाक में 19 से 29 जून, 1984 तक, ' रिड्यूस्ड इन्स्ट्रक्शनल टाइम'' परियोजना पर आयोजित अन्तर्देशीय क्रियात्मक कार्यशाला में भाग लिया।

(4) प्रो. बी.एस. पारख, अध्यक्ष डी.ई.एस.एस.एच. ने चैनमई, थाइलैंड में 10 से 30 जुलाई, 1984 तक, जनसंख्या शिक्षा में पर्याप्त ज्ञान अपेक्षा के पैकेज विकसित करने के लिए आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में (साधन व्यक्ति के रूप में) भाग लिया।

(5) डा. वी. केशवन, रीडर, क्षे.शि.म. मैसूर ने 17 जुलाई से 27 जुलाई 1984 तक, विज्ञान अध्यापकों की सतत शिक्षा पर एपीड तकनीकी कार्यकारी दल की बैठक में भाग लिया।

(6) डा. आर.पी. गुप्ता, रीडर, डी.ई.एस.एम. ने, मलेसिया में 6 से 30 अगस्त 1984 तक, विज्ञान व गणित शिक्षा में माइक्रो कम्प्यूटर के पाठ्यक्रम विकास पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

(7) श्री एच.एन. गुप्ता, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, राजस्थान, जयपुर ने, एसीड यूनेस्को, बैंगकाक के सहयोग से, नेशनल इंस्टीट्यूट फार एज्यूकेशनल रिसर्च, जापान द्वारा एशिया व प्रशान्त महासागरी क्षेत्र में गणित शिक्षा के लिए सामग्री के विकास पर 30 अक्तूबर 1984 से 17 नवंबर 1984 तक आयोजित क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

(8) डा. डी. लाहिरी, रीडर, डी.ई.एस.एम. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने, पेनांग, मलेसिया में 9 से 18 जनवरी 1985 तक, विज्ञान में शिष्यों के मूल्यांकन पर एपीड अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।

(9) प्रो. एम.एम. चौधरी, संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. ने माले, मालदीव में 18 से 21 फरवरी 1985 तक, शैक्षिक नवाचारों में एन.डी.जी. की राष्ट्रीय गतिविधियों में साधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया।

(10) प्रो बी.एस. पारख, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच. ने तोक्यों में 16 जनवरी से 7 फरवरी 1985 तक एशिया व प्रशान्तमहासागरी क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा अध्ययन पर आयोजित द्वितीय क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

येनूस्को द्वारा प्रायोजित परियोजनाएं

वर्ष 1984-85 के दौरान परिषद् ने निम्नलिखित परियोजनाएं/अध्ययन शुरु करने के लिए युनेस्को के साथ अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए–

(1) प्राथमिक स्तर पर स्वास्थ्य व पोषण शिक्षा पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला।

(2) एन्वायरनमेंटल एजुकेशन ए प्रोसेस फार प्री सर्विस टीचर ट्रेनिंग करिकुलम डेवेलप्मेंट 'शीर्षक' का दस्तावेज तैयार करना।

(3) युवा वर्ग में वैज्ञानिक प्रतिभा की पहचान व प्रोत्साहन से संबंधित परियोजनाओं के केस अध्ययन।

(4) राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर प्राथमिक शिक्षा के सार्वीकरण पर उन्नत स्तरीय कार्यशाला।

(5) क्षेत्रीय डिज़ाइन कार्यशालाओं द्वारा तैयार किए गए निर्देशों का उपयोग करके शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए अन्तरा विद्याशाखा आधार पर राष्ट्रीय कार्यशाला।

(6) पाठ्यपुस्तकों एवं पाठ्य सामग्री पर राष्ट्रीय मार्गदर्शी कार्यशाला।

(7) प्राथमिक शिक्षा कार्मिकों का पुनः प्रशिक्षण–पढ़ाई बीच में छोड़ने और दोबारा पढ़ाई करने की समस्याओं से निपटने के लिए उन्नत स्तरीय कार्यशाला।

(8) स्कूलेतर वैज्ञानिक गतिविधि विस्तार पाठ्यक्रम 1985 की क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला।

(9) गैर औपचारिक पर्यावरण शिक्षा में स्रोत पुस्तक।

(10) शिक्षण स्थापनों में अध्यापन विधियों के पुनर्नवीकरण में सुधार–अध्यापक द्वारा शिक्षा प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला (1985) रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा एकल अध्यापक स्कूलों पर बहु-माध्यमी किट का तैयार करना।

(11) (क) सामान्य शिक्षा के भाग के रूप में प्रौद्योगिकी शिक्षा के आयोजन की नीतियां और (ख) सामान्य शिक्षा के भाग के रूप में प्रौद्योगिकी शिक्षा के लिए अध्यापक (सेवा पूर्व और सेवाकालीन) तैयार, करना, इन मसलों पर दस्तावेज तैयार करना।

राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) के अन्तर्गत गतिविधियां

शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल, एक सदस्य देश के भीतर, देश में शैक्षिक नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न अन्तर्देशीय गतिविधियों के समन्वय के लिए और एपीड के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए, विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों के लिए एशियाई कार्यक्रमों (एपीड) का एक प्रमुख ढांचा है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के सचिव एन.डी.जी. के पदेन अध्यक्ष के रूप में काम करते हैं और रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के निदेशक इसके पदेन सदस्य सचिव होते हैं।

शैक्षिक नवाचारों का राष्ट्रीय विकास दल ऐसी गतिविधियों में लगा रहा है जो शैक्षिक नवाचारों में राष्ट्रीय प्रयासों को प्रोत्साहित और समन्वित करेंगी। भारत में एन.डी.जी. ने, मिल बैठकर अपने अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए, देश में एपीड के सम्बद्ध केन्द्रों द्वारा किए गए कार्यों के समन्वय को प्रोत्साहन देने के लिए, एपीड के उद्देश्यों को प्रोत्साहन देने में, शैक्षिक नवाचारों एवं विकास के एशियाई केन्द्र (एसीड) के सहयोग से नवाचारी अनुभवों के अन्तरादेशीय विनिमय को सुलभ बनाने के लिए, देश में शैक्षिक नवाचारों के लिए एक मंच उपलब्ध कराया है।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक में स्थित एन.डी.जी. सचिवालय ऐसे कार्य-क्रमों/गतिविधियों को हाथ में लेने, चलाने, समन्वित करने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार रहा है, जो एन.डी.जी. की भूमिकाओं और कार्यों के कुशलतापूर्वक प्रतिपादन में सहायक हों। एन.डी.जी. को विस्तृत आधारी बनाने के अलावा और भी अनेक मुख्य निर्णय एन.डी.जी. ने लिए। वर्ष 1984 में भारत में एपीड के 11 नए सम्बद्ध केन्द्र चुने गए।

वर्ष 1984 में एन.डी.जी. सचिवालय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर एपीड के सम्बद्ध केन्द्रों व अन्य संस्थाओं में शैक्षिक नवाचारों पर राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगोष्ठियां भी आयोजित करता रहा है। भारत में एपीड के सम्बद्ध केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों की एक राष्ट्रीय बैठक 12 व 13 दिसम्बर 1984 को आयोजित की गई। दक्षिणी क्षेत्र में शिक्षा नवाचारियों की एक क्षेत्रीय संगोष्ठी मैसूर में 25 से 28 फरवरी 1985 तक हुई। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु राज्यों के 21 शिक्षाविदों/शिक्षा नवाचारियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान चर्चा, तकनीकी शिक्षा में नवाचारी कार्यक्रम/परियोजनाओं, स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा पर केन्द्रित रही। इनके अलावा एक सत्र, विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र में अन्तरा खण्ड सहयोग तथा समन्वय पर चर्चा के लिए रखा गया।

इनके आलावा दो डायरेक्टरियां और एक विवरणिका (इन्वेंटरी) तैयार करने का काम शुरु किया गया। इसमें, शैक्षिक नवाचारों के विशेषज्ञों की डायरेक्टरी, शैक्षिक नवाचारों में लगी संस्थाओं की डायरेक्टरी और विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों की विवरणिकाएं शामिल थीं।

अन्य देशों को सूचना/सामग्री देना

1984-85 में मलेसिया, नीदरलैण्ड्स, कोरियाई जनवादी गणराज्य, संयुक्त राज्य अमरीका, पाकिस्तान, बहराइन, ईरान, फ्रान्स और केराकस में भारतीय राजदूतावासों को तथा जिम्बाब्वे, न्यूजीलैण्ड और कनाडा में

उच्चायोगों को शिक्षा सामग्री भेजी गई। परिषद् ने पाकिस्तान, निकोशिया, जापान, कनाडा, सं.रा. अमरीका, मालदीव, ईरान और मारीशस की सरकारों को भारतीय शिक्षा से संबंधित सूचना/सामग्री भी भेजी। सामग्री और सूचना के आदान-प्रदान के लिए परिषद्, यूनेस्कों के विभिन्न कार्यालयों/संगठनों से नज़दीकी सम्पर्क बनाए रहती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली पर सूचना/सामग्री, अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरों, युनेस्कों, जनेवा; एशिया व प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में शिक्षा के लिए यूनेस्कों क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगकाक और यूनेस्कों मुख्यालय, पेरिस को भी दी गई।

अन्य गतिविधियां

शिक्षा में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों से संबंधित अपनी सामान्य गतिविधियों कार्यक्रमों के हिस्से के तौर पर, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक ने 24 अक्तूबर 1984 को संयुक्त राष्ट्र की 39वीं वर्षगांठ के अवसर पर 'युनाइटेड नेशन्स एण्ड एजुकेशन (संयुक्त राष्ट्र और शिक्षा)' पर एक संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में, जाने माने शिक्षाविदों ने संयुक्त राष्ट्र और शिक्षा के संबंध में अनेक निबंध प्रस्तुत किए। जापानी दूतावास के जापान सांस्कृतिक तथा सूचना केन्द्र ने अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के सहयोग से 2 मार्च 1985 को, जापान के प्रोफाइलों पर एक कार्यशाला आयोजित की। अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक ने रा.शै. अनु.प्र. परिषद् के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग के सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक प्रलेखन एवं संसाधन केन्द्र (आई.ई.डी.आर.सी.) की स्थापना का कार्य भी शुरु किया।

16

प्रशासनिक एवं कल्याण कार्यकलाप तथा वित्त

एन.सी.ई.आर.टी. का प्रशासन विभाग परिषद् के नियम, विनियम और क्रियाविधियों के अनुसार ही कार्यालय का कार्य कर रहा है।

प्रशासनिक एवं कल्याण क्रियाकलाप

परिषद् के शिक्षा विभागों का अप्रैल 1984 में पुनर्गठन किया गया। अधिक समन्वय बनाए रखने के लिए एन.आई.ई. के अधिकांश विभागों, यूनिटों और कक्षों को एक साथ मिलाकर इन्हें कार्य करने वाले उपयोगी विभागों में बांट दिया गया है। इन पुनर्गठन के कार्य में प्रशासन ने पूरी सहायता दी है जिनमें बनाए गए नए विभागों में स्थान का निर्धारण और शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक स्टाफ का पुनर्नियोजन शामिल है।

स्टाफ के कल्याण के लिए परिषद् का प्रशासन खेल-कूद की सुविधाएं उपलब्ध कराता रहा है।

3 जनवरी से 6 जनवरी 1985 तक भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में चौथा अन्तर क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और एन.आई.ई. स्टाफ टूर्नामिण्ट आयोजित किया गया। इस टूर्नामिण्ट में 150 से भी अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। यह टूर्नामिण्ट काफी सफल रहा।

कैम्पस में 104 स्टाफ क्वार्टर बनाने के लिए परिषद् ने केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को 1.05 करोड़ रुपया दिया है। कैम्पस में शापिंग कम्प्लैक्स बनाने के लिए केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को रु. 16,40,300.00 दिया गया है। आशा की जाती है कि स्टाफ क्वार्टरों और शापिंग कम्प्लैक्स का निर्माण कार्य तुरंत शुरू हो

जाएगा। एन.आई.ई. गेस्ट हाउस में 10 और कमरे तथा एक लिफ्ट का निर्माण-कार्य शुरु हो चुका है।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री के.सी. पंत ने 27 मई, 1985 को लाइब्रेरी ब्लाक में फिर से नया बनाया गया सम्मेलन हाल का उद्‌घाटन किया।

इस वर्ष केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग और नगर निगम दिल्ली के सहयोग से एन.आई.ई. कैम्पस का उचित ढंग से रख-रखाव करने और उसे सुंदर बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

जीवन बीमा निगम की ग्रुप बीमा योजना 1-4-1984 से परिषद् के वर्ग 'ए' के अधिकारियों पर भी लागू कर दी गई। इस तरह अब परिषद् के सभी वर्ग के स्टाफ इस योजना के अंतर्गत आ गए हैं।

1984-85 वर्ष के दौरान आंतरिक कार्य अध्ययन यूनिट ने निम्नलिखित बातों पर अध्ययन किए:

(i) एन.आई.ई. गेस्ट हाउस के सफाई वालों की आवश्यकताओं का पता लगाना।

(ii) परिषद् में स्टाफ की व्यक्तिगत जांच की समस्याओं और स्टाफ सत्यापनों के पद बनाने पर विचार करना।

(iii) भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के प्रशासनिक स्टाफ की आवश्यकताओं पर विचार करना।

(iv) एन.सी.ई.आर.टी. में हिन्दी पदों की आवश्यकताओं पर विचार करना जिसमें हिन्दी को बढ़ावा देने से संबद्ध हिन्दी सेल के पद भी शामिल हैं।

(v) अलग-अलग विभागों/यूनिटों में वरिष्ठ और कनिष्ठ गैसटेटनर आपरेटरों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकता पर विचार करना।

(vi) ट्रेडल प्रिटिंग मशीन के लिए डी.टी.ए. में (जो अब सी.आई.ई.टी. में मिल गया है) आपरेटर एवं मशीन एवं कम्पोजिटर का एक पद बनाने पर विचार करना।

(vii) एन.आई.ई. गेस्ट हाउस में होस्टल क्लर्क (स्टोर्स) के पद के प्रस्ताव पर विचार करना।

(viii) मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में प्रशासनिक लिपिक कैडर, लाइब्रेरी स्टाफ और चौकीदारों की श्रमिक-संख्या का पता लगाना।

(ix) एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय में चौकीदारों की आवश्यकताओं पर विचार करना।

(x) एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय में चपरासियों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकता पर विचार करना।

हिन्दी सेल के कार्यकलाप

सरकारी कामों में हिन्दी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करने के लिए हिन्दी सेल ने 1984-85 वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्य किए।

सामग्री का विकास और वितरण

सेल ने निम्नलिखित पुस्तकों की व्यवस्था करके उन्हें परिषद् के विभिन्न विभागों और यूनिटों में बांट दिया:

1. मानक हिन्दी कोश–28 प्रतियां

2. कम्पाइलेशन आफ आर्डर्स रिगार्डिंग यूज आफ हिन्दी–75 प्रतियां

3. देवनागरी टाइप-राइटिंग प्रशिक्षक–20 प्रतियां

सर्वेक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. में सरकारी कामों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने वाले विभाग को हर वर्ष एक चल वैजयंती शील्ड दी जाती है। विजेता का पता लगाने के लिए हिन्दी सेल ने सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में दो प्रश्नावलियां थीं जिनमें 22 प्रश्नों के उत्तर देने थे।

परामर्श और निदर्शन

सेल ने हिन्दी में टिप्पणी और पत्र लिखने तथा विवरण को अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित करने में शैक्षिक विभागों और प्रशासन अनुभागों को सहायता तथा सलाह दी।

बाल साहित्य पुरस्कार योजना, जिसे समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा-विभाग प्रतिवर्ष आयोजित करता है, के नियमों और विनियमों को अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित करने में परामर्श और निदर्शन दिया गया।

स्टाफ की भर्ती

परिषद् में सहायक जन संपर्क अधिकारी (हिन्दी) के पद के लिए भर्ती बनाए गए नियम हैं। (ख) परिषद् में एक अनुवादक की नियुक्ति की गई है। (ग) हिन्दी अधिकारी और हिन्दी सहायक के पदों के लिए भर्ती नियम बनाए गए हैं।

टाइप

आलोच्य वर्ष में हिन्दी सेल ने हिन्दी में लगभग 1359 पृष्ठ टाइप किए और 684 स्टैंसिल काटे।

अनुवाद कार्य

परिषद् की वार्षिक डायरी में उपलब्ध हिन्दी सामग्री के अलावा 200 पृष्ठों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया गया।

पुरस्कार की योजना

परिषद् का जो विभाग/यूनिट वर्ष के दौरान सरकारी काम में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करता है उसे एक चल वैजयंती शील्ड और एक प्रशास्ति पत्र दिया जाता है। 6 मई, 1985 को शील्ड और प्रशस्ति पत्र स्थापना अनुभाग-4 को दिया गया। अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करने की भावना लोगों में जागृत हो इसके लिए एक और शील्ड केवल शैक्षिक विभागों के लिए रखा गया है। प्रतियोगिता के नियम सभी विभागों को भेज दिए गए हैं। राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सरकारी भाषा कार्यशाला में हिन्दी सेल के

प्रोफेसर इंचार्ज और एक उपसचिव ने परिषद् के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। यह सेल गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के बीच एक संपर्क कार्यालय का काम करता है।

'क्षेत्र सलाह शिक्षा शोध' को परिषद् के क्षेत्र कार्यालय के तार-पता के रूप में पंजीकृत किया जा रहा है। ''शिक्षा शोध'' परिषद् की पंजीकृत तार पता है।

हिन्दी सेल ने सरकारी भाषा कार्यान्वियन समिति की तीन त्रैमासिक बैठकें आयोजित कीं।

अंग्रेजी-हिन्दी पर्यायों की एक अलग पुस्तकालय बनाने के लिए हिन्दी सेल ने रु. 1351.00 की पुस्तकें खरीदी हैं। 1984-85 के दौरान परिषद् के आठ कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग में प्रशिक्षित किया। 1984-85 वर्ष के दौरान सेल द्वारा चलाए गए छः कार्यक्रमों को 1985-86 वर्ष तक जारी रखने का प्रस्ताव है। इन कार्यक्रमों के पूरा हो जाने पर परिषद् के कर्मचारी हिन्दी टाइपिंग और स्टेनोग्राफी में तथा हिन्दी में टिप्पणी लिखने तथा मसौदा बनाने में दक्ष हो जाएंगे। हिन्दी भाषी कर्मचारियों को पत्राचार पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित किया जाएगा। अंग्रेजी-हिन्दी पर्यायों, वाक्यों, वाक्यांशों आदि की एक अलग लाइब्रेरी फाइल बनायी जाएगी। परिषद् में हिन्दी में किए गए कार्यों का सर्वेक्षण किया जाएगा जिसके आधार पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय और गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) को नियमित रूप से सूचना भेजने की व्यवस्था की जाएगी।

वित्त

1984-85 वर्ष के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की समेकित प्राप्तियां और भुगतान लेखा नीचे की सारणी में दी गई हैं।

1984-85 वर्ष की समेकित प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

प्राप्तियाँ			भुगतान		
रोकड़ जमा			**अधिकारियों का वेतन**		
बैंक में नकद	1,93,45,514.00				
लगी हुई अतिरिक्त निधि	9,600.00	1,93,55,114.00	गैर योजना	1,19,95,003.00	
			योजना	5,46, 242.00	1,25,41,245.00
बजट खर्च के लिए शिक्षा मंत्रालय से प्राप्त अनुदान			**स्थापना का वेतन**		
गैर-योजना	9,74,32,734.00		गैर-योजना	92,73,903.00	
योजना	2,98,01,982.00	12,72,34,716.00	योजना	4,97,128.00	97,71,031.00
			भत्ता और मानदेय		
विशिष्ट परियोजनाओं से संबद्ध अनुदान और वापिसी			गैर-योजना	3,04,98,264.00	
(सूची संलग्न है)		6,59,33,632 .00	योजना	17,63,409.00	3,22,61,673.00
परिषद् की प्राप्तियां			**यात्रा भत्ता**		
परिषद् के भवनों का किराया		11,89,579.00	गैर-योजना	7,04,287.00	
ऋण/अल्पकालिक निवेश पर ब्याज	3,24,529.00		योजना	45,806.00	7,50,093.00
अधिक हो गए भुगतान की वसूली	10,96,390.00				
जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.			**अन्य खर्चे**		
निवेश पर ब्याज			गैर-योजना	1,29,51,824.00	
ब्याज एस.बी. लेखा/जी.पी.एफ			योजना	7,80,526.00	
सी.पी.एफ. लेखा	49,22,163.00				
	36,603.00	49,58,766.00	**छात्रवृति फेलोशिप**		
			गैर-योजना	7,15,555.00	
			योजना	4,80,877.00	11,96,432.00

प्राप्तियाँ		भुगतान		
पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री	2,45,50,531.00	**कार्यक्रम**		
विज्ञान किटों की बिक्री	3,33,357.00	गैर-योजना	4,82,31,578.00	
फीस और चार्ज	5,18,923.00	योजना	76,45,170.00	5,58,76,748.00
छुट्टी वेतन और पेंशन अंशदान	1,72,987.00	**उपकरण और फर्नीचर**		
रायल्टी	25,589.00			
सी.जी.एच.एस.	41,219.00	गैर-योजना	10,94,543.00	
विविध प्राप्तियां	12,12,269.00	योजना	41,83,583.00	52,78,126.00
(344,24,139.00)		**भूखंड निर्माण**		
ऋण और पेशगी की वसूली और भुगतान		गैर-योजना	64,48,682.00	
मोटरकार/स्कूटर पेशगी	1,43,962.00	योजना	1,01,64,783.00	1,66,13,465.00
अन्य सवारी पेशगी	48,445.00	**अन्य भुगतान**		
गृह निर्माण पेशगी	14,40,433.00			
पंखा पेशगी	1,262.00	पेन्शन और ग्रैचुअटी		15,16,018.00
त्यौहार पेशगी	2,20,411.00	(जिसमें एफ.ए. और आर.		
स्थानांतरण पर यात्रा		सी.ई.एस. शामिल हैं)		
भत्ता/वेतन	36,080.00	विज्ञापन		5,25,594.00
बाढ़/सूखा/प्राकृतिक		**सी.जी.एच.एस.**		
विपदा पेशगी	1,725.00	गैर-योजना	5,21,022.00	
गर्म कपड़ा पेशगी	686.00	योजना	42,294.00	5,63,316.00
स्थायी पेशगी	7,722.00	मकान का किराया		11,718.00
(19,00,726.00))		लेखा परीक्षा शुल्क		82,455.00
		जी.पी.एफ. पर ब्याज/सी.पी.एफ.		
		पर ब्याज और नियोक्ता का शेयर		30,00,000.00

प्राप्तियाँ		भुगतान		
निधि और संचयी जमा योजना लेखा		छुट्टी वेतन और पेंशन अंशदान		42,353.00
सामान्य भविष्य निधि	77,12,775.00	जमा से जुड़ी जीवन बीमा		10,000.00
अनिवार्य भविष्य निधि	28,78,438.00	**विविध भुगतान**		
संचयी जमा योजना	1,721.00	गैर योजना		
(1,05,92,934.00)		सुरक्षा योजना की खरीद के लिए	52,226.00	
जमा		भारतीय स्टेट बैंक को दी गई दलाली	11,590.00	63,816.00
ब्याना और सुरक्षा जमा	22,82,006.00	विशिष्ट परियोजनाओं पर		
(विज्ञान किट से संबद्ध 22,05,000)		खर्चा (सूची संलग्न है)		4,95,69,453.00
अवधान राशि	1,28,808.00	मोटरकार/स्कूटर पेशगी		3,19,134.00
अन्य जमा	4,71,514.00	अन्य सवारी पेशगी		60,222.00
(क्षेत्रीय शिक्षा कालेज)		गृह निर्माण पेशगी		36,73,354.00
(23,82,328.00)		फैन पेशगी		500.00
		त्यौहार पेशगी		2,13,951.00
		स्थानांतरण पर यात्रा भत्ता/वेतन		91,312.00
		बाढ़/सूखा/प्राकृतिक विपदा पेशगी		1,04,300.00
		गर्म कपड़ा पेशगी		–
		स्थायी पेशगी		10,100.00
		(44,72,873.00)		
		सामान्य भविष्य निधि		
		सी लेखा	22,41,350.00	
		एस.बी. लेखा	32,91,439.00	55,32,789.00
		अनिवार्य भविष्य निधि		
		सी. लेखा	8,13,609.00	

प्राप्तियाँ		भुगतान		
ग्रुप बीमा योजना				
1-4-84 को एस.बी. एकाउन्ट में शेष राशि	3,93,539.00	एस.बी. लेखा अनिवार्य जमा योजना	6,64,437.00	14,78,646.00
(एस.बी.आर. एण्ड पी. एकाउन्ट)	1,24,000.00	(70,36,539.00)		
जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.टी. 39 एस.बी. एकाउन्ट का स्थानांतरण	91,57,426.00	बयाना और सुरक्षा जमा		1,07,462.00
		अवधान राशि		78,375.00
उचंत	8,297.00	अन्य जमा		4,15,341.00
		(6,01,178.00)		
प्रेषित धन				
जी.पी.एफ./सी.पी.एफ. प्रेषित धन	1,38,502.00	ग्रुप बीमा योजना		1,49,061.00
पी.एल.आई./एल.आई.सी. प्रेषित धन	86,726.00	जी.पी.एफ./सी.पी.एफ. निवेश (एस.बी. एकाउन्ट)		72,32,800.00
		अल्पकालिक निवेश		7,15,00,000.00
		31-3-85 को एस.बी. एकाउन्ट आर. और पी. एकाउन्ट में शेष राशि		27,39,927.00
		जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.एस.बी. एकाउन्ट में स्थानांतरण		91,57,426.00
		उचंत		1,27,707.00
		जी.पी.एफ./सी.पी.एफ. प्रेषित राशि		1,20,989.00
		पी.एल.आई./एल.आई.सी. प्रेषित राशि		98,867.00
		विविध प्रेषित राशि		41,882.00
		उप डाकघर प्रेषित राशि		35,73,452.00
		आयकर प्रेषित राशि		5,64,316.00
		आवधिक प्रेषित राशि		(11,88,44,892.00)

प्राप्तियाँ		भुगतान		
विविध प्रेषित धन	51,895.00	व्यवहार में लगी निधि		11,86,02,892.00
उप डाकघर प्रेषित राशि	38,36,677.00	(2,42,000.00)		
आयकर प्रेषित राशि	5,65,951.00	मृत्यु राहत योजना		33,253.00
आवधिक प्रेषित राशि(11,86,12,492.00)		सी.टी.एस. प्रेषित राशि		1,96,618.00
व्यवहार में लगी निधि में	11,86,02,892.00	(12,32,32,269.00)		42,96,55,666.00
(9,600.00)				
मृत्यु राहत योजना	31,741.00	द्वारा		
सी.टी.एस. प्रेषित राशि	1,95,283.00	रोकड़ बाकी		
(12,35,09,667.00)		कार्यालय तथा बैंक में		
		नकद	4,15,02,804.00	
		व्यवहार में लगी निधि	2,42,000.00	417,44,804.00
कुल जोड़ :	47,14,00,470.00	कुल जोड़		47,14,00,470.00

1984-85 वर्ष के दौरान विशिष्ट अनुदानों की समेकित प्राप्ति और भुगतान लेखा

		प्राप्ति	भुगतान
1.	यूनिसेफ–विशेष निधि	10,83,938.38	8,39,821.67
2.	शिक्षा मंत्रालय–समष्टि शिक्षा कार्यक्रम के लिए अनुदान 1,42,00,000.00 वापसी 10,116.55	1,42,10,116.55	1,43,63,451.30
3.	शिक्षा मंत्रालय–1979-80 में प्राप्त 20 लाख रुपया–व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम	3,51,965.53	11,75,096.20
4.	शिक्षा मंत्रालय–समूह गान कार्यक्रम अनुदान 40,00,000.00 वापसी 12,30,503.65	52,30,503.65	25,38,622.90
5.	यूनेस्को–ट्रस्ट कार्यशाला में जापानी निधि के अंतर्गत विज्ञान का चल प्रशिक्षण दल जारी है 507/363-3	5,518.76	
6.	वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्–श्रीमती जीनत रशीद को भुगतान के लिए अनुदान 18,200.00 वापसी 994.05	19,194.05	18,502.83
7.	यूनेस्को–प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के सर्वीकरण पर अध्ययन जारी है 354/3	45,457.23	39,652.05
8.	यूनेस्को–गणित के व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से संबद्ध मूलभूत विज्ञान का स्तर उठाना	–	30,146.62
9.	यूनेस्को–विद्यालय में सामाजिक पर्यावरण शिक्षा के सेवा-पूर्व प्रशिक्षण का प्रायोगिक माडल जारी है 517/570/3 24.5.1983	17,427.40	900.00
10.	यूनेस्को–समकालिक विश्व समस्याओं पर क्षेत्र कार्यान्वयन और मूल्यांकन सामग्री		3,431.67

		प्राप्ति	भुगतान
11.	यूनेस्को–प्रायोजित–दृष्टिछ: अपंगों की समेकित शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला	321.50	1,200.00
12.	शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय–प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक-प्रोफाइलों का उनके ग्रामीण और नगरी व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन रु. 10,000 + 6,000	1,401.00	1,504.85
13.	भारत सरकार का इलेक्ट्रानिकी विभाग अभिकलित्र साक्षरता कार्यक्रम के लिए अनुदान 50,56,000.00 वापसी 1,88,459.10	52,44,459.10	34,64,201.90
14.	यूनेस्को–8 चुने हुए राज्यों में बालिकाओं का पिछड़ापन वापसी–	7,742.04	
15.	यूनेस्को–सामान्य शिक्षा में प्रौद्योगिकी पर मार्गदर्शी परियोजना अनुदान 90,525.00 वापसी 19,845.18	1,10,370.18	90,525.00
16.	उसियाद–दोपहर का भोजन	50,390.00	
17.	यूनेस्को–प्राथमिक विद्यालय के लिए पर्यावरण शिक्षा में शिक्षकों और सुपरवाइजरों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए प्रायोगिक माडल की तैयारी	650.40	2,000.00
18.	यूनेस्को–पर्यावरण शिक्षा मार्गदर्शी परियोजना के अधीन–नगरी उपांत क्षेत्र पर कार्यशाला (जारी है 517.287)	12,783.75	28.190.00
19.	यूनेस्को–प्राथमिक स्तर चरण 1 और 2 के लिए स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं उत्पादन कार्यशाला (जारी है 136.748/1)	28,918.44	49,880.50
20.	यूनेस्को–सीखने और सिखाने की विधियों और तकनीकियों में हाल ही में हुए विकास और नई उपनीतियों पर राष्ट्रीय वृत्ति अध्ययन (515.190.3)	10,650.00	7,098.00

		प्राप्ति	भुगतान
21.	भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्–पत्रिकाओं के लिए शोध सामग्री		2,000.00
22.	यूनेस्को–विज्ञान-शिक्षा के क्षेत्र में सहयोजी कार्यक्रम श्री मोहम्मद अजाज–अफगानिस्तान से	900.00	
23.	यूनेस्को–13-9-84 को वायना समाजवादी गणराज्य से विशिष्ट शिक्षा के अध्ययन दौरे पर आए एक चल दल का स्वागत किया गया $ 1000.00	1,478.72	1,100.00
24.	एपियाड–राष्ट्रीय-उपराष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक शिक्षा के सार्वीकरण पर एक उन्नत स्तर की कार्यशाला	15,405.00	38,198.00
25.	परिवार एवं कल्याण मंत्रालय		2,56,512.00
26.	शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय भारत में स्थापित संयुक्त राज्य फाउन्डेशन, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित पाठ्यक्रम निर्माण पर एक कार्यशाला	2,100.00	–
27.	यूनेस्को–नगरी उपांत क्षेत्रों की समस्याओं पर पर्यावरण शिक्षा-मार्गदर्शी परियोजना जारी 51.4.289	25,889.97	–
28.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग–डा. (श्रीमती) हेमलता सिंह को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षक-फैलोशिप मिला	9,123.00	6,000.00
29.	शिक्षा मंत्रालय–इन्सेट कार्यक्रम के लिए सी.आई.ई.टी. को	3,92,92,284.00	2,65,74,282.21
30.	आइ.सी.एस.एस.आर.डी.डी. नायर फैलोशिप	–	356.49
31.	यूनेस्को–शिशु देखभाल शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला जारी 507/352	–	627.97
32.	यूनेस्को–औपचारिक और अनौपचारिक समष्टि शिक्षा कार्यक्रम को पूरा करने के लिए बैंकाक में आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी	879.25	–
33.	यूनेस्को–भारत में सामान्य शिक्षा में कार्य अनुभव पर राष्ट्रीय अध्ययन	1,833.77	6,480.00

		प्राप्ति	भुगतान
34.	यूनेस्को–विभाग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा कार्मिकों के पुन: प्रशिक्षण के लिए उन्नत स्तर पर कार्यशाला $ 3500	45,811.52	18,270.00
35.	यूनेस्को–विशिष्ट शिक्षा के राष्ट्रीय कार्यशाला में चल दल/जारी है 117-2/5/507-362	40,533.50	–
36.	यूनेस्को–पाठ्य पुस्तक और पठन सामग्री पर मार्गदर्शी राष्ट्रीय कार्यशाला $ 2500	32,722.51	
37.	यूनेस्को–क्षेत्रीय डिजाइन कार्यशाला द्वारा बताए गए मार्गदर्शन पर शिक्षण सामग्री प्रयोगशाला के निर्माण के लिए आधारित आंतर विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय संस्था नवीन प्रक्रियात्मक ग्राफों में सहायता प्रदान करना–जारी है (116.433)	19,762.89	–
38.	यूनेस्को–रसायन-पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री के सुधार पर राष्ट्रीय कार्यशाला (जारी है 507/305.3/83(45)49)	4,500.00	–
39.	यूनेस्को–105/139-4 के अधीन सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकास के लिए पर्यावरण शिक्षा प्रक्रिया पर 300 पृष्ठ का एक प्रलेख तैयार करना	6,100.00	–
40.	युसुफ मोहम्मद माल्दीवों के लिए समष्टि शिक्षा में सहयोजी कार्यक्रम	2,500.00	455.00
41.	शिक्षा कार्यक्रम और पाठ्य-कार्यक्रम में स्टीरियो टाइप के अभिज्ञान और प्रसार के लिए क्षेत्रीय गाइड	–	145.65
		6,59,33,632.04	4,95,69,452.81
	पूर्णांक में	6,59,33,632.00	4,95,69,453.00

परिशिष्ट-क

व्यावसायिक शिक्षा-संगठनों को दी जाने वाली सहायता की योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने सदा ही शिक्षा के क्षेत्र तथा शैक्षिक नवीन प्रक्रियाओं दोनों में ही स्वैछिक प्रयास के महत्व को समझा है। देश में शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन लाने के लिए संस्थाओं तथा शिक्षकों/शिक्षक-प्रशिक्षकों के साथ व्यावसायिक शिक्षा संगठनों का निकट संबंध एक अच्छे उत्प्रेरक का काम करता है। इस विचार को ध्यान में रखकर एन.सी.ई.आर.टी. पिछले कुछ सालों से इस योजना के आधार पर व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को वित्तीय सहायता देने की योजना चला रही है जोकि शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय में व्याप्त थी।

उद्देश्य

योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

i शिक्षा विशेष रूप से विद्यालय शिक्षा में सुधार लाने के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को बढ़ावा देना।

ii व्यावसायिक प्रकृति की अच्छी पत्रिकाएं निकालना जोकि शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं के प्रचार-प्रसार में सहायक हों।

iii स्वैच्छिक संगठनों के जरिए शिक्षा के विस्तार कार्य में बढ़ावा देना।

पात्रता की शर्तें

संगठन

इस योजना के अंतर्गत कोई भी व्यावसायिक शिक्षा संगठन एन.सी.ई.आर.टी. से अनुदान पाने का हकदार है बशर्ते वह

(क) सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का अधिनियम 21) के तहत एक पंजीकृत सोसाइटी हो; या

(ख) इस समय प्रचलित नियम के अधीन एक पंजीकृत सार्वजनिक ट्रस्ट हो, या

(ग) शिक्षा-कार्यकलापों के संचालन और संवर्धन में लगा हुआ एक प्रसिद्ध सरकारी संगठन हो।

राज्य सरकार अथवा स्थानीय निकाय द्वारा नियुक्त संगठन या राज्य विधान मंडल के एक अधिनियम के अधीन अथवा राज्य सरकार के एक प्रस्ताव के अधीन स्थापित किया गया संगठन इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता पाने के हकदार नहीं होंगे।

i उसे सामान्यत: विद्यालय शिक्षा में सुधार लाने के लिए राष्ट्रीय/क्षेत्रीय स्तर पर ही काम करना चाहिए। केवल विशिष्ट मामलों में ही यदि निधि उपलब्ध हो तो इस स्थिति में केवल राज्य स्तर पर काम करने वाले व्यावसायिक शिक्षा संगठनों से प्राप्त प्रार्थना-पत्रों पर विचार किया जाएगा।

ii यह क्षेत्र, जाति, धर्म, लिंग अथवा भाषा पर विचार किए बिना भारत के सभी नागरिकों के लिए मान्य होना चाहिए।

iii उस स्थिति में इसे मान्यता दे देनी चाहिए जबकि राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त करने के लिए इस प्रकार की मान्यता प्रदान करना आवश्यक हो।

iv इसका एक उचित ढंग से गठित प्रबंध-मंडल होना चाहिए जिसके अधिकार, कर्त्तव्य और जिम्मेवारियां स्पष्ट रूप से निर्धारित होनी चाहिए और वे एक लिखित संविधान के रूप में प्रस्तुत की जानी चाहिए।

v योजना के अंतर्गत सहायता अनुदान के लिए प्रार्थना करने की तारीख से पहले कम से कम एक वर्ष तक इस काम में मूल रूप से लगा होना चाहिए।

vi प्रार्थना पत्र देने की तारीख के समय इसमें कम से कम 50 सदस्य होने चाहिए।

vii यह किसी व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह के लाभ के लिए नहीं होना चाहिए।

कार्यकलाप

इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के कार्यकलापों को करने की सहमति एन.सी.ई.आर.टी. ही सामान्यत: देती है:

i व्यावसायिक शिक्षा-संगठनों के वार्षिक सम्मेलन बशर्ते ये सम्मेलन कुछ राष्ट्रीय शिक्षा संबंधी कुछ मामलों से संबद्ध एक ऐसे विषय पर हों जिससे एन.सी.ई.आर.टी. का कोई संबंध हो और अथवा एन.सी.ई.आर.टी. के कार्य में सहायक हो और एन.सी.ई.आर.टी. के उद्देश्य को बढ़ाने में उपयोगी हो।

ii शिक्षा-साहित्य का निर्माण जिसमें व्यावसायिक पत्रिकाएं तो शामिल हों पर जिसमें पाठ्य-पुस्तक संबंधी सामग्री न हो।

iii शिक्षा-प्रदर्शनियां जबकि उनमें शिक्षा संबंधी नवीन प्रक्रियाओं का या अन्य शिक्षा-विकास का कोई छाप हो।

साधारणतया निम्नलिखित कार्यों के लिए कोई अनुदान नहीं दिया जाएगा।

i संगोष्ठियां, कार्यशालाएं–विशेष रूप से ऐसे प्रकार की संगोष्ठियां या कार्यशालाएं जिनका आयोजन एन.सी.ई.आर.टी. कर सकता है अथवा कर रहा है।

ii अनुसंधान परियोजनाएं।

अनुदान की मात्रा

संगठन एन.सी.ई.आर.टी. पर ही बहुत अधिक निर्भर न रहे। इसके लिए इस योजना के अधीन केवल निम्नलिखित संगठनों को भागी आधार पर ही वित्तीय सहायता दी जाएगी:

i वर्ष के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दिया जाने वाला सहायता अनुदान किसी कार्यकलाप पर होने वाले खर्च के सामान्यत: 60 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।

ii खर्चे का शेष 40 प्रतिशत भाग की व्यवस्था संगठन अन्य संगठनों से प्राप्त अनुदान, बिक्री से हुई आय, पत्रिकाओं को चन्दा अथवा विज्ञापन से हुई आय जैसे अन्य स्रोतों से करेगा। फिर भी यदि इन स्रोतों से प्राप्त हुई राशि खर्चे के 40 प्रतिशत से अधिक है तो एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दी जाने वाली राशि भी उसी हिसाब से कम कर दी जाएगी।

iii यदि संयोगवश वर्ष के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दी गई अनुदान की राशि निर्धारित 60 प्रतिशत से अधिक हो गई हो या अन्य स्रोतों से प्राप्त हुई राशि 40 प्रतिशत से अधिक हो गई हो और उसके हिसाब से अनुदान की राशि में कमी न की गई हो तो अधिक हो गई राशि की या तो वसूली कर ली जाएगी या अगले वर्ष के अनुदान में उसका समायोजन कर दिया जाएगा।

उदाहरण

यदि किसी कार्यकलाप पर रु 1,700.00 खर्च हुआ हो, जबकि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दिए गए अनुदान की राशि रु 1,500.00 तो तथा अन्य स्रोतों से रु. 200.00 की आय हुई हो, तो

(क) खर्चे का 60 प्रतिशत = रु. 1,020.00

(ख) अन्य स्रोतों से हुई आय के कारण खर्च में हुई
कमी (1700-900) = रु. 800.00
अत: वसूली की जाने वाली राशि
(अनुदान राशि ऋण (क) और (ख) का अंतर)
= रु. 1,500.00 – 800.00
= रु. 700.00

आवदेन पत्र देने की विधि

i व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को चाहिए कि आवेदन के लिए वे अनुबंध में दिए गए निर्धारित आवंदन फार्म को अच्छी तरह से भरकर उसकी दो प्रतियां जमा करें।

ii प्रत्येक कार्यक्रम अथवा कार्यकलाप के लिए अलग-अलग आवेदन-पत्र जमा करना चाहिए।

iii प्रत्येक आवेदन-पत्र के साथ निम्नलिखित प्रलेख संलग्न चाहिए :

— संस्थान/संगठन का प्रास्पेक्टस अथवा उसके उद्देश्यों और कार्यकलापों का एक संक्षिप्त विवरण।

— संगठन का संविधान।

— अन्तिम उपलब्ध वार्षिक रिपोर्ट की एक प्रति।

— यदि आवेदन पत्रिका/अन्य सामग्री के प्रकाशन से संबद्ध अनुदान के लिए हो तो आवेदन के साथ पत्रिका/पिछले प्रकाशनों के अंकों की प्रतियां संलग्न होनी चाहिए।

— संगठन के पिछले वर्ष के लेखा का लेखापरीक्षित विवरण और साथ ही निम्नलिखित रूप में एक उपयोग

(प्रमाण पत्र जिस पर संघ के अध्यक्ष सचिव का और लेखा परीक्षक (चार्टर्ड एकाउन्टेट आदि) का हस्ताक्षर हो।

मैंने वाउचरों को देखकर————————के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संस्वीकृति रु.————————के अनुदान के संबंध में————————की लेखा की जांच की है और मैं प्रमाणित करता हूं कि वे सही हैं और अनुदान का उपयोग उसी प्रयोजन में किया गया है जिसके लिए उसकी मंजूरी की गई थी।

केवल उस कार्यकलाप के लिए समान फार्म में एक अलग उपयोग प्रमाण पत्र और/या खर्चे का विवरण जिसके लिए अनुदान दिया जा चुका है।

यदि आदेवन पत्र के साथ ऊपर उल्लेख किये गए प्रलेख संलग्न नहीं होंगे तो अनुदान मंजूर नहीं किया जा सकता।

सामान्य

i यदि पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए अनुदान दिया गया हो तो व्यावसायिक शिक्षा-संगठन इस बात के लिए बाध्य होगा कि वह अपनी पत्रिका में एन.सी.ई.आर.टी. का एक विज्ञापन निःशुल्क छापे।

ii यदि वार्षिक सम्मेलनों के लिए अनुदान दिया गया हो तो संगठन को चाहिए कि वह सम्मेलन में एन.सी.ई.आर.टी. के कुछ प्रतिनिधियों को सहयोजित करे।

iii संस्थान/संगठन को चाहिए कि वह अनुदान से पूर्णतः अथवा अधिकांशतः प्राप्त की गई सभी परिसंपत्तियों का एक रिकार्ड रखे। एन.सी.ई.आर.टी. की मंजूरी के बिना इन परिसंपत्तियों को नहीं हटाना होगा या किसी ऐसे काम में इनका प्रयोग नहीं करना होगा जिसके लिए अनुदान नहीं दिया गया है। यदि किसी समय कोई संस्था/संगठन ठप्प पड़ जाए तो ये संपत्ति राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की हो जाएगी।

iv भारत के महालेखा परीक्षक अपनी इच्छानुसार लेखा और साथ लगे प्रलेखों की परीक्षण-जांच कर सकता है।

v यदि एन.सी.ई.आर.टी. के पास कुछ ऐसे कारण हों जिससे वह यह समझता हो कि मंजूर की गई राशि का इस्तेमाल अनुमोदित कार्य पर नहीं किया जा रहा है तो अनुदान-राशि की वसूली की जा सकती है और आगे दिए जाने वाले अनुदान की राशि का भुगतान रोका जा सकता है।

vi संगठन को चाहिए कि वह एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित तथा सहायता प्राप्त कार्यक्रम को चलाने में अधिक से अधिक मितव्ययता करे।

vii अनुदान का आवेदन पत्र सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. से पास जमा करना चाहिए।

पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए 1984-85 वर्ष के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को दिए गए अनुदान

क्र.सं.	संगठन का नाम	पत्रिका का नाम	मंजूर की गई राशि
1	2	3	4
			रू.
1.	अपंगों का समेकित शिक्षा पुनर्वास और अनुसंधान केन्द्र, एस-601, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली-92	"इंडियन जर्नल आफ इंटिग्रेटेड एजुकेशन"	4,000.00
2.	गणित शिक्षण सुधार संघ, 25, फर्न रोड, कलकता	"इंडियन जर्नल आफ इंटिग्रेटेड एजुकेशन"	4,000.00
3.	एस.आई.टी.यू. शिक्षा-अनुसंधान परिषद्, मद्रास	"एक्सपेरिमेण्ट्स इन एजुकेशन"	3,000.00
4.	भारतीय अंग्रेजी भाषा शिक्षक संघ, 3 फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मन्दावेलिपक्कम, मद्रास-28	"द जर्नल आफ इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग"	3,000.00
5.	युवा शिक्षा अनुसंधानकर्ता संघ, 51, मम्फोर्ड गंज, इलाहाबाद	"आयरे"	1,470.00
6.	भारतीय पूर्व-विद्यालय शिक्षा संघ, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली-1	"बालक"	2,500.00
7.	भारतीय भौतिकी संघ, टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान, बंबई	"फीजिक्स न्यूज"	5,000.00

8.	अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षक संघ, द्वारा पूर्व विद्यालय शिक्षा विभाग एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली-16	"विज्ञान शिक्षक"	3,000.00
9.	भारतीय मनोमितीय तथा शैक्षिक अनसंधान संघ, पटना विश्वविद्यालय, पटना	"इंडियन जर्नल आफ साइकोमेट्रिक एण्ड एजुकेशन"	5,000.00
10.	श्री नृत्य कला संस्कृतम, सी-8, ग्रीन पार्क (मेन) नई दिल्ली-16	"कान्फरेन्स सोवनियर"	5,000.00

सम्मेलन आयोजित करने के लिए 1984-85 वर्ष के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा व्यवसायिक शिक्षा संगठनों को दिया गया अनुदान

क्र.सं.	संगठन का नाम	उद्देश्य	राशि
1	2	3	4
			रु.
1.	भारतीय अनुप्रयुक्त मनो-विज्ञान अकादमी, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग, आई.आई.टी., नई दिल्ली-16	वार्षिक सम्मेलन के लिए	5,000.00
2.	भारतीय समाज विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद	1983-84 के नवें सम्मेलन के लिए	5,000.00
		1984-85 के दसवें सम्मेलन के लिए	5,000.00
3.	आयोजना और वास्तुकला का भारतीय पर्यावरण सोसाइटी स्कूल, पी.ओ.बाक्स 7033, इन्द्रप्रस्थ एच.पी.ओ. नई दिल्ली-2	"अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन"	5,000.00

4.	अभिलेखागार ग्रुप मित्र भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली-1	"राष्ट्रीय सम्मेलन"	5,000.00
5.	भारतीय भौतिक शिक्षक संघ, भौतिकी विभाग, आई.आई.टी., कानपुर	"पहला सम्मेलन"	5,000.00
6.	भारतीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संघ, 17-बी, श्री अरबिन्द मार्ग, नई दिल्ली-16	"दूसरा सम्मेलन"	5,000.00
7.	भारतीय पूर्व-विद्यालय शिक्षा संघ, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली-1	"20वें सम्मेलन के लिए"	4,000.00
8.	अपंगों के लिए समेकित शिक्षा, पुनर्वास और अनुसंधान केन्द्र, एस-601, शकरपुर, दिल्ली	"तीसरे सम्मेलन के लिए"	4,000.00
9.	गणित शिक्षक सुधार संघ, 25, फर्न रोड, कलकत्ता	"14वें सम्मेलन के लिए"	5,000.00

परिशिष्ट-ख

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के पते

			टेलीफोन नं.	
			दफ्तर	घर का
	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 3-6-69/बी/7, अवंती नगर वशीर बाग, हैदराबाद	आंध्र प्रदेश	35878	227207
2.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) जू रोड, गुवाहाटी	असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नागालैण्ड	87003	
3.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) कंकड़ बाग पत्रकार नगर, पटना	बिहार	53243	53243
4.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) कोठी नं. 23, सैक्टर-8ए, चंडीगढ़	चण्डीगढ़ और पंजाब	26923	26923
5.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 1-बी, चन्द्र कालोनी ला कालेज के पीछे अहमदाबाद	गुजरात, दादर और नगर हवेली	445992	445992
6.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) लक्ष्मी भवन, संजोली चौक के पास, शिमला	हिमाचल प्रदेश	6914	6914

7	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 57, रावलपोरा, श्रीनगर-190005	जम्मू और कश्मीर		
8.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 621, एटी फीट रोड 11 ब्लाक, राजाजी नगर बंगलौर	कर्नाटक	350006	350006
9.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) एस.आई.ई. बिल्डिंग पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम	केरल और लक्षद्वीप	64389	64948
10.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) एम.आई.जी. 161, सरस्वती नगर जवाहर चौक भोपाल	मध्यप्रदेश	64465	76014
11.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 128/2, कोठरूद कर्व रोड पुने	महाराष्ट्र और गोवा, दमन और दिउ	447314	447314
12.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) बायसे रोड, लेटुमखरा शिलोंग	मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा	26317	
13.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) होमी भाभा होस्टल आर.सी.ई. कैम्पस भुवनेश्वर	उड़ीसा	50516	52224
14.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) ए-33, प्रभु मार्ग (पश्चिम) तिलक नगर जयपुर	राजस्थान	40265	40265

15.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 32, हिन्दी प्रचार सभा स्ट्रीट, टी नगर, मद्रास	तमिलनाडु और पांडिचेरी	443414	72939
16.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) 555-ई मम्फोर्डगंज इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	52212	2131
17.	क्षेत्र सलाहकार (एन.सी.ई.आर.टी.) पी-23 सी.आई.टी. रोड स्कीम 55 कलकत्ता	पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार द्वीप और सिक्किम	245310	361510

परिशिष्ट-ग

84-85 वर्ष के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की समितियां

(परिषद् के अधिनियमों के अधिनियम 3 के अधीन)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्य (आम सभा)

i शिक्षा मंत्री अध्यक्ष–पदेन	1. श्रीमती शीला कौल केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री शास्त्री भवन, नई दिल्ली
ii विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा–पदेन	2. डा. (श्रीमती) माधुरी आर. शाह अध्यक्षा, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-1
iii शिक्षा मंत्रालय के सचिव–पदेन	3. श्रीमती सरला ग्रेवाल सचिव, शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
iv भारत सरकार द्वारा मनोनीत चार क्षेत्रों के चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति	4. श्री कान्ती चौधरी उपकुलपति रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर
	5. प्रो. एम.एन. दास उपकुलपति उत्कल विश्वविद्यालय वाणी विहार भुवनेश्वर

6. डा. आर.एस. मिश्रा
उपकुलपति
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ-226007

7. प्रो. वी.सी. कुलन्दामीस्वामी
उपकुलपति
अन्ना विश्वविद्यालय
मद्रास

V प्रत्येक राज्य सरकार और संघीय राज्य के एक विद्यालय-प्रतिनिधि जो कि राज्य/संघीय राज्य में शिक्षा मंत्री (या उसका प्रतिनिधि) होगा और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उसका प्रतिनिधि) होगा।

8. शिक्षा मंत्री,
आन्ध्र प्रदेश,
हैदराबाद

9. शिक्षा मंत्री,
असम,
दिसपुर

10. शिक्षा मंत्री,
बिहार,
पटना

11. शिक्षा मंत्री,
गुजरात,
अहमदाबाद

12. शिक्षा मंत्री,
हरियाणा,
चंडीगढ़

13. शिक्षा मंत्री,
हिमाचल प्रदेश,
शिमला

14. शिक्षा मंत्री,
जम्मू और कश्मीर,
श्रीनगर

15. शिक्षा मंत्री,
केरल,
त्रिवेन्द्रम

16. शिक्षा मंत्री,
मध्यप्रदेश
भोपाल

17. शिक्षा मंत्री,
महाराष्ट्र,
बम्बई

18. शिक्षा मंत्री,
मणिपुर,
इम्फाल

19. शिक्षा मंत्री,
मेघालय,
शिलांग

20. शिक्षा मंत्री,
कर्नाटक,
बंगलौर

21. शिक्षा मंत्री,
नागालैण्ड,
कोहिमा

22. शिक्षा मंत्री,
उड़ीसा,
भुवनेश्वर

23. शिक्षा मंत्री,
पंजाब,
चंडीगढ़

24. शिक्षा मंत्री,
राजस्थान,
जयपुर

25. शिक्षा मंत्री,
तमिलनाडु,
मद्रास

26. शिक्षा मंत्री,
त्रिपुरा सरकार,
अगरतला

27. शिक्षा मंत्री,
सिक्किम,
गंगटोक

28. शिक्षा मंत्री,
उत्तर प्रदेश,
लखनऊ

29. शिक्षा मंत्री,
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता

30. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

31. शिक्षा मंत्री,
गोवा, दमन और
दिउ सरकार,
पानाजी (गोवा)

32. शिक्षा मंत्री,
मिजोरम,
एंजल

33. शिक्षा मंत्री,
पांडिचेरी सरकार
पांडिचेरी-1

vi कार्यकारिणी समिति के
वे सभी सदस्य जिनके नाम
ऊपर नहीं दिए गए हैं।

34. श्री पी.के. थुंगन,
उप शिक्षा मंत्री,
शिक्षा मंत्रालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली

35. डा. पी.एल. मल्होत्रा,
निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक, अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली-110016

36. श्री बी.जी. कुलकर्णी,
टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान,
होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र,
होमी भाभा रोड,
बम्बई-400005

37. श्री बी.एम. जोशी,
प्रिंसिपल,
श्री एम.एम. प्युपिल्स
ओन स्कूल और शारदा मंदिर,
स्वामी विवेकानंद रोड, खार,
बम्बई-400052

38. श्री एम.एस. दीक्षित,
प्रिंसिपल,
हीरालाल वी.एन. इंटर कालेज,
छिब्रामऊ,
फरुखाबाद (उ.प्र.)

39. डा. टी.एन. धर, (28.6.84 तक)
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-110016

39. (क) डा. ए.के. जलालुद्दीन,
(14.8.84 से)
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-110016

40. प्रो. पी.एन. दवे,
केन्द्रीय कोआर्डिनेटर,
यूनिसेफ-सहायक परियोजना
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-110016

41. डा. जे.एस. राजपूत,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
श्यामला हिल्स,
भोपाल-462013

42. डा. (श्रीमती) शकुंतला भट्टाचार्य,
रीडर, विज्ञान और गणित में
शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-110016

43. श्री वाई.एन. चतुर्वेदी,
संयुक्त सचिव (एस.ई.),
शिक्षा मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

44. श्री मनमोहन सिंह,
वित्त सलाहकार,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद् और
शिक्षा मंत्रालय,
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली

(क) अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली; पदेन	45.	अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
(ख) आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली; पदेन	46.	आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नेहरू हाउस, 4-बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002
(ग) निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो, (डी.जी.एच.एस.) नई दिल्ली; पदेन	47.	निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो, (डी.जी.एच.एस.) निर्माण भवन, नई दिल्ली-110001
(घ) उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा इंचार्ज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली; पदेन	48.	उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा इंचार्ज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि मंत्रालय, डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली-110001
(ङ) प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण एवं रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली; पदेन	49.	प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण एवं रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001
(च) शिक्षा प्रभाग योजना आयोग नई दिल्ली का प्रतिनिधि; पदेन	50.	शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली

viii	ऐसे अन्य व्यक्ति, जिनकी संख्या छः से अधिक न हो और जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर मनोनीत कर सकती है। इनमें से कम से कम चार विद्यालय के शिक्षक होंगे।	51.	प्रो. टी. सुब्बाराव, प्रिंसिपल, तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, मद्रास
		52.	प्रो. पी.डी. कुलकर्णी, प्रिंसिपल, तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, चंडीगढ़
		53.	श्री तुषार कांजी लाल, हेडमास्टर, रंगवेलिया हाई स्कूल, पोस्ट आफिस रंगवेलिया, 24-परगना, पश्चिम बंगाल
		54.	श्री मोहम्मद हुसेन आब्दी, प्रिंसिपल, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गलरदोगी, टेहरी (गढ़वाल), उत्तर प्रदेश
		55.	श्री डेमिस डिसुजा, हेडमास्टर, सेंट फिलोमेना ब्वायज हाई स्कूल, पुट्टुर, जिला डी.के. कर्नाटक
		56.	श्रीमती विनोदिनी शाह, प्रिंसिपल, श्री आर.पी. पटादिया गर्ल्स हाई स्कूल, सुरेन्द्र नगर, जिला सुरेन्द्र नगर, गुजरात
	विशेष रूप से आमंत्रित व्यक्ति	57.	सचिव, भारतीय विद्यालय सर्टिफिकेट परीक्षा, प्रगति हाउस, तीसरी मंजिल, 47, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-24
	सचिव	58.	श्री सी. रामचन्द्रन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

कार्यकारी समिति

परिषद् का अध्यक्ष कार्यकारिणी समिति का पदेन अध्यक्ष होगा।	1.	श्रीमती शीला कौल, शिक्षा राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
शिक्षा राज्य मंत्री कार्यकारिणी समिति का पदेन उपाध्यक्ष होगा।		
(ख) अध्यक्ष, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा मनोनीत शिक्षा मंत्रालय का उप-शिक्षा मंत्री	2.	श्री पी.के. थुंगन, उप शिक्षा मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
(ग) परिषद् का निदेशक	3.	डा.पी.एल. मल्होत्रा निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
(घ) सचिव, शिक्षा मंत्रालय, –पदेन	4.	श्रीमती सरला ग्रेवाल, सचिव, शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष–पदेन	5.	श्रीमती माधुरी आर. शाह, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-110001
अध्यक्ष द्वारा मनोनीत विद्यालय–शिक्षा में रूचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो विद्यालय के शिक्षक होंगे)	6.	प्रो. बी.जी. कुलकर्णी, परियोजना निदेशक, टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र होमी भाभा रोड, बम्बई-400005
	7.	डा. एन. वेदमानी मेनुअल, 17, कलाक्षेत्र रोड, मद्रास

8. श्री बी.एम. जोशी,
प्रिंसिपल,
श्री एम.एम. प्युपिल्स ओन
स्कूल और शारदा मंदिर,
स्वामी विवेकानंद रोड,
खार, बम्बई-400052

9. श्री एम.एस. दीक्षित,
प्रिंसिपल,
हीरालाल वी.एन. इंटर कालेज,
छिब्रामऊ,
फरुखाबाद (उ.प्र.)

परिषद् का संयुक्त निदेशक

10. डा. टी.एन. धर,
(28.6.1984 तक)
संयुक्त निदेशक,
एन.सी.ई.आर.टी.

10 (क) डा. ए.के. जलालुद्दीन,
(14 अगस्त, 84 से)
संयुक्त निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत परिषद् संकाय के तीन सदस्य जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष होंगे।

प्रो. पी.एन. दवे,
अध्यक्ष
पूर्व-विद्यालय तथा प्रारंभिक
शिक्षा विभाग,
नई दिल्ली-110016

12. डा. जे.एस. राजपूत,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
श्यामला हिल्स,
भोपाल-462013

13. डा. (श्रीमती) शकुन्तला भट्टाचार्य,
रीडर,
विज्ञान एवं गणित में शिक्षा-विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली-16

vii	शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि; और	14.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (विद्यालय) शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
viii	वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्त सलाहकार होगा	15.	श्री मनमोहन सिंह, वित्त सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी., शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
			श्री सी. रामचन्द्रन, सचिव, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

स्थापना समिति के सदस्य

(परिषद् के विनियम 10 के अधीन)

i	निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष	1.	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष
ii	संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.	2.	डा. टी.एन. धर (28.6.84 तक) डा. ए.के. जलालुद्दीन (14.8.84 से) संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
iii	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	3.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (एस.ई.), शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
iv	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक होगा।	4.	प्रो. एच.सी. खरे, अध्यक्ष, गणित एवं सांख्यिकी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद-211002

		5.	प्रो. एम.एम. पुरी, राजनीति के प्रोफेसर, जी-16 पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़-160014
		6.	डा. एस. आनंदलक्ष्मी, निदेशक, लेडी इरविन कालेज, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली
		7.	प्रो. एम.आई. सवदत्ती, भौतिकी के वरिष्ठ प्रोफेसर और सिंडिकेट के सदस्य, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
v	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय शिक्षा कालेज का एक प्रतिनिधि	8.	डा. एस.एन. दत्ता, प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर
vi	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का एक प्रतिनिधि	9.	श्री एस.एच. खान, रीडर पी.सी.डी.सी., एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
vii	दो प्रतिनिधि जिनमें से एक परिषद् के स्थायी शैक्षिक स्टाफ का और दूसरा गैर- शैक्षिक स्टाफ का होगा और जिनका चुनाव इसके परिशिष्ट में उल्लेखित विधि से किया जाएगा।	10. 11.	श्री आर.पी. सक्सेना, लेक्चरर, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल श्री एम.एस. विष्ट, स्टोर कीपर ग्रेड-1
viii	वित्त सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी.	12.	श्री मनमोहन सिंह, वित्त सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी., शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
ix	सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. (सदस्य संयोजक)	13.	श्री सी. रामचन्द्रन, सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

वित्त समिति

(परिषद् के अधिनियम 62 के अधीन)

1.	एन.सी.ई.आर.टी. का निदेशक (पदेन)	1.	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
2.	वित्त सलाहकार (पदेन)	2.	श्री मनमोहन सिंह, वित्त सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी., शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
3.	अन्य सदस्य	3.	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (एस.ई.) शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
		4.	श्री जे. वीरराघवन, सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, नई दिल्ली
		5.	डा. पी.सी. मुखर्जी, प्रो. वाइस चांसलर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
4.	सचिव संयोजक	6.	श्री सी. रामचन्द्रन, सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

भवन एवं निर्माण समिति

1.	निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., पदेन	अध्यक्ष	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
2.	संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. पदेन	सदस्य	डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.

3.	मुख्य इंजीनियर सी.पी.डब्ल्यू.डी. या उसका प्रतिनिधि	सदस्य	डा. एम.जी. जोसफ, मुख्य इंजीनियर (निर्माण), सी.पी.डब्ल्यू.डी., आर.के. पुरम, नई दिल्ली
4.	वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	सदस्य	श्री एम.आर. राव, ए.एफ.ए. (निर्माण), वित्त मंत्रालय (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली
5.	एन.सी.ई.आर.टी. का एक परामर्श आर्किटेक्ट	सदस्य	श्री आई.डी. रस्तोगी, वरिष्ठ आर्किटेक्ट्स, सी.पी.डब्ल्यू.डी., (एन.डी.जेड- iv) (कमरा नं. 426) 'ए' विंग, निर्माण भवन, नई दिल्ली
6.	परिषद् का वित्त सलाहकार या उसका प्रतिनिधि	सदस्य	श्री मनमोहन सिह, वित्त सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
7.	शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	सदस्य	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (विद्यालय) शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8.	(अध्यक्ष द्वारा मनोनीत) एक सुप्रसिद्ध सिविल इंजीनियर	सदस्य	श्री आर.ए. खेमानी, मुख्य इंजीनियर, डी.डी.ए., नई दिल्ली
9.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत एक प्रसिद्ध विद्युत इंजीनियर	सदस्य	श्री आर.डी. जान, मुख्य इंजीनियर, कावेरी भवन, 'एफ' ब्लाक, नवीं मंजिल, केम्पेगोवडा रोड, बंगलौर-560009
10.	(समिति द्वारा मनोनीत) कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य	सदस्य	प्रो. जे.एस. राजपूत, प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, श्यामला हिल्स, भोपाल
11.	सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.	सदस्य सचिव	श्री सी. रामचन्द्रन, आई.ए.एस. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1.	निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.	अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.	उपाध्यक्ष
3.	प्रो. सी.एल. कुंडू, शिक्षा संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)	सदस्य
4.	प्रो. एन. मला रेडी, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद	सदस्य
5.	प्रो. (श्रीमती) विमला अग्रवाल, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)	सदस्य
6.	प्रो. एस. नारायण राव, मनोविज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति	सदस्य
7.	डा. बी.के. कोयल, निदेशक, राष्ट्रीय दृष्टि अपंग संस्थान, राजपुर रोड, देहरादून (उ.प्र.)	सदस्य

अधिनियम 38(4) के अधीन कार्यक्रम सलाहकार समिति में पांच राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशक होने चाहिए। वे निम्नलिखित हैं :

8.	निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, पटना-6	सदस्य
9.	निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान सोलन (हिमाचल प्रदेश)	सदस्य

10. निदेशक, सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्,
मेघालय, मावखर मेन रोड,
शिलांग-2

11. निदेशक, सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण संस्थान,
उदयपुर (राजस्थान)

12. निदेशक, सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
6, डी.पी.आई. कम्पाउंड
कालेज रोड,
मद्रास-600006

कार्यक्रम सलाहकार समिति के अधिनियम (5) के अनुसार इस समिति में एन.आई.ई. के प्रत्येक विभाग के दो प्रतिनिधि होने चाहिए जिनमें से एक परिषद् के प्रत्येक घटक यूनिट से विभागाध्यक्ष और प्रिंसिपल हो और दूसरा प्रोफेसर/रीडर हो। 1 मई, 1984 को एन.आई.ई. के विभागों का पुनर्गठन करने पर निम्नलिखित नए सदस्य हो गए हैं :

13. अध्यक्ष,
समाज विज्ञान एवं मानविकी में
शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

14. अध्यक्ष,
विज्ञान एवं गणित में शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

15. अध्यक्ष
पूर्व विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

16. अध्यक्ष
शिक्षक-शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और
विस्तार सेवा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

17. अध्यक्ष
शिक्षा-व्यावसायीकरण विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

18. अध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान,
परामर्श और मार्गनिर्देशन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

19. अध्यक्ष
नीति अनुसंधान, आयोजन और
प्रोग्रामन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

20. अध्यक्ष
पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

21. अध्यक्ष
माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और
आंकड़ा संसाधन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

22. अध्यक्ष
क्षेत्र सेवा और समन्वयन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

23. अध्यक्ष
कार्यशाला विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

24. अध्यक्ष
प्रकाशन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

25. संयुक्त निदेशक,
केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

26. प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
अजमेर (राजस्थान)

27. प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
भोपाल (म.प्र.)

28. प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
भुवनेश्वर

29 प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
मैसूर (कर्नाटक)

30. डा. के.वी. राव,
प्रोफेसर,
विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

31. डा. (कु.) एस.के. राम,
प्रोफेसर,
समाज विज्ञान और मानविकी में
शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

32. डा. (श्रीमती) आर. मुरलीधरन,
प्रोफेसर,
पूर्व-विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

33. डा. बाकर मेहंदी,
प्रोफेसर,
शिक्षक-शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और
विस्तार सेवा विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

34. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल,
प्रोफेसर,
शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

35. डा. वी.के. सिंह,
प्रोफेसर,
शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

36. श्री के.एन. हिरियानिया,
प्रोफेसर,
माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और
आंकड़ा संसाधन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

37. डा. पी.एम. पटेल,
प्रोफेसर,
नीति अनुसंधान आयोजना और प्रोग्रामन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

38. डा. ओ.एस. देवल,
प्रोफेसर,
केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

39. प्रो. ए.एन. महेश्वरी,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
मैसूर-570006

40. प्रो. के.सी. पंडा,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
भुवनेश्वर (उड़ीसा)-571007

41. प्रो. एन. वैद्य,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
अजमेर (राजस्थान)-385001

42. प्रो. एस.टी.वी. बविन्दविरुलु,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
श्यामला हिल्स,
भोपाल (म.प्र.)

विशेष रूप से आमंत्रित व्यक्ति :

43. डा. डब्ल्यू. ए.एफ. हापर,
क्षेत्र सलाहकार,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नं. 32, हिन्दी प्रचार सभा स्ट्रीट
टी नगर,
मद्रास-600017 (तमिलनाडु)

44. डा. आर.पी. कथूरिया,
क्षेत्र सलाहकार,
एन.सी.ई.आर.टी.,
एम.आई.ई.-161, ब्लाक नं. 6,
सरस्वती नगर, जवाहर चौक,
भोपाल-462017 (म.प्र.)

45. डा. के.एल. जोशी,
क्षेत्र सलाहकार,
एन.सी.ई.आर.टी.,
लक्ष्मी भवन बिल्डिंग,
कोठी नं. 203/1 और 219/1,
न्यू सा मिल, संजौली
शिमला-171006 (हि.प्र.)

46. डा. डी.के. भट्टाचार्य,
क्षेत्र सलाहकार,
एन.सी.ई.आर.टी.,
बायसी रोड, लैतमुखरा,
शिलांग-793003 (मेघालय)

ख. एन.आई.ई. के यूनिटों के प्रतिनिधि :

47. प्रो. डी.एस. रावत,
अध्यक्ष, एस.ई.पी. यूनिट
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

48. डा. आर.एम. कालरा,
अध्यक्ष, आई.आर. यूनिट,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

49. प्रो. आई.एस. चौधरी,
नीति अनुसंधान आयोजन और प्रोग्रामन विभाग,
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली-110016

ग. प्रशासन से :

50. सचिव,
एन.सी.ई.आर.टी.

51. मुख्य लेखा अधिकारी,
एन.सी.ई.आर.टी.

52. श्री एच.के.एल. चुग,
उप सचिव,
एन.सी.ई.आर.टी.

53. श्री जी.आर. दास,
उप सचिव,
एन.सी.ई.आर.टी.

54. श्री टी.एस. शर्मा,
जन संपर्क अधिकारी,
एन.सी.ई.आर.टी.

शैक्षिक अनुसंधान और नवीन प्रक्रिया समिति :

1. डा. वाई. रवि,
निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्,
अलिया प्राथमिक विद्यालय कैम्पस
आंध्रप्रदेश स्पोर्ट्स काउंसिल के सामने,
हैदराबाद-500001

2. डा. (श्रीमती) टी. ठाकुर,
प्रिंसिपल,
राज्य शिक्षण संस्थान,
जोरहट (असम)

3. डा. पारथा एन. मुकर्जी,
प्रोफेसर,
भारतीय सांख्यिकीय संस्थान,
संसनवल मार्ग,
नई दिल्ली-110016

4. डा. टी.वी. नायक,
निदेशक,
आदिवासी अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान,
गुजरात विद्यापीठ,
अहमदनगर (गुजरात)

5. प्रो. ए.एल. नागर,
दिल्ली स्कूल आफ इकोनामिक्स,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

6. प्रो. आगा अशरफ अली,
डीन और अध्यक्ष,
स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय,
हजरतबाल,
श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)

प्रोफेसर (श्रीमती) वी. अग्रवाल,
प्रोफेसर और अध्यक्ष,
मनोविज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

8 डा. आर. श्रीनिवासन,
शिक्षा के प्रोफेसर,
लक्ष्मी शिक्षा कालेज,
गांधीग्राम-624302
जिला मदुरई, तमिलनाडु

9. डा. बी.के. राय वर्मन,
वरिष्ठ प्रोफेसर,
समाज विकास परिषद,
53, लोदी स्टेट,
नई दिल्ली-110003

10. प्रो. बी.आर. काम्बले,
अध्यक्ष
इतिहास विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर, महाराष्ट्र

11. डा. के.सी. पंडा,
प्रोफेसर,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
भुवनेश्वर-751007

12. डा. एस.टी.वी.जी. अचारुलु,
प्रोफेसर,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
भोपाल-402013

13. डा. (श्रीमती) अमृत कौर,
प्रोफेसर,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
अजमेर-305001

14. डा. सी. शेशादरी,
प्रोफेसर,
क्षेत्रीय शिक्षा विभाग,
मैसूर-570006

15. डा. एस.एन. दत्ता,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
अजमेर-305001

16. डा. जे.एस. राजपूत,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
श्यामला हिल्स,
भोपाल-402013

17. डा. जी.बी. कानूनगो,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
भुवनेश्वर-751007

18. डा. ए.के. शर्मा,
प्रिंसिपल,
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज,
मैसूर-570006

19. डा. डी.एस. मुले,
प्रोफेसर,
डी.ई.एस.एस.एच.,

20. डा. आर.डी. शुक्ला,
प्रोफेसर,
डी.ई.एस.एम.

21. डा. एम.के. रैना,
प्रोफेसर,
डी.ई.जी.सी. एण्ड जी.

22. डा. प्रीतम सिंह,
प्रोफेसर,
डी.एम.ई.एस. एण्ड डी.पी.

23. डा. एल.सी. सिंह,
प्रोफेसर,
डी.टी.ई.एस.ई. एण्ड इ.एस.

शैक्षणिक समिति :

1. डा. बी.एस. पारख — अध्यक्ष और संयोजक
डीन (अकादमी)
2. डा. ए.एन. शर्मा, डीन (अनुसंधान)
3. डा. जी.एस. श्रीकान्तिया, डीन (समन्वय)
4. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग
5. अध्यक्ष, समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
7. अध्यक्ष, माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
8. अध्यक्ष, पूर्व विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
9. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान परामर्श और मार्गदर्शन विभाग
10. अध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग

11. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान, आयोजन और प्रोग्रामन विभाग

12. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग

13. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

14. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग

15. अध्यक्ष, पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग

16. श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग

17. डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर, समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग

18. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, शिक्षा-व्यावसायीकरण विभाग

19. डा. प्रीतम सिंह, माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (खाली है)

20. कु. आई. मलानी, प्रोफेसर, पूर्व-विद्यालय और प्राथमिक शिक्षा विभाग

21. डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श शिक्षा और मार्गदर्शन विभाग

22. डा.के.एन. सक्सेना, प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग

23. डा. एन. मला रेड्डी, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

24. डा. (श्रीमती) विमला अग्रवाल, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)

विभागीय सलाहकार बोर्ड :

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता —संयोजक
प्रोफेसर और अध्यक्ष

2. डा. (श्रीमती) सी. धर, प्रोफेसर

3. डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर

4. अध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग

5. अध्यक्ष, माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग

6. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग

7. डा. (कुमारी) एम.डी. बंगाली,
प्रो. और अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
बम्बई विश्वविद्यालय,
कालिना कैम्पस, बम्बई

8. डा. एस. नारायण राव,
प्रो. और अध्यक्ष,
मनोविज्ञान विभाग,
एस.डी. विश्वविद्यालय,
तिरुपति (आंध्र प्रदेश)

शिक्षक-शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. आर.सी. दास संयोजक
प्रो. और अध्यक्ष

2. डा. (कुमारी) एस. बिसारिया, प्रोफेसर

3. डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर

4. डा. एन.के. जंगिरा, रीडर

5. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग

6. अध्यक्ष, समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग

7. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग

8. प्रो. दुर्गानंद सिन्हा,
निदेशक,
ए.एन. सिन्हा समाज विज्ञान संस्थान,
पटना

9. डा. (कु.) यशु वान मेहता,
अध्यक्ष,
विशिष्ट शिक्षा विभाग,
एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय,
बम्बई

शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. ए.के. मिश्रा संयोजक
प्रो. और अध्यक्ष

2. डा. पी. रायजादा, रीडर

3. श्री जी. गुरु, रीडर

4. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग

5. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.

6. अध्यक्ष, पूर्व-विद्यालय और क्षेत्रीय शिक्षा विभाग

7. अध्यक्ष, माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग

8. डा. यू.सी. उपाध्याय,
सहायक महानिदेशक,
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्,
कृषि भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड,
नई दिल्ली-110001

9. प्रो. ब्रज किशोर,
प्रबंध विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

10. डा. एल. फर्डनिस,
डीन, गृह विज्ञान कालेज,
कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय,
धारवाड़

11. प्रो. ए.एल. जैन,
तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,
चंडीगढ़

12. प्रो. वी. रामलिंगास्वामी,
उप महानिदेशक,
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्,
अंसारी मार्ग, नई दिल्ली

विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. बी. गांगुली, — संयोजक
प्रो. और अध्यक्ष

2. डा. बी.डी. अत्रे, प्रोफेसर

3. डा. चेतन सिंह, प्रोफेसर

4. श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर

5. डा. जे. मित्रा, रीडर

6. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

7. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी./उसका प्रतिनिधि

8. अध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा, विस्तार सेवा विभाग

9. अध्यक्ष, पूर्व-विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग

10. प्रो. एल.एन. व्यास,
वनस्पति विभाग,
एस.आई.एस. विश्वविद्यालय,
उदयपुर, (राजस्थान)

11. प्रो. आर.सी. महरोत्रा,
रसायन विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

12. प्रो. एस.पी. पुरी,
भौतिकी विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

13. प्रो. एम.पी. सिंह,
गणित विभाग,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
नई दिल्ली-110016

पूर्व-विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. पी.एन. दवे —संयोजक
प्रोफेसर और अध्यक्ष
2. डा. के.जी. रस्तोगी, प्रोफेसर
3. श्रीमती ए. खन्ना, प्रोफेसर
4. कुमारी आई. मलानी, प्रोफेसर
5. डा. एस.डी. रोका, प्रोफेसर
6. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग
7. अध्यक्ष, समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग
8. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
9. अध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
10. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
11. प्रो. सत्यभूषण, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई. कैम्पस, अरबिन्द मार्ग, नई दिल्ली-1100016
12. डा. सच्चिदानंद, अध्यक्ष, नृविज्ञान और समाजशास्त्र विभाग, ए.एन. सामाजिक अध्ययन संस्थान, गोल घर के पास, पटना-800001 (बिहार)
13. श्री आई.एस. गौड़, अतिरिक्त निदेशक (बुनियादी), शिक्षा निदेशालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)

समाज विज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. श्री बी.एस. पारख, –संयोजक
   प्रोफेसर और अध्यक्ष
2. डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर
3. डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर
4. डा. एच.एल. बछोतिया, लेक्चरर
   (क) डा. अर्जुन देव, डी.ई.एस.एस. एवं एच. में प्रोफेसर
5. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
7. अध्यक्ष, माप मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
8. प्रो. के.एस. गिल, अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)
9. प्रो. आर.एन. घोष, केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विभाग, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
10. प्रो. नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरु, विश्वविद्यालय, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली

क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. जी.एस. श्रीकान्तिया, –संयोजक
   प्रोफेसर और अध्यक्ष
2. डा. विक्रमजीत सिंह, प्रोफेसर
3. डा. वुल्फलांग, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., मेघालय, शिलांग
4. डा. एस.सी. दास, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर (उड़ीसा)

कार्यशाला विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. पी.के. भट्टाचार्य –संयोजक
   रीडर और अध्यक्ष
2. श्री अबू बाशर, तकनीकी अधिकारी
3. श्री आर.आर. शर्मा, तकनीकी अधिकारी
4. श्री वेद रत्न, प्रोफेसर, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग
5. श्रीमती एस. भट्टाचार्य, रीडर, पूर्व विद्यालय और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
6. श्री एस.एन. रे, लेक्चरर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग।
7. प्रो. एन.के. तिवारी, यांत्रिक इंजीनियरी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली-110016

8. श्री एच.एन.पी. पोद्दार, वैज्ञानिक इंचार्ज, कार्यशाला, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, हिल साइड रोड, नई दिल्ली-110014

माप, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग का विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. डा. एच.एस. श्रीवास्तव, प्रोफेसर और अध्यक्ष – संयोजक
2. डा. ए.डी. बनर्जी, रीडर
3. श्री जे.पी. अग्रवाल, रीडर
4. डा. सी.एल. लाल, लेक्चरर
5. अध्यक्ष, समाजविज्ञान और मानविकी में शिक्षा विभाग
6. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग
7. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग
8. डा. आर.एन. महरोत्रा, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 36 छात्र मार्ग, दिल्ली-110006
9. प्रो. पी.के. राय, एच-1456, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली

पुस्तकालय सलाहकार समिति

1.	प्रोफेसर बी.एस. पारख (डीन ए) अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस. एवं एच.	अध्यक्ष
2.	प्रो. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता अध्यक्ष, डी.ई.पी.सी. एवं जी.	सदस्य
3.	प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव अध्यक्ष, डी.एम.ई.एस. एवं डी.पी.	सदस्य
4.	प्रो. पी.एन. दवे अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.	सदस्य
5.	प्रो. ए.के. मिश्रा अध्यक्ष, डी.वी.ई.	सदस्य
6.	प्रो. बी. गांगुली अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.	सदस्य
7.	श्री जयपाल नांगिया अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	सदस्य
8.	प्रो. (श्रीमती) आदर्श खन्ना डी.टी.ई.एस.ई. एवं ई.एस. के अध्यक्ष की प्रतिनिधि	सदस्य

9.	डा. पी.के. भट्टाचार्य अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग	सदस्य
10.	व्यावसायिक सीनियर (उप पुस्तकाध्यक्ष)	सदस्य
11.	श्री एफ.सी. कत्याल व्यावसायिक सहायक पुस्तकालय संघ के प्रतिनिधि	सदस्य
12.	अध्यक्ष पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग	संयोजक

पत्रिका कक्ष की सलाहकार समिति/संपादक मंडल

1.	डा. पी.एल. मल्होत्रा निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.	अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक एन.ई.आर.टी.	सदस्य
3.	श्री वीर राघवन, सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001	सदस्य
4.	प्रो. सत्य भूषण अधिशासी निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई.कैम्पस, नई दिल्ली-1100016	सदस्य
5.	डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन संयुक्त शिक्षा सलाहकार (संस्कृति), शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य
6.	प्रो. एम.आर. मीदे पूना विश्वविद्यालय, पूने	सदस्य

7.	प्रो. रशीदुद्दीन खान जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नया महरोली रोड, नई दिल्ली-110054	सदस्य
8.	प्रो. एल.एस. कोठारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007	सदस्य
9.	प्रो. दुर्गानंद सिन्हा, निदेशक, ए.एन. सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान पटना-800001	सदस्य
10.	प्रो. आर.एन. घोष, सी.आई.ई.एफ.एल. हैदराबाद-500007	सदस्य
11.	प्रो. नामवर सिंह जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नया महरौली रोड, नई दिल्ली	सदस्य
12.	डीन (शैक्षिक)	पदेन
13.	डीन (अनुसंधान)	सदस्य
14.	डीन (समन्वय)	सदस्य
15.	अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	सदस्य
16.	अध्यक्ष, शिक्षक-शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा और विस्तार सेवा	सदस्य
17.	अध्यक्ष, विज्ञान और गणित में शिक्षा विभाग	सदस्य
18.	प्रो. (कुमारी) एस.के. राम डी.ई.एस.एस.एच.	सदस्या
19.	प्रो. ओ.एस. देवल, पत्रिका कक्ष	संयोजक

परिशिष्ट-घ

1984-85 के दौरान समितियों द्वारा लिए गए मुख्य निर्णय

कार्यकारिणी समिति

कार्यकारिणी समिति की 62वीं और 63वीं बैठकें क्रमशः 4 जून, 1984 और 24 नवंबर, 1984 को हुईं। नैतिक शिक्षा की पुस्तकों पर हो रही चर्चा के दौरान निदेशक ने उन परिस्थितियों का हवाला दिया जिनकी वजह से नियत तारीख पर लेखकों से पाण्डुलिपि प्राप्त नहीं हो सकीं। समिति ने भविष्य में नैतिक शिक्षा के स्थान पर ''मूल्य अभिविन्यास शिक्षा'' का प्रयोग करने के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। शिक्षा सचिव श्रीमती सरला ग्रेवाल का यह सुझाव था कि मुख्य अभिविन्यास शिक्षा से संबद्ध एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न कार्यकलापों में शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय के विशेष सचिव प्रोफेसर किरीट जोशी का सहयोग प्राप्त करना चाहिए। यह निर्णय लिया गया कि पाठ्यचर्या की एक प्रति प्रो. किरीट जोशी के पास भेजी जाए जिसे वे और एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक अंतिम रूप दें। निदेशक ने समिति को यह बताया कि एन.टी.एस. से संबद्ध प्रो. रईस अहमद की अध्यक्षता से बनायी गई पुनरीक्षण समिति की दो बैठकें हो चुकी हैं।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन से संबद्ध कार्य की प्रगति का पुनरीक्षण किया गया और यह बताया गया कि इस दिशा में मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक में काफी प्रगति हुई है। जिन राज्यों में धीमी प्रगति हो रही है वे हैं, आंध्र प्रदेश, नागालैण्ड, सिक्किम और मणिपुर। अतः इस दिशा में इन्हें और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

समिति ने यूनिसेफ के जरिए प्राप्त हो रही सहायता की उपयोग-दर पर संतोष व्यक्त किया जिसमें कि काफी सुधार हुआ है। समिति को यह बताया गया कि परियोजनाओं को लागू करने में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करने और अगले मुख्य प्रचालन-योजना में शामिल करने के लिए नए-नए दृष्टिकोणों का सुझाव देने के लिए एक कार्यकारी दल की स्थापना की गई है। समिति ने यह भी इच्छा व्यक्त की है कि एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक को चाहिए कि तेजी से पूरी हो रही यूनिसेफ की सभी परियोजनाओं का मूल्यांकन बाहरी एजेन्सियों से करवाए।

कार्यकारिणी समिति ने इस बात पर संतोष व्यक्त किया है कि समष्टि शिक्षा की परियोजना में काफी प्रगति हुई है और समष्टि शिक्षा थोड़े ही समय में काफी फैल गई है। समिति ने यह निर्णय लिया है कि एक छोटे दल की स्थापना की जाए जो उन नवीन प्रक्रियात्मक सुझावों के ब्यौरों का पता लगाएगा जिन्हें एन.सी.ई.आर.टी. के समष्टि शिक्षा कक्ष प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय को भेज सकें और जो कि नव-साक्षर व्यक्तियों के लिए पठन सामग्री उपलब्ध कराने में सहायक हो तथा एन.सी.ई.आर.टी. 1984-85 में ही काल्पनिक पोस्टर चार्ट और डिजाइनों का एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता का आयोजन करे जिसमें प्रथम और द्वितीय पुरस्कार क्रमशः रु. 5,000.00 और रु. 3,000.00 के हों।

गैर शैक्षिक स्टाफ की 8 साल की सेवा के बाद समयबद्ध पदोन्नति करने से संबद्ध मामले पर कार्यकारिणी समिति ने एक समिति का गठन करने का निर्णय लिया है जो कि वर्तमान भर्ती नियमों में आवश्यकतानुसार यदा-कदा संशोधन करने के साथ-साथ इस समस्या के सभी पहलुओं की जांच करे और 4-5 महीने के अंदर वह अपनी रिपोर्ट दे दें। इस समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :

संयुक्त सचिव (विद्यालय) शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय	अध्यक्ष
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी.	सदस्य
सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.	सदस्य
उप वित्त सलाहकार शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय	सदस्य
उप सचिव (स्थापना) एन.सी.ई.आर.टी.	संयोजक

समिति ने यह भी निर्णय लिया कि उन मामलों को जिनमें सेलेक्शन ग्रेड अथवा ऊपर के ग्रेड में उनके वेतन के निर्धारण में कोई खास वित्तीय फर्क न पड़ता हो, विचार के लिए विक्षीय सलाहकार के पास भेज दिया जाए।

समिति ने विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र, अहमदाबाद में उस गबन के मामले पर काफी चर्चा की और यह निर्णय लिया कि इस संबंध में परिषद् को निम्नलिखित कार्रवाई करनी चाहिए :–

(क) गबन किए गए 3.11 लाख रुपए को विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र से वसूल किया जाए जिससे कि इसके कारण परिषद् में हुई हानि को पूरा किया जा सके और परिषद् की रुचि को बरकरार रखा जा सके। (ख) इस राशि की वसूली हो जाने पर परिषद् 1983 में कार्यकारिणी द्वारा मंजूर की गई राशि विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र को दे सकती है। (ग) विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र को सभी प्रकार की सावधानियां बरतनी चाहिए जिससे कि भविष्य में रुपयों का गबन न हो सके और (घ) परिषद् को चाहिए कि भविष्य में सार्वजनिक धन की हानि इस रूप में न हो इसके लिए विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र की लेखा की परीक्षा करने के लिए हर वर्ष परिषद् एक लेखा परीक्षक-दल वहां भेजे। लेखा-परीक्षकों द्वारा की जाने वाली यह जांच परिषद् के नियमों के अधीन चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा विक्रम ए. साराभाई सामुदायिक विज्ञान केन्द्र की लेखा की जांच के अतिरिक्त होगी।

समिति ने केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान में कुछ नए पद बनाने के संबंध में की गई कार्रवाई पर संतोष व्यक्त किया और अपनी मंजूरी दे दी। समिति ने कार्यसूची में दिए गए दो लोगों की विदेशी सेवा में मंजूर की गई अवधि से भी अधिक समय तक रुके रहने की अवधि का नियमन करने की मंजूरी दे दी। यह मंजूरी देते समय अध्यक्ष महोदय ने यह मत प्रकट किया कि भविष्य में इस तरह के मामले नहीं होने चाहिए और इसके लिए जो विधि अपनायी जाती है उसे सरल बनाने की कोशिश की जाए।

एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक ने समिति के सदस्यों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कराया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की तरह पुस्तकालय के योग्य स्टाफ पर मेरिट पदोन्नति योजना लागू करने से संबद्ध पूरे मामले की जांच की जाएगी और फाइलों में इन्हें लिखकर परिषद् के वित्तीय सलाहकार के जरिए इन पर निर्णय लेने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के अध्यक्ष के पास भेज दिया जायेगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक ने समिति के सदस्यों को इस बात से भी अवगत कराया कि एन.आई.ई. की कार्य-पद्धति को सरल बनाने के लिए इसे हाल ही में 12 मुख्य विभागों में बांट दिया गया है।

समिति ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। प्रगति का पुनरीक्षण करते समय शिक्षा समिति ने यह सुझाव दिया कि यूनिसेफ परियोजनाओं का, जिन्हें बाहर की एजेन्सियों को सौंपा गया है, मूल्यांकन तेजी से पूरा करना चाहिए।

संयुक्त निदेशक ने समिति के सदस्यों का ध्यान विशेष रूप से आलोच्य वर्ष में परिषद् द्वारा पाठ्यपुस्तकों का

मूल्यांकन, मूल्य अभिविन्यस्त शिक्षा, स्वतंत्रता संग्राम का शिक्षण आदि जैसे कुछ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में किए गए कार्यों की ओर आकर्षित किया। बच्चे पढ़ने में दिलचस्पी लें इसके लिए "सीखने के लिए पढ़ना" नामक एक नया कार्यक्रम चलाया गया है। समिति ने परिषद् द्वारा प्रकाशित की गई "साइन्स एण्ड मैन" "नेहरू" नामक चयनिकाओं की प्रशंसा की। इस संबंध में समिति का सुझाव था कि इन चयनिकाओं का हिन्दी में भी रूपांतरण कर देना चाहिए। समिति का यह भी सुझाव था कि 'अपंगों की शिक्षा' के क्षेत्र में परिषद् द्वारा किए गए कार्य को सभी संबंधित लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। समिति ने 1983-84 वर्ष के तदर्थ वार्षिक रिपोर्ट का अनुमोदन कर दिया।

समिति को यह बताया गया कि दिल्ली के ईसाई स्कूलों में लगायी गई पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन लगभग पूरा होने वाला है और इस संबंध में अंतिम रिपोर्ट एक सप्ताह के अंदर तैयार हो जाने की आशा है। समिति ने इस दिशा में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।

समिति ने परिषद् द्वारा रजत जयंती समारोह के अंग के रूप में विज्ञान केन्द्र खोलने की दिशा में की गई कार्रवाई पर संतोष व्यक्त किया। समिति ने विज्ञान केन्द्र खोलने के विचार का स्वागत किया और यह सुझाव दिया कि इस योजना को बनाने तथा लागू करने में राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् जैसी विज्ञान शिक्षा में रुचि रखने वाली अन्य एजेन्सियों की सलाह और सहायता भी प्राप्त की जाए। समिति चाहती थी कि इस परियोजना की एक ब्यौरेवार रिपोर्ट तैयार करके उसके सामने रखी जाए।

नई पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करते समय समिति ने पाठ्यपुस्तकों का समय-समय पर संशोधन करते रहने के महत्व पर बल दिया जिससे कि ये पाठ्य पुस्तकें अप्रचलित न हो जाएं। एन.सी.ई.आर.टी. को उचित समय पर ही इस कार्य को शुरू कर देना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के पुनरीक्षण के संबंध में एक समय-सारणी बनाकर उसे मंत्रालय में भेज देना चाहिए। परिषद् को चाहिए कि वह पुस्तकों का पुनरीक्षण खुले दिमाग से करे। इस कार्य में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को परस्पर पूरक भूमिका निभानी चाहिएं।

समिति ने समूह गान के जरिए राष्ट्रीय एकता के संबंध में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया पर साथ ही समिति का यह सुझाव था कि गीतों का चयन करते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए। अध्यक्ष ने इस संबंध में कुछ साल पहले बंबई में उनके द्वारा आयोजित समूह गान के सफल कार्यक्रम का हवाला देते हुए यह सुझाव दिया कि उस कार्यक्रम में गायी गई कुछ गीतों को परिषदों द्वारा तैयार किए जा रहे गीतों में शामिल कर लेना चाहिए। इनमें उन गीतों को भी शामिल कर लेना चाहिए जो कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान काफी लोकप्रिय रहे हैं। श्री बी.एम. जोशी ने बताया कि यह कार्यक्रम महाराष्ट्र में काफी लोकप्रिय रहा है और वह कुछ लोकप्रिय गीतों को परिषद् के पास भेज देंगे। शिक्षा सचिव ने स्वर्गीय प्रधान मंत्री के निर्देशों का हवाला देते हुए बताया कि समूह गान कार्यक्रम को लागू करने में क्षेत्रीयता का कोई प्रश्न नहीं होना चाहिए। इस कार्यक्रम में स्थानीय तथा क्षेत्रीय गीत भी लिया जा सकता है। अन्य स्वायत्त निकाय अथवा केन्द्रीय सरकार के विभाग ने दी गई संयुक्त सेवा के आधार पर परिषद् के कर्मचारियों को सेवानिवृत्त-लाभ के अनुदान पर विचार करते समय समिति का यह विचार था कि समता की दृष्टि से व्यक्तिगत मामलों पर भी सहानुभूति से विचार करना चाहिए। अतः समिति की यह सलाह थी कि ऐसे मामलों को मंत्रालय में भेजा जा सकता है जिनकी सिफारिश वित्त समिति पहले ही कर चुकी है।

अभिकल्पित्र साक्षरता परियोजना में हुई प्रगति का पुनरीक्षण करते समय समिति ने इस प्रकार के कार्यक्रम को लागू करने में निरंतर अनुसंधान, मानिटरन और मूल्यांकन करते रहने की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यक्रम को लागू करने से संबद्ध आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं की कमी की ओर भी ध्यान दिया गया। इस संबंध में मंत्रालय निकट भविष्य में एक बैठक करने जा रहा है।

24 नवंबर 1984 की बैठक में कार्यकारिणी समिति ने स्वर्गीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की असमय मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पास किया और उनके सम्मान में सदस्य एक मिनट तक मौन खड़े रहे।

वित्त समिति

वित्त समिति की 62वीं और 63वीं बैठकें क्रमशः 30 अप्रैल, 1984 और 17 नवंबर, 1984 को हुईं। काफी चर्चा के बाद वित्त समिति ने यह सुझाव दिया कि परिषद् के वर्ग डी के कर्मचारियों के लिए ऊनी जर्सी खरीदने के संबंध में सिफारिश करने के लिए निदेशक एक उपयुक्त क्रय-समिति का गठन करें। यदि समिति के विचार से सहकारी स्टोरें अथवा खादी ग्रामोद्योग भवन से जर्सी के लिए उपयुक्त कपड़ा न मिल रहा हो या यदि कोई ऐसा कारण हो जिसे लिखित रूप में दर्ज न किया जा सकता हो तो निदेशक खुले बाजार से ऊनी जर्सी खरीदने की स्वीकृति दे सकते हैं। खुले बाजार में ऊनी जर्सी खरीदते समय निर्धारित नियमों का पालन करना होगा और खुले बाजार से खरीदी गई जर्सी की कीमत केन्द्रीय सरकार के वर्ग 'डी' के कर्मचारियों को दी गई जर्सियों की कीमत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

वित्त समिति ने यह सिफारिश की है कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के संबंध में प्रो. एम.एम. पुरी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से वसूल की जाने वाली रु. 8,908.42 पैसे की राशि बट्टे खाते में डाल दी जाए।

वित्त समिति इस बात से सहमत थी कि प्रायोगिक परियोजनाओं की सहायता-योजना से संबद्ध ज्ञापन-अनुबंध में दर्शायी गई 185 संस्थाओं का व्यय-विवरण प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है और 50 रुपये से लेकर 700 रुपये तक के छोटे अनुदान के रूप में उन्हें दी गई कुल रुपये 63,987.10 पैसे की राशि बट्टे खाते में डाल दी जाए।

वित्त समिति परिषद् के इस प्रस्ताव से सहमत नहीं थी कि उन कर्मचारियों को, जिनके नाम अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने विशेष रूप से सुझाए थे, उस अवधि के दौरान, जिसमें वे बाहर रहे हैं, ड्यूटी पर माना जाए क्योंकि यदि ऐसा किया गया तो यह परंपरा परिषद् के हित में नहीं रहेगी। वित्त समिति ने विशेष मामले के रूप में यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त वर्तमान पदों को सितंबर 1984 तक रखने की स्वीकृति दे दी।

वित्त समिति ने भारत सरकार के अनुमोदन पर जन आंदोलन के रूप में समूह गान की योजना से संबद्ध कार्य के लिए सेक्शन आफिसर के एक नया पद, असिस्टेन्ट का एक नया पद और लेखा डिवीजन के दो नए पद (एक हिन्दी के और एक अंग्रेजी के) बनाने के लिए परिषद् द्वारा की गई कार्रवाई को स्वीकृति दे दी। वित्तीय समिति ने इन पदों को स्थायी बनाने के प्रस्ताव का भी अनुमोदन कर दिया।

एन.सी.ई.आर.टी. के वित्त सलाहकार की सहमति से समष्टि शिक्षा कार्यक्रम के लिपिक पदों को जारी रखने के लिए की गई कार्रवाई को वित्त समिति ने संपुष्टि कर दी।

वित्त समिति ने 1973 में केरल विश्वविद्यालय को रु. 4400.00 के चार छोटे-छोटे ट्रांजिस्टरीकृत टेप रिकार्ड दान में देने के संबंध में एन.सी.ई.आर.टी.के निदेशक द्वारा की गई कार्रवाई की संपुष्टि की। वित्त समिति ने यह निर्णय लिया कि एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य प्रकाशनों और स्टाक प्रिंटिंग पेपर को रखने के लिए एन.आई.ई. कैम्पस में बनाए जाने वाले गोदाम से सम्बद्ध ब्यौरेवार प्रस्ताव को एक फाइल के रूप में वित्त सलाहकार को दे दिया जाए जिससे कि वह इस मामले पर वित्त मंत्रालय से विचार-विमर्श कर सके।

समिति ने गैर-हकदार कर्मचारियों को हवाई यात्रा करने की अनुमति देने में कड़ा रवैया अपनाने के लिए कहा। वित्त समिति इस बात से सहमत थी कि भविष्य में निदेशक को गृह निर्माण पेशगी अधिनियम के तहत योग्य व्यक्तियों को छूट देने का अधिकार दिया जा सकता है। समिति ने एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यशाला विभाग के तकनीकी स्टाफ को खाकी ड्रिल क्लाथ के ओवरकोट देने के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया।

वित्त समिति ने स्वर्गीय प्रो. बी. शरण को दी गई गृह निर्माण पेशगी की मासिक किश्तों में वसूली करने के प्रस्ताव का और स्वर्गीय प्रो. बी. शरण की पत्नी श्रीमती पी.एल. माथुर के अनुरोध पर संपत्ति के स्थानांतरण के लिए अनापत्ति प्रमाण-पत्र देने का अनुमोदन कर दिया। एन.सी.ई.आर.टी. के उद्यान विभाग के लिए एक सलाहकार की भर्ती का प्रस्ताव अनुमोदित किया गया।

समिति ने 1984-85 के शिक्षा सत्र से क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के निदर्शन विद्यालयों में शुरू किए जाने वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने वाले छात्रों से छात्रवृत्ति देने के प्रस्ताव को शिक्षा मंत्रालय के विद्यालय प्रभाग में भेजने की सलाह दी है।

हर साल खरीद के लिए जो प्रक्रिया अपनायी जाती है उसी के अनुसार 2 लाख रुपए की अनुमानित लागत से एक शब्द-संसाधित उपलब्ध करने और उस पर हर साल 23 हजार रुपए होने वाले खर्च से संबद्ध प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया।

शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों को पुरस्कार की राशि में वृद्धि करने के लिए संगोष्ठी पठन कार्यक्रम से संबद्ध प्रस्तावों को अनुमोदित किया गया। समिति ने पी.एच.डी. थीसिस/शोध रिपोर्टों के प्रकाशन के लिए अनुदान की राशि रु. 3,000.00 से बढ़ाकर रु. 5,000.00 करने के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया।

समिति ने चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों में सेक्शन अफसर के एक नए पद और सहायक प्रोग्राम कोआर्डिनेटर के एक नए पद बनाने से संबद्ध निर्णय की संपुष्टि कर दी। समिति ने (डी.टी.ए. विंग में) केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान में मशीन-मैन ग्रेड-II एवं कम्पोजिटर का एक नया पद बनाने से संबद्ध निर्णय की संपुष्टि कर दी।

समिति के अनुपयोजन बोर्ड द्वारा सिफारिश की गई जीप के अनुपयोगी घोषित करने से संबद्ध प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया और उसके स्थान पर एक नयी वान खरीदने से संबद्ध प्रस्ताव का भी अनुमोदन कर दिया। समिति ने 1983-84 वर्ष के लिए परिषद् के बोनस पाने योग्य कर्मचारियों के लिए तदर्थ बोनस का अनुदान देने से संबद्ध प्रस्तावों का अनुमोदन कर दिया। शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों की छात्रवृत्ति रु. 250.00 प्रति मास से बढ़ाकर रु. 325.00 प्रति मास करने के प्रस्ताव का वित्त सलाहकार द्वारा किए गए अनुमोदन की संपुष्टि कर दी।

समिति ने 24 अस्थायी शैक्षिक पदों को स्थायी पद में बदलने के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। रीडरों के 10 अस्थायी पदों को स्थायी पदों में बदलने के लिए निदेशक द्वारा की गई कार्रवाई की भी संपुष्टि कर दी गई।

समिति ने यह पाया कि सेवानिवृत्ति लाभ को मंजूरी से संबद्ध आदेश गृह मंत्रालय से जारी हुए हैं। समिति ने यह सिफारिश की कि यह लाभ उन लोगों को भी दिए जाएं जो 1976 के बाद सेवा निवृत्त हुए हैं और साथ ही यह सलाह भी दी गई है कि परिषद् इस आशय का आदेश प्राप्त करने के लिए इस मामले को मंत्रालय में भेजे।

समिति ने निदर्शन मानचित्र, कवर डिजाइन आदि बनाने वाले बाहरी कलाकारों के पारिश्रमिक को बढ़ाने से संबद्ध प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया है।

समिति ने सुपरवाईजर की सेवा को अनिवार्य सेवा मानने तथा उन्हें बिना किराया के मकान देने से संबद्ध प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया है।

समिति ने प्राथमिक विज्ञान किट की रु. 300.00 की संशोधित मूल्य से संबद्ध प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया है।

समिति ने अरुणाचल प्रदेश के लिए कक्षा 1 की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक की रु. 9.60 की प्रस्तावित मूल्य से संबद्ध प्रस्ताव को एक अति विशिष्ट मामले के रूप में अनुमोदित कर दिया।

भवन एवं निर्माण समिति

6.3.1985 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की भवन एवं निर्माण समिति की बैठक हुई।

भवन निर्माण से संबद्ध कार्य का लगातार मानिटरन करते रहने के लिए समिति ने निम्नलिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाने का निर्णय लिया है :

1.	सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.	अध्यक्ष
2.	सहायक वित्त सलाहकार (निर्माण)	सदस्य
3.	प्रवर वास्तुविद, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग	सदस्य
4.	मुख्य इंजीनियर (निर्माण) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग का एक प्रतिनिधि	सदस्य

समिति ने सिफारिश की है कि एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक का वित्तीय अधिकार 1.5 लाख रुपए तक बढ़ा दिया जाए और इस प्रस्ताव को फाइल में लिखकर पुष्टि के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के वित्त सलाहकार के पास भेजा जाए।

समिति ने निम्नलिखित प्रस्तावों का अनुमोदन किया :

1. एन.आई.ई. कैम्पस में बने दफ्तरों में इस्तेमाल के लिए खुले कुओं से एक अलग बाहर पाइप लाइन की व्यवस्था करना।

2. भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में जमीन के अंदर संप औ पंप हाउस का निर्माण।

3. एन.आई. कैम्पस में चौकीदारों के लिए डार्मिटरी का निर्माण।

4. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर में लेखा शाखा के ऊपर पहली मंजिल पर एक लैक्चर हाल का निर्माण।

5. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में और भोपाल, भुवनेश्वर और अजमेर के क्षेत्रीय कालेजों में भी गेस्ट हाउस का निर्माण।

6. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के कैम्पस में स्टाफ क्वार्टरों का निर्माण।

7. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर के होस्टलों के धन पर 26 आर.सी.सी. की टंकी लगाना और पुराने स्टाफ-क्वार्टरों में लगी नष्ट हुई/खराब हो गई जी.आई. टंकियों को बदलना।

8. एम.एम.टी.सी. कालोनी में बने एन.सी.ई.आर.टी. के क्वार्टरों में प्लास्टिक की पानी की टंकी लगाना।

9. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर की चारदीवारी चरण-3 (कालेज कैम्पस के उत्तरी और दक्षिणी ओर) का निर्माण।

10. एन.आई.ई. कैम्पस में एक छोटा वन बनाने का प्रस्ताव।

11. अजित सिंह मार्ग की ओर की एन.सी.ई.आर.टी. की चारदीवारी को ऊपर उठाना।

12. 1983-84 वर्ष के दौरान अजमेर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों द्वारा हाथ में लिए गए तीन तुरंत पूरा करने वाले कार्य।

13. कैम्पस की सड़कों (चरण-1) की विशेष मरम्मत करना जिनमें भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के सड़कों को पक्का करना भी शामिल है।

14. भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज के डी.एम. स्कूल भवन का विस्तार।

15. मैसूर के क्षेत्रीय/शिक्षा कालेज की विज्ञान-प्रयोगशालाओं के विस्तार में प्राणि-विज्ञान और रसायन प्रयोगशालाओं में अतिरिक्त सुविधाएं उपलब्ध कराना।

16. अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में (उत्तरी ओर) चारदीवारी का निर्माण।

17. एम.एम.टी.सी./एस.टी.सी. कालोनी में एन.सी.ई.आर.टी. क्वार्टरों (डी-टाइप फ्लैट) में एम.एस. ग्रिल उपलब्ध कराना तथा उन्हें लगाना।

वार्षिक आम सभा की बैठक

31 दिसबंर 1984 को शिक्षा-सचिव श्रीमती सरला ग्रेवाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) की वार्षिक आम सभा की 21वीं बैठक हुई।

1983-84 वर्ष की तदर्थ वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय संयुक्त निदेशक डा. ए.के. जलालुद्दीन ने कुछ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में परिषद् द्वारा हाथ में लिए गए कार्यकलापों की ओर सदस्यों का विशेष ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण से संबद्ध कार्यक्रमों को परिषद् प्राथमिकता देती रही है। इस क्षेत्र में अधिक बल नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों और विचारों के संस्थापन पर दिया गया है। परिषद् द्वारा हाथ में लिया गया एक अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम शिक्षा का मूल्य अभिविन्यास है। प्रो. डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में एक सलाहकार निकाय का गठन किया गया है। मूल्य-अभिविन्यास की निर्देशात्मक सामग्रियों के विकास और उनके मूल्यांकन के लिए निर्देशक सिद्धांत तैयार किए गए हैं। बच्चों के लिए पुस्तक, पुस्तिकाओं तथा अन्य पठन सामग्री तैयार करने के लिए 'सीखने के लिए पढ़ना' नामक एक नवीन प्रक्रियात्मक परियोजना बड़े पैमाने पर चलायी गई है। परिषद् ने पाठमालाओं का प्रकाशन शुरू कर दिया है और इस दिशा में 'साइन्स एण्ड मैन' नामक पहली पुस्तक का विमोचन माननीय शिक्षा मंत्री कर चुके हैं। एन.सी.ई.आर.टी में 'क्लास' परियोजना के अधीन अभिकलित्र सहायक निर्देश और अभिकलित्र साक्षरता का पाठ्यक्रम बनाने में भी सहयोग दिया है। एन.सी.ई.आर.टी. की देखरेख में हाल ही में स्थापित की गई केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्था ने मृदु सामग्री के विकास और शिक्षा के कार्य में लगे कार्मिकों के प्रशिक्षण से संबद्ध कुछ मुख्य कार्यक्रम अपने हाथ में लिए हैं। उन्होंने राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन में हुई प्रगति से भी सदस्यों को अवगत कराया। चर्चा के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक ने बताया कि परिषद् उन राज्यों को भी सहायता प्रदान कर रही है जो हाल ही में 10 + 2 की शिक्षा-पद्धति को अपना रहे हैं।

चर्चा के दौरान प्रो. बेदमणि मैनुअल ने शिक्षा के स्तर में सुधार लाने के लिए परिषद् द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए प्रयासों का स्वागत किया। उन्होंने विशेष रूप से इनसेट के अधीन किए गए कार्यक्रमों और अभिकलित्र-साक्षरता के नए कार्यक्रमों की प्रशंसा की।

असम के एक सदस्य ने यह बताया कि देश के अधिकांश राज्यों की तरह उनके राज्य में भी बच्चों के बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने की समस्या काफी जटिल है। उन्होंने इस समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त मात्रा में निवेश उपलब्ध कराने की दृष्टि से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में परिवर्तन लाने की आवश्यकता पर बल दिया। शिक्षा समिति ने इस विचार का स्वागत किया और बताया कि सरकार पूर्वोत्तर क्षेत्र में एक नया क्षेत्रीय कालेज खोलने पर विचार कर रही है और वह आशा करती है कि इस कालेज के खुल जाने से इस क्षेत्र में राज्यों की समस्याओं पर अधिक ध्यान दिया जाने लगेगा।

चर्चा के बाद आम सभा ने कार्यकारिणी समिति द्वारा प्रस्तुत की गई 1983-84 वर्ष के परिषद् की तदर्थ वार्षिक रिपोर्ट का अनुमोदन कर दिया।

शिक्षा सचिव ने यह बताया कि राज्य बजट में शिक्षा पर जितनी राशि का प्रावधान किया गया है वह पर्याप्त नहीं है। उन्होंने राज्यों के माननीय मंत्रियों और अन्य प्रतिनिधियों से यह अपील की कि वे विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा के लिए पर्याप्त राशि का प्रावधान कराएं जिससे कि नियत की गई तरीख तक प्रारंभिक शिक्षा का सार्वीकरण वास्तविकता बन जाए। क्योंकि अधिकांश महिलाएं निरक्षर हैं। अतः इनकी शिक्षा के लिए विशेष प्रयास करना है। उन्होंने सदस्यों को यह बताया कि अधिक से अधिक साक्षर बनाने वालों को इस साल भी राष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाएंगे। 7वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान इस कमी को दूर किया जा सकता है। उन्होंने राज्यों से यह देखने के लिए अनुरोध किया कि उन्हें दी गई राशि का उचित उपयोग किया जा रहा है कि नहीं।

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा सचिव ने यह बताया कि राज्य की 7वीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिए 55 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है जबकि 6वीं योजना में प्रावधान 26 करोड़ रुपए का था। 1985-86 की वार्षिक योजना में राज्य ने शिक्षा के लिए 5 करोड़ रुपए का प्रावधान किया था, पर योजना आयोग ने यह राशि कम करके 4 करोड़ रुपए कर दी। उन्होंने शिक्षा सचिव से अनुरोध किया कि इस मामले पर वह योजना आयोग से बातचीत करे और कहे कि वह राज्य

सरकार द्वारा प्रस्तावित राशि में कोई कटौती न करे। शिक्षा सचिव ने इस आशय का एक पत्र योजना आयोग को लिखने का वादा किया।

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा सचिव ने यह भी चाहा है कि उनके द्वारा आयोजित राज्य में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का गहराई से अध्ययन करने से संबद्ध फरवरी के अंत में होने वाली संगोष्ठी में एन.सी.ई.आर.टी. भाग ले। उन्होंने यह भी कहा कि रोजमर्रा के प्रशासनिक कार्यों में विभाग जो समय लगाता है, उस समय में अभिकलित्रीकरण सहित आधुनिक प्रबंध तकनीक अपनाने पर कटौती की जा सकती है। इस क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. और एन.आई.ई.पी.ए. की सहायता राज्य सरकार के लिए सहायक होगी। शिक्षा सचिव ने यह सुझाव दिया कि इस संबंध में एक कार्यशाला आयोजित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. पहल कर सकती है जिससे कि तैयार की गई सामग्री सभी राज्यों के लिए उपयोगी हो सके।

पंजाब के राज्यपाल के सलाहकार ने यह बताया कि हालांकि राज्य में 10 + 2 की शिक्षा पद्धति लागू करने का निर्णय लिया जा चुका है पर अभी तक यह पद्धति लागू नहीं हुई है। नई पद्धति को लागू करने में जो रुकावटें आ रही हैं, उन्हें दूर करने के लिए वह मंत्रालय तथा एन.सी.ई.आर.टी. की सलाह चाहते हैं। उन्होंने बताया कि इस समय राज्य में जो पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है उसमें विज्ञान-शिक्षण की तुलना में भाषा पर अधिक बल दिया गया है और वे इस असंतुलन को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। एक अन्य समस्या यह है कि राज्य में शिक्षा का स्तर विशेष रूप से विज्ञान और गणित के स्तर में गिरावट आई है। हम कमी वाले क्षेत्रों का पता लगाने तथा कमियों को दूर करने का तरीका ढूंढने से संबद्ध विशेष परियोजनाओं को हाथ में लेने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की सहायता चाहते हैं। शिक्षा-सचिव ने सलाहकार को यह जानकारी दी कि राज्य को आवश्यक सहायता देने के लिए राज्य में तीन प्रवर अधिकारियों को भेजने का निर्णय वह पहले ही ले चुकी है। वह चाहती थी कि इन समस्याओं पर ब्यौरेवार चर्चा करने के लिए संयुक्त सचिव (विद्यालय), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रतिनिधि, एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक और राज्य शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि की एक बैठक बुलायी जाए।

गुजरात के शिक्षा मंत्री ने यह बताया कि 19 नवंबर, 1984 से यानी श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्म-दिवस से राज्य में दोपहर में भोजन देने की योजना लागू कर दी गई है। यह बच्चों को विशेष रूप से पिछड़े इलाकों के बच्चों को विद्यालय में जाने में सहायक हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य सरकार ने महिलाओं के लिए उच्चतम स्तर तक की शिक्षा, जिसमें व्यावसायिक कालेजों की शिक्षा शामिल है, निःशुल्क करने का निर्णय लिया है। राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान फिर से काम करने लगे इस संबंध में काफी प्रगति हुई है। शिक्षा सचिव ने गुजरात सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का स्वागत किया। उनका कहना था कि शिक्षा पर किए गए खर्च को विकास पर किया गया खर्च मानना चाहिए क्योंकि किसी भी विकासी कार्यक्रम के लिए शिक्षा का होना अति आवश्यक है। शिक्षा से ही कोई व्यक्ति राज्य में चलायी गई विकासी कार्यकलापों से पूरा लाभ उठा सकता है।

हरियाणा के शिक्षा मंत्री ने यह प्रार्थना की कि पी.ई.सी.आर. को यूनिसेफ से मिलने वाली सहायता 31.12.84 के बाद भी जारी रखी जाए। उन्होंने इस बात पर भी चिन्ता व्यक्त की कि शिक्षा को वह प्राथमिकता नहीं मिल रही है जो कि उसे मिलनी चाहिए। आवश्यकताओं की दृष्टि से शिक्षा-पद्धति में आवश्यक परिवर्तन किए जाने चाहिए। शिक्षा सचिव मंत्री महोदय के विचारों से सहमति थी पर वह यह भी चाहती थी कि राष्ट्रीय विकास परिषद् जैसे मंचों के माध्यम से इस स्थिति में परिवर्तन लाने में राज्यों को सहायता करनी चाहिए।

शिक्षा सचिव ने व्यावसायीकरण की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता पर भी बल दिया। अनेक राज्यों में इस कार्यक्रम को लागू करने में जितनी प्रगति होनी चाहिए उतनी प्रगति नहीं हुई है। एन.सी.ई.आर.टी. ने अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की सामग्री तैयार की है। सरकार ने व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों के लिए 3,000 छात्रवृत्ति देने की योजना लागू की है। यह योजना विशेष रूप से दक्षिणी क्षेत्र में काफी उत्साहवर्द्धक साबित हुई है।

जम्मू और कश्मीर के शिक्षा मंत्री ने यह बताया कि राज्य में एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को पढ़ाने में काफी कठिनाई हो रही है। शिक्षा सचिव ने यह सुझाव दिया कि आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन करने के लिए राज्य का शिक्षा विभाग कोई कदम उठा सकता है।

महाराष्ट्र के शिक्षा राज्य मंत्री ने बताया कि विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में विद्यालय के भवन बनाने का

कार्यक्रम वे लोग अपने हाथ में लिए हैं। पहली कक्षा म पढ़ने वाले बच्चों को दूध देने की योजना लागू की गई है। यह योजना धीरे-धीरे ऊंची कक्षाओं के बच्चों पर भी लागू की जाएगी। रिक्त स्थानों को भरने के लिए समेकित पारिश्रमिक पर लगभग दो हजार प्राथमिक शिक्षक भर्ती किए गए हैं। सरकार ने लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए भी कदम उठाए हैं। इस संबंध में यह निर्णय लिया गया है कि 12वीं कक्षा तक लड़कियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाए और सभी क्षेत्रों में लड़कियों के लिए अलग होस्टल की व्यवस्था की जाए।

परिशिष्ट ड·

1.1.1985 को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में संस्वीकृत स्टाफ की संख्या

क्र.सं.	स्टाफ की स्थिति	ग्रुप 'ए'		ग्रुप 'बी'		ग्रुप 'सी'		ग्रुप 'डी'	कुल जोड़
		शैक्षिक	गैर-शैक्षिक	शैक्षिक	गैर-शैक्षिक	शैक्षिक	गैर-शैक्षिक		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	मुख्यालय	284	95	2	223	3	808	361	1776
2.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर	63	5	52	11	22	83	83	319
3.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर	69	5	28	11	62	83	90	348
4.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल	60	6	24	9	46	77	79	301
5.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर	80	5	29	12	49	86	78	339
6.	एफ.ए. कार्यालय	25	–	–	–	–	50	26	101
		581	116	135	266	182	1187	717	3184

संक्षेप में ग्रुप के अनुसार स्थिति	
ग्रुप 'ए'	697
ग्रुप 'बी'	401
ग्रुप 'सी'	1369
ग्रुप 'डी'	717
	3184

संक्षेप में स्टाफ-टाइप के अनुसार स्थिति	
शैक्षिक	898
गैर शैक्षिक	1569
ग्रुप 'डी'	717
	3184

The psychiatrist found the boy to be emotionally rigid and unaffected by pleasant or unpleasant stimuli. He smiled constantly, whether he should be pleased or not. When permitted a choice, he refused; but, if urged to choose, he always chose the easiest thing he could acquire. He showed little or no interest in anything and would sit in school as long as required but would do nothing except look blankly into space. Any teaching efforts were wasted because they did not register with this upset lad.

The social worker learned that this boy's grandmother had been the dominant person in his life. His mother was an only child who was not strong physically, so the grandmother had taken most of the responsibility for the boy's care and training. The fact that he exhibited many allergies and asthma had caused the whole family to be overanxious about him and had kept the boy from many normal social contacts. When he had a mastoid operation, followed by a brain abscess, at the age of five years, the doctors suggested a warmer climate during the winter, so the grandmother had spent three winters with him in warmer places. All this had interrupted his school training.

At the age of six, when he first entered school, he exhibited a definite tendency toward persistent reversals in reading and writing. The teacher associated this with left-handedness and suggested that he would "outgrow" this tendency as he learned to read. The latter was not accomplished, however, and the reversal tendency still persisted. He had been tutored privately every winter but had failed to learn to read even under expert guidance. The parents and grandmother had also tried helping him with reading. This abnormal school experience and the constant direction of a dominant grandmother were considered factors in his school failure.

In spite of previous suppositions that the brain abscess might have affected his reading capacity, the neurologist found no abnormality and believed that this boy should learn to read when other hampering defects were cleared up. No other difficulties than those mentioned above were found.

GROUP EVALUATION

The group felt that the important factors were the emotional rigidity and the unusual family situation, which may have been a

factor in creating the emotional reactions. They felt that he should be removed from the family environment and placed under psychiatric treatment. For these reasons the Orthogenic School was recommended.

The visual problem was also emphasized, inasmuch as the boy appeared to have difficulty in concentrating, especially at reading distance. The group agreed that he should get glasses for reading and that orthoptic training should be provided before reading treatment was started.

TREATMENT

The boy entered the Orthogenic School, but only as a day pupil, since the grandmother insisted on living near the school and having him at night. This insistence created an additional social problem; hence it was necessary for the social worker to see the grandmother frequently and help her to accept the boy's problem and to co-operate with the school in treatment.

Glasses were obtained, and the boy was given orthoptic treatment three times a week. Daily exercises were carried on at the school as directed by the ophthalmologist.

In the meantime, psychiatric treatment was given to help the boy change to a pattern of emotional response which would permit him to react in a manner appropriate to the stimulus.

Work in reading followed the initial psychiatric treatment as soon as possible. Because of the tendency to move his eyes from right to left when reading and also to reproduce forms upside down, he was given concentrated training in visual perception and memory for forms, followed by the introduction of words in the same manner.

Reading was acquired at a satisfactory rate. After nine months of training he made grade scores ranging from 4-0 to 4-4 in reading and social studies, as measured by the Metropolitan Achievement Test. He was out of school three months and then returned for another nine months. At the end of that time he made grade scores of 5-8 in reading and proportionate gains in other subjects. He then entered the public school in his own town, where he was reported later to be making satisfactory gains.

While his progress in reading was gratifying, perhaps the emotional and social changes in this boy were of greater significance. He became an accepted member of the play group and independent in

relation to his grandmother. He was flexible emotionally and learned to make choices and express likes and dislikes. He developed broad interests appropriate to his age.

A summary of the evaluation follows:

Anomalies Found by Individual Examiners	Factors Considered Important by the Group	Probable Causes
Family maladjustment	Family maladjustment	Family maladjustment
Emotional maladjustment	Emotional maladjustment	Emotional maladjustment
Visual difficulty	Visual difficulty	Visual difficulty

CASE 21

This attractive boy was eleven years and eight months old when he was first referred for examination by the neurologist, who had seen him in the clinic and felt that he was a case of alexia. His mental age of 12-11 was adequate for reading at the sixth-grade level at least, yet he was reading only at high second- or third-grade level, depending on the type of test used.

INDIVIDUAL FINDINGS

The ophthalmologist found compound hyperopic astigmatism of such a slight degree that it was believed unrelated to reading failure.

Although his auditory acuity was normal, the boy had a short auditory memory span for sounds, accompanied by a mild dyslalia. The latter was considered unrelated to reading, but the former may have been a factor if phonics was used as a method of teaching reading. No report on this could be obtained.

The neurologist thought he was a case of alexia, since he had failed to learn to read in a group where others had made normal progress. The neurologist also felt that this might be hereditary, since the father had failed in school and had never been able to finish eighth grade, although he was successful mechanically.

The social worker reported that the family was living on a mother's pension, since the father had died when the boy was in Grade III. The father had been a drunkard and had frequently beaten his children, and the mother had found it necessary to protect them constantly. She seemed to understand the three children well. A sister was older and a brother younger than this boy. Both the

sister and the mother had tried to help him in school work, especially in reading and spelling.

Although the boy seemed very well adjusted emotionally and socially when he was examined by the psychiatrist, there was some question as to the effect on the child's school progress of the family maladjustment noted above.

During the reading diagnosis, it was learned that the boy read about 20 per cent faster with his right eye alone than with both eyes and, at the same time, made over four times as many errors with both eyes as with the right, which was the preferred one. This, too, gave weight to the significance of his visual difficulty.

GROUP EVALUATION

Emphasis was placed on the fact that the neurologist believed the boy to be a case of alexia who, therefore, would not learn to read beyond Grade IV. For experimental purposes, the group felt that the boy should be placed in the Orthogenic School as a day pupil and that reading should be taught by the sight method to eliminate the effect of his short auditory memory span for sounds. It was suggested that the ophthalmologist see if there was any way of explaining the difficulty in reading with both eyes as compared to reading with the right eye alone.

The group also agreed with the psychiatrist's suggestion that perhaps, with prolonged contact with the boy, the real influence of the father could be discovered.

TREATMENT

The boy attended the Orthogenic School for four months. During this time he was rechecked by the ophthalmologist, who recommended no treatment. The psychiatrist found no emotional problems. He felt that the father's death might have been a shock to the boy but that this fact was unrelated to reading failure.

The boy responded nicely to visual presentations of words, and during the four months, he improved in his reading from high second grade to the end of fourth grade. On the Chicago Reading Test he made a grade score of 4.9, except in rate of reading, in which his score was 3.4. He then entered Grade VI in the public school. With the help of the adjustment teacher, he continued to improve in reading and at the end of that school year was making average progress.

The evidence secured indicated that the boy's progress was different from that of a case of alexia. Rather, it appeared that his short auditory memory span for sounds had handicapped his learning by the phonetic method. It seemed probable that adapting the method of teaching reading, as well as providing individualized help, were the factors most important to his academic gains.

A summary of the evaluation follows:

Anomalies Found by Individual Examiners	Factors Considered Important by the Group	Probable Causes
Mild visual difficulty	Alexia	Short auditory memory span for sounds
Short auditory memory span for sounds	Possible visual difficulty	Inappropriate teaching methods
Alexia	Short auditory memory span	
Family maladjustments	Family maladjustments	
Inappropriate teaching methods	Inappropriate teaching methods	

CASE 22

This boy was about fourteen years old and had a reading expectancy grade of Grade VIII. On various reading tests he made grade scores between 3.2 and 3.9 and was retarded over four grades in reading.

INDIVIDUAL FINDINGS

The neurologist diagnosed this boy's case as one of alexia. The otolaryngologist found a mild conduction deafness, with a loss in auditory acuity at the upper and lower frequencies. He did not believe that this loss was sufficient to cause the boy's reading disability, although he wondered whether it might have been worse when he was younger and, if so, might have been related originally to reading failure. There were no other physical findings which merited consideration in this case.

The social worker learned that the boy was an only child and that the parents believed he was spoiled. However, his reactions did not seem to agree with their belief, since he was co-operative and persistent in attempts to learn. The mother admitted that she had been able to go to school very little because her father had lived a transient life and she had finished only Grade IV.

A report of an examination two years earlier showed that the boy

had an articulatory defect, which was not described, and indicated that his hearing was "dull," although the amount of loss was not known. At that time the boy reported to the examiner that he "heard noises in his ears." He was considered a third-grade reader then. It was recommended that he sit in the front of the room, although the teacher could not carry it out because he was too tall. Nothing further could be learned about the effect of the hearing loss.

GROUP EVALUATION

The attention of the group was focused on the diagnosis of alexia and the possible effect of the hearing loss. Since the latter was not then sufficiently important to impede learning to read, no treatment was indicated. The group recommended that he come to the Orthogenic School for intensive remedial-reading training.

TREATMENT

The parents were unwilling to send the boy to the school for treatment and said that their real purpose in having the examination was to find out the cause of the defect so that recommendations could be sent to his school.

Detailed recommendations were prepared, and he was asked to return for another checkup in three months. At that time, tests showed that he had made from three to five months' progress in various types of reading. Further recommendations were made, but he did not return for further tests, as advised. Instead, at the end of the school year his mother mailed his report card from school. It indicated that he was promoted from Grade VIIA to Grade VIIIB with special commendation for industry and that his grades had all come up to satisfactory marks. Even though this evidence was not objective, it appeared questionable that the boy suffered from alexia.

A summary of the evaluation follows:

Anomalies Found by Individual Examiners	Factors Considered Important by the Group	Probable Causes
Alexia	Alexia	Hearing loss which may have been greater
Slight loss in auditory acuity	Lowered auditory acuity	Possibly a degree of alexia

The last eight cases referred to in chapter x will not be reported here, since careful evaluation of their deficiencies was not possible. Six of them, referred by a public school, were examined in an at-

tempt to identify causes of reading failure but without the thorough diagnosis and remedial treatment given to the cases reported in this chapter. The last two children examined (Cases 29 and 30) were carefully studied, but the parents desired recommendations which could be carried out quickly and were not willing to engage in the lengthy program of training suggested.

The chief conclusions reached by the specialists in the study of the twenty-two cases will now be summarized, with special reference to causes of serious retardation in reading.

EVALUATION OF CAUSES OF SERIOUS READING RETARDATION

In order to summarize briefly the facts available concerning the causes of reading difficulty exhibited by the twenty-two children reported in this chapter, Figure 2 was prepared. It presents profiles of individual cases. Column 1 shows profiles for anomalies found by each examiner in each case. The profile of Case 3, for example, shows that the ophthalmologist found a visual difficulty, the social worker found a social problem in the home, the neurologist found a neurological difficulty, and the reading technician secured evidence that methods of teaching reading had not been properly adapted to this child's needs.

Column 2 shows which of the anomalies were considered by the group of specialists at their conference to be important as possible causes of reading deficiency in individual cases. Pursuing Case 3 again, it should be noted that the same anomalies are stressed in Column 2 as in Column 1, except that the neurological difficulty was not considered important as a possible cause.

Column 3 shows the probable causes of reading failure for each case as they were evaluated after remedial treatment. Following Case 3 again, attention is called to the fact that the visual difficulty and the lack of adaptation of teaching methods of reading appeared to be less important as causes of reading failure than the group of specialists had at first believed. The anomalies found by the social worker and the neurologist appeared to be the causes for reading failure in this case.

In a similar manner, all the twenty-two cases presented in this chapter are summarized. Careful examination of these individual profiles justify several important conclusions.

First, the cases present different constellations of anomalies which might cause reading failure. This is true of the findings of individual examiners, of the group judgments as to possible causes, and of the anomalies agreed upon as probable causes of reading failure.

Considering the anomalies reported by individual examiners, Cases 3, 7, and 8 serve as illustrations of diverse patterns. A visual difficulty was found in each of the three cases, but only two cases gave definite evidence of social maladjustments, while in the third, social maladjustment was questioned; two of the cases presented emotional problems, while the third did not; one presented a speech problem, in a second case this factor was questionable, and in a third there was no speech problem; endocrine disturbances were reported as questionable in two cases but were absent in the third; a neurological difficulty was found in two cases, but not in the third; no general physical difficulties were found in two of these cases; no auditory difficulty was found in any of them; and, finally, there was evidence of inadequate adjustment of methods of teaching reading in one case but no evidence of this in the other two.

Similar comparison of anomalies found by individual examiners for any group of cases in this study will show significant variation in the pattern of anomalies reported. Likewise, anomalies considered important by the group, and again those considered to be probable causes of reading failure, differed considerably. In three instances (Cases 4, 8, and 15) the anomalies considered as probable causes by the group were the same, namely, visual difficulties and social problems. In two instances (Cases 9 and 11) the probable causes were previous use of inappropriate teaching methods. Likewise, in Cases 5 and 18, social and emotional maladjustments were considered the probable causes of reading failure. Other cases showed different combinations of probable causes. The anomalies considered as causes in the final evaluation were somewhat more alike than the anomalies reported by individual examiners. This fact suggests that certain factors exerted a greater influence in retarding reading progress than did others.

Second, the deficiencies found by individual examiners were not all recognized as causes of failure to learn to read after remedial treatment had been given. For example, the individual examiners reported in Case 6 a slight visual difficulty, which was considered

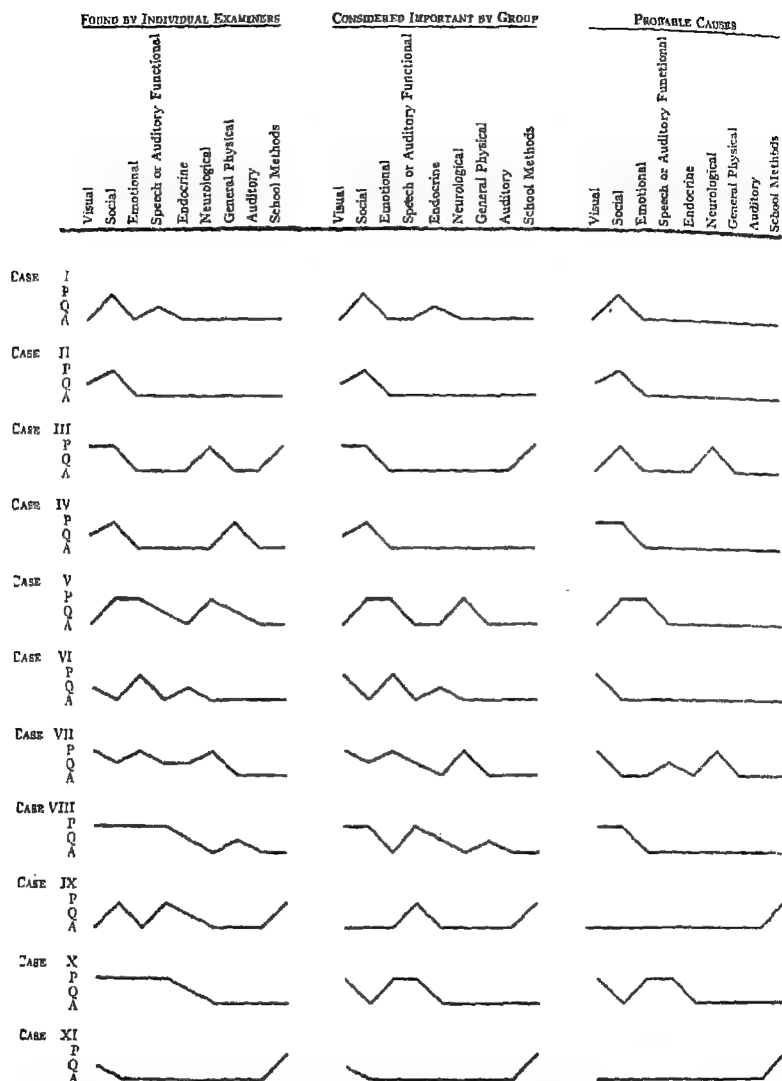


FIG. 2.—Individual case profiles. *P*, present as a cause of reading failure. *Q*, Questionable as a cause of reading failure. *A*, absent as a cause of reading failure.

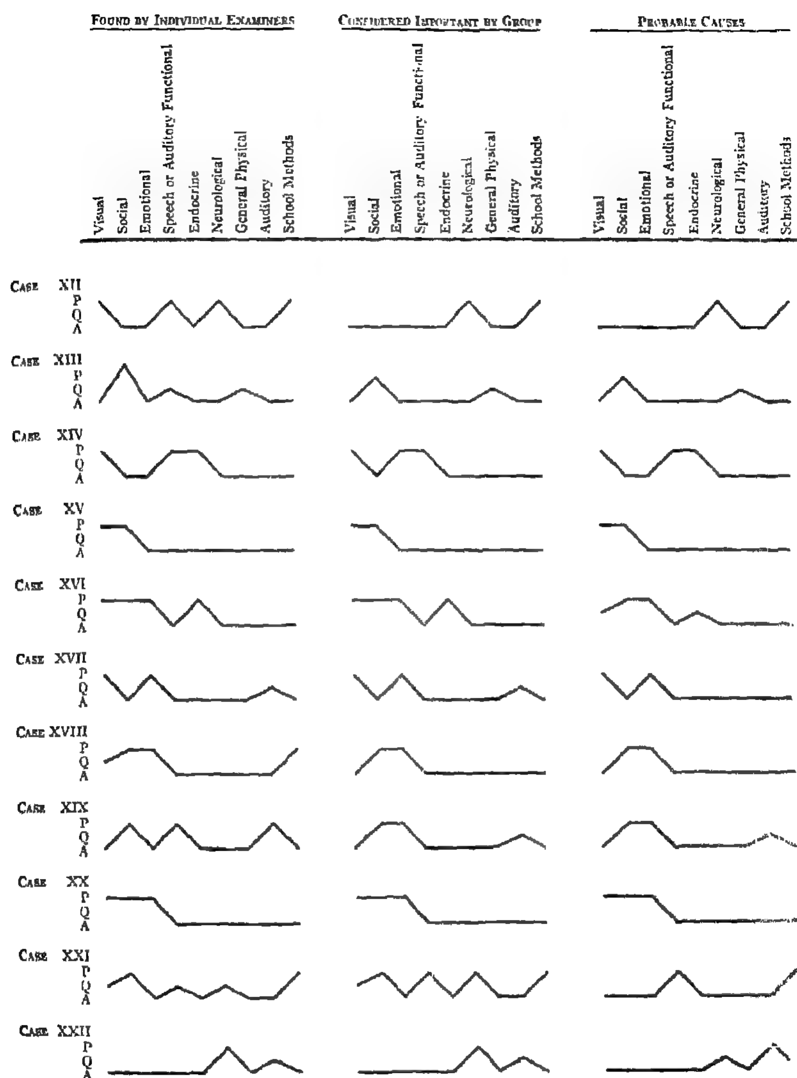


FIG. 2.—*Continued*

questionable as a cause of reading failure, an emotional difficulty, and a mild endocrine disturbance. The visual difficulty was corrected, and resulting progress in reading indicated that it was doubtless a cause of the child's reading retardation. The emotional maladjustment disappeared as the child learned to read, and progress was satisfactory without therapy directed toward the endocrine disturbance. Thus, only one of the three anomalies reported by individual examiners appeared to be a cause of reading failure.

Further support for the second conclusion is found in Case 8. Visual, social, emotional, and general physical deficiencies were reported by the various examiners. However, in the final evaluation, only the visual and social problems appeared to be important as causes of failure to learn to read. Such findings emphasize the fact that diagnosticians should guard against accepting the presence of an anomaly as an explanation of reading deficiency until causal relationship has been established in each case studied. The statement should be added that in some instances there was marked similarity between the anomalies reported by the specialists and the causes considered important. Cases 2, 15, and 20 are examples of this type. These findings indicate that the presence of anomalies should not be disregarded.

Third, some of the anomalies designated as probable causes of reading failure at the conference of specialists were apparently not causes, as revealed by the results of the remedial treatment. However, constellations of anomalies considered pertinent by the group of specialists in conference resemble the combination of probable causes to a greater extent than did the group of anomalies reported by individual examiners.

The fact that judgments concerning causal factors changed as a result of therapy is illustrated in Case 8. The group conference emphasized the importance of visual, social, speech, and general physical difficulties as possible causes of this child's reading failure. However, the treatment for visual and social anomalies proved to be of greatest value. They were, therefore, considered to be the probable causes of reading failure in this case. A second example is Case 21. Visual, social, speech, or functional auditory and neurological difficulties and inappropriate use of methods of teaching reading were

considered possible contributing causes of reading failure. After treatment had been given, the probable causes selected were the functional auditory inadequacy and inappropriate adaptation of teaching methods to the needs of this pupil.

In a number of instances the constellation of anomalies selected by the group of specialists was identical with, or very similar to, those which later proved to be the probable causes. For example, in Cases 2, 10, and 12 the two evaluations were identical. In a number of others, such as Cases 1 and 11, the two evaluations were very similar.

Fourth, social and visual anomalies ranked high as causes of reading retardation, as shown by their frequency in the case profiles. Emotional, speech, or auditory functional and neurological difficulties, as well as inappropriate school methods, were frequently found to be probable causes of failure in reading. Endocrine disturbances, general physical difficulties, and lack of auditory acuity were found infrequently to be causes of reading deficiency.

To summarize the anomalies considered important by the group for each of the twenty-two cases, Table 24 has been constructed. The cases are presented in descending order of severity. The number of hampering defects which the group of specialists considered important is recorded in the last column. A total of 23 such defects were identified for the seven most severely retarded and 18 for the seven least severely retarded. This difference indicates that more severely retarded readers exhibited more anomalies considered significant by the group of specialists than did the least severely retarded cases. The number of cases in which each anomaly was considered important appear at the bottom of the table, and the percentage of cases in which each anomaly was considered operative appears in the last line of Table 24.

The anomalies considered to be probable causes for each of the 22 cases are summarized in Table 25. Comparing the number of probable causes operative in the 7 most severely retarded, which was 16, with the 13 found in the 7 least severely retarded, it is evident that the number of factors that operated as causes among those most seriously retarded was, on the average, greater than for the least severely retarded cases. The difference, however, is not very large.

At the bottom of this table the frequency of occurrence of each probable cause is recorded and the percentage of cases in which each cause was considered operative.

The relative importance of certain anomalies as causal factors is represented graphically by Figure 3, which shows the percentage of

TABLE 24

ANOMALIES CONSIDERED IMPORTANT BY THE GROUP FOR EACH CASE

Case Number	Monroe Reading Index	Visual Difficulty	Neurological Difficulty	Auditory Difficulty	Speech or Discrimination Difficulty	General Physical Difficulty	Endocrine Disturbance	Emotional Maladjustment	Social Problems	School Methods	Number of Probable Hampering Factors
10.	15	Yes	No	No	Yes	No	No	Yes	No	No	3
7.	30	Yes	Yes	No	?	No	No	Yes	?	No	5
18.	31	No	No	No	No	No	No	Yes	Yes	No	2
5.	33	No	Yes	No	No	No	No	Yes	Yes	No	3
2.	35	?	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
8.	41	Yes	No	No	Yes	?	?	No	Yes	No	5
3.	42	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	Yes	3
21.	44	?	Yes	No	Yes	No	No	No	Yes	Yes	5
14.	45	Yes	No	No	Yes	No	Yes	No	No	No	3
17.	45	Yes	No	?	No	No	No	Yes	No	No	3
4.	47	?	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
19.	48	No	No	?	No	No	No	Yes	Yes	No	3
12.	49	No	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	2
22.	50	No	Yes	?	No	No	No	No	No	No	2
13.	52	No	No	No	No	?	No	No	Yes	No	2
9.	53	No	No	No	Yes	No	No	No	No	Yes	2
6.	55	Yes	No	No	No	No	?	Yes	No	No	3
20.	56	Yes	No	No	No	No	No	Yes	Yes	No	3
15.	60	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
11.	63	?	No	No	No	No	No	No	No	Yes	2
1.	65	No	No	No	No	No	?	No	Yes	No	2
16.	68	Yes	No	No	No	No	Yes	Yes	Yes	No	4
Number of anomalies	. . . . .	14	5	3	6	2	5	9	14	5	. . . . .
Per cent of Yes and ?	. . . . .	63.6	22.7	13.6	27.3	9.1	22.7	40.9	63.6	22.7	. . . . .

the 22 cases in which each anomaly was (1) recorded by individual examiners, (2) considered a possible cause by the group, and (3) considered a probable cause after remedial treatment. The percentages for the last two columns were secured from Tables 24 and 25, respectively. Examination of these three columns shows that, with one

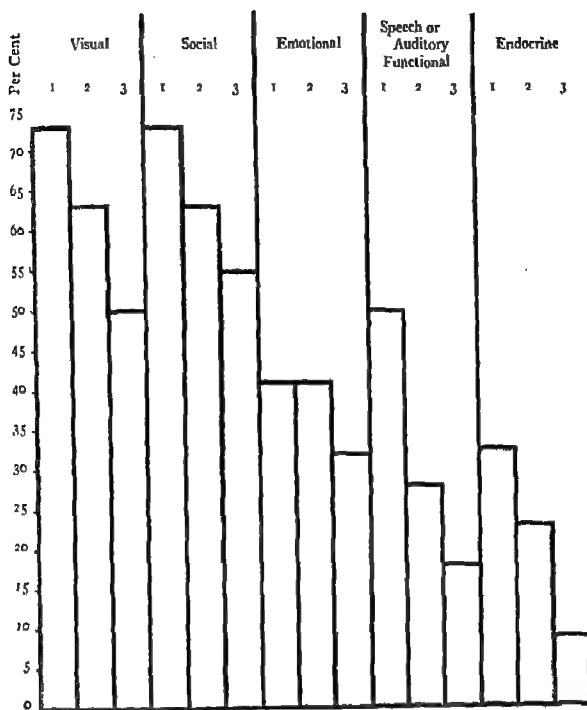


FIG. 3.—Evaluation of anomalies. *1*, percentage of 22 cases in which individual examiners found the anomaly. *2*, percentage of 22 cases in which the group considered the anomaly to be a possible cause. *3*, percentage of 22 cases in which the anomaly was recorded as a probable cause.

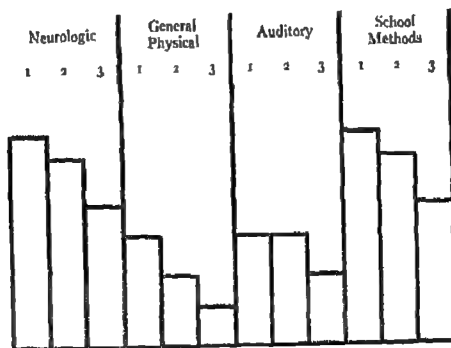


FIG. 3.—*Continued*

exception (emotional difficulty), each anomaly was present more often than it proved to be a possible cause of reading failure. Further, each anomaly was considered as a possible cause by the group

TABLE 25

ANOMALIES CONSIDERED TO BE PROBABLE CAUSES

Case Number	Monroe Reading Index	Visual Difficulty	Neurological Difficulty	Auditory Difficulty	Speech or Discrimination Difficulty	General Physical Difficulty	Endocrine Disturbance	Emotional Maladjustment	Social Problems	School Methods	Number of Probable Hampering Factors
10	15	Yes	No	No	Yes	No	No	Yes	No	No	3
7	30	Yes	Yes	No	?	No	No	No	No	No	3
18	31	No	No	No	No	No	No	Yes	Yes	No	2
5	33	No	No	No	No	No	No	Yes	Yes	No	2
2	35	?	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
8	41	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
3	42	No	Yes	No	No	No	No	No	Yes	No	2
21	44	No	No	No	Yes	No	No	No	No	Yes	2
14	45	Yes	No	No	Yes	No	Yes	No	No	No	3
17	45	Yes	No	No	No	No	No	Yes	No	No	2
4	47	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
19	48	No	No	?	No	No	No	Yes	Yes	No	3
12	49	No	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	2
22	50	No	?	Yes	No	No	No	No	No	No	2
13	52	No	No	No	No	?	No	No	Yes	No	2
9	53	No	No	No	No	No	No	No	No	Yes	1
6	55	Yes	No	No	No	No	No	No	No	No	1
20	56	Yes	No	No	No	No	No	Yes	Yes	No	3
15	60	Yes	No	No	No	No	No	No	Yes	No	2
11	63	No	No	No	No	No	No	No	No	Yes	1
1	65	No	No	No	No	No	No	No	Yes	No	1
16	68	?	No	No	No	No	?	Yes	Yes	No	4
Number of anomalies	.....	11	4	2	4	1	2	7	12	4	.....
Per cent of Yes and ?	.....	50	18.1	9.1	18.1	4.5	9.1	31.8	54.5	18.1	.....

of specialists in a larger number of cases than it proved to be a probable cause, as evaluated after remedial treatment. This figure also shows the order of frequency in which each anomaly was reported and the relative frequency with which each contributed to failure in learning to read in the cases studied.

CHAPTER XII

SUMMARY, CONCLUSIONS, AND IMPLICATIONS

THE results of this study are very suggestive to anyone interested in poor readers. They are equally valuable to school personnel who wish to prevent reading failure, because preventive measures can be planned intelligently only if causes of difficulty are understood. For the purposes of this investigation, a cause has been defined as an anomaly, which, on the basis of tangible evidence, is responsible for part or all of the reading difficulty exhibited by a pupil. The evidence required was that when the anomaly was corrected or appropriate compensations were made, improvement in reading occurred.

To achieve this aim, three steps were planned. The first was to summarize significant contributions concerning causes of reading retardation presented in the literature and, with the aid of specialists in the allied fields, to evaluate these findings.

The second step was to identify and evaluate the various causal factors in a group of severely retarded readers. To achieve this aim, the services of the following specialists were secured: a social worker, a psychiatrist, a pediatrist, a neurologist, three ophthalmologists, a speech specialist, an otolaryngologist, an endocrinologist, a reading specialist, and the investigator, who acted as psychologist and reading technician. Thirty severely retarded readers with Binet I.Q.'s between 85 and 137 were examined by each of these specialists. Anomalies were identified, and the findings were presented. Following the individual examinations, the specialists met and attempted to evaluate these anomalies and to identify possible causes of reading retardation operating in each case. Finally, an intensive remedial program for twenty-two of the thirty cases was undertaken to secure evidence of the potency of each of these possible causes.

The third step, which was to present significant general conclusions: findings with respect to causal factors, problems meriting further study, and implications of this investigation, is the function of this chapter.

MAJOR CONCLUSIONS

The experimental data have been studied, first, in relation to the number and percentage of cases exhibiting various anomalies and causes of reading retardation. Second, they have been treated in terms of the patterns of anomalies and causes exhibited by each individual case. Several important conclusions have been reached.

First, the pupils who were seriously retarded in reading also exhibited numerous anomalies. In fact, those most seriously retarded evidenced the greatest number of anomalies, whereas those least retarded presented fewest.

There are two possible interpretations of this finding. The first is that difficulty in reading may be a part of the general deviation from the normal pattern. For example, the child most seriously retarded (Case 10) deviated from normal expectancy in six areas besides reading, while one of the least seriously retarded (Case 1) deviated from normal in only two areas besides reading. The second possible interpretation is that the large number of anomalies act as hampering defects, thus causing more severe reading retardation. Conclusions presented later which have a direct bearing on this issue favor the first interpretation.

Second, when the group of specialists attempted to evaluate the anomalies for each child, it appeared, on the basis of all evidence available, that certain of the anomalies had no direct relationship to the reading deficiency. This conclusion was based on the data presented in chapter xi. For example, visual anomalies were found in 73 per cent of the twenty-two cases studied intensively but were considered important as possible causes of reading failure by the specialists in only about 63 per cent of them. Thus, in 10 per cent of the cases, visual difficulties were present but not considered to be a cause of reading failure.

This conclusion is important because it shows that specialists can readily identify anomalies in isolation, but, when such anomalies are considered in conjunction with all available data on each case examined, the examiners can only conclude that some anomalies are coincidental and are not causes of reading failure. Such an evaluation forms a more refined technique of identifying causes of reading failure than mere examination.

Third, a number of factors that appeared to be possible causes of reading failure, in the opinion of the specialists, did not prove experimentally to be so. Using again the example cited above, the group believed visual difficulties to be one of the causes of reading failure in about 63 per cent of the cases, while, after appropriate treatment, this cause appeared to operate in only 50 per cent of the cases. Consequently, visual difficulties appeared to be causes of reading difficulty in some cases and only coincidental in others.

This finding assumes large significance when evaluating long lists of anomalies reported for poor readers by many investigators. It shows that the mere presence of anomalies does not justify the conclusion that they are causes of reading failure. Such anomalies may be only coincidental or may represent some of the variations from the "normal" of the particular children examined. It follows that great care must be exercised before concluding that any anomaly exhibited by a seriously retarded reader operates as a cause of reading failure.

Fourth, the experimental evidence secured in this study indicated that certain types of anomalies operated as causes more frequently than others. Social, visual, and emotional difficulties appeared most frequently as causes of poor progress or failure in learning to read. Inappropriate school methods, neurological difficulties, and speech or functional auditory difficulties appeared less frequently as causes of deficient reading. Endocrine disturbances, general physical difficulties, and insufficient auditory acuity appeared to be least important, in so far as they contributed infrequently to reading failure among the particular children included in this study. This order of frequency and the probable significance of each as a cause are considerably at variance with the findings of other investigators reported in the literature. The findings relative to causal factors, therefore, merit further consideration.

FINDINGS WITH RESPECT TO CAUSAL FACTORS

The findings relative to each group of factors will now be summarized and compared with the results of previous studies. Such comparisons should aid in identifying some of the distinctive contributions of this study.

SOCIAL FACTORS

Maladjusted homes or poor interfamily relationships were found to be contributing causes in 54.5 per cent of the cases studied. This percentage is definitely higher than any reported in the literature, few other studies having considered more basic and detailed interfamily problems. Preston's[1] investigation, which points out the detrimental effects of unfortunate home relationships among poor readers, probably most nearly approximates the present intensive study of such factors. Ladd's study,[2] on the other hand, emphasized personal, social, and economic problems, as shown by teachers' ratings and children's responses to various tests.

The relatively high percentage of cases in the present study in which family or home problems proved to be contributing causes of reading failure may be attributed to two facts. First, the inquiries concerning family problems were carried on in this study by particularly diligent social workers, who devoted a great deal of time to gaining the confidence of parents and to obtaining more than a superficial history of difficulties and problems. Later, these data were scrutinized carefully in relation to the child's problems. Second, the cases examined were seriously retarded in reading and were examined only at the request of the parents. In this respect the cases were more highly selective than if they had included all seriously retarded readers in a particular school. However, the fact that such home and family interrelationships were associated with reading failure in some of the cases studied emphasizes the importance of greater attention to this particular area when diagnosing cases of reading deficiency.

The unusual significance is not only that organic and emotional problems of the child influence his learning to read but also that problems apparently remote from the school exert considerable influence. They emphasize the importance of the home and of the social environment on the total adjustment of the child. They imply that a stable, wholesome home environment exerts a definite influence on the school progress of the child. Furthermore, such findings show that a child's failure to learn to read may be due to factors far beyond his own control and, not infrequently, beyond the control of those charged with responsibility for his progress. Unfortunately,

many families are either unaware of the significance of the relationship just considered or are unable to control the conditions that create favorable ones.

VISUAL FINDINGS

Visual anomalies were found in 73 per cent of the twenty-two cases which were studied fully, but were considered to be contributing causes of reading failure in only 50 per cent of these cases. This percentage is higher than reported by some examiners but lower than reported by others. Studies in this area are numerous. In making comparisons, however, attention should be directed to the fact that there is no uniformity in the methods used in examining the cases reported in the literature. Some were tested only on the Snellen chart, which was shown by this study to be inadequate.[3] Others were examined by screening tests designed to be general, rather than specific, measuring devices. Some studies considered only one phase of the problem, such as visual fields or blind spots, and did not relate findings to the total visual pattern. In this study each visual factor was considered and interpreted in terms of all the findings. Furthermore, corrective procedures were administered to determine whether or not the diagnosis was accurate. Few studies in the literature have followed this plan of evaluation.

The types of visual difficulties exhibited are of special interest in view of the recent pointed controversy concerning the relation of specific visual difficulties to reading deficiency. Glasses were recommended as a corrective procedure for hyperopia in 28 per cent of the cases in this study. Hyperopic and myopic astigmatism were each found in 10 per cent of the children. Binocular inco-ordinations of significance were reported in 48 per cent of the cases. This last figure is lower than the 90 per cent reported by Selzer[4] and considerably higher than the 29 per cent reported by Witty and Kopel.[5] Each of these studies included 100 children; however, the method of examination used in the first was not stated, and the Keystone Visual Safety Test was used in the second. The visual examinations reported in the present study were made by ophthalmologists, which may account for some of the difference in results.

Both refractive errors and binocular inco-ordination were present in some cases, while in others only one difficulty or the other was exhibited. Enlarged blind spots and restricted visual fields were re-

ported in no cases, although these defects had been found previously by several investigators. No tests for aniseikonia were available.

Special attention is directed to the findings concerning binocular inco-ordinations. Orthoptic training was recommended for 48 per cent of the cases examined but carried out in only 24 per cent. It was considered helpful in promoting reading growth or in prolonging attention span for activities carried on at close range in all the cases. These findings provide convincing evidence of the value of orthoptic training among reading-disability cases who exhibit binocular inco-ordinations.

It is also noteworthy that neither the Snellen chart nor the Keystone Visual Safety Test was found to be completely accurate in selecting the children whom the ophthalmologist identified as needing visual care, although the latter was more effective than the former. Because of the high percentage of cases in which visual anomalies contributed to reading failure and because of the difficulties involved in identifying them, very careful attention should be given to visual examinations in the diagnosis of poor readers.

The advantage of clear visual impressions has long been recognized as a requisite to reading. This fact undoubtedly accounts for the numerous attempts to identify all interferences with visual impressions. Visual perception, however, involves far more than receiving clear impressions; but the knowledge of this fact has been ignored by many investigators, who have tried to explain reading failure on the basis of peripheral visual interferences. It follows that the full significance of visual difficulties can be appreciated only when studies of peripheral interferences and perception are combined.

Visual perception probably involves many of the higher mental processes and consequently may be associated with intelligence, previous experience, language facility, and bodily well-being. According to this view, most of the causes of reading failure are interrelated, so that the study of one necessitates consideration of others. While it is expedient to isolate them for measurement, the interpretation of such measurements must again consider related factors. It is evident, then, that the full import of visual interferences with reading necessitates a broader study than does one involving only peripheral interferences.

EMOTIONAL FINDINGS

The psychiatrist found significant emotional problems in 41 per cent of the 22 cases studied. However, emotional difficulties were found to be the causes of reading failure in only 32 per cent of them. The percentage of cases showing emotional problems is lower than reported by some investigators. Gates,[6] in particular, stated that about 75 per cent of retarded readers examined by him and his associates exhibited emotional difficulties. However, he believed that the emotional problem was a cause of reading failure in only one-fourth of these cases, or approximately 19 per cent. In the present investigation, however, emotional problems appeared to be a cause in 32 per cent of the cases examined.

A part of the discrepancy between the relative number of cases exhibiting emotional maladjustments in this and other studies may be due to the fact that the definition of emotional maladjustments adopted by the psychiatrist who participated was more rigid than that of the diagnostician in other studies. It may be due also to the fact that the psychiatrist in this study did not require the children to read during his interview with them. Some of the poor readers exhibit emotional problems only when required to read.

Although the literature concerning causes of reading disability contains many references to emotional problems, various reactions of each child have usually not been published. In this study, however, the examination of cases was carried forward by a psychiatrist, who carefully recorded specific reactions of his subjects as shown in chapter x. The reports of these reactions are very valuable both in understanding the cases studied and in suggesting items to look for in further studies of emotional disturbances among poor readers.

Of large importance is the fact that emotional reactions of children may be created by family problems or by attitudes within the home. In this connection, emotional and social factors are so closely related in some cases that they cannot be disentangled. Numerous emotional reactions unfavorable to learning are undoubtedly set up in young children before they enter school. The child who has been insecure at home may be so concerned over gaining security with his teacher and playmates that he cannot devote attention to learning to read. Children with fears and worries are ill fitted for the task of

learning any subject matter. However, they are most likely to fail in reading, since it is taught early in the school program.

Unfortunately, emotional difficulties may also develop at school, and in a variety of ways. This study shows, for example, that whenever one child, who had a speech defect (Case 1), was called upon to read orally, his schoolmates were amused by the way he spoke, thus creating, on his part, fear of the reading situation. The teacher of another child reminded him that his sister and brother were her best readers and that she expected him to excel also. An unfavorable attitude toward reading was thus created. Probably no comprehensive list of such experiences has ever been compiled. One reason is that children seldom relate them unless they have a great deal of confidence in the person to whom they are told.

It should be added that emotional reactions may aid in learning to read as much as they may interfere with it. Some children become highly motivated when confronted with failure while others withdraw and are afraid to try to learn. The effects of emotional disturbances are so diverse and their manifestations so varied that they should never be overlooked during the examination of a poor reader.

SCHOOL METHODS

Inadequate adaptation of methods of teaching reading appeared to be a cause of reading failure in 18 per cent of the twenty-two cases. This incidence is lower than usually reported in the literature. Part of the discrepancy may be due to the fact that children with Binet I.Q.'s under 85 were not included in this investigation and that children with normal and superior intelligence are more likely to adapt themselves to teaching methods used with an average group of children. However, the discrepancy may also be due to the fact that the investigator could not obtain enough information on the previous methods of teaching used with the subjects of this study to make an adequate evaluation of them. Data on school methods, teachers' personalities, and various administrative policies, emphasized as important in previous investigations, were meager in this study, except in a few cases. Usually the only information available was the opinion of teachers who handled the child at the time he was examined.

Since a large number of these severely retarded readers improved, it seems logical to assume that better adaptation of methods of

teaching reading to some of the deviating cases has greater value than the number of such cases reported in this study indicates. Such adaptations would be especially valuable if made early in the child's school life. Failure to make appropriate adaptations is due largely to the dearth of information concerning the pupils' needs and the method to apply when a given set of symptoms is exhibited. Even those teachers especially skilled in handling remedial cases in reading often have to resort to trial-and-error in order to select the method which will be most successful.

NEUROLOGICAL FINDINGS

Alexia or some other neurological difficulty was considered a cause of reading failure in 18 per cent of the twenty-two cases. Previous studies have not reported the proportion of seriously retarded readers so diagnosed. In fact, no previous study was found in which reading-disability cases with normal intelligence were examined by a neurologist before remedial training was started. In instances in which remedial training has been unsuccessful, the case has usually been assumed to be alexia. The present study shows that many pupils who had made little or no progress in learning to read before this diagnostic study, were not victims of alexia in the judgment of the neurologist. Moreover, a few cases diagnosed as alexia made progress beyond the level expected of a child with such a handicap.

These findings do not solve the controversial issue concerning alexia as a factor in reading disability. They do show that some cases diagnosed as alexia may learn to read satisfactorily if given sufficient time and if special remedial techniques are used. Perhaps all of them could be taught to read to some extent if enough were known about the relationship of various symptoms to causes, so that appropriate remedial methods could be applied. Further studies in this area may prove very valuable in revealing the extent to which neurological difficulties are responsible for reading disability and the possibility of promoting growth in reading among such cases.

SPEECH AND FUNCTIONAL AUDITORY FINDINGS

Speech and functional auditory factors were found to be contributing causes of reading disability in 18 per cent of the twenty-two cases; dyslalia was considered one of the causes in 14 per cent of

them; and the remainder were accounted for by inadequate auditory discrimination and insufficient auditory memory span for sounds.

This finding agrees in general with those reported by most investigators, although the actual percentage of cases can be compared in only a few studies. It is higher, for example, than reported by Stulken[7] and by Hall.[8] Monroe[9] expressed the belief that speech difficulty might be considered a cause of reading failure or the result of a common cause. This agrees with the opinion of the speech specialist in this study concerning several cases, particularly Case 10, where both the dyslalia and the reading difficulty seemed to be caused by insufficient auditory memory span for sounds. Two cases of stuttering were reported, but neither was related to reading failure.

The percentage of cases of dyslalia in this group was larger than that usually found in the general school population of comparable age. This may mean that both reading and speech difficulties are deviations from the normal pattern, since the cause-and-effect relationship between the two has not been well established. On the other hand, it may mean, as Monroe said, that there are other basic factors of which speech and reading difficulty are symptoms. Two of these basic factors may be inadequate auditory discrimination and insufficient auditory memory span, as indicated by the few studies in the literature which are reinforced by the findings of the present investigation. Unfortunately, it is not possible to draw final conclusions concerning this phase of the study, because the standardized tests available are unsatisfactory and the norms for the tests constructed for this investigation are not thoroughly established.

ENDOCRINE FINDINGS

Mild hypothyroidism was the only endocrine disturbance found by the endocrinologist. Such a difficulty was found in about a third of the thirty children examined but was considered a cause of reading difficulty in only 9 per cent of the twenty-two cases studied in detail. This finding disagrees with the opinion of Mateer[10] that reduced function of the pituitary gland was a common cause of reading disability. However, the findings cannot be compared to those of Olson,[11] whose cases were studied continuously for a number of years. Therefore, this investigation shows, for the first time, the approxi-

mate number of severely retarded readers who exhibit endocrine deficiency.

Of particular importance is the fact that, when the endocrine disturbances were present, they not only retarded progress in learning to read but also had much wider significance. For example, in Case 16 this difficulty interfered with orthoptic treatment, social adjustment, and physical well-being. While this factor is less important than those referred to earlier, as measured by its frequency of occurrence, the influence it exerts on certain cases is indeed marked.

AUDITORY-ACUITY FINDINGS

Insufficient auditory acuity was found as a cause of poor reading in only 9 per cent of the cases. In each case the child and parents had been aware of the deficiency before this examination was made. The studies in the literature report that good readers tend to be somewhat better in auditory acuity than poor readers; but, as Jastak[12] pointed out, no case has been reported in which the reading deficiency is ascribed to insufficient auditory acuity alone. Thus the present study reinforces the general opinion that insufficient auditory acuity is relatively unimportant as a cause of severe reading retardation.

Attention should be directed to the fact that, although in relatively few cases was there significant loss of auditory acuity in the whole range of frequencies, several showed a loss of acuity only in the upper frequencies. This loss was considered unimportant by the cooperating otolaryngologist. However, a recent study by Kennedy[13] showed that a loss in these upper frequencies is conducive to poor reading in some cases. The significance of this finding cannot be determined until further study reveals more fully and accurately the effects of such auditory-acuity deficiencies.

GENERAL PHYSICAL FINDINGS

Among the various difficulties not included above but which might be classed as physical, malnutrition was the only one that proved to be a cause of reading failure, and it was present in only one case. Previous studies have listed poor dentition, infected tonsils and adenoids, asthmatic and allergic conditions, susceptibility to colds, disorders of the lymphatic system, circulatory disorders, gastrointestinal difficulties, and tuberculosis, none of which was exhibited by the cases included in this study.

The foregoing list provides another example of anomalies found in poor readers but not adequately evaluated as to their causal relationships. The results of the present investigation indicate that such anomalies be studied carefully before assuming that they are causes of severe reading retardation.

DOMINANCE FINDINGS

This study made no contribution to the evaluation of dominance as a cause of reading failure. Tests of dominance were given to each case, and the results are reported in chapter x. However, dominance was not included among the causes of reading disability because the group of specialists co-operating in this study were unable to interpret the test results. The importance of this factor, as emphasized by Orton,[14] Dearborn,[15] and Stanger and Donohue,[16] has not been ignored. However, the findings of Twitmeyer and Nathanson[17] to the effect that a consistent dominance does not exist, supplemented by significant differences in interpretation by other writers in this field, leave so many questions that the problem itself assumes major proportions and becomes so involved that it should be made the basis of a separate and intensive study.

INTELLIGENCE

Similarly, no contribution was made by this study to an understanding of the relationship between intelligence and reading failure. The cases in this study were purposely selected so that they would be sufficiently intelligent to indicate that there must be interferences in some other area, or reading progress would be normal.

The literature has shown that defective intelligence is a very close correlate of reading and also sets the limits of achievement in reading. Intellectually defective children, therefore, are poor readers, and little can be done to improve their reading markedly. The cases in this study were selected to avoid this factor as a cause.

UNIQUE CONTRIBUTIONS OF THIS INVESTIGATION

This study has shown that home and family relationships were a very important cause of severe reading retardation. This factor has not previously been given the emphasis which it appears to merit. Emotional maladjustments were also found to be important as a cause of reading disability and were closely related to family prob-

lems. Specific emotional reactions recorded by the psychiatrist in this study are especially helpful in understanding the problems presented by each case.

Visual difficulties, which have previously been the center of much controversy, were proved to be responsible for reading failure in a significant percentage of the cases in this study. Binocular incoordinations were found more frequently than were any other type of visual anomaly, and orthoptic treatment to correct these difficulties was shown to be highly beneficial.

Inappropriate school methods accounted for fewer cases of reading failure than was anticipated, but the full details concerning this factor were difficult to obtain from the group of children studied. Evidence that neurological difficulties caused reading failure in a number of the cases was secured. Doubt remains concerning the progress which certain pupils so affected might have made, if sufficient time had been allowed and more refined methods of treatment had been used.

Speech and functional auditory anomalies appeared to be causes of reading failure in a number of cases. Dyslalia was the most frequent cause, as stuttering was not operative as a cause in any case. Inadequate auditory memory span for sounds and insufficient auditory discrimination appeared to be causes of both reading and speech difficulty in some cases. Tests for these anomalies appear to be worthy of fuller standardization.

Endocrine disturbances were limited to cases of mild hypothyroidism. This anomaly was responsible for relatively few cases of reading failure but was a potent cause when it was operative. This difficulty has not been studied adequately in the literature on causes of severe reading retardation. General physical difficulties other than those just mentioned were also responsible for few cases of reading failure. Malnutrition was the only one of many general physical difficulties previously cited in the literature which was found important in the cases in this study. Insufficient auditory acuity operated as a cause of reading failure in only two cases, and they were taught to read in spite of this handicap. It is considered relatively unimportant as a cause, in agreement with the results of most previous research.

This study made no contribution to the understanding of the effects of dominance anomalies, because the group of specialists could

not adequately interpret the results of tests. Likewise, it made no contribution to the effect of less-than-normal intelligence, since the cases were selected so as to eliminate those seriously retarded intellectually.

Furthermore, this study has revealed the need for further research as brought out in the section that follows.

PROBLEMS FOR FURTHER INVESTIGATION

This study is not unlike many others in that it has revealed more problems in need of further study than it has solved. Some of the more important problems brought to a focus are listed below.

First, an extension of the type of study reported here is urgently needed, since data based on thirty cases examined and twenty-two cases treated do not provide an adequate basis for valid conclusions concerning many of the issues considered. The comprehensive diagnostic procedure developed in this study offers promise of valuable returns and should be applied to a sufficient number of cases to justify valid conclusions. Such an extension of the study is desirable because further clarification concerning the causes of reading failure is greatly needed. This end can be achieved only by thorough investigation, with careful checking and evaluation of findings. Until more precise and accurate information is available, research workers, reading diagnosticians, and classroom teachers will not be certain concerning the relative importance of various probable causes of reading disability and may spend considerable time on unimportant factors.

Second, the disagreement concerning the potency of various causes reported by different investigators has been reinforced by the findings of this study. Such disagreement may be due, in part, to the use of different tests and varying norms. It is essential, therefore, that tests and examination procedures be critically evaluated and that norms of expectancy be established for all tests in which they do not now exist.

An example of this need grows out of the fact that the effect of various visual difficulties on learning to read is highly controversial. Some investigators have found significant positive relationships, while others have found none. The tests used varied from the Snellen chart and the Keystone Visual Safety Test to a careful refraction.

This study provides clear evidence of disagreement between the findings and interpretations of an ophthalmologist concerning the need for visual care and the results of the two tests just mentioned. Furthermore, when a refraction is completed, there is difference of opinion as to the importance of the findings. Specifically, in this study the ophthalmologist considered hyperopia less than +1.50 as insignificant and not worthy of correction. On the other hand, Eames[18] maintained that hyperopia between +0.50 and +1.50 needed correction. A large number of poor readers rated in this area. As pointed out earlier, detailed study is also needed to determine the relationship between peripheral visual anomalies and visual perception, so as to aid more fully in understanding the extent to which visual difficulties contribute to reading failure.

Another example is the need for valid tests of dominance and clarification of the relation of hand, foot, ear, and eye preferences to reading retardation. Various investigators, using similar tests, have obtained different results. The tests of preference in current use are so inadequate that the results secured could not be evaluated in the present investigation.

Furthermore, the controversial issue concerning alexia might also be solved if adequate tests of alexia were available for use by reading diagnosticians. At least, a case diagnosed as alexia could be given appropriate treatment, as was done in the present research, to see if he could be taught to read.

The foregoing examples emphasize the fact that a comprehensive study of causes of severe reading retardation is largely dependent upon the use of valid tests which have been standardized.

Third, since the services of competent specialists in each allied field cannot always be obtained as in this study and since adequate tests are not available for use in selecting cases in need of special examination, it would be advisable to know more fully and accurately than is known at present the symptoms of each causal factor. The number of symptoms of various causes of reading failure exceeds the number of causes. Furthermore, one symptom may indicate any one of several causes. A study in this area should aid in identifying a pattern of symptoms with a particular cause of reading disability. Such research was beyond the scope of this study, yet the evidence secured indicated that such sets of symptoms could be identified.

Children with serious emotional problems, for example, might be identified from some of the manifestations listed in Table 19 of chapter x. Attitudes toward success and failure, methods of explaining deficiency, reaction to loss of status, emotional and physical reactions, and evidence of mental conflict may be recorded as shown above. From such symptoms the most significant can be selected.

In other areas, such as the visual, symptoms of the various types of difficulties need to be determined. Such habits as holding a book too near the eyes or too far away or to one side of the line of vision may indicate visual disturbances. Frowning, tears in the eyes, attempts to wipe away a blur, and frequent glances at distance when reading may signify the presence of visual anomalies. Inability to use the eyes at near-point for a prolonged period, for example, was exhibited by a number of cases, who were found in this study to have binocular inco-ordinations. In addition, a more accurate visual screening test would be helpful.

Furthermore, the hypothyroid case who should be seen by the endocrinologist exhibits certain types of characteristics and reactions. He may be overweight, slow in physical and mental reactions, and easily fatigued. On the other hand, a few of the cases of hypothyroidism were thin and alert. Undoubtedly other symptoms in this type of case would aid in identification.

Again, more detailed information concerning the proper therapy for each cause or constellation of causes would be extremely valuable to both the remedial and the classroom teacher. Such information would aid in saving many pupils from continuous failure, as one cause after another is investigated and one method of treatment after another is tried.

Finally, when causes of reading failure have been identified, methods of prevention should be more fully determined. As pointed out above, this study has shown that many severely retarded readers learn to read after they have experienced years of failure. This supports the contention that, when causes of reading failure are known, preventive or corrective measures may be used as soon as symptoms are noted.

The need for more emphasis on prevention is evident from the number of severely retarded readers referred for clinical examination. The effect on the individual child of being a reading problem is

often very great, as the case summaries in chapter xi show clearly. Consequently, preventive measures which avoid such disaster are extremely desirable. This study indicates that much more may be done than has previously been attempted in preventing the development of reading disability.

PRACTICAL IMPLICATIONS OF THE STUDY

The information secured from this investigation has wide implications for anyone concerned with diagnosis and remediation of deficient readers. Even prevention of reading disabilities cannot be adequately planned until more knowledge is gained concerning the reasons for this failure.

In many instances, teachers and diagnosticians search for a single anomaly to explain reading failure. This procedure often results in omission of many other causes of importance, with resulting waste of time in treating an anomaly which is only coincidental with poor reading. This study has shown that many anomalies were identified and only part of them appeared to be important to reading growth. In the cases in which treatment was directed toward coincidental anomalies, nothing was accomplished. Such a waste of time tends to discourage the child and results in greater difficulty in remedial instruction when real causes are identified.

The diagnostic examination of severely retarded readers should not end with an attempt to identify a wide number of possible causes. Evaluation of each factor in the light of all information available concerning the child should follow. An anomaly found with one child may be insignificant when all other findings are considered, whereas in another instance with a different constellation of causes, the same anomaly may take on much greater significance. Here is a challenge to the diagnostician to identify all anomalies associated with reading failure. Many may be closely related and interact to impair reading progress. Accurate evaluation of anomalies in order to identify them as causes calls for broad training and wide experience on the part of the diagnostician. Such care is essential to avoid inconsequential or incorrect remedial steps.

At present, identifying causes of poor reading is a difficult task. This study indicates that the pooled opinions of several experts in varied fields is more reliable than the opinion of a reading examiner

alone. It is not always possible for the examiner to obtain the services of competent specialists in allied fields. This practical limitation emphasizes the need for a thorough search for symptoms of various causal factors in order that the advice of appropriate specialists may be sought only as particular groups of symptoms are exhibited.

An alternative, or perhaps an added, means of securing evidence of this need is to give tests for the purpose of selecting children who should be referred to specialists in allied fields. Some tests have already been constructed or adapted for this purpose. The few tests available must be used with caution, as they are still not completely reliable in identifying all children in need of attention.

The analysis of relative frequency of various causal factors shows that more attention should be given to home and family problems of severely retarded readers. In the group of children considered, this cause operated more frequently than visual and emotional difficulties, both of which have received wider attention in diagnostic routines. Such problems cannot be measured quantitatively and are relatively difficult to elicit in many cases; but persistent efforts on the part of reading examiners may be well repaid in understanding the reading problem. Appropriate treatment will then facilitate learning to read. Furthermore, this finding is highly suggestive to school people. It is possible that a better understanding of children's home relationships might be an excellent means of preventing cases of reading disability.

Many of the anomalies in allied fields may be discovered and remedied without appreciable growth in reading. This is because such remediation only prepares the child for learning to read and does not teach him the skill. A direct, vigorous reading program must follow correction of causal factors. For example, correcting a visual difficulty does not teach the child to read but enables him to learn with greater ease when he is given remedial instruction. Likewise, psychiatric treatment for an emotional problem results in no reading growth without teaching, but it may remove the emotional block so that the child is able to direct his attention toward learning. In many instances it is probable that an enthusiastic, capable teacher can motivate a child to learn to read, even though he has inhibiting difficulties, although much less time and effort might be needed if the inhibiting factors were corrected prior to learning.

Efficient and flexible techniques for teaching reading are extremely important, especially to children whose inhibiting difficulties cannot be readily corrected. Despite the use of methods currently employed, it is significant that a few of the retarded readers in this study did not improve appreciably, even after therapy in allied fields. This fact provides a real challenge to discover other means of teaching such children to read. For example, cases diagnosed as alexia made the least gains in reading in this study. Perhaps they, too, can be taught if more effective teaching methods are developed. Children with short memory span for sounds made less progress than others. Those cases with a permanent but partial loss of hearing in one ear required special adjustments. Since, at present, none of these defects mentioned can be corrected, more effective methods for teaching such children to read will need to be developed.

This study shows clearly that a large proportion of children who are considered "unteachable" may learn to read when adequate diagnostic and remedial steps are taken. The findings give promise of definite help for a much larger proportion of seriously retarded readers than has been achieved in the past.

NOTES

1. Mary I. Preston, "The Reaction of Parents to Reading Failure," *Child Development*, X, No. 3 (September, 1939), 173–79.

2. Margaret Ladd, *The Relation of Social, Economic, and Personal Characteristics to Reading Ability* ("Contributions to Education," No. 582 [New York: Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, 1933]).

3. See p. 132 of this study.

4. Charles A. Selzer, *Lateral Dominance and Visual Fusion: The Application to Difficulties in Reading, Writing, and Speech* ("Harvard Monographs in Education," No. 12 [Cambridge: Harvard University Press, 1933]).

5. Paul Witty and David Kopel, "Factors Associated with the Etiology of Reading Disability," *Journal of Educational Research*, XXIX (February, 1936), 449–59.

6. Arthur I. Gates, "The Role of Personality-Maladjustment in Reading Disability," *Journal of Genetic Psychology*, LIX (September, 1941), 77–83.

7. Edward H. Stulken, "Retardation in Reading and the Problem Boy in School," *Elementary English Review*, XIV, No. 5 (May, 1937), 179–82.

8. Margaret E. Hall, "Auditory Factors in Functional Articulatory Speech Defects," *Journal of Experimental Education*, VII, No. 2 (December, 1938), 110–32.

9. Marion Monroe, *Children Who Cannot Read* (Chicago: University of Chicago Press, 1932).

10. Florence Mateer, "A First Study of Pituitary Dysfunction," *Psychological Bulletin*, XXXII (1935), 736.

11. Willard C. Olson, "Reading as a Function of the Total Growth of the Child," in William S. Gray (comp. and ed.), *Reading and Pupil Development* ("Supplementary Educational Monographs," No. 51 [Chicago: University of Chicago, 1940]), pp. 233–37.

12. Joseph Jastak, "Interferences in Reading," *Psychological Bulletin*, XXXI (April, 1934), 244–72.

13. Helen Kennedy, "A Study of Children's Hearing as It Relates to Reading," *Journal of Experimental Education*, X (June, 1942), 238–51.

14. Samuel T. Orton, "Specific Reading Disability—Strephosymbolia," *Journal of the American Medical Association*, XC (April, 1928), 1095–99.

15. Walter F. Dearborn, "Structural Factors Which Condition Special Disability in Reading," *American Association on Mental Deficiency*, XXXVIII (June, 1932—June, 1933), 268–83.

16. Margaret A. Stanger and Ellen K. Donohue, *Prediction and Prevention of Reading Difficulties* (New York: Oxford University Press, 1937).

17. E. B. Twitmeyer and Y. Nathanson, "The Determination of Laterality," *Psychological Clinic*, XXII (1935), 141–49.

18. Thomas H. Eames, "The Ocular Conditions of 350 Poor Readers," *Journal of Educational Research*, XXXII (September, 1938), 10–13.

BIBLIOGRAPHY

BIBLIOGRAPHY

Adams, Olga. "Implications of Language in Beginning Reading," *Childhood Education*, XII (January, 1936), 158–62.

Anderson, Margaret, and Kelley, Mae. "An Inquiry into Traits Associated with Reading Disability," *Smith College Studies in Social Work*, II (September, 1931), 46–63.

Anderson, V. A. "Auditory Memory Span as Tested by Speech Sounds," *American Journal of Psychology*, LII, No. 1 (January, 1939), 95–99.

Arthur, Grace. "An Attempt To Sort Children with Specific Reading Disability from Other Non-readers," *Journal of Applied Psychology*, XI (August, 1927), 251–63.

———. *A Point Scale of Performance.* New York: Commonwealth Fund, Division of Publications, 1930.

Bennett, Chester C. *An Inquiry into the Genesis of Poor Reading.* "Teachers College Contributions to Education," No. 755. New York: Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, 1938. Pp. viii+139.

Betts, Emmett A. "A Physiological Approach to the Analysis of Reading Disabilities," *Educational Research Bulletin* (Ohio State University), XIII (September and October, 1934), 135–40, 163–74.

———. *The Prevention and Correction of Reading Difficulties.* Evanston, Ill.: Row, Peterson & Co., 1936. Pp. xiv+402.

———. "Retardation in Reading," *The Role of Research in Educational Progress: Official Report of the American Educational Research Association* (Washington: American Educational Research Assoc. of N.E.A., 1937), pp. 186–91.

———. "Visual Aids in Remedial Reading," *Educational Screen*, XV (April, 1936), 108–10.

Bird, Grace E. "Personality Factors in Learning," *Personnel Journal*, VI (June, 1927), 56–59.

Blake, Mabelle B., and Dearborn, Walter F. "The Improvement of Reading Habits," *Journal of Higher Education*, VI (February, 1935), 83–88.

Blanchard, Phyllis. "Reading Disabilities in Relation to Difficulties of Personality and Emotional Development," *Mental Hygiene*, XX (July, 1936), 384–413.

———. "Reading Disability in Relation to Maladjustment," *Mental Hygiene*, XII (October, 1928), 772–88.

Blankenship, Albert B. "Memory Span: A Review of the Literature," *Psychological Bulletin*, XXXV (1938), 1–25.

Bond, Guy L. *The Auditory and Speech Characteristics of Poor Readers.* "Teachers College Contributions to Education," No. 657. New York: Teachers College, Columbia University, 1935. Pp. 48.

Boothby, Walter M.; Berkson, Joseph; and Dunn, Halbert L. "Studies of the Energy of Metabolism of Normal Individuals: A Standard for Basal

Metabolism, with a Nomogram for Clinical Application," *American Journal of Physiology*, CXVI (July, 1936), 468–94.

BROMBACH, T. A. "Blind Spot Measurements and Remedial Reading Problems," Southbridge, Mass.: American Optical Co., 1936. Pp. 26. Mimeographed.

BRONNER, AUGUSTA F. *The Psychology of Special Abilities and Disabilities*. Boston: Little, Brown & Co., 1917. Pp. vi+269.

BUSWELL, GUY T. *Fundamental Reading Habits: A Study of Their Development*. "Supplementary Educational Monographs," No. 21. Chicago: University of Chicago, 1922. Pp. xiv+150.

CARTER, HAROLD D. "Emotional Correlates of Errors in Learning," *Journal of Educational Psychology*, XXVII (January, 1936), 55–67.

CARTER, THOMAS MILTON. "A Study of Radiographs of the Bones of the Wrist as a Means of Determining Anatomical Age." Doctor's thesis, Department of Education, University of Chicago, 1934. Pp. 199.

CASTNER, B. M. "Prediction of Reading Disability Prior to First Grade Entrance," *American Journal of Orthopsychiatry*, V (October, 1935), 375–87.

CLARK, BRANT. "Additional Data on Binocular Imbalance and Reading," *Journal of Educational Psychology*, XXVII (September, 1936), 473–75.

CLOWES, HELEN. "The Reading Clinic," *Elementary English Review*, VII (April, 1930), 98–101, 111.

COLE, LUELLA. *The Improvement of Reading*. New York: Farrar & Rinehart, 1938. Pp. 338.

COLLINS, S. D. *Eyesight of the School Child as Determined by the Snellen Test*. "Public Health Reports," reprint No. 975. Washington: Government Printing Office, November, 1924. Plp. 37.

CRIDER, BLAKE. "Certain Visual Functions in Relation to Reading Disabilities," *Elementary School Journal*, XXXV (December, 1934), 295–97.

———. "The Lack of Cerebral Dominance as a Cause of Reading Disabilities." *Childhood Education*, X (February, 1934), 238–39, 270.

———. "Ocular Dominance: Its Nature, Measurement, and Development." Unpublished Doctor's dissertation, Department of Psychology, Western Reserve University, 1934.

CROSLAND, H. R. "Superior Elementary-School Readers Contrasted with Inferior Readers in Letter-Position, 'Range of Attention' Scores," *Journal of Educational Research*, XXXII (February, 1939), 410–27.

DAMEREAU, RUTH. "Influence of Treatment on the Reading Ability and Behavior Disorders of Reading Disability Cases," *Smith College Studies in Social Work*, V (December, 1934), 160–83.

DAVIDSON, HELEN P. *An Experimental Study of Bright, Average, and Dull Children at the Four Year Mental Level* ("Genetic Psychology Monographs," Vol. IX, Nos. 3 and 4 [Worcester, Mass.: Clark University Press, 1931]), pp. 119–289.

DAVIS, IRENE POOLE. "The Speech Aspects of Reading Readiness," *National Elementary Principal*, XVII, No. 7 (July, 1938), 282–88.

DAVIS, LOUISE FARWELL. "Visual Difficulties and Reading Disabilities," in GRAY, WILLIAM S. (ed.), *Recent Trends in Reading* ("Supplementary Educational Monographs," No. 49 [Chicago: University of Chicago, 1939]), pp. 135–43.

DEARBORN, WALTER F. "The Nature and Causation of Disabilities in Reading," in GRAY, WILLIAM S. (ed.), *Recent Trends in Reading* ("Supplementary Educational Monographs," No. 49 [Chicago: University of Chicago, 1939]), pp. 103–10.

———. "The Nature of Special Abilities and Disabilities," *School and Society*, XXXI (May 10, 1930), 632–36.

———. *The Psychology of Reading.* "Columbia University Contributions to Philosophy, Psychology, and Education," Vol. XIV, No. 1. New York: Columbia University Press, 1906. Pp. 135.

———. "Structural Factors Which Condition Special Disability in Reading," *Proceedings and Addresses of the Fifty-seventh Annual Session of the American Association on Mental Deficiency*, XXXVIII (June, 1932—June, 1933), 268–83.

DEARBORN, WALTER F., and ANDERSON, IRVING. "Aniseikonia as Related to Disability in Reading," *Journal of Experimental Psychology*, XXIII (December, 1938), 559–77.

DEARBORN, WALTER F., and COMFORT, FORREST D. "Differences in the Size and Shape of Ocular Images as Related to Defects in Reading," in EMMETT A. BETTS, "Reading Disabilities and Their Correction," *Elementary English Review*, XII (May, 1935), 131–41.

DOLCH, EDWARD W. *The Psychology and Teaching of Reading.* Boston: Ginn & Co., 1931. Pp. v+261.

DURRELL, DONALD DEWITT. "Confusions in Learning," *Education*, LII (February, 1932), 330–33.

———. *Durrell Analysis of Reading Difficulty.* Yonkers-on-Hudson, N.Y.: World Book Co., 1937.

———. *Improvement of Basic Reading Abilities.* Yonkers-on-Hudson, N.Y.: World Book Co., 1940. Pp. viii+407.

———. "The Effect of Special Disability in Reading on Performance on the Stanford Revision of the Binet-Simon Tests, Master's Thesis, College of Education, University of Iowa, August, 1927," in EMMETT A. BETTS, "Reading Disabilities and Their Correction," *Elementary English Review*, XII (May, 1935), 133–34.

Durrell-Sullivan Reading Capacity and Achievement Tests, Intermediate Test, Form A, for Grades 3–6. Yonkers-on-Hudson, N.Y.: World Book Co., 1937.

EAMES, THOMAS H. "The Anatomical Basis of Lateral Dominance Anomalies," *American Journal of Orthopsychiatry*, IV (October, 1934), 524–28.

———. "A Comparison of the Ocular Characteristics of Unselected and Reading Disability Groups," *Journal of Educational Research*, XXV (March, 1932), 211–15.

———. "A Frequency Study of Physical Handicaps in Reading Disability and Unselected Groups," *ibid.*, XXIX (September, 1935), 1–5.

———. "Improvement of School Eye Testing," *Education*, LVI (September, 1935), 14–17.

———. "The Ocular Conditions of 350 Poor Readers," *Journal of Educational Research*, XXXII (September, 1938), 10–16.

———. "Restrictions of the Visual Field as Handicaps to Learning," *ibid.*, XXIX (February, 1936), 460–65.

EAMES, THOMAS H. "A Study of the Speed of Word Recognition," *ibid.*, XXXI (November, 1937), 181–87.

FARRIS, L. P. "Visual Defects as Factors Influencing Achievement in Reading," *California Journal of Secondary Education*, X (October, 1934), 50–51.

———. "Visual Defects as Factors Influencing Achievement in Reading," *Journal of Experimental Education*, V (September, 1936), 58–60.

FENDRICK, PAUL. *Visual Characteristics of Poor Readers*. "Teachers College Contributions to Education," No. 656. New York: Teachers College, Columbia University, 1935. Pp. 54.

FENDRICK, PAUL, and BOND, GUY. "Delinquency and Reading," *Pedagogical Seminary and Journal of Genetic Psychology*, XLVIII (March, 1936), 236–43.

FERNALD, GRACE. *Remedial Techniques in Basic School Subjects*. New York: McGraw-Hill Book Co., 1943. Pp. xv+349.

FILDES, LUCY G. "A Psychological Inquiry into the Nature of the Condition Known as Congenital Word-Blindness," *Brain*, XLIV (1921), 286–307.

GATES, ARTHUR I. "Diagnosis and Treatment of Extreme Cases of Reading Disability," *Thirty-sixth Yearbook of the National Society for the Study of Education*, Part I: *The Teaching of Reading: A Second Report* (Bloomington, Ill.: Public School Pub. Co., 1937), pp. 391–416.

———. *Gates Reading Diagnosis Tests*. Rev. ed. New York: Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, 1933.

———. *Improvement of Reading*. New York: Macmillan Co., 1929. Pp. xii+440.

———. *Interest and Ability in Reading*. New York: Macmillan Co., 1930. Pp. xii+264.

———. "The Measurement and Evaluation of Achievement in Reading," *Thirty-sixth Yearbook of the National Society for the Study of Education*, Part I: *The Teaching of Reading: A Second Report* (Bloomington, Ill.: Public School Pub. Co., 1937), pp. 359–88.

———. "The Necessary Mental Age for Beginning Reading," *Elementary School Journal*, XXXVII (March, 1937), 497–508.

———. *The Psychology of Reading and Spelling with Special Reference to Disability*. "Columbia University Contributions to Education," No. 129. New York: Teachers College, Columbia University, 1922. Pp. vii+108.

———. "The Role of Personality Maladjustment in Reading Disability," *Journal of Genetic Psychology*, LIX (September, 1941), 77–83.

GATES, ARTHUR I., and BENNETT, CHESTER C. *Reversal Tendencies in Reading: Causes, Diagnosis, Prevention, and Correction*. New York: Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, 1933. Pp. i+33.

GATES, ARTHUR I. (with the assistance of GUY L. BOND). "Failure in Reading and Social Maladjustment," *Journal of the National Education Association*, XXV (October, 1936), 205–6.

GATES, ARTHUR I., and BOND, GUY L. "Reading Readiness: A Study of Factors Determining Success and Failure in Beginning Reading," *Teachers College Record*, XXXVII (May, 1936), 679–85.

———. "Relation of Handedness, Eye-sighting, and Acuity Dominance to Reading," *Journal of Educational Psychology*, XXVII (September, 1936), 450–56.

GILCREST, E. P. "The Extent to Which Praise and Blame Affect a Pupil's Work," *School and Society*, IV (December, 1916), 872–74.

GOOD, G. H. "Relationship of Fusion Weakness to Reading Disability," *Journal of Experimental Education*, VIII (September, 1939), 115–21.

GRAY, WILLIAM S. (ed.). *Reading in General Education*. Washington: American Council on Education, 1940. Pp. xiii+464.

———. *Standardized Oral Reading Paragraphs*. Bloomington, Ill.: Public School Pub. Co., 1916.

GRAY, WILLIAM S., with the co-operation of DURRELL, DONALD D.; GATES, ARTHUR I.; HORN, ERNEST; and MCKEE, PAUL. "Reading," *Review of Educational Research*, VII (December, 1937), 493–507.

GRAY, WILLIAM S.; KIBBE, DELIA; LUCAS, LAURA; and MILLER, LAWRENCE W. *Remedial Cases in Reading: Their Diagnosis and Treatment*. "Supplementary Educational Monographs," No. 22. Chicago: University of Chicago, 1922. Pp. viii+208.

HALL, MARGARET E. "Auditory Factors in Functional Articulatory Speech Defects," *Journal of Experimental Education*, VII, No. 2 (December, 1938), 110–32.

HARDWICK, ROSE S. "Types of Reading Disability," *Childhood Education*, VIII (April, 1932), 423–27.

HARRISON, M. LUCILLE. *Reading Readiness*. Boston, Mass.: Houghton Mifflin Co., 1936. Pp. vii+166.

HEAD, HENRY. *Aphasia and Kindred Disorders of Speech*, Vol. I. New York: Macmillan Co., 1926. Pp. xvi+549.

HERRICK, C. JUDSON. *An Introduction to Neurology*. 5th ed. Philadelphia and London: H. B. Saunders Co., 1931. Pp. 417.

HILDRETH, GERTRUDE. "Bilateral Manual Performance: Eye-Dominance and Reading Achievement," *Child Development*, XI (1940). 311–17.

———. "Reversals in Reading and Writing," *Journal of Educational Psychology*, XXV (January, 1934), 1–20.

HILDRETH, GERTRUDE H., and GRIFFITHS, NELLIE L. *Metropolitan Readiness Tests*. Yonkers-on-Hudson, N.Y.: World Book Co., 1933.

HINCKS, ELIZABETH M. *Disability in Reading and Its Relation to Personality*. "Harvard Monographs in Education," No. 7. Cambridge: Harvard University Press, 1926. Pp. 92.

HINSHELWOOD, JAMES. *Congenital Word-Blindness*. London: H. K. Lewis, Ltd., 1917. Pp. ix+112.

HOLLINGWORTH, LETA S. *Special Talents and Defects: Their Significance for Education*. New York: Macmillan Co., 1923. Pp. xix+216.

HOWES, ESTHER CORNELIA. "An Analysis of Some of the Determining Factors of Educational Achievement of Deaf Children." Unpublished Master's thesis, Department of Education, University of Chicago, 1936. Pp. 52.

IMUS, H. A.; ROTHNEY, J. W. M.; and BEAR, R. M. *An Evaluation of Visual Factors in Reading*. Hanover, N.H.: Dartmouth College Publication, 1938. Pp. viii+144.

JAMESON, AUGUSTA. "Methods and Devices for Remedial Reading," in GRAY, WILLIAM S. (ed.), *Recent Trends in Reading* ("Supplementary Educational Monographs," No. 49 [Chicago: University of Chicago, 1939]), pp. 170–78.

JASTAK, JOSEPH. "Interferences in Reading," *Psychological Bulletin*, XXXI (April, 1934), 244–72.

JENKINS, D. L.; BROWN, ANDREW W.; and ELMENDORF, LAURA. "Mixed Dominance and Reading Disability," *American Journal of Orthopsychiatry*, VII (January, 1937), 72–81.

JUDD, CHARLES H. "Photographic Records of Convergence and Divergence" ("Yale Psychological Studies," New Ser., Vol. I, No. 2), *Psychological Review Monograph Supplements*, VIII, No. 3 (1907), 370–423.

KANARIK, ROSELLA, and MANWILLER, C. E. "How a High School Attacks Its Learning Difficulties in Reading and Arithmetic," *Pittsburgh Schools*, XI (January, February, 1937), 94–116.

KENDREW, E. N. "A Note on the Persistence of Moods," *British Journal of Psychology*, XXVI (1935), 165–73.

KENNEDY, HELEN. "A Study of Children's Hearing as It Relates to Reading," *Journal of Experimental Education*, X (June, 1942), 238–51.

KIRK, SAMUEL A. "The Effects of Remedial Reading on the Educational Progress and Personality Adjustment of High-Grade Mentally Deficient Children," *Journal of Juvenile Research*, XVIII (July, 1934), 140–62.

———. *Teaching Reading to Slow-learning Children*. Boston: Houghton Mifflin Co., 1940. Pp. v+225.

LADD, MARGARET. *The Relation of Social, Economic, and Personal Characteristics to Reading Ability*. "Teachers College Contributions to Education," No. 582. New York: Bureau of Publications, Teachers College, Columbia University, 1933. Pp. vii+100.

LEAVELL, ULLIN W., and STERLING, HELEN. "A Comparison of Basic Factors in Reading Patterns with Intelligence," *Peabody Journal of Education*, XVI (November, 1938), 149–55.

LICHTENSTEIN, ARTHUR. "An Investigation of Reading Retardation," *Journal of Genetic Psychology*, LII (1938), 407–23.

LORD, ELIZABETH; CARMICHAEL, LEONARD; and DEARBORN, WALTER F. *Special Disabilities in Learning To Read and Write*. "Harvard Monographs in Education," Ser. I, Vol. II, No. 1. Cambridge: Harvard University Press, 1925. Pp. 76.

LOUTTIT, C. M. *Clinical Psychology: A Handbook of Children's Behavior Problems*. New York: Harper & Bros., 1936. Pp. xx+695.

LUCKIESH, MATTHEW, and MOSS, FRANK K. *Reading as a Visual Task*. New York: D. Van Nostrand Co., Inc., 1942. Pp. xv+428.

MCALLISTER, C. N. "The Fixation of Points in the Visual Field," *Psychological Review Monograph Supplements*, VII (March, 1905), 17–53.

MCCALL, WILLIAM A. *How To Measure in Education*. New York: Macmillan Co., 1922. Pp. xii+416.

MATEER, FLORENCE. "A First Study of Pituitary Dysfunction," *Psychological Bulletin*, XXXII (1935), 736.

MAY, CHARLES H., and PERERA, CHARLES A. *Manual of the Diseases of the Eye*. 18th ed. rev. New York: William Wood & Co., 1943.

MILLS, LLOYD. "Eyedness and Handedness," *American Journal of Ophthalmology*, VIII (December, 1925), 933–41.

MONROE, MARION. *Children Who Cannot Read*. Chicago: University of Chicago Press, 1932.

———. *Diagnostic Reading Examination: Manual of Directions*. Chicago: C. H. Stoelting Co., 1930.

———. *Reading Aptitude Tests*. Boston: Houghton Mifflin Co., Riverside Press, 1935.

———. "Reading Aptitude Tests in Beginning Reading," *Education*, LVI (September, 1935), 7–14.

MONROE, MARION, and BACKUS, BERTIE. *Remedial Reading: A Monograph in Character Education*. Boston: Houghton Mifflin Co., 1937. Pp. xi+171.

MORGAN, W. P. "A Case of Congenital Word-Blindness," *British Medical Journal*, II (November 7, 1896), 1378.

MORPHETT, MABEL VOGEL, and WASHBURNE, CARLETON. "When Should Children Begin To Read?" *Elementary School Journal*, XXXI (March, 1931), 496–503.

NEWELL, NANCY. "For Non-readers in Distress," *Elementary School Journal*, XXXII (November, 1931), 183–95.

NOLAN, ESTHER GRACE. "Reading Difficulty versus Low Mentality," *California Journal of Secondary Education*, XVII (January, 1942), 34–39.

OLSON, WILLARD C. "Reading as a Function of the Total Growth of the Child," in GRAY, WILLIAM S. (comp. and ed.), *Reading and Pupil Development*. ("Supplementary Educational Monographs," No. 51 [Chicago: University of Chicago, 1940]), pp. 233–37.

The Ophthalmograph, the Metron-O-Scope: Manual for Controlled Reading. Southbridge, Mass.: Bureau of Visual Science, American Optical Co., 1937–38.

ORTON, SAMUEL T. *Reading, Writing, and Speech Problems in Children*. New York: W. W. Norton Co., 1937. Pp. 215.

———. "The 'Sight-reading' Method of Teaching Reading, as a Source of Reading Disability," *Journal of Educational Psychology*, XX (February, 1929), 135–43.

———. "Specific Reading Disability—Strephosymbolia," *Journal of American Medical Association*, XC (April, 1928), 1095–99.

PARKINS, GEORGE A. *The Diagnosis and Elimination of Visual Handicaps Preventing Efficient Reading*. Rutland, Vt.: Tuttle Pub. Co., 1941. Pp. 142.

PARR, F. W. "Factors Associated with Poor Reading Ability of Adults," *School and Society*, XXXV (May 7, 1932), 626.

PRESCOTT, DANIEL A. *Emotion and the Educative Process*. Washington: American Council on Education, 1938. Pp. xviii+323.

PRESTON, MARY I. "The Reaction of Parents to Reading Failures," *Child Development*, X, No. 3 (September, 1939), 173–79.

———. "Reading Failure and the Child's Security," *American Journal of Orthopsychiatry*, X (April, 1940), 239–52.

RIDENOUR, NINA. "The Treatment of Reading Disability," *Mental Hygiene*, XIX (1935), 387–97.

SANOHARA, T. "A Psychological Study of the Feeling of Shame," *Japanese Journal of Psychology*, IX (1934), 847–90.

SAUNDERS, MARY JANE. "The Short Auditory Span Disability," *Childhood Education*, VIII (October, 1931), 59–65.

SCHMITT, CLARA. "Developmental Alexia," *Elementary School Journal*, XVIII (May, 1918), 680–700 and 757–69.

SELZER, CHARLES A. *Lateral Dominance and Visual Fusion: The Application to*

Difficulties in Reading, Writing, Spelling, and Speech. "Harvard Monographs in Education," No. 12. Cambridge: Harvard University Press, 1933. Pp. 119.

SHERMAN, MANDEL. "Emotional Disturbances and Reading Disability," in GRAY, WILLIAM S. (ed.), *Recent Trends in Reading* ("Supplementary Educational Monographs," No. 49 [Chicago: University of Chicago, 1939]), pp. 126–34.

SHOCK, NATHAN W., and SOLEY, MAYO H. "Average Values for Basal Respiratory Functions in Adolescents and Adults," *Journal of Nutrition,* XVIII (August, 1939), 143–53.

SPACHE, GEORGE. "Eye Preference, Visual Acuity, and Reading Ability," *Elementary School Journal,* XLIII (May, 1943), 539–43.

———. "The Role of Visual Defects in Spelling and Reading Disabilities," *American Journal of Orthopsychiatry,* X (April, 1940), 229–38.

———. "Testing Vision," *Education,* LIX (June, 1939), 623–26.

STANGER, MARGARET A., and DONOHUE, ELLEN K. *Prediction and Prevention of Reading Difficulties.* New York: Oxford University Press, 1937. Pp. ix+191.

STROMBERG, ELEROY L. "The Relationship of Measures of Visual Acuity and Ametropia to Reading Speed," *Journal of Applied Psychology,* XII (February, 1938), 70–78.

STULLKEN, EDWARD H. "Retardation in Reading and the Problem Boy in School," *Elementary English Review,* XIV, No. 5 (May, 1937), 179–82.

SULLIVAN, ELLEN B. "Attitude in Relation to Learning," *Psychological Monographs,* XXXVI, No. 169 (1927), 1–149.

SWANSON, DONALD E., and TIFFIN, JOSEPH. "Betts' Physiological Approach to the Analysis of Reading Disabilities as Applied to the College Level," *Journal of Educational Research,* XXIX (February, 1936), 433–48.

TAYLOR, EARL A. *Controlled Reading.* Chicago: University of Chicago Press, 1937. Pp. xxviii+367.

TEEGARDEN, LORENE. "Clinical Identification of the Prospective Non-reader," *Child Development,* III (1932), 346–58.

TERMAN, LEWIS. *The Measurement of Intelligence.* Boston: Houghton Mifflin Co., 1916. Pp. xviii+362.

TERMAN, LEWIS, and MERRILL, MAUD. *Measuring Intelligence—a Guide to the Administration of the New Revised Stanford-Binet Tests of Intelligence.* Boston: Houghton Mifflin Co., 1937. Pp. x+460.

THORNDIKE, E. L., and WOODYARD, ELLA. "Influence of the Relative Frequency of Successes and Frustrations," *Journal of Educational Psychology,* XXV (April, 1934), 241–50.

TINKER, MILES A. "Diagnostic and Remedial Reading, II," *Elementary School Journal,* XXXIII (January, 1933), 346–57.

———. "Remedial Methods for Non-readers," *School and Society,* XL (October, 1934), 524–26.

———. "Trends in Diagnostic and Remedial Reading as Shown by Recent Publications in This Field," *Journal of Educational Research,* XXXII (December, 1938), 293–303.

TRAXLER, ARTHUR E. *Summary and Selected Bibliography of Research Relating to the Diagnosis and Teaching of Reading, 1930–1937.* New York: Educational Records Bureau, October, 1937. Pp. 60.

TULCHIN, SIMON H. "Emotional Factors in Reading Disabilities in School Children," *Journal of Educational Psychology*, XXVI (1935), 443–47.

TWITMYER, E. B., and NATHANSON, Y. "The Determination of Laterality," *Psychological Clinic*, XXII (1935), 141–48.

WAGNER, GUY W. "The Maturation of Certain Visual Functions and the Relationship between These Functions and Success in Reading and Arithmetic" ("Studies in Psychology of Reading," Vol. I; "University of Iowa Studies in Psychology," No. 21), *Psychological Monographs*, XLVIII, No. 3 (Princeton, N.J.: Psychological Review Co., 1937), 108–46.

WALLIN, J. E. W. "Congenital Word-Blindness: Some Analyses Cases," *Training School Bulletin* (Vineland, N.J.), March, 1920, pp. 76–84, 93–99.

WEISENBURG, THEODORE, and MCBRIDE, KATHERINE E. *Aphasia*. New York: Commonwealth Fund, 1935. Pp. xvi+634.

WELLS, DAVID W. *The Stereoscope in Ophthalmology*. Rev. ed. Boston: E. F. Mahady Co., 1926. Pp. viii+107.

WELLS, F. L. "A Glossary of Needless Reading Errors," *Journal of Experimental Education*, IV (September, 1935), 34–43.

WHIPPLE, GERTRUDE. "Causes of Retardation in Reading and Methods of Eliminating Them," *Peabody Journal of Education*, XVI (November, 1938), 191–200.

WHIPPLE, GUY MONTROSE. *Manual of Mental and Physical Tests*, Vol. I. Baltimore, Md.: Warwick & York, 1914. Pp. xvi+365.

WHITE, A., and POULL, L. E. *Reading Ability and Disability with Subnormal Children*. New York: Department of Public Welfare, 1921.

WITTY, PAUL, and KOPEL, DAVID. "Factors Associated with the Etiology of Reading Disability," *Journal of Educational Research*, XXIX (February, 1936), 449–59.

———. *Reading and the Educative Process*. Boston: Ginn & Co., 1939. Pp. x+374.

———. "Sinistrad and Mixed Manual-Ocular Behavior in Reading Disability," *Journal of Educational Psychology*, XXVII (February, 1936), 119–34.

WITTY, PAUL, and SKINNER, CHARLES E. *Mental Hygiene in Modern Education*. New York: Farrar & Rinehart, Inc., 1939. Pp. x+539.

WOLFE, LILLIAN S. "Differential Factors in Specific Reading Disability. I. Laterality of Function," *Journal of Genetic Psychology*, LVIII (1941), 45–56.

———. "Differential Factors in Specific Reading Disability. II. Audition, Vision, Verbal Association, and Adjustment," *ibid.*, pp. 57–70.

WOODY, CLIFFORD, and PHILLIPS, ALBERT J. "The Effects of Handedness on Reversals in Reading," *Journal of Educational Research*, XXVII (1934), 651–62.

WOOLEY, HELEN THOMPSON, and FERRIS, ELIZABETH. *Diagnosis and Treatment of Young School Failures*. Bureau of Education Bull. 1. Washington: Bureau of Education, 1923. Pp. vi+115.

INDEX

INDEX